नारी लेखन

Course Code: M23HD03DE

Discipline Specific Elective Course
Postgraduate Programme in
Hindi Language and Literature

SELF LEARNING MATERIAL

अपनी जगह से गिरकर
कहीं के नहीं रहते
केश, औरतें और नाखून-
अन्वय करते थे किसी श्लोक को ऐसे
हमारे संस्कृत टीचर।
और मारे डर के जम जाती थीं
हम लड़कियाँ अपनी जगह पर।

SREENARAYANAGURU
OPEN UNIVERSITY

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

The State University of Education, Training and Research in Blended Format, Kerala

Vision

To increase access of potential learners of all categories to higher education, research and training, and ensure equity through delivery of high quality processes and outcomes fostering inclusive educational empowerment for social advancement.

Mission

To be benchmarked as a model for conservation and dissemination of knowledge and skill on blended and virtual mode in education, training and research for normal, continuing, and adult learners.

Pathway

Access and Quality define Equity.

नारी लेखन

Course Code: M23HD03DE

Semester-III

Discipline Specific Elective Course
MA Hindi Language and Literature
Self Learning Material

(With Model Question Paper Sets)

SGOU

SREENARAYANAGURU
OPEN UNIVERSITY

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

The State University for Education, Training and Research in Blended Format, Kerala

SREENARAYANAGURU
OPEN UNIVERSITY

नारी लेखन

Course Code: M23HD03DE
Semester- III
Discipline Specific Elective Course
MA Hindi Language and Literature
for PG Programmes

Academic Committee

Dr. Jayachandran R.
Dr. Pramod Kovvaprath
Dr. P.G. Sasikala
Dr. Jayakrishnan J.
Dr. R. Sethunath
Dr. Vijayakumar B.
Dr. B. Ashok

Development of Content

Dr. Veena J.
Dr. Ambili T.

Review and Edit

Dr. Radhika R.

Linguistics

Dr. Soorya E.V.

Scrutiny

Dr. Sudha T.
Dr. Indu G. Das
Dr. Krishna Preethy A.R.
Christina Sherin Rose K.J.

Design Control

Azeem Babu T.A.

Cover Design

Lisha S

Co-ordination

Director, MDDC :
Dr. I.G. Shibi
Asst. Director, MDDC :
Dr. Sajeevkumar G.
Coordinator, Development:
Dr. Anfal M.
Coordinator, Distribution:
Dr. Sanitha K.K.

Scan this QR Code for reading the SLM on a digital device.

Edition:
January 2025

Copyright:
© Sreenarayanaguru Open

ISBN 978-81-985080-7-2

All rights reserved. No part of this work may be reproduced in any form, by mimeograph or any other means, without permission in writing from Sreenarayanaguru Open University. Printed and published on behalf of Sreenarayanaguru Open University by Registrar, SGOU, Kollam.

www.sgou.ac.m

Visit and Subscribe our Social Media Platforms

MESSAGE FROM VICE CHANCELLOR

Dear learner,

I extend my heartfelt greetings and profound enthusiasm as I warmly welcome you to Sreenarayanaguru Open University. Established in September 2020 as a state-led endeavour to promote higher education through open and distance learning modes, our institution was shaped by the guiding principle that access and quality are the cornerstones of equity. We have firmly resolved to uphold the highest standards of education, setting the benchmark and charting the course.

The courses offered by the Sreenarayanaguru Open University aim to strike a quality balance, ensuring students are equipped for both personal growth and professional excellence. The University embraces the widely acclaimed "blended format," a practical framework that harmoniously integrates Self-Learning Materials, Classroom Counseling, and Virtual modes, fostering a dynamic and enriching experience for both learners and instructors.

The university aims to offer you an engaging and thought-provoking educational journey. Major universities across the country typically employ a format that serves as the foundation for the PG programme in Hindi Language and Literature. Given Hindi's status as a widely spoken language throughout India, its pedagogy necessitates a particular focus on language skills and comprehension. To address this, the University has implemented an integrated curriculum that bridges linguistic and literary elements. The learner's priorities determine the endorsed proportion of these elements. Both the Self Learning Materials and virtual modules are designed to fulfil these requirements.

Rest assured, the university's student support services will be at your disposal throughout your academic journey, readily available to address any concerns or grievances you may encounter. We encourage you to reach out to us freely regarding any matter about your academic programme. It is our sincere wish that you achieve the utmost success.

Regards,
Dr. Jagathy Raj V. P.

01-06-2025

Contents

BLOCK 01 स्त्री विमर्श की अवधारणा..... 1

इकाई 1: स्त्री विमर्श- अर्थ, परिभाषा, स्वरूप एवं उद्देश्य..... 2

इकाई 2: स्त्री विमर्श की वैचारिक पृष्ठभूमि- स्त्री विमर्श प्रेरणा एवं प्रभाव..... 11

इकाई 3: स्त्री मुक्ति आंदोलन उद्भव एवं विकास, पाश्चात्य संदर्भ में स्त्री मुक्ति आंदोलन

भारतीय संदर्भ में स्त्री मुक्ति आंदोलन..... 30

इकाई 4: वर्जीनिया वुल्फ और नारी लेखन परंपरा- ए रूम का वन'एस ऑन -

उत्तर औपनिवेशिक नारीवाद, ब्लैक फेमिनिज्म, इस्लामी फेमिनिज्म, लेस्बियन फेमिनिज्म,

साइबर फेमिनिज्म, इको फेमिनिज्म..... 40

BLOCK 02 जेंडर की अवधारणा..... 63

इकाई 1: अस्मिता और सत्ता, जेंडर अस्मिता और यौन अस्मिता, विजेता, सत्ता..... 64

इकाई 2: जेंडर की अवधारणा, जेंडर, भाषा और साहित्य, स्त्रीलिंगी विमर्श और भाषा..... 75

इकाई 3: स्त्री मुक्ति आंदोलन की परंपरा- जॉन स्टुअर्ट मिल - द सब्जेक्ट ऑफ वुमन

(स्त्री की पराधीनता), जर्मन ग्रीयर - द फीमैल यूनक (विद्रोही स्त्री), सिमोन द बॉउआर -

द सेकंड सेक्स(स्त्री उपेक्षिता)..... 84

इकाई 4: पितृसत्तात्मक समाज और नारी लेखन, वर्जीनिया वुल्फ़- 'ए रूम ऑफ वन्स ऑन',

स्त्रीवाद में मर्द..... 96

BLOCK 03 समकालीन हिन्दी कथा लेखन और स्त्री विमर्श..... 107

इकाई 1: समकालीन कथा परिदृश्य में स्त्री रचनाकार..... 108

इकाई 2: मृदुला गर्ग - हरी बिन्दी

अल्पना मिश्र - उपस्थिति..... 132

इकाई 3: सूर्यबाला - 'एक स्त्री के कारनामे'

ममता कालिया - 'बोलनेवाली औरत'..... 138

इकाई 4: प्रभा खेतान- छिन्नमस्ता(उपन्यास)..... 144

BLOCK 04 समकालीन हिन्दी कविता और स्त्री विमर्श..... 152

इकाई 1: अनामिका- बेजगह, स्त्रियाँ..... 153

इकाई 2: कात्यायनी- 'इस स्त्री से डरो', 'औरत और घर'..... 168

इकाई 3: निर्मला पुतुल- 'क्या तुम जानते हो', 'अपने घर की तलाश में'..... 181

इकाई 4: रमणिका गुप्ता- प्रतिरोध..... 191

इकाई 5: डॉ. सरिता शर्मा- बेटी..... 200

Model Question Paper Sets..... 206

SGOU

BLOCK 01

स्त्री विमर्श की अवधारणा

Block Content

इकाई 1: स्त्री विमर्श- अर्थ, परिभाषा, स्वरूप एवं उद्देश्य

इकाई 2: स्त्री विमर्श की वैचारिक पृष्ठभूमि- स्त्री विमर्श प्रेरणा एवं प्रभाव

इकाई 3: स्त्री मुक्ति आंदोलन उद्भव एवं विकास, पाश्चात्य संदर्भ में स्त्री मुक्ति आंदोलन भारतीय संदर्भ में स्त्री मुक्ति आंदोलन

इकाई 4: वर्जीनिया वुल्फ और नारी लेखन परंपरा- ए रूम का वन'एस ऑन - उत्तर औपनिवेशिक नारीवाद, ब्लैक फेमिनिज्म, इस्लामी फेमिनिज्म, लेस्बियन फेमिनिज्म, साइबर फेमिनिज्म, इको फेमिनिज्म

इकाई 1

स्त्री विमर्श- अर्थ, परिभाषा, स्वरूप एवं उद्देश्य

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- स्त्री विमर्श का अर्थ, उसकी आवश्यकता और पृष्ठभूमि को समझता है
- स्त्री विमर्श के विभिन्न परिभाषाओं के बारे में समझता है
- स्त्री विमर्श का स्वरूप जानता है
- स्त्री विमर्श का उद्देश्य जानता है

Background / पृष्ठभूमि

स्त्री विमर्श की पृष्ठभूमि महिलाओं के अधिकार, स्वतंत्रता, और समानता की लंबी यात्रा को दर्शाती है, जो ऐतिहासिक, सामाजिक, और साहित्यिक परिवर्तनों से प्रभावित रही है। प्राचीन काल में महिलाओं को शिक्षा और स्वतंत्रता का अधिकार था, लेकिन समय के साथ पितृसत्तात्मक व्यवस्था ने उनके अधिकारों को सीमित कर दिया। मध्यकालीन भारत में उनकी स्थिति और भी खराब हुई, लेकिन भक्ति आंदोलन ने स्त्री चेतना को जागृत किया। आधुनिक काल में समाज सुधारकों और नारीवादी आंदोलनों ने महिलाओं की शिक्षा, सशक्तिकरण और अधिकारों पर ज़ोर दिया। साहित्य में स्त्री पात्रों के संघर्ष और स्वतंत्र अस्तित्व को पहचान मिली, और यह विमर्श सामाजिक और सांस्कृतिक सुधार का माध्यम बन गया।

Keywords / मुख्य बिन्दु

स्त्री विमर्श, नारीवादी आंदोलन, पितृसत्तात्मक व्यवस्था

Discussion / चर्चा

1.1.1 स्त्री विमर्श- अर्थ

- विमर्श समाज, साहित्य, संस्कृति, राजनीति और इतिहास में स्त्रियों के स्थान और उनके अनुभवों पर केंद्रित होता है

स्त्री विमर्श का अर्थ है महिलाओं से जुड़े मुद्दों, उनकी स्थिति, अधिकारों, भूमिकाओं और अस्तित्व की चर्चा और विश्लेषण। यह विमर्श समाज, साहित्य, संस्कृति, राजनीति और इतिहास में स्त्रियों के स्थान और उनके अनुभवों पर केंद्रित होता है। स्त्री विमर्श मुख्य रूप से पितृसत्तात्मक समाज द्वारा महिलाओं पर थोपे गए नियमों, भेदभाव और अन्याय के खिलाफ जागरूकता लाने और महिलाओं के अधिकारों को सशक्त बनाने की प्रक्रिया है।

- वर्तमान समय में समाज, साहित्य और संस्कृति के भीतर स्त्री अपने अस्मिता की तलाश लगातार कर रही है

वर्तमान समय में समाज, साहित्य और संस्कृति के भीतर स्त्री अपने अस्मिता की तलाश लगातार कर रही है। उसकी इच्छाएँ, प्रयास एवं संघर्ष लगातार उसे विमर्श के दायरे में खड़े करते हैं। स्त्री विमर्श अपने भीतर लगातार उन संवादों और बहसों को जन्म देता है, जहाँ युगों से शोषित एवं उत्पीडित स्त्री के मन की अभिव्यक्ति को स्वर मिला है।

- पितृ सत्ता ने स्त्री को सदैव अधीनस्थ की श्रेणी में रखा है

पितृ सत्ता ने स्त्री को सदैव अधीनस्थ की श्रेणी में रखा है। पितृसत्तात्मक मूल्य स्त्री को समाज में दोयम दर्जे का मानते हुए उसके मानवीय मूल्यों एवं अधिकारों का हनन करते हैं। स्त्री विमर्श अपने भीतर इन्हीं पितृसत्तावादी मूल्यों को तोड़ते हुए सामाजिक न्याय, क्षमता और स्वतंत्रता की पृष्ठभूमि की रचना करता है। स्त्री विमर्श के भीतर स्त्री न केवल स्वयं को परिभाषित करती है, बल्कि स्वयं के साथ-साथ अपने आसपास मौजूद सामाजिक संस्थाओं और उनकी सारगर्भिता तथा पुरुष को भी परिभाषित करती है। वास्तव में स्त्री विमर्श का उद्देश्य पुरुष का विरोध नहीं है, बल्कि उस पितृसत्तावादी मानसिकता का विरोध है जो अपनी सामंती वृत्तियों के चलते स्त्री को मानवीय गरिमा न देकर उसे अपनी संपत्ति समझता है। इस प्रकार वह अपने ऊपर लगी उन तमाम प्रतिवादी दलील को खारिज करता है कि वह समाज को तोड़ने का कार्य करता है।

- स्त्री विमर्श की मूल अवधारणा का जन्म पश्चिम में हुआ

स्त्री विमर्श का प्रारंभ पश्चिम से माना जाता है और इसे यूरोपीय देशों से आयातित विचार के तौर पर देखा जाता है। यह सही है कि स्त्री विमर्श की मूल अवधारणा का जन्म पश्चिम में हुआ। लेकिन वह भारतीय संदर्भ में भी बहुत महत्वपूर्ण है। बल्कि इसने संसार भर के स्त्रियों से अपना संवाद कायम कर लिया है। इस कारण सभी भौगोलिक स्रोत और परिवेश में स्त्री की लगभग समान बंधानकारी परिस्थितियाँ है। यह सदियों से जुल्म और शोषण का शिकार बनती रही है।

- स्त्री को घर के भीतर और बाहर दोनों ही स्थान पर शारीरिक मानसिक एवं सामाजिक हिंसा का शिकार बनना पड़ता है

भारत जैसे देश में जहाँ स्त्री को देवी का दर्जा प्राप्त है, वह कभी अपने मानवीय रूप को प्राप्त ही नहीं कर पाती। उसे घर के भीतर और बाहर दोनों ही स्थान पर शारीरिक मानसिक एवं सामाजिक हिंसा का शिकार बनना पड़ता है। लगभग प्रतिदिन इन्हीं खबरों

से अखबार भरे रहते हैं। पितृसत्ता स्त्री का शोषण केवल बाहरी स्तर पर नहीं करती बल्कि उसकी जड़ें गहरी हैं। समाज में यही ज़हरीले जड़ें अपने विषाक्त शाखाओं से स्त्री विरोधी मानसिकता के बीज बोते हैं। जहाँ स्त्री को इस विषाक्त माहौल में समान मानवीय जीवन जीने के लिए भी प्रतिपल मरना पड़ता है। स्त्री विमर्श समाज की इसी मानसिकता के पड़ताल करते हुए स्त्री के लिए जीवंत संसार की रचना करने की पहल करता है।

1.1.2 स्त्री विमर्श की परिभाषाएँ

▶ नारी विमर्श अंग्रेजी शब्द फेमिनिज्म का ही हिंदी रूपांतरण है

स्त्री विमर्श को किसी एक परिभाषा में व्यक्त करना संभव नहीं है। नारी विमर्श अंग्रेजी शब्द फेमिनिज्म का ही हिंदी रूपांतरण है। जिसका अर्थ है स्त्री के अधिकारों, सत्ता, शक्ति की वकालत करना।

स्त्री विमर्श को विभिन्न पाश्चात्य और भारतीय विद्वानों ने अपने सामाजिक, सांस्कृतिक, और साहित्यिक दृष्टिकोण से परिभाषित किया है। ये परिभाषाएँ स्त्री विमर्श की अवधारणा, उद्देश्य और महत्व को स्पष्ट करती हैं।

शब्दकोश के अनुसार "Feminism is a range of social movements, political movements and ideologies that aim to define and established the political, economic, personal and social equality of the sexes" अर्थात स्त्रीवाद सामाजिक और राजनीतिक आंदोलनों और विचारधाराओं की एक श्रृंखला है जिसका उद्देश्य लिंगों की राजनीतिक, आर्थिक, व्यक्तिगत और सामाजिक समानता को परिभाषित और स्थापित करना है।

पाश्चात्य विद्वानों की परिभाषाएँ

1. सिमोन द बोउआर (Simone de Beauvoir)

"स्त्री पैदा नहीं होती, बल्कि बनाई जाती है।" यह परिभाषा महिलाओं के अस्तित्व और उनके व्यक्तित्व के सामाजिक निर्माण की ओर संकेत करती है। सिमोन ने अपने लेख The Second Sex में स्त्री के प्रति समाज की रूढ़िवादी धारणाओं को चुनौती दी है।

2. वर्जीनिया वूल्फ (Virginia Woolf)

▶ महिलाओं की स्वतंत्रता और रचनात्मकता उनके आत्मनिर्भर बनने पर निर्भर है

"स्त्रियों को यदि स्वयं की आवाज़ को पहचानना है, तो उन्हें आर्थिक और सामाजिक स्वतंत्रता प्राप्त करनी होगी।" वूल्फ का मत है कि महिलाओं की स्वतंत्रता और रचनात्मकता उनके आत्मनिर्भर बनने पर निर्भर है।

3. बेट्टी फ्राइडन (Betty Friedan)

"स्त्री विमर्श का उद्देश्य महिलाओं को उस भूमिका से मुक्त करना है, जिसमें उनकी पहचान केवल एक पत्नी और माता के रूप में सीमित कर दी गई है।" उन्होंने अपनी पुस्तक The Feminine Mystique में महिलाओं के अस्तित्व और उनके आत्मसम्मान की बात की है।

4. एलिस वॉकर (Alice Walker)

"स्त्री विमर्श वह प्रक्रिया है, जो महिलाओं को उनके भीतर की शक्ति और संभावनाओं को पहचानने और उनके अस्तित्व को सशक्त बनाने के लिए प्रेरित करती है।" एलिस वॉकर का दृष्टिकोण नारीवाद और रंगभेद से संबंधित मुद्दों पर आधारित है।

भारतीय विद्वानों की परिभाषाएँ

1. महादेवी वर्मा

"स्त्री विमर्श वह स्वर है, जो समाज की जकड़नों से महिलाओं को मुक्त कर उनकी मौलिकता और स्वतंत्रता को स्वीकारने का आग्रह करता है।" महादेवी वर्मा ने महिलाओं की सामाजिक और साहित्यिक स्थिति को बेहतर बनाने की आवश्यकता पर बल दिया।

2. डॉ. रमेशचंद्र शाह

"स्त्री विमर्श का उद्देश्य केवल महिलाओं के अधिकारों की मांग करना नहीं है, बल्कि समाज में महिलाओं के वास्तविक स्वरूप और उनकी स्वतंत्रता को पहचान दिलाना है।" उनका दृष्टिकोण समाज में महिलाओं के अधिकारों और स्वतंत्रता को लेकर एक समावेशी दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है।

3. डॉ. नामवर सिंह

"स्त्री विमर्श एक ऐसा आंदोलन है, जो साहित्य और समाज में महिलाओं की भूमिका को नए दृष्टिकोण से परिभाषित करता है। यह पितृसत्तात्मक मानसिकता को चुनौती देने और महिलाओं के अस्तित्व को सम्मानित करने की प्रक्रिया है।" उन्होंने साहित्य में महिलाओं की आवाज़ को प्रमुखता देने की बात कही।

4. डॉ. सुधा सिंह

▶ महिलाओं की स्थिति को सुधारने और उन्हें समाज में उचित स्थान दिलाने का प्रयास

"स्त्री विमर्श महिलाओं के अधिकारों, उनके अस्तित्व और उनकी पहचान को पुनर्परिभाषित करने का माध्यम है।" उनका मानना है कि स्त्री विमर्श महिलाओं की स्थिति को सुधारने और उन्हें समाज में उचित स्थान दिलाने का प्रयास है।

5. कात्यायनी के अनुसार - "स्त्री विमर्श अथवा स्त्रीवाद पुरुष और स्त्री के बीच नकारात्मक भेदभाव की जगह स्त्री के प्रति सकारात्मक पक्षपात की बात करता है। वस्तुतः इस रूप में देखा जाए तो स्त्री विमर्श अपने समय और समाज के जीवन की वास्तविकताओं तथा संभावनाओं को तलाश करने वाली दृष्टि है।"

▶ महिलाओं के प्रति न्याय और समानता स्थापित करने का प्रयास

स्त्री विमर्श की परिभाषाओं को देखने पर यह निष्कर्ष निकलता है कि स्त्री विमर्श एक सामाजिक और बौद्धिक आंदोलन है। जो समाज में महिलाओं की समानता, स्वतंत्रता और सशक्तिकरण सुनिश्चित करने पर केंद्रित है। इसका उद्देश्य पितृसत्तात्मक संरचनाओं और लैंगिक भेदभाव को समाप्त करना है। यह महिलाओं को उनके अधिकारों

और आत्मनिर्णय का अधिकार देने के साथ-साथ लैंगिक भूमिकाओं पर पुनर्विचार करने की वकालत करता है। स्त्री विमर्श सांस्कृतिक और ऐतिहासिक विविधताओं को ध्यान में रखते हुए महिलाओं के प्रति न्याय और समानता स्थापित करने का प्रयास करता है।

1.1.3 स्त्री विमर्श का स्वरूप

बीसवीं सदी के अंतिम दो दशकों में तथा 21वीं सदी की प्रारंभ में स्त्रियों के समस्याओं पर विश्व भर के बुद्धिजीवी एवं समाज सुधारकों और राजनीतिज्ञों में चर्चा शुरू हुई थी। इसके पूर्व भी इस विषय पर चर्चा हो रही थी। वैसे देखा जाए तो स्त्रियों की अवस्था को लेकर 19वीं सदी से ही चिंतन शुरू हो गया था। अतः सदियों से होते आए शोषण और दमन के प्रति स्त्री चेतना ने ही स्त्री विमर्श को जन्म दिया है। स्त्री विमर्श वस्तुतः स्वाधीनता प्राप्ति के बाद की संकल्पना है। स्त्री विमर्श और कुछ नहीं आत्म चेतना, आत्म सम्मान, आत्म गौरव, समता और समान अधिकार की पहल का दूसरा नाम है।

स्त्री विमर्श एक वैचारिक आंदोलन है। यह आंदोलन स्त्रियों के अधिकारों की मांग करते हुए स्त्री मुक्ति चाहता है और वह आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक, वैचारिक एवं लिंग केंद्रित विभेदों को अस्वीकार कर समान मानवीय अधिकारों की भी मांग करता है। सच तो यह है कि स्त्री को अपने अस्तित्व की दिशा ने विमर्श की प्रेरणा दी। आत्म समर्पण और पुरुष की एकाधिकार के माहौल में स्त्री को बाहर लाने का श्रेय स्त्री विमर्श को ही देना पड़ेगा। स्त्री विमर्श स्त्री को भी सारे अधिकार दिलवाने की चेष्टा है, जो पुरुषों को सदियों से प्राप्त है लेकिन स्त्री को हमेशा उनसे वंचित रखा गया है। वर्तमान में वह अपना स्वतंत्र अस्तित्व, स्वतंत्र व्यक्तित्व और साथ ही साथ स्वतंत्र निर्णय लेना चाहती है। उसकी अपनी आत्म- निर्भरता उसकी अस्मिता की पहचान है।

▶ आत्म समर्पण और पुरुष की एकाधिकार के माहौल में स्त्री को बाहर लाने का श्रेय स्त्री विमर्श को ही देना पड़ेगा

आज समाज में स्त्रियां केवल जनसंख्या का हिस्सा बनकर गिनती में नहीं रहना चाहतीं। बल्कि वे भी पुरुषों की तरह समाज और परिवार में मनुष्य बनकर केंद्र में आना चाहती हैं। इसके लिए स्त्री अपने अस्तित्व की लड़ाई आरंभ कर चुकी है। इस संघर्ष और लड़ाई को स्त्री विमर्श का नाम दे दिया है। इस संघर्ष में स्त्री से जुड़े हुए सभी मुद्दे शामिल है जो वर्षों से इन्हें समझ में लिंग के आधार पर झेलना पड़े हैं। आज जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में स्त्रियों ने पुरुषों की तरह अपने अधिकारों की मांग करनी प्रारंभ कर दी है और यह मांग एक प्रकार की सामाजिक आंदोलन के रूप में उभरी है। यह आंदोलन लैंगिक भेदभाव को स्वीकार नहीं करता है। स्त्री विमर्श में मध्यवर्गीय स्त्री का पूरा संघर्ष प्रमुख रूप से लैंगिक समानता, शारीरिक शोषण, सामाजिक स्वतंत्रता से लेकर आर्थिक स्वतंत्रता तक सिमटा हुआ है। इस धारा की उत्पत्ति मुख्यतः पितृ सत्तात्मक व्यवस्था के विरोध के परिणाम स्वरूप उत्पन्न हुई है। परंतु स्त्री विमर्श अपने सवालों के कटघरे में पुरुष को नहीं रखता बल्कि समस्त पुरुष व्यवस्था को खड़ा करता है। अतः कहा जा सकता है कि स्त्री विमर्श का स्वरूप पितृसत्ता के इर्द-गिर्द ही खड़ा रहता है।

▶ आज जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में स्त्रियों ने पुरुषों की तरह अपने अधिकारों की मांग करनी प्रारंभ कर दी है

1.1.4 उद्देश्य

स्त्री विमर्श का उद्देश्य समाज में स्त्रियों की स्थिति को समझने, सुधारने और उनके अधिकारों को सुनिश्चित करने से जुड़ा है। यह एक सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक और आर्थिक आंदोलन है, जिसका लक्ष्य समाज में लिंग आधारित असमानताओं को समाप्त करना और स्त्रियों को समान अधिकार, अवसर और सम्मान दिलाना है। इसके प्रमुख उद्देश्यों को निम्नलिखित बिंदुओं में विस्तृत किया जा सकता है:

1. लैंगिक समानता की स्थापना

▶ पुरुष और स्त्री के बीच समानता स्थापित करना

स्त्री विमर्श का प्राथमिक उद्देश्य पुरुष और स्त्री के बीच समानता स्थापित करना है। यह न केवल कानून और संविधान के स्तर पर बल्कि व्यवहार, परंपराओं और मानसिकता में भी बदलाव लाने का प्रयास करता है।

2. महिला सशक्तिकरण

स्त्री विमर्श महिलाओं को आत्मनिर्भर और स्वतंत्र बनाने की दिशा में कार्य करता है। इसमें शिक्षा, रोज़गार, स्वास्थ्य, और आर्थिक स्वावलंबन पर विशेष ध्यान दिया जाता है ताकि महिलाएँ अपने निर्णय खुद ले सकें।

3. पितृसत्तात्मक व्यवस्था का विरोध

▶ पितृसत्तात्मक व्यवस्था को चुनौती देता

पितृसत्तात्मक समाज में महिलाओं को अक्सर द्वितीय स्थान दिया जाता है। स्त्री विमर्श इस व्यवस्था को चुनौती देता है और समाज को ऐसा ढांचा प्रदान करने की वकालत करता है जिसमें सभी लिंगों को समान अवसर और अधिकार मिलें।

4. महिलाओं के प्रति हिंसा और भेदभाव का अंत

▶ स्त्रियों के प्रति हो रहे शारीरिक, मानसिक और आर्थिक शोषण को समाप्त करना

स्त्रियों के प्रति हो रहे शारीरिक, मानसिक और आर्थिक शोषण को समाप्त करना भी इसका एक प्रमुख उद्देश्य है। इसमें घरेलू हिंसा, कार्यस्थल पर शोषण, दहेज प्रथा और यौन उत्पीड़न जैसी समस्याओं का समाधान खोजना शामिल है।

5. महिलाओं की आवाज़ को पहचान दिलाना

▶ महिलाओं की आवाज़ को मुख्यधारा में लाने का प्रयास

स्त्री विमर्श महिलाओं की आवाज़ को मुख्यधारा में लाने का प्रयास करता है। यह उनके अनुभवों, समस्याओं और विचारों को महत्व देता है और समाज में उनकी भूमिका को सशक्त करता है।

6. संस्कृति और परंपरा में सुधार

▶ परंपरा और संस्कृति के नाम पर महिलाओं पर लगाए गए प्रतिबंधों और रूढ़िवादिता को चुनौती देना

परंपरा और संस्कृति के नाम पर महिलाओं पर लगाए गए प्रतिबंधों और रूढ़िवादिता को चुनौती देना स्त्री विमर्श का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। यह परंपराओं को स्त्री के अनुकूल बनाने की वकालत करता है।

7. न्याय और अधिकारों की गारंटी

स्त्री विमर्श महिलाओं को न्याय दिलाने और उनके मूलभूत अधिकारों की रक्षा सुनिश्चित करने की दिशा में कार्य करता है। यह समाज में व्याप्त हर उस ढांचे का विरोध करता है जो महिलाओं के अधिकारों को सीमित करता है।

8. समग्र विकास का समर्थन

स्त्री विमर्श मानता है कि महिलाओं की प्रगति के बिना समाज और देश का संपूर्ण विकास संभव नहीं है। अतः इसका उद्देश्य महिलाओं को सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक दृष्टि से सबल बनाना है।

▶ स्त्री विमर्श केवल स्त्रियों के लिए नहीं, बल्कि समग्र मानवता के लिए है

स्त्री विमर्श केवल स्त्रियों के लिए नहीं, बल्कि समग्र मानवता के लिए है। यह एक ऐसे समाज की परिकल्पना करता है, जिसमें स्त्री और पुरुष दोनों के लिए समान अवसर, सम्मान और अधिकार हों। यह समाज में संतुलन और सामंजस्य स्थापित करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

Summarised Overview / संक्षिप्त अवलोकन

स्त्री विमर्श का मुख्य उद्देश्य महिलाओं को समान अधिकार, स्वतंत्रता और सम्मान दिलाना है। यह महिलाओं और पुरुषों के बीच समानता को बढ़ावा देता है, ताकि महिलाएँ सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक क्षेत्रों में बराबरी से भाग ले सकें। स्त्री विमर्श पितृसत्ता और भेदभावपूर्ण परंपराओं को चुनौती देता है, ताकि महिलाओं को उनके अधिकारों और स्वतंत्रता के बारे में जागरूक किया जा सके।

यह आंदोलन शिक्षा, आर्थिक आत्मनिर्भरता और राजनीतिक भागीदारी पर ज़ोर देता है, जिससे महिलाएँ सशक्त बनें। इसके अलावा, यह महिलाओं के स्वास्थ्य, मातृत्व लाभ और प्रजनन अधिकारों की रक्षा करता है, साथ ही दहेज प्रथा, बाल विवाह और यौन शोषण जैसी सामाजिक कुप्रथाओं को समाप्त करने का प्रयास करता है।

अंत में, स्त्री विमर्श का उद्देश्य एक ऐसा समाज स्थापित करना है, जिसमें सभी लिंगों के बीच समानता और न्याय हो, और हर व्यक्ति को समान सम्मान मिले।

Assignment / प्रदत्त कार्य

1. स्त्री विमर्श के प्रमुख उद्देश्यों को संक्षेप में स्पष्ट करें।
2. स्त्री विमर्श के प्रभावों का विश्लेषण करते हुए यह बताएँ कि इसने महिलाओं के आत्मसम्मान और स्वायत्तता में किस प्रकार योगदान दिया है।

Reference / संदर्भ ग्रंथ

1. स्त्री मुक्ति का सपना - सं. कमला प्रसाद, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली
2. स्त्री संघर्ष का इतिहास - सं. राधा कुमार, वाणी प्रकाशन
3. उपनिवेश में स्त्री - प्रभा खेतान, राजकमल प्रकाशन
4. स्त्री परंपरा और आधुनिकता - सं. राज किशोर, वाणी प्रकाशन
5. स्त्री सशक्तिकरण की दिशा - रेखा कसतवार, राजकमल प्रकाशन
6. बाजार के बीच बाजार के खिलाफ - प्रभा खेतान, वाणी प्रकाशन

Suggested Reading / निर्धारित पुस्तक

1. स्त्री मुक्ति : संघर्ष और इतिहास - रमणिका गुप्ता
2. उपनिवेश में स्त्री - प्रभा खेतान
3. लिहाफ - इस्मत चुगताई

Space for Learner Engagement for Objective Questions

Learners are encouraged to develop objective questions based on the content in the paragraph as a sign of their comprehension of the content. The Learners may reflect on the recap bullets and relate their understanding with the narrative in order to frame objective questions from the given text. The University expects that 1 - 2 questions are developed for each paragraph. The space given below can be used for listing the questions.

SGOU

इकाई 2

स्त्री विमर्श की वैचारिक पृष्ठभूमि- स्त्री विमर्श प्रेरणा एवं प्रभाव

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- स्त्री विमर्श की वैचारिक पृष्ठभूमि को समझता है
- स्त्री विमर्श के दार्शनिक संदर्भ समझता है
- साहित्य, कला, और सांस्कृतिक संदर्भों में स्त्री विमर्श के योगदान और प्रभाव को पहचानता है
- वैश्विक नारीवादी आंदोलनों और भारतीय स्त्री विमर्श के बीच समानताएँ और अंतर को समझता है
- स्त्री विमर्श के विभिन्न आयामों जैसे शिक्षा, रोजगार, और राजनीतिक भागीदारी के बारे में समझता है

Background / पृष्ठभूमि

स्त्री विमर्श समाज में महिलाओं की स्थिति, उनके अधिकारों और उनके साथ होने वाले भेदभाव के खिलाफ एक सशक्त आंदोलन है, जिसकी जड़ें इतिहास, साहित्य और सामाजिक सुधार आंदोलनों में गहराई से जुड़ी हुई हैं। भारतीय संदर्भ में यह वैदिक युग की स्त्रियों की स्वतंत्रता और समानता से लेकर मध्यकालीन समाज में उनके अधिकारों के ह्रास तक के अनुभवों को समेटे हुए है। 19वीं शताब्दी में राजा राममोहन राय, सावित्रीबाई फुले और ईश्वर चंद्र विद्यासागर जैसे सुधारकों ने महिलाओं की शिक्षा, दहेज प्रथा, सती प्रथा, और बाल विवाह जैसे मुद्दों पर काम करके स्त्री चेतना को नई दिशा दी। पश्चिम में सिमोन द बउवार और वर्जीनिया वुल्फ जैसे विचारकों ने स्त्री अधिकारों और उनकी समानता की वैश्विक बहस को प्रेरित किया। आधुनिक समय में शिक्षा, रोजगार, और राजनीतिक जागरूकता ने स्त्री विमर्श को और मजबूत बनाया है। यह विमर्श न केवल महिलाओं की समस्याओं को उजागर करता है, बल्कि उनके सशक्तिकरण और समाज में बराबरी के अधिकारों के लिए एक सशक्त मंच भी प्रदान करता है।

Keywords / मुख्य बिन्दु

स्त्री विमर्श, नारीवादी आंदोलन, पितृसत्तात्मक व्यवस्था, महिला सशक्तिकरण, वैश्विक नारीवाद

Discussion / चर्चा

1.2.1 स्त्री विमर्श की वैचारिक पृष्ठभूमि

स्त्री विमर्श एक महत्वपूर्ण सामाजिक, सांस्कृतिक, और राजनीतिक आंदोलन है, जो महिलाओं के अधिकारों, समानता और स्वतंत्रता को स्थापित करने के उद्देश्य से उभरा है। इसकी वैचारिक पृष्ठभूमि को समझने के लिए हमें इसके ऐतिहासिक, दार्शनिक, और सामाजिक संदर्भों पर गहराई से विचार करना होगा।

1.2.1.1 स्त्री विमर्श के ऐतिहासिक संदर्भ

स्त्री विमर्श की पाश्चात्य ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

पाश्चात्य स्त्री विमर्श का इतिहास महिलाओं के अधिकारों और समानता के संघर्ष की एक लंबी गाथा है। यह सामाजिक, राजनीतिक, और आर्थिक बदलावों के संदर्भ में उभरकर आधुनिक नारीवादी दृष्टिकोण का आधार बना। स्त्री विमर्श के विकास को ऐतिहासिक रूप से तीन प्रमुख लहरों में विभाजित किया गया है, जिनमें हर लहर ने महिलाओं की समस्याओं के अलग-अलग पहलुओं पर ध्यान केंद्रित किया।

पहली लहर (19वीं और 20वीं शताब्दी की शुरुआत)

- स्त्री विमर्श की पहली लहर महिलाओं के मतदान के अधिकार (सफ्रजेट आंदोलन) और संपत्ति के अधिकार जैसे बुनियादी अधिकारों पर केंद्रित थी

स्त्री विमर्श की पहली लहर महिलाओं के मतदान के अधिकार (सफ्रजेट आंदोलन) और संपत्ति के अधिकार जैसे बुनियादी अधिकारों पर केंद्रित थी। 1848 में न्यूयॉर्क के सेनेका फॉल्स सम्मेलन में महिलाओं के अधिकारों के लिए पहली बार संगठित प्रयास किए गए। इस आंदोलन का नेतृत्व एलिज़ाबेथ कैडी स्टैंटन और सुसान बी. एंथनी जैसी महिलाओं ने किया। 1920 में अमेरिका में 19वें संविधान संशोधन के माध्यम से महिलाओं को मतदान का अधिकार मिला। इस लहर ने महिलाओं की राजनीतिक और कानूनी समानता का मार्ग प्रशस्त किया।

दूसरी लहर (1960-1980)

- सिमोन द बोउआर की पुस्तक The Second Sex (1949) और बेट्टी फ्राइडन की The Feminine Mystique (1963) ने महिलाओं को समाज में उनकी स्थिति पर पुनर्विचार करने के लिए प्रेरित किया

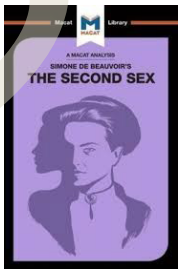

दूसरी लहर स्त्री विमर्श महिलाओं के जीवन के व्यापक सामाजिक और आर्थिक मुद्दों पर केंद्रित थी। इसमें कार्यस्थल पर समानता, प्रजनन अधिकार (गर्भनिरोधक और गर्भपात), और यौन उत्पीड़न जैसे मुद्दे प्रमुख रहे। **सिमोन द बोउआर** की पुस्तक *The Second Sex* (1949) और **बेट्टी फ्राइडन** की *The Feminine Mystique* (1963) ने महिलाओं को समाज में उनकी स्थिति पर पुनर्विचार करने के लिए प्रेरित किया। इस दौर में गर्भनिरोधक गोलियों की उपलब्धता और समान काम के लिए समान वेतन जैसे कानून बनाए गए।

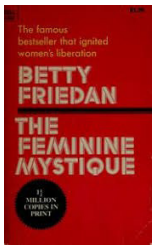

तीसरी लहर (1990 के दशक के बाद)

▶ तीसरी लहर स्त्री विमर्श ने महिलाओं के बहुसांस्कृतिक और बहुआयामी अनुभवों को संबोधित किया

तीसरी लहर स्त्री विमर्श ने महिलाओं के बहुसांस्कृतिक और बहुआयामी अनुभवों को संबोधित किया। इसमें नस्ल, वर्ग, जातीयता और लैंगिक पहचान के आधार पर महिलाओं के साथ होने वाले भेदभाव पर ध्यान केंद्रित किया गया। **किम्बर्ले क्रेंशॉ** द्वारा प्रस्तुत 'इंटरसेक्शनलिटी' (Intersectionality) की अवधारणा ने महिलाओं की समस्याओं को उनकी विविध पहचानों के साथ जोड़ा। इस लहर में #MeToo आंदोलन और LGBTQ+ अधिकारों को भी शामिल किया गया, जिसने महिलाओं की स्वतंत्रता और सुरक्षा के लिए वैश्विक स्तर पर चर्चा को बढ़ावा दिया।

इसके अलावा फ्रांसीसी क्रांति (1789) ने भी स्त्री विमर्श को प्रेरित किया, जब **ओलंप द गॉज** ने Declaration of the Rights of Woman and the Female Citizen लिखकर महिलाओं के अधिकारों की मांग की। औद्योगिक क्रांति के दौरान महिलाएँ श्रम बाजार में शामिल हुईं, लेकिन उन्हें कम वेतन और भेदभाव का सामना करना पड़ा। साहित्य और कला में भी पाश्चात्य स्त्री विमर्श का योगदान रहा, जिसमें **वर्जीनिया वुल्फ** की A Room of One's Own ने महिलाओं की आर्थिक और रचनात्मक स्वतंत्रता पर ज़ोर दिया।

स्त्री विमर्श के भारतीय ऐतिहासिक संदर्भ

▶ भारतीय स्त्री विमर्श में ऐतिहासिक संदर्भ चार प्रमुख कालों में विभाजित किया जा सकता है

भारतीय समाज में स्त्री विमर्श का इतिहास महिलाओं की स्थिति, अधिकारों और उनके प्रति सामाजिक दृष्टिकोण में बदलाव की कहानी है। यह विमर्श प्राचीन काल से लेकर आधुनिक समय तक महिलाओं के सामाजिक, धार्मिक, और राजनीतिक जीवन के विभिन्न पहलुओं को प्रभावित करता रहा है। भारतीय स्त्री विमर्श में ऐतिहासिक संदर्भ चार प्रमुख कालों में विभाजित किया जा सकता है।

प्राचीन काल (वैदिक युग)

▶ प्राचीन भारतीय समाज में महिलाओं को एक सम्मानजनक और स्वतंत्र स्थान प्राप्त था

प्राचीन भारतीय समाज में महिलाओं को एक सम्मानजनक और स्वतंत्र स्थान प्राप्त था। वैदिक युग में महिलाएँ शिक्षित थीं और धार्मिक अनुष्ठानों में सक्रिय रूप से भाग लेती थीं। **गार्गी**, **मैत्रेयी** और **अपाला** जैसी विदुषी महिलाओं ने दार्शनिक चर्चाओं में योगदान दिया। उन्हें संपत्ति और शिक्षा का अधिकार प्राप्त था। इस युग में समाज महिलाओं को 'अर्धांगिनी' के रूप में देखता था, जो यह दर्शाता है कि वे पुरुषों के समान थीं।

मध्यकाल (पतन का युग)

मध्यकालीन भारत में महिलाओं की स्थिति में गिरावट आई। इस दौर में महिलाओं पर कई सामाजिक प्रतिबंध लगाए गए, जैसे **पर्दा प्रथा**, **सती प्रथा**, **बाल विवाह**, और **देवदासी प्रथा**। इस समय महिलाओं को शिक्षित होने और स्वतंत्र रूप से निर्णय लेने के अधिकार से वंचित कर दिया गया। इस युग में महिलाओं को पुरुषों के अधीनस्थ माना

जाने लगा, और उनकी स्वतंत्रता सीमित कर दी गई।

औपनिवेशिक काल (सुधार आंदोलनों का युग)

औपनिवेशिक काल में महिलाओं की स्थिति में सुधार लाने के लिए कई सामाजिक और धार्मिक सुधार आंदोलन शुरू हुए। **राजा राममोहन राय** ने सती प्रथा के उन्मूलन के लिए संघर्ष किया, जिसके परिणामस्वरूप 1829 में सती प्रथा को गैरकानूनी घोषित किया गया। **ईश्वर चंद्र विद्यासागर** ने विधवा पुनर्विवाह और महिला शिक्षा को बढ़ावा दिया। **सावित्रीबाई फुले** ने महिलाओं और दलितों के लिए शिक्षा के क्षेत्र में क्रांतिकारी कार्य किए। **पंडिता रमाबाई** ने महिलाओं की शिक्षा और अधिकारों के लिए काम किया। इस दौर में महिलाओं के अधिकारों को लेकर जागरूकता बढ़ी और बाल विवाह, दहेज प्रथा और अन्य सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ आंदोलन तेज हुए।

- 1829 में सती प्रथा को गैरकानूनी घोषित किया गया

स्वतंत्रता संग्राम और महिलाओं की भूमिका

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के दौरान महिलाओं ने सक्रिय भूमिका निभाई। **सरोजिनी नायडू, कस्तूरबा गांधी, अरुणा आसफ अली,** और **कमला देवी चट्टोपाध्याय** जैसी महिलाओं ने नेतृत्व के स्थान पर अपनी महत्वपूर्ण उपस्थिति दर्ज कराई। इस समय महिलाओं ने न केवल राष्ट्रीय आंदोलनों में भाग लिया, बल्कि सामाजिक सुधार और सशक्तिकरण की दिशा में भी कार्य किया। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान महिलाओं की भागीदारी ने उन्हें समाज में सम्मान और पहचान दिलाई।

- भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के दौरान महिलाओं ने सक्रिय भूमिका निभाई

आधुनिक काल (स्वतंत्रता के बाद)

स्वतंत्रता के बाद भारतीय संविधान ने महिलाओं के लिए समानता और न्याय की गारंटी दी। भारतीय संविधान के अनुच्छेद 14 में स्त्रियों को समानता का अधिकार दिया गया। अनुच्छेद 15 में लिंग के आधार पर भेदभाव का निषेध किया गया। अनुच्छेद 39 में समान काम के लिए समान वेतन का नियम बनाया। महिला शिक्षा और रोजगार के लिए विभिन्न योजनाएँ चलाई गईं। महिलाओं के लिए आरक्षण, कार्यस्थल पर यौन उत्पीड़न के खिलाफ कानून, और महिला सशक्तिकरण से जुड़े कार्यक्रम लागू किए गए। हाल के दशकों में MeToo आंदोलन और महिलाओं के अधिकारों से जुड़े अन्य मुद्दों ने भारतीय स्त्री विमर्श को और अधिक प्रासंगिक बनाया है।

- स्वतंत्रता के बाद भारतीय संविधान ने महिलाओं के लिए समानता और न्याय की गारंटी दी

स्त्री विमर्श का ऐतिहासिक संदर्भ यह दिखाता है कि महिलाओं की स्थिति समय के साथ बदलती रही है। यह विमर्श केवल महिलाओं के अधिकारों की मांग तक सीमित नहीं है, बल्कि समाज में लैंगिक समानता और न्याय के व्यापक लक्ष्यों को भी साधता है। आज स्त्री विमर्श न केवल महिलाओं को सशक्त बनाने का माध्यम है, बल्कि एक समतामूलक समाज के निर्माण की दिशा में प्रयासरत है।

1.2.1.2 स्त्री विमर्श के दार्शनिक संदर्भ

स्त्री विमर्श के दार्शनिक संदर्भ समाज में महिलाओं की स्थिति, अधिकार, और अस्तित्व पर विचार करने का एक गहन दृष्टिकोण प्रदान करते हैं। यह विमर्श केवल

▶ महिलाओं के अधिकारों और पहचान की पुनर्रचना की बात करता है

महिलाओं के प्रति समाज के दृष्टिकोण का विश्लेषण नहीं करता, बल्कि उनके अधिकारों और पहचान की पुनर्रचना की भी बात करता है। दार्शनिक दृष्टि से स्त्री विमर्श में महिला स्वतंत्रता, लैंगिक समानता, और पितृसत्तात्मक व्यवस्था के खिलाफ आवाज़ उठाने का प्रयास शामिल है।

दार्शनिक आधार: समानता और स्वतंत्रता

▶ जॉन स्टुअर्ट मिल जैसे विचारकों ने महिलाओं के लिए समान अधिकार और स्वतंत्रता की वकालत की

स्त्री विमर्श के दार्शनिक संदर्भ में समानता और स्वतंत्रता के मूलभूत विचार शामिल हैं। जॉन स्टुअर्ट मिल जैसे विचारकों ने महिलाओं के लिए समान अधिकार और स्वतंत्रता की वकालत की। उनकी पुस्तक The Subjection of Women महिलाओं की स्वतंत्रता और सामाजिक समानता पर आधारित है। सिमोन द बोउआर ने अपनी पुस्तक The Second Sex (1949) में महिलाओं को 'अन्य' (The Other) के रूप में देखा और कहा कि समाज ने महिलाओं को पुरुषों के अधीनस्थ बना दिया है। उन्होंने महिलाओं के अस्तित्व और स्वतंत्रता पर ज़ोर दिया।

पितृसत्ता का दार्शनिक विश्लेषण

▶ स्त्री विमर्श पितृसत्ता के तंत्र को चुनौती देता है और इसे खत्म करने के उपायों पर विचार करता है

दार्शनिक दृष्टि से पितृसत्ता (Patriarchy) को पुरुषों के प्रभुत्व वाले एक ऐसे सामाजिक ढांचे के रूप में देखा गया है, जिसमें महिलाओं की स्वतंत्रता और अधिकारों को सीमित किया जाता है। केट मिलेट ने अपनी पुस्तक Sexual Politics में बताया कि पितृसत्तात्मक व्यवस्था केवल सामाजिक नहीं, बल्कि राजनीतिक संरचना भी है, जो महिलाओं को अधीन बनाए रखने के लिए स्थापित की गई है। इस संदर्भ में स्त्री विमर्श पितृसत्ता के तंत्र को चुनौती देता है और इसे खत्म करने के उपायों पर विचार करता है।

अस्तित्ववाद और स्त्री विमर्श

अस्तित्ववाद ने स्त्री विमर्श को गहरा दार्शनिक आधार दिया। सिमोन द बोउआर ने अस्तित्ववादी दृष्टिकोण से यह तर्क दिया कि 'महिला पैदा नहीं होती, बल्कि बनाई जाती है। उन्होंने यह समझाने का प्रयास किया कि कैसे सांस्कृतिक और सामाजिक संरचनाएँ महिलाओं की भूमिका और अस्तित्व को परिभाषित करती हैं। अस्तित्ववादी दृष्टि में स्त्री विमर्श महिलाओं को अपनी पहचान, स्वतंत्रता और अस्तित्व को परिभाषित करने का अधिकार देता है।

इंटरसेक्शनलिटी और दार्शनिक दृष्टिकोण

दार्शनिक दृष्टि से स्त्री विमर्श केवल लैंगिक असमानता तक सीमित नहीं है, बल्कि यह महिलाओं की समस्याओं को नस्ल, वर्ग, जातीयता, और अन्य सामाजिक संरचनाओं के साथ जोड़कर देखता है। किम्बर्ले क्रेंशॉ द्वारा प्रस्तुत 'इंटरसेक्शनलिटी' का सिद्धांत बताता है कि महिलाओं के अनुभव बहुआयामी होते हैं और उन्हें केवल एक पहलू से समझा नहीं जा सकता। इस दृष्टिकोण से स्त्री विमर्श बहुआयामी असमानताओं को पहचानने और उनके समाधान की बात करता है।

नारीवाद और न्याय

- दार्शनिक दृष्टिकोण से नारीवाद का मुख्य उद्देश्य महिलाओं के साथ न्याय स्थापित करना है

दार्शनिक दृष्टिकोण से नारीवाद का मुख्य उद्देश्य महिलाओं के साथ न्याय स्थापित करना है। मार्था नुसबौम ने Capabilities Approach। का सुझाव दिया, जिसमें हर व्यक्ति (महिलाओं सहित) को अपनी क्षमताओं का विकास करने और अपने जीवन के बारे में स्वतंत्र निर्णय लेने का अधिकार है। यह दृष्टिकोण महिलाओं को उनके व्यक्तिगत और सामाजिक विकास में समान अवसर देने की बात करता है।

भारतीय संदर्भ में दार्शनिक दृष्टि

- भारतीय नारीवाद ने महिलाओं के अधिकारों को धर्म, जाति और वर्ग के व्यापक संदर्भ में देखा है

भारतीय दर्शन में स्त्री विमर्श के कई आधार मिलते हैं। प्राचीन भारतीय ग्रंथों में गार्गी और मैत्रेयी जैसे दार्शनिकों ने स्त्री स्वतंत्रता और ज्ञान की चर्चा की। सावित्रीबाई फुले और डॉ. भीमराव अंबेडकर ने भारतीय संदर्भ में महिलाओं की शिक्षा और सामाजिक समानता के लिए दार्शनिक दृष्टिकोण प्रस्तुत किया। भारतीय नारीवाद ने महिलाओं के अधिकारों को धर्म, जाति और वर्ग के व्यापक संदर्भ में देखा है।

आधुनिक और वैश्विक संदर्भ

आधुनिक समय में स्त्री विमर्श केवल महिलाओं के अधिकारों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह वैश्विक स्तर पर लैंगिक समानता, यौनिक स्वतंत्रता, और महिलाओं के लिए न्यायपूर्ण समाज की स्थापना की बात करता है। MeToo आंदोलन और LGBTQ+ अधिकारों को इस विमर्श का हिस्सा माना जाता है।

- विमर्श लैंगिक समानता, स्वतंत्रता, और न्याय को व्यापक संदर्भ में स्थापित करने का प्रयास करता है

स्त्री विमर्श का दार्शनिक संदर्भ यह समझाने का प्रयास करता है कि महिलाओं की समस्याएँ केवल सामाजिक या व्यक्तिगत मुद्दे नहीं हैं, बल्कि ये गहराई से जुड़े दार्शनिक प्रश्न हैं। यह विमर्श लैंगिक समानता, स्वतंत्रता, और न्याय को व्यापक संदर्भ में स्थापित करने का प्रयास करता है। भारतीय और पाश्चात्य दार्शनिकों के विचार इस विमर्श को और अधिक प्रासंगिक बनाते हैं, जिससे समाज में महिलाओं के लिए एक समतामूलक और न्यायपूर्ण वातावरण का निर्माण किया जा सके।

1.2.1.3 सामाजिक संदर्भ में स्त्री विमर्श

सामाजिक संदर्भ में स्त्री विमर्श को देखें तो इसमे भी कई मुद्दे आते हैं जैसे

पारिवारिक ढांचा और स्त्रियों की स्थिति

- परंपरागत भारतीय समाज में परिवार में स्त्रियों की भूमिका घर की देखभाल और परिवार की सेवा तक सीमित रही

पारिवारिक ढांचे में स्त्रियों की स्थिति का निर्धारण समाज की पितृसत्तात्मक सोच से हुआ है। परंपरागत भारतीय समाज में परिवार एक सामूहिक इकाई है, जहाँ स्त्रियों की भूमिका घर की देखभाल और परिवार की सेवा तक सीमित रही। यह सोच स्त्रियों को केवल एक पत्नी, माँ, बेटी, या बहू के रूप में परिभाषित करती है, जो घरेलू कार्यों और बच्चों की परवरिश की जिम्मेदारी निभाती हैं।

स्त्रियों को आर्थिक और सामाजिक रूप से पुरुषों पर निर्भर रखा गया। उनकी शिक्षा और करियर की संभावनाओं को कमतर आँका गया। उन्हें परिवार की 'इज्जत' का

▶ शिक्षा और रोजगार के माध्यम से महिलाएँ आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बन रही हैं

प्रतीक मानते हुए उनके पहनावे, व्यवहार, और स्वतंत्रता पर सामाजिक नियमों का दबाव डाला गया। स्त्री विमर्श ने इस पारंपरिक ढांचे को चुनौती दी। उसने महिलाओं को आत्मनिर्णय का अधिकार दिलाने की दिशा में प्रयास किए। शिक्षा और रोजगार के माध्यम से महिलाएँ आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बन रही हैं। इसके परिणामस्वरूप वे पारिवारिक निर्णयों में अधिक सक्रिय भूमिका निभा रही हैं।

आधुनिक परिवारों में, घरेलू काम और बच्चों की परवरिश में पुरुषों की भागीदारी बढ़ी है। घरेलू हिंसा, दहेज प्रथा, और भेदभाव के खिलाफ बनाए गए कानूनों ने स्त्रियों को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक किया। हालाँकि, ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में समानता की दिशा में प्रगति भिन्न है। कई स्थानों पर स्त्रियाँ अब भी पारंपरिक भूमिकाओं तक सीमित हैं।

समाज को यह समझना होगा कि पारिवारिक ढांचे में स्त्रियों की समान भागीदारी न केवल आवश्यक है, बल्कि यह परिवार और समाज को मजबूत और संतुलित बनाने का आधार भी है।

शिक्षा और रोज़गार में समानता

▶ शिक्षा और रोज़गार किसी भी समाज के विकास के महत्वपूर्ण स्तंभ हैं

शिक्षा और रोज़गार किसी भी समाज के विकास के महत्वपूर्ण स्तंभ हैं। भारतीय समाज में परंपरागत रूप से महिलाओं को शिक्षा और रोजगार के समान अवसर नहीं दिए गए। उनकी भूमिका घरेलू कार्यों और परिवार की देखभाल तक सीमित रही। विशेष रूप से ग्रामीण और गरीब परिवारों में लड़कियों की शिक्षा को अनावश्यक समझा गया। इसके परिणामस्वरूप महिलाओं को न केवल आर्थिक रूप से बल्कि सामाजिक और मानसिक रूप से भी पुरुषों पर निर्भर बना दिया गया।

▶ स्त्री विमर्श ने शिक्षा और रोजगार में महिलाओं के अधिकारों को प्रमुखता से उठाया

स्त्री विमर्श ने शिक्षा और रोजगार में महिलाओं के अधिकारों को प्रमुखता से उठाया। इसके तहत महिलाओं को आत्मनिर्भर और सशक्त बनाने के लिए शिक्षा को प्राथमिकता दी गई। सरकारी योजनाओं जैसे 'सर्व शिक्षा अभियान' और 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' ने लड़कियों की शिक्षा को प्रोत्साहन दिया। शिक्षा में महिलाओं की बढ़ती भागीदारी के कारण वे अब केवल पारंपरिक पाठ्यक्रमों तक सीमित नहीं हैं, बल्कि विज्ञान, तकनीकी, और प्रबंधन जैसे क्षेत्रों में भी सक्रिय हो रही हैं।

रोजगार के क्षेत्र में भी महिलाओं ने अपनी मजबूत पहचान बनाई है। पारंपरिक भूमिकाओं से बाहर निकलते हुए महिलाएँ आज चिकित्सा, इंजीनियरिंग,

- महिलाओं को कार्यस्थल पर यौन उत्पीड़न, वेतन असमानता, और पदोन्नति में भेदभाव जैसी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है

राजनीति, और उद्यमिता जैसे क्षेत्रों में सक्रिय हैं। समान वेतन अधिनियम (1976) और मैटरनिटी बेनिफिट एक्ट (1961) जैसे कानूनों ने महिलाओं को कार्यस्थल पर समान अधिकार और सुरक्षा प्रदान की है। इसके बावजूद, उन्हें यौन उत्पीड़न, वेतन असमानता, और पदोन्नति में भेदभाव जैसी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है।

- ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में महिलाओं की शिक्षा और रोजगार की स्थिति में बड़ा अंतर है

ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में महिलाओं की शिक्षा और रोजगार की स्थिति में बड़ा अंतर है। जहाँ शहरी क्षेत्रों में महिलाएँ उच्च शिक्षा और कॉर्पोरेट जगत में अधिक सक्रिय हैं, वहीं ग्रामीण क्षेत्रों में अब भी बालिका शिक्षा और रोजगार के अवसर सीमित हैं। सामाजिक और आर्थिक बाधाएँ इन क्षेत्रों में महिलाओं की प्रगति में रुकावट पैदा करती हैं।

- शिक्षा और रोजगार में समानता न केवल महिलाओं को सशक्त बनाती है, बल्कि पूरे समाज के विकास का मार्ग प्रशस्त करती है

शिक्षा और रोजगार में समानता न केवल महिलाओं को सशक्त बनाती है, बल्कि पूरे समाज के विकास का मार्ग प्रशस्त करती है। स्त्री विमर्श ने इस दिशा में महत्वपूर्ण बदलाव लाए हैं, लेकिन चुनौतियों को पूरी तरह समाप्त करने के लिए समाज को अपनी मानसिकता बदलनी होगी। जब महिलाएँ शिक्षित और आत्मनिर्भर होंगी, तभी एक समतामूलक और प्रगतिशील समाज का निर्माण संभव हो सकेगा।

इन सब पर विचार करने पर यह जान सकते हैं कि स्त्री विमर्श केवल महिलाओं के अधिकारों की बात नहीं करता, बल्कि यह एक समतामूलक समाज की स्थापना का भी प्रयास है। यह समाज को यह समझने की दिशा में प्रेरित करता है कि महिलाओं की समानता और स्वतंत्रता से ही समाज का समग्र विकास संभव है। ऐतिहासिक, दार्शनिक, और सामाजिक संदर्भों को समझते हुए, यह आंदोलन आने वाले समय में भी समाज को प्रगतिशील बनाने की राह दिखाएगा।

1.2.2 स्त्री विमर्श - प्रेरणा एवं प्रभाव

स्त्री विमर्श एक व्यापक सामाजिक, सांस्कृतिक, और राजनीतिक आंदोलन है, जो महिलाओं के अधिकारों, स्वतंत्रता, और समानता को स्थापित करने के उद्देश्य से उभरा। इसकी प्रेरणा न केवल महिलाओं के साथ हो रहे ऐतिहासिक और सामाजिक अन्याय से प्राप्त हुई, बल्कि यह समाज को समतामूलक बनाने के लिए प्रगतिशील विचारधाराओं से भी प्रेरित है। इसके प्रभाव ने व्यक्तिगत, सामाजिक, आर्थिक, और राजनीतिक क्षेत्रों में महिलाओं की स्थिति में क्रांतिकारी बदलाव लाने का प्रयास किया।

स्त्री विमर्श के प्रेरणा और प्रभाव को अब विस्तार पूर्वक देखेंगे-

1.2.2.1 स्त्री विमर्श की प्रेरणा

- स्त्री विमर्श का उदय महिलाओं के अधिकारों, स्वतंत्रता, और समानता की मांग के साथ जुड़ा हुआ है

स्त्री विमर्श का उदय महिलाओं के अधिकारों, स्वतंत्रता, और समानता की मांग के साथ जुड़ा हुआ है। इसके पीछे अनेक सामाजिक, ऐतिहासिक, और वैचारिक कारण हैं, जिन्होंने इस आंदोलन को प्रेरित किया। पितृसत्तात्मक समाज की जकड़न, महिलाओं के साथ होने वाला भेदभाव, और उनके जीवन की असमानताएँ स्त्री विमर्श के लिए आधारभूत प्रेरणास्रोत बने। इसके अलावा, शिक्षा, जागरूकता, और वैश्विक आंदोलनों ने भी इस विमर्श को दिशा दी।

अब इस प्रेरणा स्रोत को एक एक करके समझने की कोशिश करेंगे

1.2.2.1.1 पितृसत्तात्मक समाज की जकड़न

- पितृसत्तात्मक सोच ने महिलाओं के जीवन के हर पहलू पर प्रभाव डाला है

पितृसत्तात्मक समाज वह समाज है, जहाँ पुरुषों को प्राथमिकता दी जाती है और महिलाओं को उनके मुकाबले अधीनस्थ माना जाता है। इस व्यवस्था में महिलाओं के अधिकारों और स्वतंत्रता को अक्सर सीमित किया जाता है। पितृसत्तात्मक सोच ने महिलाओं के जीवन के हर पहलू पर प्रभाव डाला है, जिससे उनका जीवन दमन और शोषण से भरा रहा है। स्त्री विमर्श की प्रेरणा का एक महत्वपूर्ण स्रोत इस पितृसत्तात्मक ढांचे की जकड़न है, जिसने महिलाओं को उनके मूल अधिकारों से वंचित रखा और उनके जीवन की स्वतंत्रता को नकारा।

पारंपरिक भूमिकाएँ और घरेलू दायित्व

- पितृसत्तात्मक समाज ने महिलाओं की भूमिका को केवल घर के कामकाजी दायित्वों तक सीमित कर दिया

पितृसत्तात्मक समाज ने महिलाओं की भूमिका को केवल घर के कामकाजी दायित्वों तक सीमित कर दिया। उन्हें परिवार की देखभाल, बच्चों की परवरिश, और पति की सेवा करने तक सीमित माना गया। इस दृष्टिकोण ने महिलाओं को अपने व्यक्तिगत सपनों, इच्छाओं और आकाँक्षाओं का पालन करने से रोका। उनके सामाजिक, शैक्षिक और पेशेवर विकास के अवसरों को नजरअंदाज किया गया, और उन्हें केवल पारिवारिक जीवन के दायित्वों तक बांधकर रखा गया।

निर्णय लेने का अधिकार

- पितृसत्तात्मक समाज में महिलाएँ अपने जीवन के महत्वपूर्ण फैसले खुद नहीं ले सकती थीं

पितृसत्तात्मक समाज में महिलाएँ अपने जीवन के महत्वपूर्ण फैसले खुद नहीं ले सकती थीं। उन्हें पारिवारिक मामलों में पुरुषों, विशेष रूप से पिता या पति की अनुमति और दिशा-निर्देश की आवश्यकता होती थी। विवाह, करियर, और जीवन के अन्य पहलुओं पर निर्णय लेने के लिए उनका स्वायत्त अधिकार सीमित था। यह स्थिति उनके आत्मनिर्भरता और आत्म-सम्मान को भी प्रभावित करती थी।

शिक्षा का अभाव

- शिक्षा की कमी ने महिलाओं को अपने अधिकारों के प्रति जागरूक नहीं होने दिया

पितृसत्तात्मक समाज में महिलाओं को शिक्षा से वंचित रखा गया। यह धारणा थी कि महिलाओं का मुख्य उद्देश्य परिवार की देखभाल करना है और शिक्षा केवल पुरुषों के लिए आवश्यक है। इसके परिणामस्वरूप, महिलाओं को समाज में अपनी स्थिति

को समझने, विचार व्यक्त करने और अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करने के लिए कोई औजार नहीं मिलते थे। शिक्षा की कमी ने महिलाओं को अपने अधिकारों के प्रति जागरूक नहीं होने दिया।

सामाजिक और सांस्कृतिक बाधाएँ

▶ महिलाओं पर कई तरह के सामाजिक दबाव डाले गए

समाज में पुरुषों का वर्चस्व स्थापित करने के लिए कई सांस्कृतिक और सामाजिक नियम बनाए गए। महिलाओं पर कई तरह के सामाजिक दबाव डाले गए, जैसे कि आदर्श पत्नी, माँ, और बहू की छवि। इन सीमाओं में बंधी महिलाओं के लिए अपनी वास्तविकता और इच्छाओं के अनुरूप जीना मुश्किल हो गया। पितृसत्तात्मक समाज ने महिलाओं को केवल परिवार और घर की दीवारों के भीतर सीमित किया, और उनके बाहर जाने और समाज में सक्रिय भूमिका निभाने को अवांछनीय या अस्वीकार्य माना।

कानूनी असमानताएँ

▶ महिलाओं के संपत्ति के अधिकारों, विवाह और तलाक जैसे मामलों में उनके साथ भेदभाव किया जाता था

पितृसत्तात्मक समाज में महिलाओं के खिलाफ कानूनी प्रावधानों की कमी या उन्हें नज़रअंदाज़ करना भी एक बड़ा मुद्दा था। महिलाओं के संपत्ति के अधिकारों, विवाह और तलाक जैसे मामलों में उनके साथ भेदभाव किया जाता था। उदाहरण के तौर पर, भारतीय समाज में महिला को संपत्ति पर अधिकार से वंचित रखा जाता था, और वे अपने पति के साथ जीवन बिताने के लिए मजबूर होती थीं। इसी तरह, तलाक या विधवा की स्थिति में महिलाओं को समाज से बहिष्कृत किया जाता था।

घरेलू हिंसा और शोषण

पितृसत्तात्मक समाज में महिलाओं के खिलाफ घरेलू हिंसा को भी एक सामान्य और स्वीकार्य प्रथा माना जाता था। पुरुषों के द्वारा महिलाओं को शारीरिक, मानसिक और यौन शोषण का सामना करना पड़ता था, और इसे समाज में सामान्य रूप से स्वीकार किया जाता था। महिलाएँ अपनी इस स्थिति को बदलने के लिए लड़ने में समर्थ नहीं होती थीं, क्योंकि उनके पास अपनी आवाज उठाने के लिए कोई कानूनी या सामाजिक समर्थन नहीं था।

▶ पितृसत्तात्मक समाज ने महिलाओं के जीवन को सीमित और नियंत्रित किया

पितृसत्तात्मक समाज ने महिलाओं के जीवन को सीमित और नियंत्रित किया, जिसके कारण उनका विकास रुक गया और उन्हें अपने अधिकारों के प्रति जागरूक होने का अवसर नहीं मिला। इस ढांचे ने स्त्री विमर्श की आवश्यकता को जन्म दिया, क्योंकि यह आंदोलन महिलाओं को उन सामाजिक और सांस्कृतिक बंधनों से मुक्त करने का प्रयास करता है, जो उन्हें स्वतंत्रता और समानता से वंचित करते हैं। स्त्री विमर्श ने यह सिद्ध किया है कि महिलाओं को अपने जीवन के फैसले लेने, शिक्षा प्राप्त करने, और सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक क्षेत्रों में समान अवसर प्राप्त करने का अधिकार है।

1.2.2.1.2 ऐतिहासिक अन्याय और कुप्रथाएँ

भारत सहित कई समाजों में स्त्रियों के खिलाफ ऐतिहासिक अन्याय और कुप्रथाओं

का लंबा इतिहास रहा है, जिन्होंने स्त्री विमर्श के विकास को प्रेरित किया। स्त्रियाँ सदियों तक भेदभाव, शोषण और असमानता का शिकार होती रही हैं। कई प्रथाएँ, परंपराएँ और सामाजिक संरचनाएँ महिलाओं को अपमानित करने, उनके अधिकारों का उल्लंघन करने और उनके जीवन को नियंत्रित करने के उद्देश्य से स्थापित की गईं। इन ऐतिहासिक अन्यायों और कुप्रथाओं ने महिलाओं के लिए अपने अधिकारों की रक्षा करना और समाज में समानता की लड़ाई लड़ना अनिवार्य बना दिया।

▶ स्त्रियाँ सदियों तक भेदभाव, शोषण और असमानता का शिकार होती रही हैं

बाल विवाह

भारत में बाल विवाह की कुप्रथा एक प्रमुख ऐतिहासिक अन्याय रही है। प्राचीन समय से ही कम उम्र में लड़कियों का विवाह कर दिया जाता था, जिससे उनका जीवन बाधित हो जाता था। वे मानसिक और शारीरिक रूप से विकसित नहीं होती थीं और विवाह के दबाव में अपने शारीरिक, मानसिक और शैक्षिक विकास में रुकावट महसूस करती थीं। बाल विवाह ने महिलाओं को आत्मनिर्भर बनने और अपने जीवन के फैसले लेने का अवसर नहीं दिया। इस कुप्रथा ने महिलाओं को शिक्षा और सामाजिक सशक्तिकरण से वंचित रखा।

▶ महिलाओं को शिक्षा और सामाजिक सशक्तिकरण से वंचित रखा

सती प्रथा

सती प्रथा एक और भयंकर कुप्रथा थी, जिसने भारतीय समाज में महिलाओं की स्थिति को नकारात्मक रूप से प्रभावित किया। इस प्रथा के अनुसार, जब एक पति की मृत्यु होती थी, तो पत्नी को उसकी चिता में जीवित जलकर मरने के लिए मजबूर किया जाता था। यह प्रथा महिलाओं के जीवन के अधिकार का गंभीर उल्लंघन था और उन्हें अत्याचार, शोषण और भय का शिकार बनाता था। समाज में महिलाओं को एक वस्तु की तरह देखा जाता था, जिसका कोई स्वतंत्र अस्तित्व नहीं था।

▶ यह प्रथा महिलाओं के जीवन के अधिकार का गंभीर उल्लंघन था

विधवाओं की स्थिति

विधवाओं को भारतीय समाज में अक्सर अपमान और बहिष्कार का सामना करना पड़ता था। उन्हें समाज में 'अशुद्ध' माना जाता था और उनका जीवन अवांछनीय समझा जाता था। विधवा होने के बाद महिलाओं को सामाजिक सुरक्षा, प्रेम और स्नेह से वंचित कर दिया जाता था। उन्हें आम तौर पर समाज से बाहर किया जाता था, और उन्हें कई प्रकार के शारीरिक और मानसिक यातनाओं का सामना करना पड़ता था। इसके कारण, महिलाओं को यह अनुभव होता था कि उनका अस्तित्व केवल उनके पति के अस्तित्व से जुड़ा हुआ है, और जब पति का निधन हो जाता था, तो उनका जीवन निरर्थक हो जाता था।

दहेज प्रथा

दहेज प्रथा भी एक प्रमुख ऐतिहासिक कुप्रथा है, जो भारत में महिलाओं के शोषण का कारण बनी। इस प्रथा के अनुसार, विवाह के समय लड़की के परिवार को लड़के

▶ दहेज की मांग पूरी न होने पर महिलाओं को शारीरिक, मानसिक और यौन शोषण का सामना करना पड़ता था

के परिवार को भारी दहेज देना पड़ता था। दहेज की मांग पूरी न होने पर महिलाओं को शारीरिक, मानसिक और यौन शोषण का सामना करना पड़ता था। कई मामलों में दहेज के लिए हत्या और आत्महत्या तक की घटनाएँ घटीं। दहेज प्रथा ने महिलाओं को एक वस्तु के रूप में परिभाषित किया और उनकी आत्मनिर्भरता और स्वतंत्रता की भावना को कुचला।

महिला शिक्षा पर रोक

▶ शिक्षा का अधिकार केवल पुरुषों को ही दिया जाता था

अतीत में महिलाओं को शिक्षा से वंचित रखा जाता था, यह मानते हुए कि उनका मुख्य उद्देश्य घर संभालना और परिवार की देखभाल करना है। शिक्षा का अधिकार केवल पुरुषों को ही दिया जाता था। इसके परिणामस्वरूप, महिलाएँ न केवल अपनी व्यक्तिगत और सामाजिक क्षमता का विकास नहीं कर पाती थीं, बल्कि वे समाज में बदलाव की दिशा में कोई सक्रिय भूमिका निभाने के लिए भी सक्षम नहीं होती थीं।

महिलाओं के प्रति हिंसा और शोषण

▶ हिंसा और शोषण ने महिलाओं को उनके अधिकारों के लिए लड़ने की प्रेरणा दी

ऐतिहासिक रूप से, महिलाओं के खिलाफ हिंसा और शोषण की अनेक घटनाएँ होती रही हैं। चाहे वह घरेलू हिंसा हो, यौन हिंसा, या सामाजिक उत्पीड़न, महिलाओं को अपने जीवन के अधिकांश हिस्से में हिंसा और उत्पीड़न का सामना करना पड़ा। उन्हें सार्वजनिक स्थानों पर सुरक्षा की गारंटी नहीं मिलती थी, और उनकी शारीरिक और मानसिक स्वतंत्रता पर प्रतिबंध लगाए जाते थे। इस प्रकार की हिंसा और शोषण ने महिलाओं को उनके अधिकारों के लिए लड़ने की प्रेरणा दी और उन्हें स्त्री विमर्श के आंदोलन में सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए मजबूर किया।

महिलाओं का आर्थिक शोषण

भारतीय समाज में महिलाओं के आर्थिक शोषण की कई रूपों में प्रथा रही है। उन्हें संपत्ति के अधिकार से वंचित किया गया था, और उनका आर्थिक निर्णय लेने में कोई अधिकार नहीं था। परिवार में पुरुषों द्वारा संपत्ति और धन पर नियंत्रण रखने की प्रवृत्ति ने महिलाओं की आर्थिक स्वतंत्रता को सीमित कर दिया। वे स्वयं के लिए पैसे कमाने, संपत्ति प्राप्त करने या व्यवसाय करने में सक्षम नहीं थीं।

▶ स्त्री विमर्श की प्रेरणा ऐतिहासिक अन्याय और कुप्रथाओं से जुड़ी हुई है

स्त्री विमर्श की प्रेरणा ऐतिहासिक अन्याय और कुप्रथाओं से जुड़ी हुई है। महिलाओं के खिलाफ होने वाली इन प्रथाओं ने उन्हें उनके अधिकारों से वंचित किया और उनके जीवन को अत्यधिक कठिन बना दिया। इन प्रथाओं के खिलाफ महिलाओं ने आवाज उठानी शुरू की, और यह स्त्री विमर्श के विकास का एक महत्वपूर्ण कारण बना। स्त्री विमर्श ने इन कुप्रथाओं को चुनौती दी और महिलाओं के अधिकारों, स्वतंत्रता और समानता के लिए संघर्ष की दिशा निर्धारित की।

1.2.2.1.3 शिक्षा और जागरूकता का प्रसार

स्त्री विमर्श का एक प्रमुख प्रेरक तत्व शिक्षा और जागरूकता का प्रसार रहा है। यह

▶ शिक्षा और जागरूकता के माध्यम से ही महिलाएँ संघर्ष करने के लिए सशक्त हो पाई हैं

तत्व महिलाओं को उनके अधिकारों, स्वतंत्रता और सामाजिक सशक्तिकरण के बारे में समझने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। शिक्षा और जागरूकता के माध्यम से ही महिलाएँ अपनी सामाजिक स्थिति, पितृसत्तात्मक ढांचे, और भेदभाव के खिलाफ संघर्ष करने के लिए सशक्त हो पाई हैं।

महिलाओं की शिक्षा का महत्व

शिक्षा महिलाओं के आत्मनिर्भर बनने, उनके अधिकारों को जानने और सामाजिक, आर्थिक तथा राजनीतिक क्षेत्र में सक्रिय भूमिका निभाने के लिए अत्यंत आवश्यक है। प्राचीन और मध्यकालीन भारतीय समाज में महिलाओं को शिक्षा से वंचित रखा जाता था, क्योंकि यह मान्यता थी कि महिलाओं का मुख्य कार्य घर के दायित्वों को निभाना है, न कि शिक्षा प्राप्त करना।

▶ समाज सुधारकों ने महिलाओं को शिक्षा के महत्व को समझाया

19वीं सदी के समाज सुधारकों जैसे राजा राममोहन राय, ईश्वरचंद्र विद्यासागर और ज्योतिबा फुले ने महिलाओं की शिक्षा को बढ़ावा दिया। इन समाज सुधारकों ने महिलाओं को शिक्षा के महत्व को समझाया और इसके जरिए महिलाओं के जीवन को बेहतर बनाने की दिशा में कार्य किया। राजा राममोहन राय ने विधवाओं के लिए शिक्षा की आवश्यकता को रेखांकित किया, जबकि विद्यासागर ने बालिका शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए विद्यालयों की स्थापना की। इन सुधारकों के प्रयासों ने भारतीय समाज में महिलाओं की शिक्षा की दिशा को बदला और स्त्री विमर्श के लिए एक मजबूत नींव तैयार की।

सावित्रीबाई फुले और महिला शिक्षा

सावित्रीबाई फुले ने भारतीय समाज में महिला शिक्षा के क्षेत्र में क्रांति ला दी। उन्होंने 1848 में पुणे में पहला बालिका विद्यालय खोला और महिलाओं को शिक्षा प्राप्त करने के अवसर प्रदान किए। फुले ने यह संदेश दिया कि महिलाएँ भी शिक्षा के समान अधिकार की हकदार हैं, और उनके लिए शिक्षा का प्रसार करना समाज के लिए आवश्यक है। सावित्रीबाई फुले की पहल ने न केवल महिलाओं को शिक्षा दिलाई, बल्कि समाज में महिलाओं के प्रति सोच और दृष्टिकोण को भी बदला।

जागरूकता अभियान और समाज सुधारक

विकास के साथ, जागरूकता के अभियान ने भी स्त्री विमर्श को बल दिया। 19वीं

▶ समाज सुधारकों ने महिलाओं की स्थिति को बेहतर बनाने के लिए जागरूकता फैलाने का काम किया

सदी के समाज सुधारकों ने महिलाओं की स्थिति को बेहतर बनाने के लिए जागरूकता फैलाने का काम किया। महिलाएँ केवल शिक्षा और रोजगार के अधिकार तक सीमित नहीं रही, बल्कि उनके सामाजिक अधिकारों के प्रति जागरूकता भी बढ़ी। महिला जागरूकता ने उन्हें अपनी स्थिति, समाज में उनके अधिकारों और उनके साथ होने वाले भेदभाव के बारे में समझने का अवसर दिया।

▶ गांधीजी के नेतृत्व में महिलाएँ राजनीतिक जागरूकता के प्रति जागृत हुई

महात्मा गांधी ने महिलाओं को सशक्त बनाने और उनके अधिकारों की रक्षा के लिए कई पहल कीं। उन्होंने महिलाओं को स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने के लिए प्रेरित किया और कहा कि महिलाएँ समाज के उत्थान में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं। गांधीजी के नेतृत्व में महिलाएँ राजनीतिक जागरूकता के प्रति जागृत हुईं और उन्होंने राष्ट्रीय आंदोलन में सक्रिय भाग लिया।

प्रेस और साहित्य का प्रभाव

▶ साहित्य और प्रेस ने भी महिलाओं में जागरूकता फैलाने का महत्वपूर्ण कार्य किया

साहित्य और प्रेस ने भी महिलाओं में जागरूकता फैलाने का महत्वपूर्ण कार्य किया। भारतीय समाज में महिलाओं की स्थिति को उजागर करने वाले कई साहित्यकारों ने स्त्री विमर्श के लिए मंच तैयार किया। महादेवी वर्मा, इस्मत चुगताई और अमृता प्रीतम जैसी लेखिकाओं ने न केवल महिलाओं के अधिकारों की बात की, बल्कि उनके अनुभवों को साहित्य के माध्यम से प्रस्तुत किया, जिससे समाज में महिलाओं के प्रति सोच बदलने की प्रक्रिया शुरू हुई।

पत्रिकाओं और समाचार पत्रों ने भी स्त्री विमर्श को बढ़ावा देने के लिए कई लेख प्रकाशित किए, जो महिलाओं के अधिकारों और उनके शिक्षा के महत्व पर आधारित थे। इन माध्यमों ने महिलाओं को समाज में अपनी स्थिति और अपने अधिकारों के बारे में जागरूक किया।

आधुनिक शिक्षा का प्रभाव

आज के समय में महिलाओं की शिक्षा और जागरूकता में और भी बढ़ोतरी हुई है। डिजिटल माध्यमों, इंटरनेट और सोशल मीडिया ने महिलाओं को अपने अधिकारों के बारे में जागरूक किया है। कई महिलाएँ अब शैक्षिक और पेशेवर क्षेत्रों में सफलता प्राप्त कर रही हैं, जिससे समाज में महिलाओं के प्रति सोच में बदलाव आया है।

संस्था, गैर-सरकारी संगठन और सरकार भी महिलाओं की शिक्षा के प्रसार के लिए कई योजनाएँ चला रहे हैं। राष्ट्रीय बालिका शिक्षा योजना, बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ जैसी योजनाएँ महिलाओं के शिक्षा अधिकार को सुनिश्चित करने का प्रयास कर रही हैं।

▶ शिक्षा ने महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाया

इससे यह साफ होता है कि शिक्षा और जागरूकता का प्रसार स्त्री विमर्श की प्रमुख प्रेरणा रही है। शिक्षा ने महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाया, जबकि जागरूकता ने उन्हें समाज में उनके अधिकारों और स्वतंत्रता के प्रति संवेदनशील किया। समाज सुधारकों, साहित्यकारों और जागरूकता अभियानों ने स्त्री विमर्श को गति दी और आज महिलाएँ

विभिन्न क्षेत्रों में अपने अधिकारों की रक्षा के लिए सशक्त रूप से खड़ी हैं। यह स्त्री विमर्श की सफलता का महत्वपूर्ण कारण है कि महिलाओं के पास अब शिक्षा, अधिकार और स्वतंत्रता की आवाज है।

1.2.2.1.4 वैश्विक नारीवादी आंदोलनों का प्रभाव

- महिलाओं ने दहेज प्रथा, घरेलू हिंसा, और कार्यस्थल पर भेदभाव के खिलाफ आवाज उठाई

वैश्विक नारीवादी आंदोलनों ने महिलाओं के अधिकारों, समानता, और स्वतंत्रता की दिशा में एक नई सोच को जन्म दिया। 19वीं सदी के 'प्रथम वेव' आंदोलन ने महिलाओं के मतदान और शिक्षा के अधिकारों को केंद्र में रखा, जिससे भारत सहित अन्य देशों में भी महिलाओं के अधिकारों के प्रति जागरूकता बढ़ी। 'द्वितीय वेव' ने 1960 और 70 के दशक में सामाजिक और आर्थिक असमानता के मुद्दों को उजागर किया, जिससे महिलाओं ने दहेज प्रथा, घरेलू हिंसा, और कार्यस्थल पर भेदभाव के खिलाफ आवाज उठाई। इसी प्रकार, 'तृतीय वेव' ने महिलाओं की विविध पहचान और अनुभवों को सामने रखा, जिसमें जातीयता, वर्ग, और सांस्कृतिक भिन्नताओं पर ध्यान दिया गया।

डिजिटल युग में 'चौथी वेव' नारीवाद ने सोशल मीडिया और इंटरनेट के माध्यम से महिलाओं के अधिकारों को वैश्विक स्तर पर प्रमुखता दी। MeToo जैसे आंदोलनों ने भारत में भी महिलाओं को यौन उत्पीड़न के खिलाफ अपनी बात रखने का साहस दिया। इन आंदोलनों ने भारत में शिक्षा, रोजगार और सामाजिक समानता की माँग को मजबूती दी। साथ ही, महिलाओं के लिए विशिष्ट कानून और नीतियाँ लागू करने की दिशा में भी प्रेरित किया। इस प्रकार, वैश्विक आंदोलनों ने भारतीय महिलाओं को सशक्त बनाया और उनके अधिकारों के संघर्ष को वैश्विक समर्थन प्रदान किया।

1.2.2.1.5 साहित्य और कला का योगदानः भारतीय और पाश्चात्य संदर्भ

- प्राचीन साहित्य और कला ने स्त्रियों को शक्ति और भक्ति के प्रतीक के रूप में प्रस्तुत किया

साहित्य और कला ने स्त्री विमर्श को गहराई और व्यापकता प्रदान की है। भारतीय संदर्भ में प्राचीन साहित्य और कला ने स्त्रियों को शक्ति और भक्ति के प्रतीक के रूप में प्रस्तुत किया। रामायण की सीता और महाभारत की द्रौपदी जैसे पात्र समाज में स्त्रियों की स्थिति और सीमाओं को दर्शाते हैं। भक्ति आंदोलन में मीराबाई और अक्क महादेवी जैसी महिलाओं ने अपने साहित्यिक योगदान से समाज में स्त्रियों की आवाज़ को स्थान दिया। आधुनिक काल में महादेवी वर्मा, इस्मत चुगताई और अमृता प्रीतम जैसी लेखिकाओं ने साहित्य के माध्यम से पितृसत्तात्मक समाज को चुनौती दी। राजा रवि वर्मा जैसे कलाकारों ने अपनी चित्रकारी में महिलाओं की गरिमा को उभारा, जबकि समकालीन सिनेमा और कला ने महिलाओं के संघर्ष और अधिकारों को प्रमुखता दी।

- पाश्चात्य कला में जूडी शिकागो और फ्रिदा काहलो जैसी कलाकारों ने अपने कार्यों में महिलाओं के अनुभवों और संघर्षों को व्यक्त किया

पाश्चात्य संदर्भ में, मैरी वोल्स्टोनक्राफ्ट, जेन ऑस्टिन और वर्जीनिया वुल्फ जैसी लेखिकाओं ने महिलाओं की स्वतंत्रता और समानता पर बल दिया। "A Room of One's Own" जैसी कृतियों ने महिलाओं के लिए आर्थिक और सामाजिक स्वतंत्रता के महत्व को रेखांकित किया। पाश्चात्य कला में जूडी शिकागो और फ्रिदा काहलो जैसी कलाकारों ने अपने कार्यों में महिलाओं के अनुभवों और संघर्षों को व्यक्त किया।

भारतीय साहित्य और कला ने जहाँ आध्यात्मिकता और पारंपरिक मूल्यों पर ध्यान केंद्रित किया, वहीं लेखिकाओं पाश्चात्य साहित्य और कला ने स्वतंत्रता, व्यक्तिवाद और तर्कशीलता को प्राथमिकता दी। दोनों ने ही स्त्री विमर्श को सशक्त बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

स्त्री विमर्श की प्रेरणा समाज में महिलाओं के साथ होने वाले ऐतिहासिक अन्याय, पितृसत्तात्मक ढांचे, और असमानता के खिलाफ संघर्ष से जुड़ी हुई है। शिक्षा, जागरूकता, और वैश्विक आंदोलनों ने इसे दिशा दी और महिलाओं को संगठित होकर अपने अधिकारों के लिए लड़ने की प्रेरणा दी। स्त्री विमर्श केवल महिलाओं के अधिकारों की बात नहीं करता, बल्कि यह एक ऐसे समाज के निर्माण का प्रयास है, जहाँ समानता और स्वतंत्रता के मूल्यों का सम्मान हो।

1.2.3 स्त्री विमर्श का प्रभाव

▶ समाज, राजनीति और संस्कृति पर गहरा प्रभाव डाला है

स्त्री विमर्श ने समाज, राजनीति, और संस्कृति पर गहरा प्रभाव डाला है। यह आंदोलन महिलाओं के अधिकारों, स्वतंत्रता, और समानता के संघर्ष को सशक्त बनाने का माध्यम बना। इसके प्रभाव को व्यक्तिगत, पारिवारिक, और सामाजिक स्तर पर स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।

सामाजिक प्रभाव

▶ समाज में महिलाओं के प्रति सोच को बदला है

स्त्री विमर्श ने समाज में महिलाओं के प्रति सोच को बदला है। पहले महिलाओं को केवल घरेलू भूमिका तक सीमित समझा जाता था, लेकिन अब वे शिक्षा, रोजगार, और राजनीति जैसे क्षेत्रों में अपनी पहचान बना रही हैं। दहेज प्रथा, घरेलू हिंसा, और बाल विवाह जैसी कुप्रथाओं पर स्त्री विमर्श के कारण सवाल उठाए गए और कानूनी सुधार हुए। इसके अलावा, लैंगिक समानता पर बढ़ती जागरूकता ने कार्यस्थल और समाज में महिलाओं को अधिक अवसर प्रदान किए।

आर्थिक प्रभाव

स्त्री विमर्श के कारण महिलाओं ने कार्यक्षेत्र में अपनी भागीदारी बढ़ाई है। इससे न केवल उनकी आर्थिक स्वतंत्रता सुनिश्चित हुई है, बल्कि समाज की समग्र आर्थिक प्रगति में भी योगदान मिला है। स्वरोजगार, उद्यमिता और नेतृत्व के क्षेत्र में महिलाएँ अब अपनी उपस्थिति दर्ज कर रही हैं।

राजनीतिक प्रभाव

▶ पंचायती राज में महिलाओं की भागीदारी ने ग्रामीण स्तर पर भी सशक्तिकरण को बढ़ावा दिया

स्त्री विमर्श ने महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी को बढ़ावा दिया है। महिलाओं को चुनावों में आरक्षण और उनकी राजनीतिक शक्ति को पहचानने के लिए कई कदम उठाए गए। पंचायती राज में महिलाओं की भागीदारी ने ग्रामीण स्तर पर भी सशक्तिकरण को बढ़ावा दिया।

सांस्कृतिक और वैचारिक प्रभाव

स्त्री विमर्श ने साहित्य, कला, और मीडिया में महिलाओं की छवि को अधिक सकारात्मक और सशक्त बनाया है। महिला लेखकों और कलाकारों ने समाज में महिलाओं की वास्तविक स्थिति को दर्शाते हुए उन्हें अपनी आवाज़ देने का काम किया। यह प्रभाव समाज में रूढ़िवादी सोच को चुनौती देने और नई धारणाएँ स्थापित करने में सहायक रहा है।

कानूनी और नीतिगत प्रभाव

स्त्री विमर्श के कारण कई देशों में महिलाओं के अधिकारों की सुरक्षा के लिए कानून बनाए गए। भारत में दहेज निषेध अधिनियम, घरेलू हिंसा अधिनियम, और कार्यस्थल पर यौन शोषण रोकथाम के लिए विशाखा दिशानिर्देश जैसे कानून स्त्री विमर्श की प्रेरणा से ही अस्तित्व में आए।

▶ महिलाओं का जीवन स्तर सुधरा है

स्त्री विमर्श ने महिलाओं को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक किया और उन्हें सामाजिक, आर्थिक, और राजनीतिक रूप से सशक्त बनाने में योगदान दिया। इसके प्रभाव से न केवल महिलाओं का जीवन स्तर सुधरा है, बल्कि समाज भी अधिक समावेशी और प्रगतिशील बना है। यह आंदोलन महिलाओं के लिए एक मजबूत आधारशिला बनाकर लैंगिक समानता की दिशा में आगे बढ़ने का मार्ग प्रशस्त करता है।

Summarised Overview / संक्षिप्त अवलोकन

स्त्री विमर्श की प्रेरणा महिलाओं के साथ होने वाले भेदभाव, असमानता, और अन्याय से जुड़ी है। पारंपरिक पितृसत्तात्मक व्यवस्था, जिसने महिलाओं को घर की चारदीवारी तक सीमित रखा, इस विमर्श की मुख्य चुनौती रही है। इसके साथ ही, शिक्षा और स्वतंत्रता प्राप्त करने की महिलाओं की आकाँक्षा ने इसे बल दिया। पश्चिमी नारीवादी आंदोलनों ने भी भारतीय संदर्भ में इस विमर्श को प्रेरित किया। महिलाओं के प्रति समाज के रूढ़िवादी दृष्टिकोण और भेदभाव को समाप्त करने की आवश्यकता इसकी उत्पत्ति का प्रमुख कारण है। स्त्री विमर्श ने समाज, साहित्य और संस्कृति पर गहरा प्रभाव डाला है। इसने महिलाओं को उनके अधिकारों और अस्तित्व के प्रति जागरूक किया। सामाजिक स्तर पर दहेज प्रथा, बाल विवाह और घरेलू हिंसा जैसे मुद्दों पर खुलकर चर्चा होने लगी और सुधार के प्रयास किए गए। शैक्षिक और आर्थिक क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी बढ़ी, जिससे वे आत्मनिर्भर बनीं। महिलाओं के अधिकारों को सुनिश्चित करने के लिए दहेज निषेध अधिनियम, घरेलू हिंसा अधिनियम जैसे कई कानून बने। साहित्यिक जगत में महिला लेखकों ने अपनी कहानियों और कविताओं से समाज को नई दृष्टि दी।

मनोवैज्ञानिक रूप से, स्त्री विमर्श ने महिलाओं में आत्मसम्मान, आत्मविश्वास और स्वतंत्रता की भावना का विकास किया। स्त्री विमर्श ने एक ऐसा मार्ग प्रशस्त किया, जो महिलाओं के लिए समानता, सम्मान और आत्मनिर्भरता की ओर ले जाता है।

Assignment / प्रदत्त कार्य

1. स्त्री विमर्श: प्रभाव और समाज पर इसका योगदान
2. स्त्री विमर्श ने महिलाओं में आत्मसम्मान और आत्मविश्वास बढ़ाने में कैसे मदद की?
3. समाज को न्यायपूर्ण और समावेशी बनाने में स्त्री विमर्श की भूमिका पर चर्चा करें।

Reference / संदर्भ ग्रंथ

1. स्त्री मुक्ति का सपना - सं. कमला प्रसाद, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली
2. स्त्री संघर्ष का इतिहास - सं. राधा कुमार, वाणी प्रकाशन
3. उपनिवेश में स्त्री - प्रभा खेतान, राजकमल प्रकाशन
4. स्त्री परंपरा और आधुनिकता - सं. राज किशोर, वाणी प्रकाशन
5. स्त्री सशक्तिकरण की दिशा - रेखा कसतवार, राजकमल प्रकाशन
6. बाजार के बीच बाजार के खिलाफ - प्रभा खेतान, वाणी प्रकाशन

Suggested Reading / निर्धारित पुस्तक

1. स्त्री मुक्ति : संघर्ष और इतिहास - रमणिका गुप्ता
2. उपनिवेश में स्त्री - प्रभा खेतान
3. लिहाफ - इस्मत चुगताई

Space for Learner Engagement for Objective Questions

Learners are encouraged to develop objective questions based on the content in the paragraph as a sign of their comprehension of the content. The Learners may reflect on the recap bullets and relate their understanding with the narrative in order to frame objective questions from the given text. The University expects that 1 - 2 questions are developed for each paragraph. The space given below can be used for listing the questions.

इकाई 3

स्त्री मुक्ति आंदोलन उद्‌भव एवं विकास, पाश्चात्य संदर्भ में स्त्री मुक्ति आंदोलन भारतीय संदर्भ में स्त्री मुक्ति आंदोलन

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- स्त्री मुक्ति आंदोलन के उद्‌भव और विकास की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि समझता है
- पश्चिम और भारतीय संदर्भ में स्त्री मुक्ति आंदोलनों की समानताओं के बारे में जानता है
- आंदोलन के प्रभाव से सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक क्षेत्रों में आए बदलाव को पहचाता है
- समकालीन स्त्री मुक्ति आन्दोलन को समझता है
- स्त्री मुक्ति आंदोलन पर विभिन्न विचारधाराओं और दृष्टिकोणों का विश्लेषण करता है

Background / पृष्ठभूमि

स्त्री मुक्ति आंदोलन की पृष्ठभूमि समाज में महिलाओं के प्रति पितृसत्तात्मक दृष्टिकोण और उनके अधिकारों के हनन से जुड़ी है। औद्योगिक क्रांति, प्रबोधन युग, और शिक्षा के प्रसार ने महिलाओं के प्रति समाज के रूढ़िवादी सोच को चुनौती दी। पश्चिम में 18वीं सदी में मेरी वोल्स्टनक्राफ्ट की पुस्तक "A Vindication of the Rights of Woman" ने महिला अधिकारों की आवश्यकता पर प्रकाश डाला। 19वीं और 20वीं सदी में महिलाओं ने शिक्षा, वोटिंग अधिकार, और समानता के लिए संघर्ष किया। भारतीय संदर्भ में यह आंदोलन ब्रिटिश शासन के दौरान शुरू हुआ, जब सामाजिक सुधारकों ने महिलाओं की स्थिति सुधारने के लिए बाल विवाह, सती प्रथा, और दहेज जैसी कुरीतियों का विरोध किया। राजा राममोहन राय, सावित्रीबाई फुले, और महात्मा गांधी जैसे नेताओं ने महिलाओं के अधिकारों के लिए सामाजिक और शैक्षिक सुधार किए। यह आंदोलन धीरे-धीरे महिलाओं की आर्थिक, राजनीतिक, और सामाजिक स्वतंत्रता की मांग तक विस्तारित हो गया।

Keywords / मुख्य बिन्दु

स्त्री मुक्ति आंदोलन, पितृसत्तात्मक व्यवस्था, महिला सशक्तिकरण, वैश्विक नारीवाद, महिला अधिकार, सामाजिक जागरूकता

Discussion / चर्चा

1.3.1 स्त्री मुक्ति आंदोलन उद्भव और विकास

स्त्री मुक्ति आंदोलन महिलाओं की समानता, स्वतंत्रता, और अधिकारों के लिए चलाए गए संगठित प्रयासों का परिणाम है। यह आंदोलन पितृसत्तात्मक समाज की उस व्यवस्था के खिलाफ खड़ा हुआ, जिसने महिलाओं को सदियों से शोषित और वंचित रखा। 18वीं सदी में प्रबोधन युग और औद्योगिक क्रांति के दौरान महिलाओं की शिक्षा, समानता, और स्वतंत्रता की आवश्यकता को पहचान मिली। पाश्चात्य देशों में मेरी वोल्स्टनक्राफ्ट और 'सफ़्रेज मूवमेंट' जैसे प्रयासों ने महिला अधिकारों के लिए मजबूत नींव रखी। भारतीय संदर्भ में, यह आंदोलन सामाजिक सुधारकों जैसे राजा राममोहन राय, सावित्रीबाई फुले और महात्मा गांधी के नेतृत्व में बाल विवाह, सती प्रथा, और दहेज जैसी कुरीतियों के विरोध के रूप में उभरा। यह आंदोलन धीरे-धीरे महिलाओं के सामाजिक, आर्थिक, और राजनीतिक अधिकारों की मांग तक विस्तारित हुआ, जिससे महिलाओं की स्थिति में क्रांतिकारी बदलाव आया।

▶ महिलाओं की स्थिति में क्रांतिकारी बदलाव आया

स्त्री मुक्ति आंदोलन का उत्थान और विकास एक लंबी और जटिल प्रक्रिया रही है, जो ऐतिहासिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक परिस्थितियों से गहराई से प्रभावित हुई है। यह आंदोलन विभिन्न देशों, कालखंडों और समाजों में अलग-अलग स्वरूपों में विकसित हुआ है।

▶ स्त्री मुक्ति आंदोलन का उत्थान और विकास एक लंबी और जटिल प्रक्रिया रही है

1.3.1.1 पाश्चात्य संदर्भ में स्त्री मुक्ति आंदोलन

1. प्रारंभिक चरण (18वीं-19वीं शताब्दी)

पाश्चात्य समाज में स्त्री मुक्ति आंदोलन का आरंभ 18वीं शताब्दी में हुआ। इसे प्रायः 'प्रथम लहर नारीवाद' (First Wave Feminism) कहा जाता है। इस चरण में महिलाओं के अधिकारों पर ज़ोर दिया गया, खासकर शिक्षा, संपत्ति और वोट देने के अधिकार के संदर्भ में।

▶ महिलाओं को अब तक केवल घरेलू भूमिकाओं तक सीमित रखा गया था

यूरोप में पुनर्जागरण और प्रबोधन काल (Enlightenment) के दौरान समानता और मानवाधिकारों पर ज़ोर दिया गया। इस समय महिलाओं को शिक्षा और समाज में अपनी भूमिका पर विचार करने के लिए प्रेरित किया गया।

मैरी वोल्स्टोनक्राफ्ट (Mary Wollstonecraft): उनकी पुस्तक A Vindication of the Rights of Woman (1792) पहली बार महिलाओं की शिक्षा और सामाजिक समानता पर सवाल उठाने का एक प्रमुख ग्रंथ बना। वोल्स्टोनक्राफ्ट ने तर्क दिया कि महिलाएँ केवल पत्नियाँ और माताएँ नहीं, बल्कि समाज की बराबरी की नागरिक हैं। उन्होंने यह भी कहा कि महिलाओं को अच्छी शिक्षा देना न केवल उनके लिए बल्कि पूरे समाज के लिए लाभकारी है।

महिलाओं के अधिकारों के लिए प्रारंभिक आंदोलनः

मताधिकार आंदोलन का उद्भवः 19वीं शताब्दी में महिलाओं ने राजनीतिक अधिकारों के लिए संघर्ष करना शुरू किया। ब्रिटेन और अमेरिका में महिलाओं ने अपने मताधिकार के अधिकार के लिए आंदोलन किया। सेनेका फॉल्स सम्मेलन (1848) अमेरिका में आयोजित पहला महिला अधिकार सम्मेलन था। इसमें एलिजाबेथ कैडी स्टैंटन और ल्यूक्रेटिया मॉट ने महिलाओं के अधिकारों की घोषणा (Declaration of Sentiments) की। 19वीं शताब्दी में ब्रिटेन और अमेरिका में संपत्ति के अधिकारों को लेकर भी संघर्ष किया गया। इससे महिलाओं को विवाह के बाद अपनी संपत्ति पर अधिकार बनाए रखने का हक मिला।

▶ सेनेका फॉल्स सम्मेलन (1848) अमेरिका में आयोजित पहला महिला अधिकार सम्मेलन था

इस चरण के प्रयासों ने महिलाओं की स्थिति में प्रारंभिक सुधार लाने में मदद की। हालांकि, यह संघर्ष लंबा और कठिन था, लेकिन इसने 20वीं शताब्दी में होने वाले व्यापक आंदोलनों के लिए आधार तैयार किया।

2. दूसरी लहर नारीवाद (1960-1980)

दूसरी लहर नारीवाद (Second Wave Feminism) एक महत्वपूर्ण सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक आंदोलन था, जो मुख्यतः 1960 से 1980 के दशक के बीच सक्रिय रहा। यह आंदोलन मुख्य रूप से महिलाओं के अधिकारों और समानता के लिए संघर्ष करने पर केंद्रित था। इस आंदोलन ने महिलाओं के जीवन के कई पहलुओं को प्रभावित किया, जैसे कार्यस्थल में समानता, प्रजनन अधिकार, यौनिकता, घरेलू हिंसा, और सामाजिक संरचनाओं में बदलाव।

▶ दूसरी लहर नारीवाद की जड़ें 1940 और 1950 के दशकों में हुई घटनाओं में पाई जाती हैं

इसकी पृष्ठभूमि को देखें तो हम देखेंगे कि दूसरी लहर नारीवाद की जड़ें 1940 और 1950 के दशकों में हुई घटनाओं में पाई जा सकती हैं। द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान, महिलाएँ बड़ी संख्या में कार्यक्षेत्र में शामिल हुईं। लेकिन युद्ध समाप्त होने के बाद, उन्हें फिर से पारंपरिक घरेलू भूमिकाओं में लौटने के लिए मजबूर किया गया। 1960 के दशक में महिलाओं ने इस असमानता के खिलाफ आवाज उठानी शुरू की, जिससे यह आंदोलन शुरू हुआ।

दूसरी लहर नारीवाद ने केवल कानूनी और राजनीतिक समानता की मांग नहीं की, बल्कि यह महिलाओं की निजी और सामाजिक स्थिति में सुधार के लिए भी प्रतिबद्ध था। इस आंदोलन के मुख्य मुद्दे निम्नलिखित थे:

1. समान वेतन और रोजगार में समानताः

▶ महिलाओं को पुरुषों के समान कार्य के लिए समान वेतन

महिलाओं को पुरुषों के समान कार्य के लिए समान वेतन और अवसर दिलाने के लिए यह आंदोलन बहुत सक्रिय रहा।

2. प्रजनन अधिकार:

महिलाओं को उनके प्रजनन स्वास्थ्य और अधिकारों पर निर्णय लेने की स्वतंत्रता देने की मांग की गई। गर्भनिरोधक गोलियों (Birth Control Pills) का उपयोग और गर्भपात का कानूनीकरण इस आंदोलन का हिस्सा था।

3. घरेलू और यौन हिंसा:

▶ बलात्कार जैसे मुद्दों पर जागरूकता बढ़ाना

घरेलू हिंसा, यौन उत्पीड़न और बलात्कार जैसे मुद्दों पर जागरूकता बढ़ाने और सख्त कानूनों की मांग की गई।

4. सांस्कृतिक बदलाव:

यह आंदोलन उन सामाजिक मानदंडों को चुनौती देने पर केंद्रित था, जो महिलाओं को पारंपरिक भूमिकाओं (जैसे केवल पत्नी और माँ) तक सीमित रखते थे।

5. शिक्षा और स्वास्थ्य में समानता:

महिलाओं के लिए उच्च शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं में समान अवसर सुनिश्चित करना इस आंदोलन का एक और महत्वपूर्ण पहलू था।

▶ नेशनल ऑर्गनाइजेशन फॉर वीमेन (NOW) 1966 में स्थापित हुआ

इस आंदोलन के प्रमुख व्यक्ति थी बैटी फ्रीडन (Betty Friedan)। उनकी पुस्तक *"The Feminine Mystique"* (1963) को इस आंदोलन की शुरुआत के लिए महत्वपूर्ण माना जाता है। इस पुस्तक ने घरेलू महिलाओं के जीवन की समस्याओं को उजागर किया और एक व्यापक बहस की शुरुआत की। इसके अलावा ग्लोरिया स्टाइनम (Gloria Steinem) एक प्रमुख नारीवादी नेता थीं, जिन्होंने महिला अधिकारों के लिए राजनीतिक और सामाजिक स्तर पर काम किया। नेशनल ऑर्गनाइजेशन फॉर वीमेन (NOW) 1966 में स्थापित हुआ। इस संगठन ने महिलाओं के अधिकारों और समानता के लिए विभिन्न स्तरों पर काम किया।

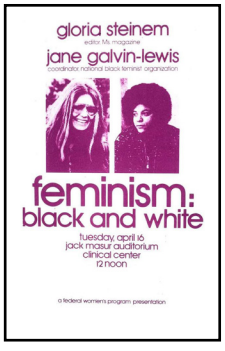

▶ दूसरी लहर नारीवाद महिलाओं के अधिकारों और समानता के लिए एक ऐतिहासिक आंदोलन था

दूसरी लहर नारीवाद महिलाओं के अधिकारों और समानता के लिए एक ऐतिहासिक आंदोलन था, जिसने न केवल कानूनी और राजनीतिक सुधार किए बल्कि समाज में महिलाओं की भूमिका और उनकी स्वतंत्रता के लिए व्यापक बदलाव लाए। यह आंदोलन आज भी नारीवादी आंदोलनों और विचारधाराओं के लिए प्रेरणा का स्रोत है।

तीसरी लहर नारीवाद (1990 के दशक - 2010):

तीसरी लहर नारीवाद 1990 के दशक में शुरू हुआ और यह मुख्य रूप से दूसरी लहर नारीवाद की आलोचनाओं के जवाब में उभरा। दूसरी लहर की सीमाओं को पहचानते हुए, तीसरी लहर ने नारीवाद को और अधिक समावेशी और बहुआयामी बनाने का प्रयास किया। इस आंदोलन ने माना कि महिलाओं के अनुभव केवल लिंग आधारित असमानता तक सीमित नहीं हैं, बल्कि वे जाति, वर्ग, धर्म, यौनिकता और सांस्कृतिक पहचान जैसे विभिन्न कारकों से भी प्रभावित होते हैं।

▶ तीसरी लहर ने नारीवाद को और अधिक समावेशी और बहुआयामी बनाने का प्रयास किया

इस लहर की एक महत्वपूर्ण विशेषता इसका समावेशी दृष्टिकोण था। इस आंदोलन ने श्वेत, मध्यमवर्गीय महिलाओं की चिंताओं से आगे बढ़ते हुए काले नारीवाद (Black Feminism), स्वदेशी महिलाओं, और LGBTQ समुदाय की महिलाओं के मुद्दों को अपने दायरे में लाया। इसने "इंटरसेक्शनलिटी" (Intersectionality) की अवधारणा को लोकप्रिय बनाया, जो यह बताती है कि कैसे भेदभाव और असमानता के कई आयाम एक व्यक्ति के अनुभव को प्रभावित कर सकते हैं।

तीसरी लहर नारीवाद ने पॉप संस्कृति और मीडिया के महत्व को समझा और उन्हें महिलाओं की आवाज़ को मुखर बनाने के साधन के रूप में इस्तेमाल किया। यह आंदोलन महिलाओं की यौन अभिव्यक्ति और स्वायत्तता को सशक्तिकरण के रूप में देखता था। महिलाओं को यह अधिकार देने पर ज़ोर दिया गया कि वे अपने शरीर और यौनिकता के बारे में निर्णय स्वयं ले सकें। इसके अलावा, "साइबर नारीवाद" के माध्यम से इंटरनेट और डिजिटल माध्यमों ने महिलाओं को उनके अधिकारों के लिए लड़ने के लिए एक नया मंच दिया।

▶ तीसरी लहर नारीवाद ने पॉप संस्कृति और मीडिया के महत्व को समझा

रीबेका वॉकर और बेल हुक्स जैसी नारीवादी चिंतक इस लहर के प्रमुख चेहरों में से थीं। वॉकर ने 'थर्ड वेव फेमिनिज्म' शब्द को परिभाषित किया, जबकि बेल हुक्स ने नारीवाद के संदर्भ में नस्ल, वर्ग, और पितृसत्ता के जटिल संबंधों को समझाया। हालांकि, तीसरी लहर नारीवाद की एक आलोचना यह रही कि इसमें स्पष्ट लक्ष्यों और संगठित दिशा की कमी थी, जिससे इसकी प्रभावशीलता पर सवाल उठे।

▶ वॉकर ने 'थर्ड वेव फेमिनिज्म' शब्द को परिभाषित किया

चौथी लहर नारीवाद (2010 से वर्तमान तक):

चौथी लहर नारीवाद, 2010 के दशक में शुरू हुआ और यह मुख्य रूप से डिजिटल मीडिया और सोशल मीडिया की शक्ति पर आधारित था। इस लहर ने यौन हिंसा, यौन उत्पीड़न, और पितृसत्तात्मक संरचनाओं के खिलाफ लड़ाई को वैश्विक स्तर पर आगे बढ़ाया। इसे 'डिजिटल नारीवाद' भी कहा जा सकता है, क्योंकि इसमें सोशल मीडिया अभियानों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

▶ यह मुख्य रूप से डिजिटल मीडिया और सोशल मीडिया की शक्ति पर आधारित था

इस लहर की शुरुआत का श्रेय #MeToo आंदोलन को दिया जा सकता है। यह आंदोलन 2017 में हॉलीवुड से शुरू होकर दुनिया भर में फैल गया। लाखों महिलाओं

ने अपनी कहानियां साझा करते हुए यौन उत्पीड़न और हिंसा के मुद्दों को सामने लाया। इसके साथ ही #TimesUp अभियान ने कार्यस्थलों में यौन उत्पीड़न और भेदभाव के खिलाफ कानूनी सहायता प्रदान करने और जागरूकता बढ़ाने का काम किया।

चौथी लहर ने सहमति (Consent) के महत्व पर ज़ोर दिया और यौन हिंसा के खिलाफ कठोर कदम उठाने की मांग की। इसने पितृसत्तात्मक संरचनाओं को चुनौती दी, जो न केवल व्यक्तिगत स्तर पर बल्कि संस्थागत और सामाजिक स्तर पर भी महिलाओं को दबाने का काम करती हैं। यह आंदोलन कार्यस्थल, शिक्षा, और राजनीति में समानता की मांग के साथ-साथ महिलाओं के अधिकारों के लिए भी लड़ रहा है।

▶ पितृसत्तात्मक संरचनाओं को चुनौती दी

इस लहर ने इंटरसेक्शनलिटी की अवधारणा को और अधिक व्यापक बना दिया। महिलाओं के अधिकारों की लड़ाई को जाति, धर्म, वर्ग, और लैंगिक पहचान के मुद्दों के साथ जोड़ा गया। इसके साथ ही साइबर बुलिंग, डिजिटल उत्पीड़न, और ऑनलाइन प्लेटफ़ॉर्म पर महिलाओं की निजता की रक्षा के लिए भी सक्रिय अभियान चलाए गए।

▶ चौथी लहर की सबसे बड़ी शक्ति इसका डिजिटल स्वरूप है

चौथी लहर की सबसे बड़ी शक्ति इसका डिजिटल स्वरूप है। सोशल मीडिया ने इसे वैश्विक स्तर पर प्रभावी बना दिया। "महिलाओं का मार्च" (Women's March) और अन्य डिजिटल अभियानों ने न केवल यौन उत्पीड़न के खिलाफ बल्कि पितृसत्ता और असमानता के खिलाफ भी जागरूकता बढ़ाई।

हालांकि, चौथी लहर नारीवाद की आलोचना भी हुई है। कुछ आलोचकों का मानना है कि यह 'ऑनलाइन-आधारित' आंदोलन है, जो वास्तविक जमीनी प्रभाव छोड़ने में सीमित है। इसके अलावा, विचारधारा के टकराव और विभाजन ने भी इसकी दिशा को कभी-कभी अस्पष्ट बना दिया।

तीसरी और चौथी लहर नारीवाद ने नारीवाद को नई ऊंचाइयों पर पहुँचाया। तीसरी लहर ने जहाँ पहचान, विविधता और सांस्कृतिक मुद्दों को नारीवाद में शामिल किया, वहीं चौथी लहर ने डिजिटल तकनीक और सोशल मीडिया के माध्यम से महिलाओं के अधिकारों के लिए एक वैश्विक मंच तैयार किया। दोनों लहरों ने न केवल महिलाओं के जीवन को बेहतर बनाने का प्रयास किया, बल्कि समाज में गहरी जड़ें जमाए पितृसत्तात्मक सोच और असमानता को चुनौती देने का साहस भी दिखाया। इन आंदोलनों की विरासत आज भी महिलाओं के अधिकारों और समानता की लड़ाई में प्रेरणा स्रोत बनी हुई है।

भारतीय संदर्भ में स्त्री मुक्ति आंदोलन

भारतीय संदर्भ में स्त्री मुक्ति आंदोलन एक गहरी सामाजिक, सांस्कृतिक, और राजनीतिक प्रक्रिया है जो महिलाओं की समानता, अधिकार, और गरिमा सुनिश्चित करने की दिशा में कार्य करता है। यह आंदोलन भारतीय समाज में महिलाओं के लिए एक नई चेतना और परिवर्तन का प्रतीक है।

▶ मध्यकाल में पर्दा प्रथा, सती प्रथा, बाल विवाह जैसी प्रथाओं ने महिलाओं के जीवन को बंधन में डाल दिया

इसके ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य को देखे तो हम जान सकते हैं कि प्राचीन भारत में वैदिक काल में महिलाओं की स्थिति काफी सशक्त थी। महिलाएँ वेदों का अध्ययन करती थीं और धार्मिक अनुष्ठानों में भाग लेती थीं। 'गार्गी' और 'मैत्रेयी' जैसी विदुषियों ने दर्शन और धर्मशास्त्र में योगदान दिया। इस काल में महिलाओं को समाज में समान अधिकार प्राप्त थे।

मध्यकाल में पितृसत्तात्मक व्यवस्था ने महिलाओं की स्वतंत्रता को सीमित कर दिया। पर्दा प्रथा, सती प्रथा, बाल विवाह जैसी प्रथाओं ने महिलाओं के जीवन को बंधन में डाल दिया। इस समय महिलाओं की शिक्षा पर भी रोक लगा दी गई।

▶ गांधीजी ने महिलाओं को खादी आंदोलन, सत्याग्रह, और दांडी मार्च में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया

औपनिवेशिक काल में सामाजिक सुधारकों ने महिलाओं की स्थिति सुधारने के लिए आंदोलन शुरू किए। राजा राममोहन राय ने सती प्रथा का विरोध किया और 1829 में इसे समाप्त कराने में सफलता पाई। ईश्वरचंद्र विद्यासागर ने विधवा पुनर्विवाह को वैध बनाने का प्रयास किया। सावित्रीबाई फुले ने लड़कियों की शिक्षा के लिए पहला विद्यालय स्थापित किया।

इसके अलावा भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं ने एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। सरोजिनी नायडू ने महिलाओं को राजनीति और आंदोलन में सक्रिय भूमिका निभाने के लिए प्रेरित किया। कमला देवी चट्टोपाध्यायने सामाजिक और सांस्कृतिक आंदोलन का नेतृत्व किया। गांधीजी ने महिलाओं को खादी आंदोलन, सत्याग्रह, और दांडी मार्च में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया। इससे महिलाओं के लिए एक नई सामाजिक चेतना का जन्म हुआ।

स्वतंत्र भारत में स्त्री मुक्ति आंदोलन के दौरान स्त्रियों को संवैधानिक अधिकार प्राप्त हुए। भारतीय संविधान ने महिलाओं को समानता (अनुच्छेद 14), शिक्षा (अनुच्छेद 21क), और रोजगार के अधिकार दिए। इस समय सती प्रथा निषेध कानून (1987): महिलाओं को सती प्रथा से बचाने के लिए इसे प्रतिबंधित किया गया। दहेज निषेध अधिनियम (1961) से दहेज प्रथा को अवैध घोषित किया गया। घरेलू हिंसा अधिनियम (2005): महिलाओं को घरेलू हिंसा से बचाने के लिए कानूनी प्रावधान लागू किए गए।

शिक्षा और रोज़गार:

▶ महिलाओं को शिक्षा में समान अवसर प्रदान करने के लिए सरकार ने 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' जैसी योजनाएँ शुरू कीं

महिलाओं को शिक्षा में समान अवसर प्रदान करने के लिए सरकार ने 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' जैसी योजनाएँ शुरू कीं। इसके अलावा, नौकरी में आरक्षण और कौशल विकास के कार्यक्रम चलाए गए।

भारत में स्त्री मुक्ति आंदोलन के प्रमुख मुद्दे थे -

पितृसत्तात्मक व्यवस्था का विरोध: पितृसत्तात्मक समाज में महिलाओं को हमेशा पुरुषों के अधीन माना गया। स्त्री मुक्ति आंदोलन का उद्देश्य इस विचारधारा को समाप्त कर महिलाओं को समान अधिकार दिलाना है।

घरेलू और यौन हिंसा: घरेलू हिंसा और यौन शोषण महिलाओं के लिए बड़े मुद्दे हैं। 'MeToo' और 'Nirbhaya आंदोलन' जैसे अभियानों ने इन मुद्दों को राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर उजागर किया।

▶ अनेक क्षेत्रों में महिलाओं को पुरुषों की तुलना में कम वेतन मिलता है

समान वेतन और रोजगार: अनेक क्षेत्रों में महिलाओं को पुरुषों की तुलना में कम वेतन मिलता है। 'Equal Pay for Equal Work' का विचार आंदोलन के केंद्र में है।

राजनीतिक भागीदारी: महिलाओं को पंचायत राज में 33% आरक्षण दिया गया है। लेकिन उच्च स्तर की राजनीति में महिलाओं की भागीदारी अभी भी सीमित है।

समकालीन संदर्भ में स्त्री मुक्ति आंदोलन के प्रमुख मुद्दे है :-

समकालीन स्त्री मुक्ति आंदोलन:

MeToo आंदोलन: यह आंदोलन भारत में कार्यस्थलों और समाज में यौन उत्पीड़न के खिलाफ एक प्रभावी मंच बना। महिलाओं ने अपने अनुभव साझा कर न्याय की मांग की।

LGBTQIA+ अधिकार: स्त्री मुक्ति आंदोलन का एक विस्तार LGBTQIA+ अधिकारों को शामिल करना है। यह आंदोलन लैंगिक समानता और यौनिक स्वतंत्रता के लिए काम करता है।

शहरी और ग्रामीण विभाजन: शहरी महिलाओं के मुकाबले ग्रामीण महिलाओं को शिक्षा, स्वास्थ्य और रोजगार के कम अवसर मिलते हैं। यह आंदोलन दोनों क्षेत्रों में समानता लाने की कोशिश करता है।

▶ स्त्री मुक्ति आंदोलन ने भारत में महिलाओं की स्थिति को सुधारने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है

स्त्री मुक्ति आंदोलन ने भारत में महिलाओं की स्थिति को सुधारने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। चाहे वह सती प्रथा का अंत हो, बाल विवाह का उन्मूलन हो, या शिक्षा और रोजगार के अवसरों में वृद्धि-इन प्रयासों ने महिलाओं को अपनी क्षमता का एहसास कराया है। हालांकि, अभी भी कई चुनौतियाँ बनी हुई हैं, जैसे पितृसत्तात्मक सोच, घरेलू हिंसा, और आर्थिक असमानता।

▶ जब महिलाएँ सशक्त होंगी, तब ही देश का वास्तविक विकास संभव होगा

समाज के हर वर्ग को यह समझने की आवश्यकता है कि महिलाओं के अधिकार केवल उनका मुद्दा नहीं हैं, बल्कि यह एक ऐसे समाज के निर्माण से जुड़े हैं जो न्याय, समानता, और समावेशिता पर आधारित हो। जब महिलाएँ सशक्त होंगी, तब ही देश का वास्तविक विकास संभव होगा।

इसलिए, स्त्री मुक्ति आंदोलन को एक निरंतर प्रक्रिया के रूप में देखने की आवश्यकता है, जो महिलाओं को स्वतंत्रता, समानता, और सम्मान का जीवन जीने का अवसर प्रदान करे। यह आंदोलन न केवल महिलाओं के लिए, बल्कि पूरे समाज के लिए प्रगति का मार्ग प्रशस्त करता है।

Summarised Overview / संक्षिप्त अवलोकन

स्त्री मुक्ति आंदोलन न केवल महिलाओं की स्वतंत्रता और समानता सुनिश्चित करता है, बल्कि यह समाज के समग्र विकास और प्रगति का आधार भी है। यह आंदोलन एक ऐसा प्रयास है जो महिलाओं को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक करता है और उन्हें सामाजिक, आर्थिक, और राजनीतिक क्षेत्रों में समान अवसर दिलाने की दिशा में काम करता है। पाश्चात्य और भारतीय संदर्भ में यह आंदोलन भले ही अलग-अलग ऐतिहासिक और सांस्कृतिक परिस्थितियों में विकसित हुआ हो, लेकिन इसका उद्देश्य समान रहा है- महिलाओं को उनकी गरिमा और स्वतंत्रता का एहसास कराना और एक ऐसा समाज बनाना जो न्याय, समानता और समावेशिता पर आधारित हो।

Assignment / प्रदत्त कार्य

1. स्त्री मुक्ति आंदोलन का उद्भव कैसे हुआ? इसके विकास में किन प्रमुख कारकों ने योगदान दिया?
2. पाश्चात्य और भारतीय संदर्भ में स्त्री मुक्ति आंदोलन के उद्भव में क्या अंतर हैं?
3. 19वीं और 20वीं शताब्दी के दौरान स्त्री मुक्ति आंदोलन में आए बदलावों का वर्णन कीजिए।

Reference / संदर्भ ग्रंथ

1. स्त्री मुक्ति का सपना - सं. कमला प्रसाद, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली
2. स्त्री संघर्ष का इतिहास - सं. राधा कुमार, वाणी प्रकाशन
3. उपनिवेश में स्त्री - प्रभा खेतान, राजकमल प्रकाशन
4. स्त्री परंपरा और आधुनिकता - सं. राज किशोर, वाणी प्रकाशन
5. स्त्री सशक्तिकरण की दिशा - रेखा कसतवार, राजकमल प्रकाशन
6. बाजार के बीच बाजार के खिलाफ - प्रभा खेतान, वाणी प्रकाशन

Suggested Reading / निर्धारित पुस्तक

1. स्त्री मुक्ति : संघर्ष और इतिहास - रमणिका गुप्ता
2. उपनिवेश में स्त्री - प्रभा खेतान
3. लिहाफ - इस्मत चुगताई

Space for Learner Engagement for Objective Questions

Learners are encouraged to develop objective questions based on the content in the paragraph as a sign of their comprehension of the content. The Learners may reflect on the recap bullets and relate their understanding with the narrative in order to frame objective questions from the given text. The University expects that 1 - 2 questions are developed for each paragraph. The space given below can be used for listing the questions.

SGOU

इकाई 4

वर्जीनिया वुल्फ और नारी लेखन परंपरा- ए रूम का वन'एस ऑन - उत्तर औपनिवेशिक नारीवाद, ब्लैक फेमिनिज्म, इस्लामी फेमिनिज्म, लेस्बियन फेमिनिज्म, साइबर फेमिनिज्म, इको फेमिनिज्म

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- वर्जीनिया वुल्फ की "ए रूम ऑफ़ वन'स ओन" की प्रमुख अवधारणाओं को समझता है
- विभिन्न प्रकार के नारीवाद से परिचय प्राप्त करता है
- साहित्य, समाज और संस्कृति में नारीवादी दृष्टिकोण के ऐतिहासिक और समकालीन प्रभावों का विश्लेषण करता है
- महिलाओं की रचनात्मकता और उनकी स्वतंत्रता के लिए आवश्यक सामाजिक और आर्थिक परिस्थितियों की समझ विकसित करेंगे
- नारीवाद की विविधता और इसकी प्रासंगिकता को समझता है

Background / पृष्ठभूमि

नारीवाद महिलाओं की स्वतंत्रता, समानता और अधिकारों के लिए चलने वाला एक आंदोलन और विचारधारा है, जिसका उद्देश्य पितृसत्तात्मक व्यवस्था को चुनौती देना और समाज में लैंगिक भेदभाव को समाप्त करना है। नारीवाद का विकास कई चरणों में हुआ है। नारीवादी लेखन परंपरा ने इस आंदोलन को साहित्यिक और दार्शनिक दृष्टि से मजबूत किया। प्रारंभिक लेखन में मैरी वोल्स्टनक्राफ्ट की "A Vindication of the Rights of Woman" और वर्जीनिया वुल्फ की "A Room of One's Own" ने महिलाओं की साहित्यिक और सामाजिक स्थिति पर गहन विचार किया। वुल्फ ने तर्क दिया कि महिलाओं को साहित्य सृजन के लिए स्वतंत्रता और आर्थिक स्वायत्तता की आवश्यकता है। सिमोन द बोउवार की "The Second Sex" ने महिलाओं की अधीनता और पितृसत्ता के ढांचे की आलोचना की।

भारतीय संदर्भ में, ताराबाई शिंदे की 'स्त्री-पुरुष तुलना' और रमाबाई रानाडे के लेखन ने सामाजिक सुधार और महिलाओं की स्थिति सुधारने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। इस संदर्भ में महादेवी वर्मा की 'शृंखला की कड़ियाँ' भी उल्लेखनीय हैं। समकालीन लेखन में अरुंधति रॉय, माया एंजेलो, और कमला दास जैसी लेखिकाओं ने महिलाओं के अनुभवों, उनकी चुनौतियों और उनकी सांस्कृतिक विविधता को अभिव्यक्त किया।

नारीवाद और नारीवादी लेखन परंपरा ने न केवल महिलाओं की आवाज़ को प्रबल किया, बल्कि समाज को लैंगिक समानता और न्याय के लिए प्रेरित भी किया। यह परंपरा आज भी सामाजिक और साहित्यिक बदलाव का प्रमुख आधार बनी हुई है।

Keywords / मुख्य बिन्दु

'ए रूम का वन' एस ऑन, नारीवाद, उत्तर औपनिवेशिक नारीवाद, ब्लैक फेमिनिज्म, इस्लामी फेमिनिज्म, लेस्बियन फेमिनिज्म, साइबर फेमिनिज्म, इको फेमिनिज्म

Discussion / चर्चा

1.4.1 वर्जीनिया वुल्फ और नारी लेखन परंपरा- ए रूम का वन'एस ऑन

1.4.1.1 वर्जीनिया वुल्फ का परिचय

वर्जीनिया वुल्फ (1882-1941) 20वीं शताब्दी की प्रमुख अंग्रेजी लेखिका, निबंधकार और नारीवादी विचारक थीं। उनका जन्म 25 जनवरी 1882 को लंदन, इंग्लैंड में हुआ था। उनका पूरा नाम एडलाइन वर्जीनिया स्टीफन था। वुल्फ आधुनिकतावादी साहित्य की अग्रणी रचनाकारों में गिनी जाती हैं और उनकी लेखन शैली ने साहित्य को नए आयाम दिए।

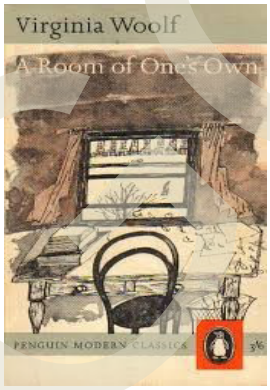

▶ वुल्फ की *"A Room of One's Own"* (1929) नारीवादी साहित्य मील का पत्थर

उनके प्रमुख उपन्यासों में शामिल हैं: "Mrs. Dalloway" (1925): यह उपन्यास एक दिन की घटनाओं के माध्यम से समय, स्मृति और समाज पर गहन दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है। "To the Lighthouse" (1927): यह उपन्यास परिवार और जीवन की जटिलताओं पर आधारित है और वुल्फ के सबसे प्रसिद्ध कार्यों में से एक है। "Orlando" (1928): यह उपन्यास लिंग और पहचान की सीमाओं को चुनौती देता है। "The Waves" (1931): यह एक प्रयोगात्मक कृति है, जिसमें कवितामय गद्य का प्रयोग किया गया है।

"A Room of One's Own" में उन्होंने महिलाओं के आर्थिक और सामाजिक स्वतंत्रता की आवश्यकता पर ज़ोर दिया और यह तर्क दिया कि महिलाएँ तब तक सृजनात्मक नहीं हो सकतीं, जब तक उनके पास अपना आर्थिक और मानसिक स्वतंत्रता न हो। उन्होंने साहित्य में लैंगिक भेदभाव और पितृसत्ता के प्रभाव की आलोचना की।

उन्होंने कई बार अवसाद का सामना किया, जो उनके लेखन में भी झलकता है। उन्होंने 1912 में लेखक और प्रकाशक लियोनार्ड वुल्फ से विवाह किया और दोनों ने मिलकर हॉगर्थ प्रेस की स्थापना की, जो उस समय के प्रगतिशील लेखकों की कृतियों को प्रकाशित करता था। वुल्फ ने 28 मार्च 1941 को अपनी जान ले ली। मानसिक तनाव और अवसाद से जूझते हुए उन्होंने नदी में कूदकर आत्महत्या कर ली।

1.4.1.2 "ए रूम ऑफ़ वन'स ओन" का परिचय

▶ "एक अपना कमरा" एक रूपक है, जो महिला की स्वतंत्रता और आत्मनिर्भरता की आवश्यकता को दर्शाता है

"ए रूम ऑफ़ वन'स ओन" एक विस्तारित निबंध है, जो वुल्फ के 1928 में दिए गए दो व्याख्यानों पर आधारित है। इस निबंध का मुख्य तर्क यह है कि महिलाओं को अच्छा साहित्य रचने के लिए आर्थिक स्वतंत्रता और व्यक्तिगत स्वतंत्रता (एक अपना कमरा) की आवश्यकता होती है।

वुल्फ का तर्क है कि ऐतिहासिक रूप से महिलाओं को शिक्षा, आर्थिक संसाधनों और निजी स्थान से वंचित रखा गया, जिससे उनका साहित्यिक योगदान सीमित हो गया। उनका यह निबंध नारीवादी लेखन के इतिहास और उसके विकास पर केंद्रित है।

1.4.1.3 "ए रूम ऑफ़ वन'स ओन" की प्रमुख अवधारणाएँ

(क) एक अपना कमरा और आर्थिक स्वतंत्रता:

वुल्फ का मानना है कि किसी महिला के लिए लिखने की क्षमता केवल प्रतिभा पर निर्भर नहीं करती, बल्कि आर्थिक स्वतंत्रता और मानसिक एकाग्रता भी आवश्यक है। 'एक अपना कमरा' एक रूपक है, जो महिला की स्वतंत्रता और आत्मनिर्भरता की आवश्यकता को दर्शाता है।

(ख) साहित्य में लैंगिक असमानता:

▶ 'एक अपना कमरा' एक रूपक है

वुल्फ ने यह दिखाया कि साहित्य में महिलाओं की अनुपस्थिति पितृसत्तात्मक समाज की संरचना का परिणाम है। उन्होंने सवाल उठाया कि शेक्सपियर की बहन अगर उतनी ही प्रतिभाशाली होती, तो क्या वह उसी प्रकार सफल हो पाती?उनका निष्कर्ष है कि महिलाओं को ऐतिहासिक रूप से रचनात्मकता के अवसरों से वंचित रखा गया।

(ग) ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और पितृसत्तात्मक समाज:

वुल्फ ने ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में यह विश्लेषण किया कि कैसे पुरुषों ने महिलाओं को शिक्षा और रचनात्मकता से वंचित रखा। उन्होंने यह भी बताया कि महिलाएँ अक्सर पुरुषों की अपेक्षाओं और सामाजिक प्रतिबंधों के कारण अपनी असली आवाज़ खो बैठती हैं।

1.4.1.4 वर्जीनिया वुल्फ और नारी लेखन परंपरा

(क) नारी लेखन परंपरा में योगदान:

वुल्फ ने महिलाओं को अपने जीवन और साहित्यिक अनुभव को अपनी लेखनी

में स्थान देने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने नारीवाद की बौद्धिक नींव रखी और यह समझाया कि महिलाओं को पितृसत्ता के बंधनों से मुक्त होकर लिखने की आवश्यकता है।

(ख) शेक्सपियर की काल्पनिक बहनः

▶ वुल्फ ने 'शेक्सपियर की बहन' का उदाहरण दिया

वुल्फ ने 'शेक्सपियर की बहन' का उदाहरण दिया, जो उनके निबंध का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। वह दर्शाती हैं कि अगर शेक्सपियर की कोई बहन होती, जो उतनी ही प्रतिभाशाली होती, तो भी समाज में लैंगिक असमानता के कारण उसे अपनी प्रतिभा व्यक्त करने का अवसर नहीं मिलता।

(ग) आत्म-अभिव्यक्ति का महत्वः

वुल्फ ने कहा कि महिलाओं को अपनी असली आवाज़ और दृष्टिकोण के साथ लिखना चाहिए। उन्होंने साहित्य को पुरुष और महिला दृष्टिकोण दोनों से समृद्ध बनाने की बात कही।

यह निबंध साहित्यिक इतिहास का गहन विश्लेषण प्रस्तुत करता है और महिलाओं की स्वतंत्रता और उनके अधिकारों की आवश्यकता पर प्रकाश डालता है। आज भी यह कृति महिलाओं के लिए प्रेरणा का स्रोत है। यह महिलाओं को सामाजिक और आर्थिक स्वतंत्रता की दिशा में सोचने और काम करने के लिए प्रेरित करती है। नारीवादी आंदोलन में इस कृति को एक क्लासिक माना जाता है, जो महिलाओं के आत्मनिर्भरता और लेखन की स्वतंत्रता के महत्व को रेखांकित करता है।

1.4.2 उत्तर औपनिवेशिक नारीवाद

उत्तर-औपनिवेशिक नारीवाद (Postcolonial Feminism) एक विचारधारा और आंदोलन है, जो पश्चिमी नारीवाद के आलोचना करते हुए उन स्त्रियों के अनुभवों और संघर्षों को केंद्र में रखती है, जो उपनिवेशवाद और औपनिवेशिक व्यवस्था से प्रभावित रही हैं। यह नारीवाद न केवल पितृसत्ता, बल्कि जातिवाद, साम्राज्यवाद, नस्लवाद और सांस्कृतिक दमन के खिलाफ आवाज उठाता है। उत्तर-औपनिवेशिक नारीवाद का उद्देश्य महिलाओं के संघर्ष को उनकी सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और सामाजिक परिस्थितियों के संदर्भ में समझना है।

1.4.2.1 उत्तर-औपनिवेशिक नारीवाद का विकास

▶ उत्तर-औपनिवेशिक नारीवाद 1980 और 1990 के दशक में उभरा

उत्तर-औपनिवेशिक नारीवाद 1980 और 1990 के दशक में उभरा, जब पश्चिमी नारीवाद की आलोचना होने लगी कि वह केवल श्वेत, पश्चिमी, मध्यवर्गीय महिलाओं की समस्याओं पर केंद्रित है। इस आंदोलन ने पश्चिमी नारीवाद की उस प्रवृत्ति को चुनौती दी, जिसमें विकासशील देशों की महिलाओं को "पीड़ित" या "पिछड़ा" दिखाया गया।

इस विचारधारा के तहत कहा गया कि प्रत्येक महिला का अनुभव अलग है और

उसे उसकी सांस्कृतिक और सामाजिक पृष्ठभूमि के संदर्भ में समझा जाना चाहिए। उत्तर-औपनिवेशिक नारीवाद ने औपनिवेशिक व्यवस्था के दौरान महिलाओं के शोषण और उपनिवेशों की स्वतंत्रता के बाद उनके संघर्षों को भी उजागर किया।

1.4.2.2 उत्तर औपनिवेशवाद की मुख्य अवधारणाएँ

▶ उत्तर औपनिवेशवाद औपनिवेशिक काल के दौरान अपनाई गई नीतियों और प्रथाओं की आलोचना करता है

1. औपनिवेशिक इतिहास की आलोचना

उत्तर औपनिवेशवाद औपनिवेशिक काल के दौरान अपनाई गई नीतियों और प्रथाओं की आलोचना करता है। यह उपनिवेशवाद के माध्यम से हुए शोषण, असमानता और दमन का विश्लेषण करता है। औपनिवेशिक शक्तियों ने जिन समाजों और संस्कृतियों को प्रभावित किया, उनका व्यापक अध्ययन इस अवधारणा का मुख्य उद्देश्य है।

▶ मानसिकता और विचारधारा से मुक्त होकर अपनी सांस्कृतिक विरासत पर गर्व करने की ओर प्रेरित करता है

2. पहचान और सांस्कृतिक पुनर्निर्माण

औपनिवेशिक काल के दौरान स्थानीय भाषाओं, परंपराओं और पहचान को कमज़ोर किया गया। उत्तर औपनिवेशवाद उन समुदायों और संस्कृतियों की पहचान को पुनः स्थापित करने और सांस्कृतिक धरोहर को संरक्षित करने का प्रयास करता है। यह औपनिवेशिक मानसिकता और विचारधारा से मुक्त होकर अपनी सांस्कृतिक विरासत पर गर्व करने की ओर प्रेरित करता है।

3. शक्ति और ज्ञान का समीकरण

▶ सत्ता और ज्ञान के संबंध का अध्ययन करता है

उत्तर औपनिवेशवाद सत्ता और ज्ञान के संबंध का अध्ययन करता है। यह दर्शाता है कि किस प्रकार उपनिवेशवादी शक्तियों ने अपने ज्ञान और विचारधारा को श्रेष्ठ मानकर स्थानीय ज्ञान और परंपराओं को तुच्छ साबित किया। इसका उद्देश्य शक्ति संरचनाओं को समझना और उन्हें चुनौती देना है।

4. उपनिवेशवाद के मनोवैज्ञानिक प्रभाव

▶ 'औपनिवेशिक मानसिकता' (Colonial Mentality) जैसे विषयों का विश्लेषण

यह विचारधारा उन मानसिक और भावनात्मक प्रभावों का भी अध्ययन करती है, जो औपनिवेशिक शासन ने समाज और व्यक्तियों पर डाले। 'औपनिवेशिक मानसिकता' (Colonial Mentality) जैसे विषयों का विश्लेषण यह दर्शाता है कि कैसे लोगों को उनकी सांस्कृतिक पहचान और आत्मसम्मान से वंचित किया गया।

5. साहित्य और कला का विश्लेषण

▶ कला और सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों में औपनिवेशिक अनुभवों और उनके प्रभावों का अध्ययन करता है

उत्तर औपनिवेशवाद साहित्य, कला और सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों में औपनिवेशिक अनुभवों और उनके प्रभावों का अध्ययन करता है। इसमें रचनाकारों द्वारा उपनिवेशवाद की आलोचना, स्वदेशी संस्कृति का पुनरुत्थान, और औपनिवेशिक विरासत का चित्रण महत्वपूर्ण हैं।

▶ यह वैश्वीकरण, नस्लवाद, आर्थिक असमानता और सांस्कृतिक उपनिवेशवाद जैसे मुद्दों को उजागर करता है

6. आधुनिक समाजों में उपनिवेशवाद के अवशेष

उत्तर औपनिवेशवाद वर्तमान में औपनिवेशिक विचारधाराओं और उनकी संरचनाओं के अवशेषों को पहचानने और चुनौती देने पर ध्यान केंद्रित करता है। यह वैश्वीकरण, नस्लवाद, आर्थिक असमानता और सांस्कृतिक उपनिवेशवाद जैसे मुद्दों को उजागर करता है।

1.4.2.3 उत्तर औपनिवेशिक नारीवादः पाश्चात्य और भारतीय दृष्टिकोण

पाश्चात्य दृष्टिकोण

पाश्चात्य उत्तर औपनिवेशिक नारीवाद मुख्यतः इस बात पर ज़ोर देता है कि औपनिवेशिक शासन ने महिलाओं को किस प्रकार दोहरे स्तर पर शोषित किया: एक ओर वे पितृसत्ता का शिकार बनीं, और दूसरी ओर औपनिवेशिक शक्तियों ने उनकी सांस्कृतिक पहचान और अधिकारों को नष्ट किया।

1. गायत्री चक्रवर्ती स्पिवाक

▶ गायत्री चक्रवर्ती स्पिवाक एक प्रमुख उत्तर औपनिवेशिक नारीवादी विचारक हैं

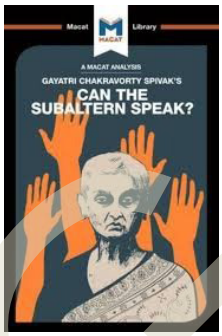

गायत्री चक्रवर्ती स्पिवाक एक प्रमुख उत्तर औपनिवेशिक नारीवादी विचारक हैं। उनकी प्रसिद्ध रचना "Can the Subaltern Speak?" में उन्होंने इस बात पर चर्चा की कि औपनिवेशिक और पितृसत्तात्मक ताकतों ने महिलाओं को "सुबाल्टर्न" (हाशिए पर खड़ी) बना दिया है। उनका कहना है कि पाश्चात्य नारीवाद अक्सर तीसरी दुनिया की महिलाओं की आवाज को समझने या उन्हें मंच देने में विफल रहा है।

2. चंद्र तलपड़े मोहन्टी

▶ उत्तर औपनिवेशिक समाजों में महिलाओं के अधिकारों और उनकी सांस्कृतिक पहचान की बहाली पर ज़ोर दिया

चंद्र तलपड़े मोहन्टी ने अपनी पुस्तक "Under Western Eyes: Feminist Scholarship and Colonial Discourses" में पाश्चात्य नारीवाद की आलोचना की है। उन्होंने बताया कि कैसे पाश्चात्य नारीवादी शोध तीसरी दुनिया की महिलाओं को एकरूप (homogeneous) और कमज़ोर के रूप में चित्रित करता है। वह स्थानीय संदर्भ और विविधता को समझने की आवश्यकता पर बल देती हैं।

3. हमीदा हुसैन

हमीदा हुसैन ने उत्तर औपनिवेशिक समाजों में महिलाओं के अधिकारों और उनकी सांस्कृतिक पहचान की बहाली पर ज़ोर दिया। उन्होंने इस पर चर्चा की कि किस प्रकार औपनिवेशिक शासन ने महिलाओं के सामाजिक और आर्थिक अधिकारों को सीमित किया।

भारतीय दृष्टिकोण

भारतीय उत्तर औपनिवेशिक नारीवाद उपनिवेशवाद और पितृसत्ता के संयुक्त प्रभाव

को समझने पर केंद्रित है। यह भारतीय समाज में महिलाओं के संघर्षों और उनकी सांस्कृतिक विशेषताओं पर प्रकाश डालता है।

1. कमला दास

> ▶ महिलाओं की यौनिकता, आत्मनिर्भरता और सामाजिक पितृसत्ता के खिलाफ आवाज उठाई

भारतीय लेखिका और कवयित्री कमला दास ने अपनी रचनाओं में महिलाओं की यौनिकता, आत्मनिर्भरता और सामाजिक पितृसत्ता के खिलाफ आवाज उठाई। उनकी कविताएँ भारतीय समाज में महिलाओं की आंतरिक भावनाओं और संघर्षों को प्रकट करती हैं।

2. महाश्वेता देवी

महाश्वेता देवी ने अपने साहित्य में आदिवासी और दलित महिलाओं के संघर्षों को चित्रित किया। उनकी कहानियाँ उपनिवेशवाद, पितृसत्ता और वर्ग भेद के दमन के त्रिस्तरीय शोषण को उजागर करती हैं।

3. अरुंधति रॉय

अरुंधति रॉय ने उपनिवेशवाद, जाति और पितृसत्ता के जटिल संबंधों को उजागर किया है। उनकी रचनाएँ, विशेष रूप से 'च्ण्ड्ढ क्र्ठ्ठ दृढ च्श्ठ्ठथ्थ् च्ण्त्दढ़ड्ढ', भारतीय समाज में महिलाओं के साथ हो रहे अन्याय और उनके संघर्षों को सामने लाती हैं।

4. तसलीमा नसरीन

हालांकि बांग्लादेश से संबंधित, तसलीमा नसरीन की रचनाएँ भारतीय उपमहाद्वीप की महिलाओं के मुद्दों को उजागर करती हैं। उन्होंने धार्मिक पितृसत्ता और महिलाओं की स्वतंत्रता के विषयों पर खुलकर लिखा।

> ▶ नारीवाद केवल पाश्चात्य संदर्भों तक सीमित नहीं रहा

उत्तर औपनिवेशिक नारीवाद ने नारीवाद के दृष्टिकोण को व्यापक बनाते हुए उपनिवेशवाद और पितृसत्ता के संयुक्त प्रभावों का विश्लेषण किया। इसने पाश्चात्य नारीवाद की सीमाओं को उजागर करते हुए तीसरी दुनिया की महिलाओं के अनुभवों और संघर्षों को केंद्र में रखा। इसके परिणामस्वरूप नारीवाद केवल पाश्चात्य संदर्भों तक सीमित नहीं रहा, बल्कि वैश्विक स्तर पर सांस्कृतिक और स्थानीय विविधताओं को शामिल किया गया।

इस सिद्धांत का प्रभाव साहित्य, कला और सामाजिक आंदोलनों में स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। महिला लेखन और सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों को अधिक मान्यता मिलने लगी, जिससे हाशिए पर खड़ी महिलाओं की आवाज़ को मुख्यधारा में स्थान मिला। उत्तर औपनिवेशिक नारीवाद ने यह भी बताया कि उपनिवेशवाद ने न केवल संसाधनों का शोषण किया, बल्कि शक्ति और ज्ञान के माध्यम से महिलाओं को दबाने का प्रयास किया।

यह सिद्धांत विकास और नीति निर्माण में महिलाओं की जरूरतों को समझने और उन्हें

केंद्र में रखने पर भी ज़ोर देता है। इसमें स्थानीय संदर्भों और परंपराओं का सम्मान करते हुए महिलाओं के सशक्तिकरण के प्रयास किए गए। इसके साथ ही, अंतरविषयकता की अवधारणा को बढ़ावा दिया गया, जिसमें यह समझाया गया कि जाति, वर्ग, धर्म और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि महिलाओं के अनुभवों को गहराई से प्रभावित करते हैं।

▶ जाति, वर्ग, धर्म और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि महिलाओं के अनुभवों को गहराई से प्रभावित करते हैं

उत्तर औपनिवेशिक नारीवाद ने महिलाओं की सांस्कृतिक पहचान और स्वायत्तता को पुनः स्थापित करने पर ज़ोर दिया। इसने औपनिवेशिक मानसिकता से उत्पन्न आत्महीनता की भावना को चुनौती दी और महिलाओं को अपनी सांस्कृतिक धरोहर पर गर्व करने के लिए प्रेरित किया। इस सिद्धांत का प्रभाव आज भी नारीवादी आंदोलनों, साहित्य और सामाजिक संरचनाओं में गहराई से महसूस किया जाता है।

1.4.3 ब्लैक फेमिनिज़म

ब्लैक फेमिनिज़म (Black Feminism) एक महत्वपूर्ण नारीवादी आंदोलन और विचारधारा है, जो नस्लीय, लैंगिक और वर्गीय भेदभाव के परस्पर प्रभावों का विश्लेषण करता है। यह मुख्यधारा के नारीवाद की उस कमी को उजागर करता है, जिसने ऐतिहासिक रूप से काले महिलाओं के अनुभवों और संघर्षों को पर्याप्त रूप से मान्यता नहीं दी। ब्लैक फेमिनिज़म का उद्देश्य काले महिलाओं की विशिष्ट समस्याओं को समझना और उनके लिए सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक समानता प्राप्त करना है।

▶ महत्वपूर्ण नारीवादी आंदोलन और विचारधारा है

1.4.3.1 ब्लैक फेमिनिज़म की पृष्ठभूमि

ब्लैक फेमिनिज़म की उत्पत्ति 19वीं सदी के उत्तरार्ध और 20वीं सदी के प्रारंभ में हुई, जब काले महिलाएँ नस्लीय और लैंगिक भेदभाव के दोहरे अन्याय का सामना कर रही थीं। काले महिलाओं ने पाया कि मुख्यधारा के नारीवाद ने उनकी समस्याओं को दरकिनार कर दिया और नस्लीय समानता के आंदोलनों ने महिलाओं के मुद्दों को अनदेखा किया। इस दोहरे बहिष्कार ने ब्लैक फेमिनिज़म के उदय को प्रेरित किया।

▶ पितृसत्ता (Patriarchy) और नस्लवाद (Racism) परस्पर जुड़े हुए हैं

काले नारीवादी यह मानते हैं कि पितृसत्ता (Patriarchy) और नस्लवाद (Racism) परस्पर जुड़े हुए हैं और काले महिलाओं की पहचान व अनुभव को आकार देते हैं। मुख्यधारा का नारीवाद, जो प्रायः श्वेत महिलाओं के अनुभवों पर केंद्रित था, काले महिलाओं के विशिष्ट सामाजिक संदर्भ को संबोधित करने में विफल रहा।

1.4.3.2 ब्लैक फेमिनिज़म के मुख्य सिद्धांत

1. इंटरसेक्शनैलिटी (Intersectionality)

किम्बर्ले क्रेंशॉ (Kimberlé Crenshaw) ने "इंटरसेक्शनैलिटी" शब्द गढ़ा, जो ब्लैक फेमिनिज़म का केंद्रीय सिद्धांत है। यह अवधारणा बताती है कि कैसे नस्ल, लिंग, वर्ग,

यौनिकता और अन्य पहचानें परस्पर जुड़ी होती हैं और काले महिलाओं के अनुभवों को गहराई से प्रभावित करती हैं। एक काली महिला न केवल महिला होने के कारण भेदभाव का सामना करती है, बल्कि उसकी नस्ल और वर्ग भी इस भेदभाव को और जटिल बना देते हैं।

2. पितृसत्ता और नस्लवाद का संयोजन

- पितृसत्ता और नस्लवाद साथ-साथ काम करते हैं और काले महिलाओं को शोषण व हाशिए पर धकेलते हैं

ब्लैक फेमिनिज़म यह मानता है कि पितृसत्ता और नस्लवाद साथ-साथ काम करते हैं और काले महिलाओं को शोषण व हाशिए पर धकेलते हैं। काले महिलाओं को इन दोनों व्यवस्थाओं के भीतर अद्वितीय चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, जो श्वेत महिलाओं या काले पुरुषों के अनुभवों से भिन्न होती हैं।

3. सांस्कृतिक पहचान और सामूहिकता

- ब्लैक फेमिनिज़म काले महिलाओं की सांस्कृतिक विरासत, परंपराओं और समुदायों को महत्व देता है

ब्लैक फेमिनिज़म काले महिलाओं की सांस्कृतिक विरासत, परंपराओं और समुदायों को महत्व देता है। यह काले समुदायों के भीतर महिलाओं की भूमिका पर भी ध्यान केंद्रित करता है और उनकी विशिष्ट पहचान को सम्मान देता है।

4. आर्थिक और सामाजिक न्याय

ब्लैक फेमिनिस्ट यह समझते हैं कि आर्थिक असमानता और वर्गीय विभाजन भी काले महिलाओं को व्यापक रूप से प्रभावित करते हैं। इसलिए, सामाजिक और आर्थिक न्याय को इस आंदोलन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बनाया गया है।

1.4.3.3 ब्लैक फेमिनिज़मः विस्तृत विवरण

- मुख्यधारा के नारीवाद की कमी को उजागर करता है

ब्लैक फेमिनिज़म (Black Feminism) एक महत्वपूर्ण नारीवादी आंदोलन और विचारधारा है, जो नस्लीय, लैंगिक और वर्गीय भेदभाव के परस्पर प्रभावों का विश्लेषण करता है। यह मुख्यधारा के नारीवाद की उस कमी को उजागर करता है, जिसने ऐतिहासिक रूप से काले महिलाओं के अनुभवों और संघर्षों को पर्याप्त रूप से मान्यता नहीं दी। ब्लैक फेमिनिज़म का उद्देश्य काले महिलाओं की विशिष्ट समस्याओं को समझना और उनके लिए सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक समानता प्राप्त करना है।

1.4.3.4 ब्लैक फेमिनिज़म के महत्वपूर्ण विचारक और उनके योगदान

1. सोजर्नर ट्रूथ (Sojourner Truth)

सोजर्नर ट्रूथ एक अफ्रीकी-अमेरिकी महिला थीं, जिन्होंने गुलामी के खिलाफ और महिलाओं के अधिकारों के लिए संघर्ष किया। उनकी प्रसिद्ध भाषण "Ain't I a Woman?" ने यह सवाल उठाया कि क्यों काले महिलाओं को न तो श्वेत महिलाओं के समान अधिकार दिए जाते हैं और न ही श्वेत पुरुषों के समान सम्मान।

2. ऑड्रे लॉर्ड (Audre Lorde)

▶ ऑड्रे लॉर्ड ने नस्ल, लिंग, यौनिकता और वर्ग के मुद्दों पर लिखा

ऑड्रे लॉर्ड ने नस्ल, लिंग, यौनिकता और वर्ग के मुद्दों पर लिखा। उन्होंने महिलाओं की विविधता और उनके संघर्षों को स्वीकार करने पर ज़ोर दिया। उनका कहना था कि "हमारी विविधता हमारी कमज़ोरी नहीं, बल्कि हमारी शक्ति है।"

3. बेल हुक्स (bell hooks)

▶ नारीवाद अक्सर श्वेत महिलाओं के अनुभवों पर केंद्रित रहता है

बेल हुक्स ने मुख्यधारा के नारीवाद की आलोचना की और बताया कि यह अक्सर श्वेत महिलाओं के अनुभवों पर केंद्रित रहता है। उन्होंने कहा कि काले महिलाओं के अनुभव नस्लीय असमानता, पितृसत्ता और आर्थिक शोषण के जटिल मेल से प्रभावित होते हैं।

4. किम्बर्ले क्रेंशॉ (Kimberlé Crenshaw)

किम्बर्ले क्रेंशॉ ने इंटरसेक्शनैलिटी की अवधारणा पेश की, जो बताती है कि काले महिलाओं को किस प्रकार बहुआयामी असमानताओं का सामना करना पड़ता है। उन्होंने यह तर्क दिया कि कानून और सामाजिक नीतियाँ काले महिलाओं की समस्याओं को पर्याप्त रूप से संबोधित करने में विफल रही हैं।

▶ ब्लैक फेमिनिज़म ने नारीवादी आंदोलन को व्यापक और समावेशी बनाया

ब्लैक फेमिनिज़म ने नारीवादी आंदोलन को व्यापक और समावेशी बनाया। इसने मुख्यधारा के नारीवाद को चुनौती दी और यह समझाया कि सभी महिलाओं का अनुभव एक समान नहीं होता। ब्लैक फेमिनिज़म ने साहित्य, कला और सांस्कृतिक अध्ययन में महत्वपूर्ण योगदान दिया। काले महिलाओं के साहित्य को एक नई पहचान और मान्यता मिली।

सामाजिक आंदोलनों में भी ब्लैक फेमिनिज़म का गहरा प्रभाव पड़ा। इसने नस्लीय और लैंगिक समानता के लिए संघर्षरत आंदोलनों को अधिक सशक्त बनाया। साथ ही, इसने काले महिलाओं के नेतृत्व वाले संगठनों को प्रेरित किया, जैसे "Combahee River Collective," जिसने नस्लीय, लैंगिक और आर्थिक असमानता को एक साथ संबोधित किया।

▶ ब्लैक फेमिनिज़म सिर्फ एक नारीवादी आंदोलन नहीं है

ब्लैक फेमिनिज़म सिर्फ एक नारीवादी आंदोलन नहीं है, बल्कि यह सामाजिक न्याय, समानता और विविधता का प्रतीक है। इसने काले महिलाओं के अनुभवों को नारीवादी विमर्श के केंद्र में लाकर यह दिखाया कि एक समावेशी समाज का निर्माण तभी संभव है, जब हर व्यक्ति की पहचान और संघर्ष को सम्मान दिया जाए।

1.4.4 इस्लामी फेमिनिज्म

▶ इस्लामी फेमिनिज़म मुख्य रूप से इस्लाम के पवित्र ग्रंथों की पुनर्व्याख्या के माध्यम से महिलाओं की स्थिति को सुधारने पर ज़ोर देता है

इस्लामी फेमिनिज्म (Islamic Feminism) एक महत्वपूर्ण सामाजिक और धार्मिक आंदोलन है, जो इस्लामी सिद्धांतों के भीतर महिलाओं के अधिकारों, समानता और न्याय की मांग करता है। यह मुख्य रूप से इस्लाम के पवित्र ग्रंथ- कुरआन और

हदीस- की पुनर्व्याख्या के माध्यम से महिलाओं की स्थिति को सुधारने पर ज़ोर देता है। इस्लामी फेमिनिज्म का उद्देश्य पितृसत्तात्मक संरचनाओं और परंपरागत गलत व्याख्याओं को चुनौती देना है, जो महिलाओं के अधिकारों को सीमित करती हैं।

1.4.4.1 इस्लामी फेमिनिज्म की पृष्ठभूमि

इस्लामी फेमिनिज्म की शुरुआत 20वीं सदी के अंत में हुई, जब मुस्लिम समाजों में महिलाओं ने महसूस किया कि इस्लामिक शिक्षाओं और सामाजिक परंपराओं के बीच एक बड़ा अंतर है। इस्लाम ने महिलाओं को अधिकार दिए, जैसे कि संपत्ति का स्वामित्व, शिक्षा का अधिकार, विवाह में सहमति, और तलाक का अधिकार, लेकिन पितृसत्तात्मक समाजों ने इन अधिकारों को महिलाओं से छीन लिया।

▶ इस्लामिक शिक्षाओं और सामाजिक परंपराओं के बीच एक बड़ा अंतर है

इस्लामी फेमिनिज्म का उद्देश्य इस्लाम के मूल ग्रंथों की प्रगतिशील व्याख्या करना है, जो महिलाओं को उनकी धार्मिक और सामाजिक पहचान के साथ समानता और स्वतंत्रता प्रदान करता है।

1.4.4.2 मुख्य विशेषताएँ और सिद्धांत

1. कुरआन की पुनर्व्याख्या

इस्लामी फेमिनिज्म कुरआन की आयतों की आलोचनात्मक और प्रगतिशील व्याख्या पर ज़ोर देता है। यह मानता है कि पितृसत्तात्मक समाजों ने कुरआन की गलत व्याख्या करके महिलाओं को उनके अधिकारों से वंचित किया।

▶ कुरआन में "मौलिक समानता" (essential equality) पर ज़ोर दिया गया है

- कुरआन में "मौलिक समानता" (essential equality) पर ज़ोर दिया गया है, जहाँ पुरुष और महिलाएँ समान रूप से अल्लाह के सामने उत्तरदायी हैं।
- उदाहरण के लिए, कुरआन की आयतें जो बहुविवाह, तलाक या उत्तराधिकार के संबंध में हैं, उनका उद्देश्य सामाजिक न्याय और संतुलन स्थापित करना था, न कि महिलाओं के अधिकारों को सीमित करना।

2. महिलाओं की शिक्षा और अधिकार

इस्लामी फेमिनिज्म महिलाओं की शिक्षा पर विशेष ज़ोर देता है। कुरआन में यह स्पष्ट रूप से कहा गया है कि शिक्षा हर मुसलमान का अधिकार है, चाहे वह पुरुष हो या महिला।

▶ शिक्षा के माध्यम से महिलाएँ अपने अधिकारों के प्रति जागरूक हो सकती हैं

- शिक्षा के माध्यम से महिलाएँ अपने अधिकारों के प्रति जागरूक हो सकती हैं और अपनी धार्मिक और सामाजिक भूमिकाओं को प्रभावी ढंग से निभा सकती हैं।

3. पितृसत्ता का विरोध

इस्लामी फेमिनिज्म इस्लाम में व्याप्त पितृसत्तात्मक व्याख्याओं को चुनौती देता है। यह मानता है कि इस्लाम का मूल संदेश समानता और न्याय का है, लेकिन सांस्कृतिक और पारंपरिक प्रथाओं ने इसे विकृत कर दिया है।

4. महिलाओं की धार्मिक भागीदारी

इस्लामी फेमिनिज्म महिलाओं के मस्जिदों और धार्मिक स्थानों में भागीदारी का समर्थन करता है। यह आंदोलन इस बात पर ज़ोर देता है कि महिलाएँ न केवल धार्मिक अध्ययन में भाग लें, बल्कि धार्मिक नेतृत्व में भी सक्रिय भूमिका निभाएँ।

5. विवाह और पारिवारिक अधिकार

इस्लामी फेमिनिज्म विवाह को एक साझेदारी के रूप में देखता है, जहाँ पति-पत्नी दोनों के समान अधिकार और जिम्मेदारियाँ होती हैं। यह बलपूर्वक विवाह, बाल विवाह, और बहुविवाह जैसी प्रथाओं की आलोचना करता है, जो अक्सर सांस्कृतिक पितृसत्ता का परिणाम होती हैं।

1.4.4.3 महत्वपूर्ण विचारक और उनके योगदान

1. अमिना वदूद (Amina Wadud)

- अमिना वदूद इस्लामी फेमिनिज्म की प्रमुख विद्वान हैं

अमिना वदूद इस्लामी फेमिनिज्म की प्रमुख विद्वान हैं। उन्होंने कुरआन की लैंगिक व्याख्या पर ज़ोर दिया और महिलाओं को धार्मिक नेतृत्व देने की वकालत की। उनकी पुस्तक "Quran and Woman: Rereading the Sacred Text from a Woman's Perspective" इस्लामी फेमिनिज्म का एक महत्वपूर्ण ग्रंथ है।

2. फातिमा मेरनीसी (Fatima Mernissi)

फातिमा मेरनीसी ने इस्लामी परंपराओं और महिलाओं के अधिकारों के बीच संबंधों का गहन अध्ययन किया। उन्होंने इस्लामी कानूनों और सामाजिक प्रथाओं की आलोचना करते हुए कहा कि ये अक्सर महिलाओं के अधिकारों को सीमित करने के लिए बनाए गए हैं।

3. लैला अहमद (Leila Ahmed)

- "Women and Gender in Islam" इस्लामी फेमिनिज्म की एक बुनियादी कृति मानी जाती है

लैला अहमद ने इस्लामी इतिहास में महिलाओं की भूमिका का अध्ययन किया और दिखाया कि किस प्रकार इस्लामी शिक्षाओं की गलत व्याख्या के माध्यम से महिलाओं को उनके अधिकारों से वंचित किया गया। उनकी पुस्तक "Women and Gender in Islam" इस्लामी फेमिनिज्म की एक बुनियादी कृति मानी जाती है।

1.4.4.4 इस्लामी फेमिनिज्म का प्रभाव

- इस्लाम ने महिलाओं को समान अधिकार दिए हैं

इस्लामी फेमिनिज्म ने मुस्लिम महिलाओं को उनके धार्मिक और सामाजिक अधिकारों के प्रति जागरूक किया। इसने यह दिखाया कि इस्लाम ने महिलाओं को समान अधिकार दिए हैं और पितृसत्तात्मक प्रथाएँ इस्लामी शिक्षाओं का हिस्सा नहीं हैं। इस्लामी फेमिनिज्म ने महिलाओं के मुद्दों को अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर प्रस्तुत किया। इसने मुस्लिम महिलाओं के अधिकारों को न केवल मुस्लिम समाजों के भीतर बल्कि वैश्विक स्तर पर भी उठाया।

इस आंदोलन ने मुस्लिम समाजों में बाल विवाह, जबरन विवाह, और महिलाओं पर हिंसा जैसे मुद्दों को चुनौती दी। इसने महिलाओं को उनके विवाह, शिक्षा, और रोजगार के अधिकारों के प्रति सशक्त किया।

1.4.4.5 इस्लामी फेमिनिज्म की चुनौतियाँ

इस्लामी फेमिनिज्म को अक्सर रूढ़िवादी धार्मिक नेताओं और पितृसत्तात्मक समाजों से विरोध का सामना करना पड़ता है। इन्हें यह आंदोलन इस्लामी परंपराओं के खिलाफ लगता है। कई मुस्लिम समाजों में सांस्कृतिक प्रथाओं और इस्लामी शिक्षाओं के बीच भिन्नता को समझने में कठिनाई होती है। इस्लामी फेमिनिज्म को यह चुनौती है कि वह सांस्कृतिक प्रथाओं और धार्मिक सिद्धांतों के बीच स्पष्ट अंतर दिखा सके। इस्लामी फेमिनिज्म के भीतर भी विभिन्न दृष्टिकोण हैं। कुछ विद्वान धर्मनिरपेक्ष दृष्टिकोण से प्रेरित हैं, जबकि अन्य कुरआन और हदीस के भीतर ही सुधार की मांग करते हैं।

▶ इस्लाम का मूल संदेश महिलाओं और पुरुषों के बीच समानता और न्याय का है

इसे समग्र रूप से देखें तो हम जान सकते है कि इस्लामी फेमिनिज्म एक प्रगतिशील आंदोलन है, जो इस्लाम के मूल संदेश - समानता, न्याय, और मानवाधिकार - को पुनः स्थापित करने की कोशिश करता है। यह पितृसत्तात्मक समाजों और उनकी प्रथाओं को चुनौती देते हुए महिलाओं को उनके धार्मिक और सामाजिक अधिकार दिलाने की दिशा में काम करता है। इस्लामी फेमिनिज्म न केवल महिलाओं को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक करता है, बल्कि यह दिखाता है कि इस्लाम का मूल संदेश महिलाओं और पुरुषों के बीच समानता और न्याय का है। यह आंदोलन मुस्लिम समाजों में सुधार और महिलाओं के सशक्तिकरण की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

1.4.5 लेस्बियन फेमिनिज़म

लेस्बियन फेमिनिज़म (Lesbian Feminism) एक नारीवादी विचारधारा और सामाजिक आंदोलन है, जो लैंगिक और यौनिक समानता की वकालत करता है। यह मुख्यधारा के नारीवाद की सीमाओं को चुनौती देता है और पितृसत्तात्मक संरचना के भीतर समलैंगिक महिलाओं (लेस्बियन्स) के अनुभवों और अधिकारों पर केंद्रित है। लेस्बियन फेमिनिज़म यह तर्क देता है कि पितृसत्ता का एक प्रमुख औजार विषमलैंगिकता (Heterosexuality) है, जो महिलाओं के शोषण को बनाए रखने में योगदान देता है। इस आंदोलन का उद्देश्य महिलाओं को विषमलैंगिकता की बाध्यताओं से मुक्त करना और महिलाओं के बीच एकजुटता और सशक्तिकरण को बढ़ावा देना है।

▶ लेस्बियन फेमिनिज़म यह तर्क देता है कि पितृसत्ता का एक प्रमुख औजार विषमलैंगिकता (Heterosexuality) है

लेस्बियन फेमिनिज़म यह तर्क देता है कि पितृसत्ता का एक प्रमुख औजार विषमलैंगिकता (Heterosexuality) है, जो महिलाओं के शोषण को बनाए रखने में योगदान देता है। इस आंदोलन का उद्देश्य महिलाओं को विषमलैंगिकता की बाध्यताओं से मुक्त करना और महिलाओं के बीच एकजुटता और सशक्तिकरण को बढ़ावा देना है।

1.4.5.1 लेस्बियन फेमिनिज़म की उत्पत्ति

लेस्बियन फेमिनिज़म की जड़ें 1960 और 1970 के दशक में दूसरे नारीवादी

आंदोलन (Second Wave Feminism) और समलैंगिक अधिकार आंदोलन (Gay Rights Movement) से जुड़ी हैं। उस समय, मुख्यधारा के नारीवादी आंदोलनों ने समलैंगिक महिलाओं के मुद्दों को अक्सर नजरअंदाज किया। समलैंगिक महिलाओं को महसूस हुआ कि विषमलैंगिक नारीवादी आंदोलन उनकी यौनिकता और विशिष्ट समस्याओं को स्वीकार करने में विफल है। इसके परिणामस्वरूप लेस्बियन फेमिनिस्ट आंदोलन का विकास हुआ।

▶ समलैंगिक महिलाओं के मुद्दों को अक्सर नजरअंदाज किया

लेस्बियन फेमिनिस्ट्स ने पितृसत्ता को केवल महिलाओं पर पुरुषों के अधिकार के रूप में नहीं देखा, बल्कि उन्होंने इसे विषमलैंगिकता को संस्थागत रूप से थोपने के रूप में भी समझा। उन्होंने कहा कि विषमलैंगिकता महिलाओं को पुरुषों पर निर्भर बनाती है और उनकी स्वतंत्रता को सीमित करती है।

▶ विषमलैंगिकता महिलाओं को पुरुषों पर निर्भर बनाती है

1.4.5.2 लेस्बियन फेमिनिज़म के मुख्य सिद्धांत

1. विषमलैंगिकता की आलोचना

लेस्बियन फेमिनिज़म विषमलैंगिकता को पितृसत्तात्मक संरचना का एक औजार मानता है, जो महिलाओं को पुरुषों के साथ यौन और सामाजिक रूप से जोड़ने के लिए बाध्य करता है। यह तर्क देता है कि विषमलैंगिकता का समर्थन महिलाओं की स्वतंत्रता और स्वायत्तता को बाधित करता है।

2. महिला-केंद्रितता (Woman-Centeredness)

लेस्बियन फेमिनिज़म महिलाओं के बीच संबंधों और सामूहिकता को प्राथमिकता देता है। यह मानता है कि महिलाएँ, जब पुरुषों पर निर्भर नहीं होतीं, तो अधिक स्वतंत्र, सशक्त और अपनी पहचान के प्रति सच्ची होती हैं।

▶ महिलाएँ, जब पुरुषों पर निर्भर नहीं होतीं, तो अधिक स्वतंत्र, सशक्त और अपनी पहचान के प्रति सच्ची होती हैं

3. पितृसत्ता और लैंगिक भूमिकाओं की आलोचना

लेस्बियन फेमिनिज़म पितृसत्ता और उससे जुड़ी लैंगिक भूमिकाओं को अस्वीकार करता है। यह मानता है कि महिलाओं और पुरुषों के लिए बनाए गए पारंपरिक सामाजिक और यौनिक मानदंड असमानता को बनाए रखते हैं।

4. समलैंगिकता को सकारात्मक रूप में स्वीकार करना

▶ समलैंगिकता को महिलाओं के लिए एक विकल्प और उनकी स्वतंत्रता का प्रतीक मानता है

लेस्बियन फेमिनिज़म समलैंगिकता को केवल यौनिक अभिव्यक्ति नहीं, बल्कि पितृसत्ता के विरोध के एक राजनीतिक कृत्य के रूप में देखता है। यह समलैंगिकता को महिलाओं के लिए एक विकल्प और उनकी स्वतंत्रता का प्रतीक मानता है।

5. समानता और सशक्तिकरण

लेस्बियन फेमिनिज़म महिलाओं के लिए समानता, स्वतंत्रता और सशक्तिकरण की वकालत करता है। यह महिलाओं को उनके जीवन और यौनिकता पर पूर्ण नियंत्रण

देने का समर्थन करता है।

1.4.5.3 महत्वपूर्ण विचारक और उनके योगदान

1. एड्रियन रिच (Adrienne Rich)

एड्रियन रिच ने अपने प्रसिद्ध निबंध "Compulsory Heterosexuality and Lesbian Existence" में इस विचार को प्रस्तुत किया कि विषमलैंगिकता को समाज में जबरन थोपा जाता है। उन्होंने "लेस्बियन कॉन्टिनम" (Lesbian Continuum) की अवधारणा पेश की, जो महिलाओं के बीच सभी प्रकार के गहरे और अंतरंग संबंधों को शामिल करता है।

2. मोनिक विटिग (Monique Wittig)

- महिलाओं को उनकी यौनिकता के आधार पर परिभाषित किया जाता है

मोनिक विटिग ने पितृसत्तात्मक समाज में लैंगिक और यौनिक श्रेणियों की आलोचना की। उन्होंने यह कहा कि 'स्त्री' और 'पुरुष' जैसी श्रेणियाँ पितृसत्ता द्वारा बनाई गई हैं, और महिलाओं को उनकी यौनिकता के आधार पर परिभाषित किया जाता है।

3. शुलामिथ फायरस्टोन (Shulamith Firestone)

- लैंगिक समानता के लिए महिलाओं को पारंपरिक यौनिक और प्रजनन भूमिकाओं से मुक्त करना आवश्यक है

फायरस्टोन ने लैंगिक भूमिकाओं और विषमलैंगिक संबंधों की आलोचना की। उन्होंने तर्क दिया कि लैंगिक समानता के लिए महिलाओं को पारंपरिक यौनिक और प्रजनन भूमिकाओं से मुक्त करना आवश्यक है।

लेस्बियन फेमिनिज़म का प्रभाव देखे तो लेस्बियन फेमिनिज़म ने समलैंगिक महिलाओं की आवाज़ को मुख्यधारा के समलैंगिक अधिकार आंदोलन में प्रमुखता दिलाई। इसने समलैंगिक महिलाओं की विशिष्ट समस्याओं, जैसे कानूनी अधिकार, परिवार निर्माण, और सामाजिक स्वीकृति पर ध्यान केंद्रित किया।

- लेस्बियन फेमिनिज़म ने साहित्य, कला और सांस्कृतिक अध्ययन में योगदान दिया

लेस्बियन फेमिनिज़म ने मुख्यधारा के नारीवादी आंदोलनों को यह समझने के लिए मजबूर किया कि महिलाओं की यौनिकता और उनके अनुभव विविध हैं। इसने नारीवाद को और अधिक समावेशी और बहुआयामी बनाया। लेस्बियन फेमिनिज़म ने साहित्य, कला और सांस्कृतिक अध्ययन में भी योगदान दिया। समलैंगिक महिलाओं के साहित्य, कविता और कला ने उनकी यौनिकता, प्रेम और संघर्ष को सशक्त रूप से प्रस्तुत किया। लेस्बियन फेमिनिज़म ने पितृसत्ता और विषमलैंगिकता की गहरी आलोचना प्रस्तुत की और यह दिखाया कि महिलाओं की स्वतंत्रता के लिए वैकल्पिक दृष्टिकोण आवश्यक है।

लेस्बियन फेमिनिज़म को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ा। लेस्बियन फेमिनिज़म को कभी-कभी मुख्यधारा के नारीवाद से अलगाववादी (Separatist) दृष्टिकोण अपनाने के लिए आलोचना का सामना करना पड़ा। लेस्बियन फेमिनिज़म के भीतर भी विविध दृष्टिकोण हैं। कुछ विद्वान इसे कट्टरपंथी नारीवाद (Radical Feminism) का हिस्सा मानते हैं, जबकि अन्य इसे उससे अलग देखते हैं। बहुत से समाजों में समलैंगिकता को

अभी भी अस्वीकार किया जाता है, जिसके कारण लेस्बियन फेमिनिज़म को सामाजिक विरोध और हाशिए पर रहने का सामना करना पड़ता है।

▶ समलैंगिक महिलाओं के अधिकारों और उनकी पहचान के लिए संघर्षरत है

आखिरकर लेस्बियन फेमिनिज़म पितृसत्ता, विषमलैंगिकता और लैंगिक असमानता के खिलाफ एक महत्वपूर्ण आंदोलन है। यह महिलाओं की यौनिकता और स्वतंत्रता को पहचानने और सम्मान देने की वकालत करता है। लेस्बियन फेमिनिज़म ने महिलाओं के अनुभवों को व्यापक रूप से समझने और नारीवादी आंदोलन को समावेशी और प्रगतिशील बनाने में योगदान दिया है। यह आंदोलन समलैंगिक महिलाओं के अधिकारों और उनकी पहचान के लिए संघर्षरत है और महिलाओं के बीच समानता, सामूहिकता और सशक्तिकरण की भावना को बढ़ावा देता है।

1.4.6 साइबर फेमिनिज्म

▶ उद्देश्य - महिलाएँ और अन्य हाशिए पर खड़े समूह तकनीकी प्रगति में न केवल भाग लें, बल्कि उसे अपने हितों और उद्देश्यों के लिए उपयोग करें

साइबर फेमिनिज्म (Cyber Feminism) एक आधुनिक नारीवादी विचारधारा और आंदोलन है, जो प्रौद्योगिकी, विशेषकर इंटरनेट और डिजिटल माध्यमों, के संदर्भ में महिलाओं के अधिकार, सशक्तिकरण और समानता की बात करता है। यह विचारधारा मानती है कि साइबरस्पेस (डिजिटल दुनिया) पितृसत्ता और लैंगिक असमानता को चुनौती देने का एक महत्वपूर्ण उपकरण बन सकता है।

साइबर फेमिनिज्म मुख्य रूप से 1990 के दशक में उभरा, जब कंप्यूटर और इंटरनेट का प्रसार हो रहा था। इसका उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि महिलाएँ और अन्य हाशिए पर खड़े समूह तकनीकी प्रगति में न केवल भाग लें, बल्कि उसे अपने हितों और उद्देश्यों के लिए उपयोग करें।

1.4.6.1 साइबर फेमिनिज्म का विकास

1. प्रारंभिक अवधारणा:

▶ डोना हारावे का "A Cyborg Manifesto" साइबर फेमिनिज्म के लिए एक महत्वपूर्ण सैद्धांतिक पाठ है

साइबर फेमिनिज्म का विचार 1990 के दशक में नारीवादी आंदोलनों के एक विस्तार के रूप में उभरा। इसका उद्देश्य यह था कि तकनीक को केवल पुरुष-प्रधान क्षेत्र न माना जाए, बल्कि इसे महिलाओं के लिए सशक्तिकरण के माध्यम के रूप में विकसित किया जाए। "सैडी प्लांट" (Sadie Plant) और "डोना हाराव" (Donna Haraway) को साइबर फेमिनिज्म की प्रारंभिक प्रवक्ताओं में गिना जाता है। डोना हारावे का "A Cyborg Manifesto" साइबर फेमिनिज्म के लिए एक महत्वपूर्ण सैद्धांतिक पाठ है।

2. तकनीकी प्रगति के साथ विस्तार:

21वीं सदी में सोशल मीडिया, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, और वर्चुअल रियलिटी जैसी तकनीकों के विकास ने साइबर फेमिनिज्म को और अधिक प्रासंगिक बना दिया।

1.4.6.2 साइबर फेमिनिज्म के मुख्य सिद्धांत

1. प्रौद्योगिकी और लैंगिक समानता:

साइबर फेमिनिज्म मानता है कि प्रौद्योगिकी महिलाओं को लैंगिक असमानता से लड़ने

का एक नया मंच देती है। डिजिटल प्लेटफॉर्म महिलाओं को अपनी आवाज़ उठाने और पितृसत्ता को चुनौती देने का अवसर प्रदान करते हैं।

▶ डिजिटल प्लेटफॉर्म महिलाओं को अपनी आवाज़ उठाने और पितृसत्ता को चुनौती देने का अवसर प्रदान करते हैं

2. साइबोर्ग पहचान:

डोना हारावे ने "साइबोर्ग" की अवधारणा प्रस्तुत की, जो तकनीक और मानव के मेल को दर्शाती है। साइबोर्ग पहचान लैंगिक भूमिकाओं और सीमाओं को तोड़ती है, जहाँ व्यक्ति किसी भी निर्धारित पहचान में बंधा नहीं होता।

3. तकनीक तक समान पहुँच:

साइबर फेमिनिज्म यह सुनिश्चित करने का प्रयास करता है कि महिलाएँ तकनीकी शिक्षा और संसाधनों तक समान पहुँच प्राप्त करें। यह डिजिटल डिवाइड (Digital Divide) को खत्म करने का आह्वान करता है।

4. ऑनलाइन प्लेटफॉर्म पर सुरक्षा:

▶ डिजिटल प्लेटफॉर्म पर महिलाओं के लिए सुरक्षित और समावेशी वातावरण बनाना

साइबर फेमिनिज्म ऑनलाइन उत्पीड़न, ट्रोलिंग, और साइबर अपराधों के खिलाफ महिलाओं की सुरक्षा की बात करता है। डिजिटल प्लेटफॉर्म पर महिलाओं के लिए सुरक्षित और समावेशी वातावरण बनाना इसका एक महत्वपूर्ण उद्देश्य है।

5. हाशिए पर खड़े समूहों का समावेश:

यह विचारधारा हाशिए पर खड़े समुदायों, जैसे LGBTQ+ समूह और जातीय अल्पसंख्यकों, को तकनीक के माध्यम से सशक्त बनाने की बात करती है।

1.4.6.3 साइबर फेमिनिज्म के क्षेत्र

1. सोशल मीडिया आंदोलन:

▶ लैंगिक असमानता और उत्पीड़न के खिलाफ वैश्विक स्तर पर जागरूकता फैलाई

साइबर फेमिनिज्म के तहत #MeToo, #TimesUp, और #NotYourAsianSide-kick जैसे आंदोलन उभरे, जिन्होंने लैंगिक असमानता और उत्पीड़न के खिलाफ वैश्विक स्तर पर जागरूकता फैलाई।

2. ऑनलाइन शिक्षा:

महिलाओं के लिए ऑनलाइन कोर्स और डिजिटल प्लेटफॉर्म के माध्यम से शिक्षा तक पहुँच को बढ़ावा दिया गया।

3. महिला उद्यमिता और तकनीकी सशक्तिकरण:

▶ साइबर फेमिनिज्म ने महिलाओं को तकनीकी क्षेत्र में उद्यमिता और नवाचार के लिए प्रेरित किया

साइबर फेमिनिज्म ने महिलाओं को तकनीकी क्षेत्र में उद्यमिता और नवाचार के लिए प्रेरित किया।

4. साइबरस्पेस में लैंगिक न्याय:

यह विचारधारा ऑनलाइन प्लेटफॉर्म पर लैंगिक भेदभाव, ट्रोलिंग, और उत्पीड़न के

खिलाफ सक्रिय है।

1.4.6.4 साइबर फेमिनिज्म के लाभ

1. महिलाओं की आवाज़ को बढ़ावा:

डिजिटल प्लेटफॉर्म महिलाओं को अपनी समस्याओं, विचारों, और अनुभवों को साझा करने के लिए मंच प्रदान करते हैं।

2. समान अवसर:

साइबर फेमिनिज्म ने महिलाओं को प्रौद्योगिकी और डिजिटल संसाधनों का उपयोग करके शिक्षा और रोजगार के समान अवसर प्राप्त करने में मदद की है।

▶ लैंगिक असमानता, घरेलू हिंसा, और यौन उत्पीड़न जैसे मुद्दों पर जागरूकता फैलाई

3. सामाजिक जागरूकता:

तकनीक का उपयोग करके लैंगिक असमानता, घरेलू हिंसा, और यौन उत्पीड़न जैसे मुद्दों पर जागरूकता फैलाई जा रही है।

4. सुरक्षा और गोपनीयता:

ऑनलाइन प्लेटफॉर्म पर महिलाओं की सुरक्षा और गोपनीयता सुनिश्चित करने के लिए कई नीतियों और उपायों का विकास किया गया है।

साइबर फेमिनिज्म की भी कई चुनौतियाँ हैं। महिलाओं और पुरुषों के बीच तकनीकी संसाधनों की पहुँच में अभी भी असमानता है। ग्रामीण क्षेत्रों और विकासशील देशों में महिलाओं को डिजिटल शिक्षा और उपकरणों की कमी का सामना करना पड़ता है। महिलाओं को ऑनलाइन ट्रोलिंग, साइबर बुलिंग, और उत्पीड़न जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। कई तकनीकी प्लेटफॉर्म और उनकी नीतियाँ अभी भी पितृसत्ता और लैंगिक असमानता को बढ़ावा देती हैं। कई समाजों में महिलाओं को तकनीक का उपयोग करने से रोका जाता है, जो साइबर फेमिनिज्म के उद्देश्यों को बाधित करता है।

▶ कई समाजों में महिलाओं को तकनीक का उपयोग करने से रोका जाता है

साइबर फेमिनिज्म तकनीकी युग में नारीवाद का एक महत्वपूर्ण आयाम है, जो महिलाओं को प्रौद्योगिकी के माध्यम से सशक्त बनाने पर ज़ोर देता है। यह न केवल लैंगिक असमानता को चुनौती देता है, बल्कि एक समावेशी और न्यायसंगत डिजिटल भविष्य की कल्पना करता है। हालाँकि, डिजिटल डिवाइड और साइबर अपराध जैसी चुनौतियाँ अभी भी इस आंदोलन के लिए बाधा हैं, लेकिन इसके सकारात्मक प्रभाव समाज को अधिक समानता और स्वतंत्रता की ओर ले जाने में मदद कर रहे हैं।

▶ एक समावेशी और न्यायसंगत डिजिटल भविष्य की कल्पना करता है

1.4.7 इको-फेमिनिज़म

इको-फेमिनिज़म (Eco-Feminism) नारीवाद और पर्यावरणवाद को जोड़ने वाला एक महत्वपूर्ण दार्शनिक और सामाजिक आंदोलन है। यह तर्क करता है कि पितृसत्ता और पूंजीवादी संरचनाएँ न केवल महिलाओं को, बल्कि पर्यावरण को भी शोषित करती

हैं। इको-फेमिनिज़म का उद्देश्य महिलाओं और प्रकृति के बीच एक सामंजस्यपूर्ण संबंध स्थापित करना और पर्यावरणीय और लैंगिक समानता को बढ़ावा देना है।

1.4.7.1 इको-फेमिनिज़म की उत्पत्ति और विकास

इको-फेमिनिज़म की जड़ें 1970 के दशक में हैं, जब पर्यावरणीय और नारीवादी आंदोलनों का मेल हुआ। फ्रांसीसी विचारक फ्रैंकोइस डी'यूबोन (Françoise d' Eaubonne) ने "Le Féminisme ou la Mort" (Feminism or Death) में इस विचार को पेश किया। उन्होंने तर्क दिया कि पितृसत्ता और औद्योगिक पूंजीवाद ने पर्यावरणीय विनाश और महिलाओं के शोषण में समान भूमिका निभाई है।

▶ 1962 में प्रकाशित रेचल कार्सन (Rachel Carson) की पुस्तक "Silent Spring" ने एक नया आयाम दिया

इस आंदोलन को विशेष रूप से 1962 में प्रकाशित रेचल कार्सन (Rachel Carson) की पुस्तक "Silent Spring" ने एक नया आयाम दिया। यह पुस्तक पर्यावरणीय संकट और मानव स्वास्थ्य पर रासायनिक कीटनाशकों के हानिकारक प्रभावों पर केंद्रित थी। इसे पर्यावरणीय जागरूकता के लिए एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर माना जाता है और इको-फेमिनिज़म के विचारों को मजबूत करने में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका रही।

रेचल कार्सन और Silent Spring

रेचल कार्सन, एक समुद्री जीवविज्ञानी और पर्यावरण कार्यकर्ता, ने अपनी पुस्तक Silent Spring में यह दिखाया कि औद्योगिक रसायनों, विशेष रूप से DDT, का न केवल पर्यावरण पर विनाशकारी प्रभाव पड़ता है, बल्कि यह मानव स्वास्थ्य के लिए भी घातक है।

▶ औद्योगिक विकास और पितृसत्तात्मक दृष्टिकोण, जो प्राकृतिक संसाधनों को केवल उपयोग और शोषण की वस्तु मानते हैं, पर्यावरण को नुकसान पहुँचाते हैं

कार्सन ने तर्क दिया कि औद्योगिक विकास और पितृसत्तात्मक दृष्टिकोण, जो प्राकृतिक संसाधनों को केवल उपयोग और शोषण की वस्तु मानते हैं, पर्यावरण को नुकसान पहुँचाते हैं। उन्होंने यह भी कहा कि यह शोषण प्रकृति और महिलाओं के समानांतर है, क्योंकि पितृसत्ता महिलाओं को भी संसाधन के रूप में देखती है। Silent Spring ने इको-फेमिनिज़म को यह आधार दिया कि औद्योगिक समाज में पर्यावरण और लैंगिक मुद्दे आपस में जुड़े हुए हैं।

1.4.7.2 इको-फेमिनिज़म के मुख्य सिद्धांत

1. प्रकृति और महिलाओं का आपसी संबंध

इको-फेमिनिज़म महिलाओं और प्रकृति के बीच एक गहरे संबंध को स्वीकार करता है। यह मानता है कि पितृसत्तात्मक समाजों ने दोनों का शोषण किया है और इस शोषण को रोकने के लिए दोनों के बीच सामंजस्य स्थापित करना आवश्यक है।

2. पितृसत्ता और औद्योगिक पूंजीवाद की आलोचना

पितृसत्ता और पूंजीवादी विकास को इको-फेमिनिज़म पर्यावरणीय और सामाजिक असमानता के लिए जिम्मेदार मानता है। औद्योगिक विकास ने प्राकृतिक संसाधनों का

▶ औद्योगिक विकास ने महिलाओं को पारंपरिक भूमिकाओं में बाँध दिया है

दोहन किया है और महिलाओं को पारंपरिक भूमिकाओं में बाँध दिया है।

3. स्थानीय ज्ञान और पारंपरिक प्रथाओं का सम्मान

इको-फेमिनिज़म स्थानीय महिलाओं और उनके पारंपरिक ज्ञान को संरक्षण और स्थिरता के लिए महत्वपूर्ण मानता है। महिलाएँ प्राकृतिक संसाधनों को संरक्षित करने में प्रमुख भूमिका निभाती हैं।

4. पर्यावरणीय न्याय और लैंगिक समानता का समावेश

यह आंदोलन पर्यावरणीय समस्याओं और लैंगिक असमानता के आपसी संबंध को पहचानता है। इको-फेमिनिज़म इस बात पर ज़ोर देता है कि पर्यावरणीय न्याय महिलाओं के सशक्तिकरण के बिना संभव नहीं है।

1.4.7.3 महत्वपूर्ण इको-फेमिनिस्ट विचारक और उनके योगदान

1. रेचल कार्सन (Rachel Carson)

▶ पर्यावरणीय आंदोलन की आधारशिला

Silent Spring ने औद्योगिक रसायनों और उनके पर्यावरणीय प्रभावों को उजागर किया। यह पुस्तक न केवल पर्यावरणीय आंदोलन की आधारशिला बनी, बल्कि इको-फेमिनिज़म के सिद्धांतों को भी प्रेरित किया।

2. वंदना शिवा (Vandana Shiva)

भारतीय पर्यावरणविद् वंदना शिवा ने जैव विविधता और पारंपरिक कृषि प्रणालियों की वकालत की। उनकी पुस्तक "Staying Alive: Women, Ecology, and Development" इको-फेमिनिज़म के प्रमुख सिद्धांतों को प्रस्तुत करती है। उन्होंने महिलाओं को पर्यावरण संरक्षण का प्रमुख वाहक माना।

3. मारिया मिज़ (Maria Mies)

▶ इको-फेमिनिज़म के सामाजिक और आर्थिक पहलुओं पर ज़ोर दिया

मारिया मिज़ ने इको-फेमिनिज़म के सामाजिक और आर्थिक पहलुओं पर ज़ोर दिया। उन्होंने पूंजीवाद और पितृसत्ता के गहरे संबंधों को उजागर किया।

4. वांगारी मथाई (Wangari Maathai)

केन्या की पर्यावरणविद् वांगारी मथाई ने ग्रीन बेल्ट मूवमेंट की शुरुआत की, जिसमें महिलाओं को वृक्षारोपण और पर्यावरणीय संरक्षण के लिए संगठित किया गया।

5. कैरोलीन मर्चेंट (Carolyn Merchant)

कैरोलीन मर्चेंट ने अपनी पुस्तक "The Death of Nature" में पितृसत्तात्मक समाजों द्वारा प्रकृति के मशीन जैसे शोषण की आलोचना की।

1.4.7.4 इको-फेमिनिज़म का प्रभाव

इको-फेमिनिज़म ने यह स्पष्ट किया कि पर्यावरणीय संरक्षण में महिलाओं की भागीदारी

▶ पर्यावरणीय संरक्षण में महिलाओं की भागीदारी आवश्यक है

आवश्यक है। चिपको आंदोलन और ग्रीन बेल्ट मूवमेंट इसके प्रमुख उदाहरण हैं। यह आंदोलन जैविक और पारंपरिक कृषि पद्धतियों को बढ़ावा देता है, जो पर्यावरण और महिलाओं दोनों के लिए लाभदायक हैं। इको-फेमिनिज़म ने सामाजिक और पर्यावरणीय असमानता के आपसी संबंध को उजागर किया और न्याय के लिए सामूहिक प्रयासों की वकालत की। यह आंदोलन अहिंसक और टिकाऊ विकास की वकालत करता है, जो महिलाओं और प्रकृति दोनों के प्रति संवेदनशील है।

▶ इको-फेमिनिज़म न केवल एक दार्शनिक आंदोलन है, बल्कि यह पर्यावरण और समाज के लिए एक वैकल्पिक दृष्टिकोण प्रदान करता है

निष्कर्ष के रूप में देख सकते है कि इको-फेमिनिज़म न केवल एक दार्शनिक आंदोलन है, बल्कि यह पर्यावरण और समाज के लिए एक वैकल्पिक दृष्टिकोण प्रदान करता है। Silent Spring जैसे महत्वपूर्ण ग्रंथों ने इस आंदोलन को सशक्त बनाया और वैश्विक स्तर पर पर्यावरणीय और लैंगिक समानता की बहस को प्रेरित किया।

इको-फेमिनिज़म ने दिखाया है कि प्रकृति और महिलाओं का शोषण आपस में जुड़ा हुआ है और इसे समाप्त करने के लिए समानांतर प्रयासों की आवश्यकता है। यह आंदोलन न केवल पर्यावरणीय संरक्षण का आह्वान करता है, बल्कि एक न्यायपूर्ण और संतुलित समाज के निर्माण का भी मार्गदर्शन करता है।

Summarised Overview / संक्षिप्त अवलोकन

नारीवाद की विविध धाराएँ महिलाओं के संघर्षों, अनुभवों और अधिकारों को व्यापक संदर्भों में समझने का प्रयास करती हैं। इन विचारधाराओं ने विभिन्न सामाजिक, सांस्कृतिक, और राजनीतिक संदर्भों में महिलाओं की भूमिका और पहचान को परिभाषित किया है। नारीवाद की ये विविध धाराएँ यह दर्शाती हैं कि महिलाओं के अनुभव और संघर्ष केवल पितृसत्ता तक सीमित नहीं हैं। वे नस्ल, वर्ग, संस्कृति, पर्यावरण, और प्रौद्योगिकी जैसे विभिन्न पहलुओं से प्रभावित होते हैं। ये विचारधाराएँ एक समग्र दृष्टिकोण प्रदान करती हैं, जो न केवल महिलाओं को सशक्त बनाती हैं, बल्कि एक समतावादी और न्यायपूर्ण समाज की दिशा में योगदान करती हैं।

Assignment / प्रदत्त कार्य

1. 'ए रूम ऑफ वन'स ओन' निबंध साहित्य में महिलाओं के लिए स्वतंत्रता और समानता के लिए किस प्रकार का दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है?
2. नारीवाद की विभिन्न धाराओं (उत्तर-औपनिवेशिक, ब्लैक, इस्लामी, साइबर, और इको फेमिनिज्म) की तुलना करते हुए उनके प्रमुख सिद्धांत और प्रभाव स्पष्ट कीजिए।
3. आधुनिक समाज में नारीवाद की विविध धाराओं की प्रासंगिकता पर एक शोध निबंध लिखें।
4. तकनीक, पर्यावरण, और यौनिकता के दृष्टिकोण से नारीवाद के विस्तृत प्रभावों पर चर्चा करें।
5. 'सभी नारीवादों का लक्ष्य समानता है, लेकिन उनके दृष्टिकोण अलग-अलग हैं।' इस कथन पर तर्क सहित चर्चा करें।

Reference / संदर्भ ग्रंथ

1. स्त्री मुक्ति का सपना - सं. कमला प्रसाद, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली
2. स्त्री संघर्ष का इतिहास - सं. राधा कुमार, वाणी प्रकाशन
3. उपनिवेश में स्त्री - प्रभा खेतान, राजकमल प्रकाशन
4. स्त्री परंपरा और आधुनिकता - सं. राज किशोर, वाणी प्रकाशन
5. स्त्री सशक्तिकरण की दिशा - रेखा कसतवार, राजकमल प्रकाशन
6. बाजार के बीच बाजार के खिलाफ - प्रभा खेतान, वाणी प्रकाशन

Suggested Reading / निर्धारित पुस्तक

1. स्त्री मुक्ति : संघर्ष और इतिहास - रमणिका गुप्ता
2. उपनिवेश में स्त्री - प्रभा खेतान
3. लिहाफ - इस्मत चुगताई

Space for Learner Engagement for Objective Questions

Learners are encouraged to develop objective questions based on the content in the paragraph as a sign of their comprehension of the content. The Learners may reflect on the recap bullets and relate their understanding with the narrative in order to frame objective questions from the given text. The University expects that 1 - 2 questions are developed for each paragraph. The space given below can be used for listing the questions.

BLOCK 02

जेंडर की अवधारणा

Block Content

इकाई 1: अस्मिता और सत्ता, जेंडर अस्मिता और यौन अस्मिता, विजेता, सत्ता

इकाई 2: जेंडर की अवधारणा, जेंडर, भाषा और साहित्य, स्त्रीलिंगी विमर्श और भाषा

इकाई 3: स्त्री मुक्ति आंदोलन की परंपरा - जॉन स्टुअर्ट मिल - द सब्जेक्ट ऑफ वुमन (स्त्री की पराधीनता), जर्मन ग्रीयर - द फीमैल यूनक (विद्रोही स्त्री), सिमोन - द बॉउआर - द सेकंड सेक्स(स्त्री उपेक्षिता)

इकाई 4: पितृसत्तात्मक समाज और नारी लेखन, वर्जीनिया वुल्फ़- ए रूम ऑफ वन्स ऑन, स्त्रीवाद में मर्द

इकाई 1

अस्मिता और सत्ता, जेंडर अस्मिता और यौन अस्मिता, विजेता, सत्ता

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- अस्मिता विमर्श से परिचय प्राप्त करता है
- यौन अस्मिता की विविधता और इसके सामाजिक, सांस्कृतिक, और राजनीतिक पहलुओं को समझता है
- LGBTQ+ समुदाय की अस्मिता और उनके संघर्षों के प्रति जानकारी प्राप्त करता है
- जेंडर और यौन अस्मिता के प्रति अधिक संवेदनशील और स्वीकार्य दृष्टिकोण जानता है

Background / पृष्ठभूमि

अस्मिता और सत्ता का संबंध समाज के सांस्कृतिक, राजनीतिक, और ऐतिहासिक संदर्भों में गहराई से निहित है। अस्मिता (पहचान) व्यक्ति या समुदाय की आत्म-छवि और समाज में उनकी भूमिका को परिभाषित करती है। यह लिंग, जाति, धर्म, भाषा, वर्ग, और यौनिकता जैसे सामाजिक-आर्थिक और सांस्कृतिक कारकों पर आधारित होती है। दूसरी ओर, सत्ता (पॉवर) समाज में संसाधनों, अधिकारों, और अवसरों के वितरण को नियंत्रित करती है। अस्मिता और सत्ता का अध्ययन समाज में व्याप्त असमानताओं और उनके कारणों को समझने का एक महत्वपूर्ण माध्यम है।

जेंडर अस्मिता और यौन अस्मिता जैसे विषय हमेशा से समाज के पितृसत्तात्मक ढांचे के अधीन रहे हैं। ऐतिहासिक रूप से महिलाओं और LGBTQ+ समुदाय की अस्मिता को दबाने और सीमित करने के प्रयास किए गए। महिलाओं को उनकी सामाजिक भूमिकाओं में बांधने और पुरुषों के अधीन रखने की प्रवृत्ति ने जेंडर असमानता को बढ़ावा दिया। इसी प्रकार, यौन अस्मिता के मामले में समाज ने हेटरोसेक्सुअल मान्यताओं को प्राथमिकता दी, जिससे गैर-हेटरोसेक्सुअल पहचान को हाशिए पर धकेला गया।

सत्ता का असमान वितरण समाज की संरचनाओं को नियंत्रित करता है। पितृसत्ता, जातिवाद, और पूंजीवाद जैसी व्यवस्थाएँ इस असमानता को मजबूत करती हैं। ये संरचनाएँ अस्मिता को नियंत्रित करने और उसे सीमित करने का कार्य करती हैं, जिससे हाशिए पर स्थित समुदायों की आवाज़ दब जाती है। अस्मिता और सत्ता का यह द्वंद्व सामाजिक आंदोलनों, जैसे नारीवाद, दलित आंदोलन और LGBTQ+ अधिकार आंदोलनों के लिए प्रेरणा का कारण बना है।

Keywords / मुख्य बिन्दु

अस्मिता, सत्ता, LGBTQ+, जेंडर, पितृ सत्ता, वैश्वीकरण, यौन अस्मिता

Discussion / चर्चा

2.1.1 अस्मिता और सत्ता

2.1.1.1 अस्मिता की अवधारणा

▶ अस्मिता का अर्थ है व्यक्ति, समाज या समुदाय की पहचान, आत्मसम्मान और स्वाभिमान

अस्मिता का अर्थ है व्यक्ति, समाज या समुदाय की पहचान, आत्मसम्मान और स्वाभिमान। यह एक व्यापक अवधारणा है, जो न केवल व्यक्तिगत स्तर पर बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक और राष्ट्रीय स्तर पर भी महत्वपूर्ण होती है। अस्मिता एक व्यक्ति या समुदाय के अस्तित्व और उसकी विशिष्टताओं को दर्शाती है। यह आत्मचेतना से जुड़ी होती है और व्यक्ति को अपने मूल्यों, परंपराओं और पहचान पर गर्व करने की प्रेरणा देती है।

व्यक्तिगत अस्मित

▶ जब कोई व्यक्ति अपनी अस्मिता को समझता है, तो वह आत्मविश्वास के साथ अपने विचारों को अभिव्यक्त कर सकता है और जीवन में सफलता प्राप्त कर सकता है

व्यक्तिगत अस्मिता का तात्पर्य व्यक्ति की अपनी पहचान, विचारधारा और आत्मसम्मान से है। यह व्यक्ति के जीवन में उसके मूल्यों, आदर्शों, उसकी सोच और व्यक्तित्व को आकार देने में सहायक होती है। जब कोई व्यक्ति अपनी अस्मिता को समझता है, तो वह आत्मविश्वास के साथ अपने विचारों को अभिव्यक्त कर सकता है और जीवन में सफलता प्राप्त कर सकता है। अस्मिता ही व्यक्ति को यह एहसास कराती है कि वह कौन है, उसका उद्देश्य क्या है और वह समाज में किस तरह की भूमिका निभा सकता है।

सामाजिक अस्मिता

▶ सामाजिक अस्मिता समाज के अन्य सदस्यों के साथ आपसी संबंधों और सामंजस्य को भी प्रभावित करती है

सामाजिक अस्मिता व्यक्ति की उस पहचान से जुड़ी होती है, जो उसे समाज में प्राप्त होती है। यह जाति, धर्म, भाषा, व्यवसाय, वर्ग, क्षेत्र और समूह से संबंधित हो सकती है। समाज में व्यक्ति को उसकी पारिवारिक पृष्ठभूमि, शिक्षा, संस्कार और सामाजिक गतिविधियों के आधार पर पहचाना जाता है। सामाजिक अस्मिता समाज के अन्य सदस्यों के साथ आपसी संबंधों और सामंजस्य को भी प्रभावित करती है। जब समाज के सभी वर्गों की अस्मिता को समान रूप से सम्मान मिलता है, तो समाज में एकता और समरसता बनी रहती है।

सांस्कृतिक अस्मिता

सांस्कृतिक अस्मिता किसी समाज, देश या समुदाय की परंपराओं, रीति-रिवाजों,

▶ सांस्कृतिक अस्मिता के महत्वपूर्ण अंग हैं

भाषा, साहित्य, कला और विरासत से जुड़ी होती है। प्रत्येक समाज की अपनी एक विशिष्ट संस्कृति होती है, जो उसे अन्य समाजों से अलग बनाती है। सांस्कृतिक अस्मिता का संरक्षण आवश्यक होता है, क्योंकि यह किसी राष्ट्र या समुदाय की जड़ों को मजबूत करती है। भाषा, पहनावा, खान-पान और धार्मिक आस्थाएँ भी सांस्कृतिक अस्मिता के महत्वपूर्ण अंग हैं। यदि किसी समाज की सांस्कृतिक अस्मिता कमज़ोर होती है, तो वह धीरे-धीरे अपनी पहचान खो सकता है।

राष्ट्रीय अस्मिता

▶ नागरिकों की सामूहिक पहचान

राष्ट्रीय अस्मिता किसी देश के नागरिकों की सामूहिक पहचान होती है, जो उनके इतिहास, परंपराओं, राष्ट्रीय प्रतीकों और एकता की भावना से जुड़ी होती है। जब किसी राष्ट्र के नागरिक अपनी राष्ट्रीय अस्मिता को पहचानते हैं और उसका सम्मान करते हैं, तो वह राष्ट्र मजबूत और समृद्ध बनता है। राष्ट्रीय अस्मिता केवल किसी भूगोल तक सीमित नहीं होती, बल्कि यह भाषा, साहित्य, कला, स्वतंत्रता संग्राम और ऐतिहासिक उपलब्धियों से भी जुड़ी होती है। यदि नागरिकों में राष्ट्रीय अस्मिता की भावना प्रबल होती है, तो वे देश के विकास में सक्रिय योगदान देते हैं।

2.1.1.2 अस्मिता का महत्व

▶ अस्मिता सामाजिक समरसता और सांस्कृतिक विविधता को बनाए रखने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है

अस्मिता व्यक्ति और समाज के आत्मसम्मान और आत्मनिर्भरता का आधार होती है। यह एक ऐसी शक्ति है, जो व्यक्ति को अपने मूल्यों, आदर्शों और पहचान को बनाए रखने की प्रेरणा देती है। अस्मिता से व्यक्ति और समाज में आत्मगौरव की भावना विकसित होती है, जिससे वे अपने अधिकारों और कर्तव्यों के प्रति अधिक सजग होते हैं। अस्मिता सामाजिक समरसता और सांस्कृतिक विविधता को बनाए रखने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह राष्ट्रीय एकता और अखंडता को मजबूत करने में सहायक होती है।

▶ समाज और राष्ट्र की स्थिरता और प्रगति के लिए आवश्यक तत्वों में से एक है

अस्मिता केवल एक शब्द नहीं, बल्कि व्यक्ति, समाज और राष्ट्र की आत्म-चेतना और स्वाभिमान का प्रतीक है। यह किसी व्यक्ति को उसकी पहचान, उसकी जड़ों और उसके अस्तित्व से जोड़ती है। अस्मिता का विकास और संरक्षण आवश्यक है, क्योंकि यह समाज और राष्ट्र की स्थिरता और प्रगति के लिए आवश्यक तत्वों में से एक है। जब व्यक्ति अपनी अस्मिता को समझता है और उसका सम्मान करता है, तो वह अपने समाज और राष्ट्र के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दे सकता है।

2.1.1.2 सत्ता की अवधारणा

▶ सत्ता किसी व्यक्ति, समूह या संस्था द्वारा अन्य व्यक्तियों या समूहों पर प्रभाव डालने और उनके कार्यों को नियंत्रित करने की क्षमता को दर्शाती है

सत्ता एक ऐसी अवधारणा है, जो समाज, राजनीति और प्रशासन में शक्ति और अधिकार के प्रयोग से संबंधित होती है। यह किसी व्यक्ति, समूह या संस्था द्वारा अन्य व्यक्तियों या समूहों पर प्रभाव डालने और उनके कार्यों को नियंत्रित करने की क्षमता को दर्शाती है। सत्ता केवल राजनीतिक क्षेत्र तक सीमित नहीं होती, बल्कि यह आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक क्षेत्रों में भी प्रभावी होती है।

सत्ता का अर्थ और परिभाषा

'सत्ता' शब्द का अर्थ अधिकार, नियंत्रण और प्रभुत्व से जुड़ा हुआ है। यह किसी व्यक्ति या संस्था की वह शक्ति होती है, जिसके माध्यम से वह दूसरों के व्यवहार को प्रभावित कर सकती है। विभिन्न विचारकों ने सत्ता की अलग-अलग परिभाषाएँ दी हैं-

1. मैक्स वेबर के अनुसार, सत्ता वह क्षमता है, जिसके द्वारा कोई व्यक्ति या समूह विरोध के बावजूद दूसरों पर अपनी इच्छाओं को थोप सकता है।
2. मिशेल फूको सत्ता को सामाजिक संबंधों की एक प्रणाली मानते हैं, जो विभिन्न संस्थाओं, नियमों और परंपराओं के माध्यम से कार्य करती है।
3. कार्ल मार्क्स के अनुसार, सत्ता समाज के उस वर्ग के पास होती है, जिसके पास आर्थिक संसाधनों का नियंत्रण होता है।

सत्ता के स्रोत

सत्ता के कई स्रोत हो सकते हैं, जो विभिन्न रूपों में समाज में प्रभाव डालते हैं। कुछ प्रमुख स्रोत निम्नलिखित हैं-

1. **कानूनी अधिकार (Legal Authority)**- सरकार और प्रशासन को संविधान और कानून के आधार पर अधिकार प्राप्त होता है।
2. **आर्थिक शक्ति (Economic Power)**- जो वर्ग आर्थिक संसाधनों पर नियंत्रण रखता है, वह सत्ता पर भी प्रभाव डालता है।
3. **सांस्कृतिक और वैचारिक प्रभाव (Cultural and Ideological Influence)**- मीडिया, शिक्षा और धर्म के माध्यम से भी सत्ता स्थापित की जा सकती है।
4. **बल और हिंसा (Force and Coercion)**- सेना, पुलिस और अन्य संस्थाओं द्वारा सत्ता का बलपूर्वक उपयोग किया जा सकता है।
5. **करिश्माई नेतृत्व (Charismatic Authority)**- कुछ नेता अपनी व्यक्तित्व शक्ति के कारण सत्ता प्राप्त कर लेते हैं।

▶ आर्थिक संसाधनों पर नियंत्रण

सत्ता का प्रभाव

सत्ता का समाज और व्यक्तियों पर गहरा प्रभाव पड़ता है। जब सत्ता न्यायसंगत और संतुलित होती है, तो समाज में शांति और विकास होता है। लेकिन जब सत्ता का दुरुपयोग किया जाता है, तो यह तानाशाही, शोषण और असमानता को जन्म देती है। सत्ता की स्थिरता और संतुलन बनाए रखने के लिए लोकतंत्र, मानवाधिकार और जवाबदेही जैसे सिद्धांतों का पालन आवश्यक होता है।

▶ सत्ता केवल शासन तक सीमित नहीं है, बल्कि यह समाज के हर क्षेत्र में कार्यरत होती है

सत्ता केवल शासन तक सीमित नहीं है, बल्कि यह समाज के हर क्षेत्र में कार्यरत होती है। यह शक्ति का एक ऐसा रूप है, जो सकारात्मक और नकारात्मक दोनों प्रकार के प्रभाव डाल सकती है। सत्ता का उचित और न्यायसंगत उपयोग समाज की प्रगति और समृद्धि के लिए आवश्यक है, जबकि सत्ता का दुरुपयोग अराजकता और असमानता को जन्म दे सकता है। इसलिए सत्ता के प्रयोग में नैतिकता, लोकतांत्रिक मूल्यों और

उत्तरदायित्व का विशेष ध्यान रखना आवश्यक होता है।

2.1.1.3 अस्मिता और सत्ता का संबंध

▶ अस्मिता का संबंध आत्मचेतना, पहचान और गौरव से है

अस्मिता और सत्ता समाज के दो महत्वपूर्ण घटक हैं, जो व्यक्ति और समूहों की पहचान, अधिकार, शक्ति और नियंत्रण को निर्धारित करते हैं। अस्मिता का संबंध आत्मचेतना, पहचान और गौरव से है, जबकि सत्ता शक्ति, नियंत्रण और प्रभुत्व का प्रतीक होती है। ये दोनों अवधारणाएँ एक-दूसरे को प्रभावित करती हैं और समाज, राजनीति, संस्कृति तथा अर्थव्यवस्था में परस्पर जुड़े हुए हैं।

1. अस्मिता और सत्ता का पारस्परिक संबंध

(क) सत्ता अस्मिता को प्रभावित करती है

▶ सत्ता से वंचित समुदायों की अस्मिता को दबाने की कोशिश

सत्ता किसी भी समाज में यह निर्धारित करती है कि किसकी अस्मिता को मान्यता मिलेगी और किसे दबाया जाएगा। जब कोई समुदाय सत्ता में होता है, तो वह अपनी अस्मिता को बढ़ावा देता है, जबकि सत्ता से वंचित समुदायों की अस्मिता को दबाने की कोशिश की जाती है। उदाहरण के लिए-

- औपनिवेशिक काल में ब्रिटिश शासन ने भारतीय अस्मिता को कमज़ोर करने की कोशिश की, लेकिन स्वतंत्रता संग्राम ने राष्ट्रीय अस्मिता को पुनः स्थापित किया।
- जातिगत व्यवस्था में सत्ताधारी वर्गों ने निचली जातियों की अस्मिता को हाशिए पर रखा, लेकिन सामाजिक सुधार आंदोलनों ने इसे चुनौती दी।

(ख) अस्मिता सत्ता को प्रभावित करती है

▶ अस्मिता की जागरूकता

जब कोई समुदाय अपनी अस्मिता को पहचानता है और उसे सशक्त बनाता है, तो वह सत्ता संरचना को चुनौती दे सकता है। अस्मिता की जागरूकता अक्सर सत्ता परिवर्तन का कारण बनती है। उदाहरण-

- महिला सशक्तिकरण आंदोलनों ने सत्ता में महिलाओं की भागीदारी बढ़ाई।
- दलित और पिछड़े वर्गों की अस्मिता जागरूकता ने सामाजिक और राजनीतिक सत्ता संतुलन में बदलाव किया।
- राष्ट्रीय अस्मिता की भावना ने स्वतंत्रता आंदोलनों को जन्म दिया और उपनिवेशवाद को समाप्त किया।

2. अस्मिता और सत्ता के टकराव

▶ अस्मिता और सत्ता के बीच अक्सर संघर्ष की स्थिति

अस्मिता और सत्ता के बीच अक्सर संघर्ष की स्थिति उत्पन्न होती है। जब कोई समूह अपनी अस्मिता को बनाए रखना चाहता है, लेकिन सत्ता उसे नियंत्रित करना चाहती है, तो टकराव की स्थिति पैदा होती है।

- **जातीय और धार्मिक संघर्ष** - जब कोई समुदाय अपनी सांस्कृतिक अस्मिता को संरक्षित रखना चाहता है, लेकिन सत्ता उसे बदलने का प्रयास करती है, तो संघर्ष उत्पन्न होता है।

- **भाषाई संघर्ष** - जब सत्ता किसी एक भाषा को प्राथमिकता देती है और अन्य भाषाओं की अस्मिता को कमज़ोर करती है, तो विवाद उत्पन्न होते हैं।
- **राजनीतिक अस्मिता** - जब कोई समूह सत्ता में अपनी भागीदारी बढ़ाने की कोशिश करता है, तो सत्ताधारी वर्ग इसका विरोध कर सकता है।

3. अस्मिता और सत्ता का संतुलन

समाज में स्थिरता बनाए रखने के लिए अस्मिता और सत्ता के बीच संतुलन आवश्यक है।

- **लोकतंत्र और समानता** - लोकतांत्रिक व्यवस्था में विभिन्न अस्मिताओं को पहचान और प्रतिनिधित्व मिलता है।
- **संविधान और अधिकार** - संवैधानिक व्यवस्था अस्मिता और सत्ता के बीच संतुलन बनाए रखने में मदद करती है।
- **सामाजिक जागरूकता** - जब लोग अपनी अस्मिता के प्रति जागरूक होते हैं, तो वे सत्ता के दुरुपयोग का विरोध कर सकते हैं।

▶ विभिन्न अस्मिताओं को पहचान और प्रतिनिधित्व

अस्मिता और सत्ता एक-दूसरे से गहराई से जुड़े हुए हैं। सत्ता अस्मिता को नियंत्रित करने की कोशिश करती है, जबकि अस्मिता सत्ता की संरचना को प्रभावित और बदल सकती है। जब अस्मिता को समान रूप से मान्यता मिलती है और सत्ता का न्यायसंगत वितरण होता है, तो समाज में शांति और प्रगति संभव होती है।

2.1.2 जेंडर अस्मिता और यौन अस्मिता

▶ जेंडर और यौन अस्मिता का संबंध केवल जैविक तत्वों से नहीं

समाज में अस्मिता (पहचान) व्यक्ति की आत्म-चेतना, सामाजिक स्थिति और सांस्कृतिक मूल्यों से जुड़ी होती है। अस्मिता के कई रूप होते हैं, जिनमें जेंडर अस्मिता (लैंगिक पहचान) और यौन अस्मिता (यौन पहचान) प्रमुख हैं। ये दोनों व्यक्ति की आत्म-परिभाषा और सामाजिक अनुभव को प्रभावित करते हैं। जेंडर और यौन अस्मिता का संबंध केवल जैविक तत्वों से नहीं, बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक और व्यक्तिगत अनुभवों से भी होता है।

2.1.2.1 जेंडर अस्मिता (Gender Identity)

जेंडर अस्मिता का तात्पर्य किसी व्यक्ति की उस पहचान से है, जो उसे पुरुष, महिला या अन्य किसी जेंडर के रूप में प्रस्तुत करने और महसूस करने से जुड़ी होती है। यह जन्म के समय निर्धारित किए गए जैविक लक्षणों (sex) से अलग हो सकती है। जेंडर अस्मिता मुख्य रूप से व्यक्ति की मानसिकता, भावनात्मक अनुभूति और सामाजिक पहचान से निर्मित होती है।

1. जेंडर अस्मिता के प्रकार

▶ जैविक लक्षणों (sex) से अलग हो

- **सिजेंडर (Cisgender)** - वे लोग जिनकी जेंडर पहचान उनके जन्म के समय निर्धारित लिंग से मेल खाती है।
- **ट्रांसजेंडर (Transgender)** - वे लोग जिनकी जेंडर पहचान उनके जन्म के समय

दिए गए लिंग से अलग होती है।

- **नॉन-बाइनरी (Non-Binary)** - वे लोग जो खुद को पारंपरिक 'पुरुष' या 'महिला' की श्रेणी में नहीं रखते।
- **जेंडरफ्लूइड (Genderfluid)** - वे लोग जिनकी जेंडर पहचान समय के साथ बदल सकती है।

2. जेंडर अस्मिता और समाज

- पारंपरिक और रूढ़िवादी दृष्टिकोण

समाज में जेंडर अस्मिता को अक्सर पारंपरिक और रूढ़िवादी दृष्टिकोण से देखा जाता है। कई संस्कृतियों में पुरुष और महिला की भूमिकाएँ निश्चित मानी जाती हैं, जिससे ट्रांसजेंडर और नॉन-बाइनरी लोगों को स्वीकृति प्राप्त करने में कठिनाई होती है। हालाँकि, आधुनिक समय में जेंडर समावेशिता (gender inclusivity) को बढ़ावा दिया जा रहा है, और कई देशों में ट्रांसजेंडर अधिकारों को कानूनी मान्यता दी जा रही है।

3. जेंडर अस्मिता और समानता

लैंगिक समानता (Gender Equality) जेंडर अस्मिता को स्वीकारने और उसे सम्मान देने का आधार बन सकती है। शिक्षा, रोजगार, विवाह, राजनीति और सामाजिक अवसरों में जेंडर अस्मिता को मान्यता देना महत्वपूर्ण है ताकि कोई भी व्यक्ति अपने वास्तविक रूप में जी सके।

2.1.2.2 यौन अस्मिता (Sexual Identity)

यौन अस्मिता (Sexual Identity) का तात्पर्य किसी व्यक्ति की यौनिक अभिव्यक्ति, आकर्षण और पसंद से है। यह निर्धारित करता है कि कोई व्यक्ति भावनात्मक, मानसिक और शारीरिक रूप से किस लिंग या जेंडर की ओर आकर्षित होता है। यौन अस्मिता जन्मजात हो सकती है या व्यक्ति के जीवन के अनुभवों से प्रभावित हो सकती है।

1. यौन अस्मिता के प्रकार

- यौनिक अभिव्यक्ति, आकर्षण और पसंद से है

- **हेट्रोसेक्सुअल (Heterosexual)** - वे लोग जो विपरीत लिंग (पुरुष-स्त्री) की ओर आकर्षित होते हैं।
- **होमोसेक्सुअल (Homosexual)** - वे लोग जो अपने ही लिंग की ओर आकर्षित होते हैं, जैसे पुरुष-पुरुष (गे) और स्त्री-स्त्री (लेस्बियन)।
- **बाइसेक्सुअल (Bisexual)** - वे लोग जो पुरुष और महिला दोनों की ओर आकर्षित होते हैं।
- **पैनसेक्सुअल (Pansexual)** - वे लोग जो किसी व्यक्ति के लिंग की परवाह किए बिना उसकी ओर आकर्षित होते हैं।
- **एसेक्सुअल (Asexual)** - वे लोग जो किसी भी लिंग या व्यक्ति के प्रति यौन आकर्षण महसूस नहीं करते।

2. यौन अस्मिता और समाज

▶ यौन अस्मिताओं को हाशिए पर रखा गया है

अनेक समाजों में केवल हेट्रोसेक्सुअल (विषमलैंगिक) संबंधों को सामान्य और स्वीकृत माना गया है, जबकि अन्य प्रकार की यौन अस्मिताओं को हाशिए पर रखा गया है। हालाँकि, समय के साथ LGBTQ+ समुदाय को मान्यता मिलने लगी है, और कई देशों में समान-लिंगी विवाह (same-sex marriage) को कानूनी स्वीकृति दी गई है।

3. यौन अस्मिता और अधिकार

▶ जेंडर अस्मिता और यौन अस्मिता समाज में व्यक्ति की पहचान, अस्तित्व और अधिकारों को प्रभावित करने वाले महत्वपूर्ण तत्व हैं

यौन अस्मिता के आधार पर भेदभाव को समाप्त करने के लिए कई देशों में कानून बनाए गए हैं। भारत में धारा 377 के संशोधन के बाद समलैंगिकता को वैधता मिली, जिससे LGBTQ+ समुदाय को अपने अधिकारों के लिए आगे बढ़ने का अवसर मिला।

जेंडर अस्मिता और यौन अस्मिता समाज में व्यक्ति की पहचान, अस्तित्व और अधिकारों को प्रभावित करने वाले महत्वपूर्ण तत्व हैं। एक समावेशी समाज में सभी प्रकार की अस्मिताओं को मान्यता और सम्मान मिलना आवश्यक है। आधुनिक समय में LGBTQ+ समुदाय और ट्रांसजेंडर व्यक्तियों के अधिकारों की स्वीकृति बढ़ रही है, लेकिन अब भी कई जगहों पर इन अस्मिताओं को सामाजिक और कानूनी रूप से पूर्ण स्वीकृति नहीं मिली है।

समाज में समावेशिता (Inclusivity) को बढ़ावा देने के लिए आवश्यक है कि सभी प्रकार की जेंडर और यौन अस्मिताओं को समानता और सम्मान मिले। इससे न केवल व्यक्तिगत स्वतंत्रता सुनिश्चित होगी, बल्कि समाज में सहिष्णुता, प्रेम और सहयोग की भावना भी बढ़ेगी।

2.1.3 विजेता और सत्ता का पारस्परिक संबंधः जेन्डर के परिप्रेक्ष्य में

▶ ऐतिहासिक रूप से पुरुषों को सत्ता के साथ जोड़ा गया है

विजेता और सत्ता का संबंध समाज के विभिन्न पहलुओं में देखा जाता है, जिसमें राजनीति, अर्थव्यवस्था, और सांस्कृतिक संरचनाएँ शामिल हैं। जेन्डर (लैंगिकता) इस संबंध को प्रभावित करने वाला एक महत्वपूर्ण कारक है, जो सत्ता के वितरण और उसके प्रयोग को निर्धारित करता है। ऐतिहासिक रूप से पुरुषों को सत्ता के साथ जोड़ा गया है, जबकि महिलाओं और अन्य लैंगिक पहचानों को सीमित भूमिकाओं में रखा गया है। इस लेख में हम विजेता और सत्ता के संबंधों को जेन्डर के परिप्रेक्ष्य में विस्तार से विश्लेषण करेंगे।

2.1.3.1 ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

▶ पितृसत्तात्मक समाज

इतिहास में सत्ता और विजेता की अवधारणा मुख्य रूप से पुरुष प्रधान समाजों से प्रभावित रही है। युद्धों, राजनीतिक आंदोलनों, और शासन प्रणालियों में पुरुषों की प्रमुखता देखी गई है। पितृसत्तात्मक समाजों में पुरुषों को सत्ता का स्वाभाविक उत्तराधिकारी माना गया, जबकि महिलाओं को परिवार और घरेलू जिम्मेदारियों तक सीमित रखा गया। हालांकि, विभिन्न कालखंडों में महिलाओं ने भी सत्ता के शिखर तक पहुँचकर अपनी योग्यता साबित की है, जैसे कि रानी एलिजाबेथ प्रथम, झांसी की रानी

लक्ष्मीबाई, और इंदिरा गांधी।

2.1.3.2 सत्ता संरचना और जेन्डर

आधुनिक समाज में सत्ता संरचना अब भी जेन्डर असमानताओं से प्रभावित है। राजनीति, व्यवसाय, और विज्ञान जैसे क्षेत्रों में पुरुषों की अधिकता देखी जाती है। सत्ता प्राप्त करने के लिए महिलाओं को पुरुषों की तुलना में अधिक संघर्ष करना पड़ता है, क्योंकि सामाजिक संरचनाएँ और पूर्वाग्रह उनके रास्ते में बाधा बनते हैं। उदाहरण के लिए, कार्यस्थल में लैंगिक भेदभाव और वेतन असमानता सत्ता के असंतुलन को दर्शाते हैं।

विजेता की परिभाषा और जेन्डरविजेता की परिभाषा समय और संदर्भ के अनुसार बदलती रही है। पारंपरिक दृष्टिकोण में विजेता वह होता था जो युद्ध जीतता या शारीरिक शक्ति का प्रदर्शन करता था, लेकिन आधुनिक समय में यह परिभाषा बौद्धिक क्षमता, नेतृत्व कौशल, और नवाचार पर अधिक केंद्रित हो गई है। इस नए संदर्भ में महिलाओं और अन्य लैंगिक पहचानों के लिए सत्ता तक पहुँचने के अधिक अवसर उपलब्ध हुए हैं, फिर भी संरचनात्मक बाधाएँ बनी हुई हैं।

▶ सत्ता प्राप्त करने के लिए महिलाओं को पुरुषों की तुलना में अधिक संघर्ष करना पड़ता है

सत्ता के विभिन्न रूप और जेन्डरसत्ता के विभिन्न रूप होते हैं, जैसे कि राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, और सांस्कृतिक सत्ता।

राजनीतिक सत्ता - लोकतांत्रिक देशों में महिलाओं की भागीदारी बढ़ रही है, लेकिन अब भी पुरुषों का दबदबा अधिक है।

आर्थिक सत्ता - महिलाओं का कॉर्पोरेट नेतृत्व में प्रवेश हुआ है, लेकिन शीर्ष पदों पर उनकी संख्या सीमित है।

सामाजिक सत्ता - पितृसत्ता अभी भी प्रभावी है, जिससे महिलाओं की सामाजिक स्थिति कमज़ोर बनी रहती है।

सांस्कृतिक सत्ता - मीडिया और मनोरंजन उद्योग में जेन्डर रूढ़ियों को तोड़ने का प्रयास किया जा रहा है, लेकिन पूरी समानता अभी भी एक आदर्श है।

विजेता और सत्ता के बीच का संबंध जेन्डर के प्रभाव से अछूता नहीं है। समाज में लैंगिक समानता लाने के लिए सत्ता के वितरण में सुधार आवश्यक है। महिलाओं और अन्य लैंगिक पहचानों को सत्ता के केंद्र में लाने के लिए शिक्षा, नीति सुधार, और सामाजिक जागरूकता की आवश्यकता है। जब तक सत्ता का वितरण समतामूलक नहीं होगा, तब तक विजेता और सत्ता के पारस्परिक संबंध में असंतुलन बना रहेगा।

▶ सामाजिक जागरूकता की आवश्यकता

Summarised Overview / संक्षिप्त अवलोकन

अस्मिता और सत्ता का संबंध गहराई से जुड़ा हुआ है, जिसमें जेन्डर अस्मिता और यौन अस्मिता महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। ऐतिहासिक रूप से सत्ता का स्वरूप पुरुष प्रधान रहा है, जिससे स्त्री और अन्य लैंगिक पहचानों को सीमित भूमिकाओं में रखा गया। आधुनिक समय में सत्ता के स्वरूप में बदलाव आया है, लेकिन संरचनात्मक असमानताएँ अभी भी बनी हुई हैं। विजेता की परिभाषा समय के साथ बदलती रही है, जिससे अब शारीरिक शक्ति के साथ-साथ बौद्धिकता और नेतृत्व कौशल भी प्रमुख कारक बन गए हैं। सत्ता के विभिन्न रूप-राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक-लैंगिक अस्मिता को प्रभावित करते हैं। समतामूलक सत्ता वितरण के बिना समाज में वास्तविक समानता स्थापित नहीं हो सकती।

Assignment / प्रदत्त कार्य

1. विजेता और सत्ता के पारस्परिक संबंध को परिभाषित करें और जेन्डर के दृष्टिकोण से इसका विश्लेषण करें।
2. इतिहास में सत्ता संरचना पर जेन्डर की क्या भूमिका रही है? कुछ ऐतिहासिक उदाहरणों के साथ समझाएँ।
3. राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक सत्ता के संदर्भ में जेन्डर आधारित असमानताओं की विवेचना करें।
4. क्या सत्ता प्राप्त करने की प्रक्रिया महिलाओं और अन्य लैंगिक पहचानों के लिए समान रही है? अपने उत्तर को तर्कों और उदाहरणों से स्पष्ट करें।
5. आधुनिक समाज में सत्ता की परिभाषा कैसे बदली है, और इसका प्रभाव विजेता की परिभाषा पर कैसे पड़ा है?

Reference / संदर्भ ग्रंथ

1. स्त्री मुक्ति का सपना - सं. कमला प्रसाद, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली
2. स्त्री संघर्ष का इतिहास - सं. राधा कुमार, वाणी प्रकाशन
3. उपनिवेश में स्त्री - प्रभा खेतान, राजकमल प्रकाशन
4. स्त्री परंपरा और आधुनिकता - सं. राज किशोर, वाणी प्रकाशन
5. स्त्री सशक्तिकरण की दिशा - रेखा कसतवार, राजकमल प्रकाशन
6. बाजार के बीच बाजार के खिलाफ - प्रभा खेतान, वाणी प्रकाशन
7. औरत, अस्तित्व और अस्मिता - अरविंद जैन, राजकमल प्रकाशन
8. स्त्री चिंतन की चुनौतियाँ - रेखा कस्तवार, राजकमल प्रकाशन
9. Feminist thought: a comprehensive introduction - Tony Rosemary
10. Contemporary Literary and cultural theory - Pramod K Nayar

Suggested Reading / निर्धारित पुस्तक

1. स्त्री मुक्ति : संघर्ष और इतिहास - रमणिका गुप्ता
2. उपनिवेश में स्त्री - प्रभा खेतान
3. लिहाफ - इस्मत चुगताई

Space for Learner Engagement for Objective Questions

Learners are encouraged to develop objective questions based on the content in the paragraph as a sign of their comprehension of the content. The Learners may reflect on the recap bullets and relate their understanding with the narrative in order to frame objective questions from the given text. The University expects that 1 - 2 questions are developed for each paragraph. The space given below can be used for listing the questions.

इकाई 2

जेंडर की अवधारणा, जेंडर, भाषा और साहित्य, स्त्रीलिंगी विमर्श और भाषा

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- समाज में जेंडर की संरचना, उसकी ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और सामाजिक पृष्ठभूमि को पहचानता है
- भाषा में निहित जेंडर पूर्वाग्रह, भाषा के माध्यम से सामाजिक संरचनाओं को प्रभावित करने वाले कारकों को समझता है
- स्त्रीवाद और स्त्री-विमर्श की अवधारणा, उसके विकास और भाषा में उसकी भूमिका आदि से परिचित होता है
- विभिन्न साहित्यिक कृतियों में स्त्री और अन्य जेंडर की स्थिति का जानकारी प्राप्त करता है

Background / पृष्ठभूमि

जेंडर की अवधारणा केवल जैविक भिन्नता तक सीमित न होकर सामाजिक, सांस्कृतिक और भाषाई संरचनाओं से भी गहराई से जुड़ी हुई है। भाषा न केवल संचार का माध्यम है, बल्कि यह समाज में व्याप्त जेंडर भूमिकाओं, पूर्वाग्रहों और शक्ति संरचनाओं को भी प्रतिबिंबित करती है। साहित्य में भी जेंडर की अभिव्यक्ति महत्वपूर्ण रही है, जहाँ पारंपरिक रूप से पुरुष दृष्टिकोण हावी रहा, लेकिन स्त्री विमर्श ने इस एकरूपता को चुनौती दी है। भाषा में लिंग-संबंधी असमानताएँ समाज की मानसिकता को दर्शाती हैं और साहित्य में भी स्त्रियों एवं अन्य हाशिए के जेंडरों को प्रस्तुत करने के तरीके ऐतिहासिक रूप से पितृसत्तात्मक सोच से प्रभावित रहे हैं। आधुनिक स्त्रीवादी विमर्श और जेंडर अध्ययन ने भाषा एवं साहित्य में समावेशिता और समानता की आवश्यकता पर बल दिया है, जिससे समाज में लैंगिक न्याय और निष्पक्षता को बढ़ावा मिल सके।

Keywords / मुख्य बिन्दु

जेंडर, लैंगिक असमानता, स्त्री विमर्श, भाषा और जेंडर, समावेशी भाषा (Inclusive Language), साहित्य और जेंडर, सांस्कृतिक संरचना, लैंगिक भेदभाव, सामाजिक संरचना, स्त्रीवादी आलोचना, हाशिए के जेंडर, जेंडर संवेदनशीलता

Discussion / चर्चा

- जेंडर (Gender) केवल जैविक पहचान (Sex) तक सीमित न होकर एक सामाजिक और सांस्कृतिक अवधारणा है, जो व्यक्ति की भूमिका, व्यवहार, अपेक्षाओं और समाज में उसकी स्थिति को निर्धारित करती है

2.2.1 जेंडर की अवधारणा

जेंडर (Gender) केवल जैविक पहचान (Sex) तक सीमित न होकर एक सामाजिक और सांस्कृतिक अवधारणा है, जो व्यक्ति की भूमिका, व्यवहार, अपेक्षाओं और समाज में उसकी स्थिति को निर्धारित करती है। यह एक सामाजिक निर्मिति (Social Construct) है, जिसका निर्माण पारंपरिक मान्यताओं, सांस्कृतिक धारणाओं और पितृसत्तात्मक संरचनाओं के आधार पर किया जाता है।

1. जेंडर बनाम सेक्स (Gender vs. Sex)

अक्सर जेंडर और सेक्स को एक ही अर्थ में प्रयोग किया जाता है, लेकिन दोनों अलग-अलग अवधारणाएँ हैं:

- **सेक्स (Sex):** जैविक भिन्नता पर आधारित है, जो पुरुष (Male), महिला (Female) और अंतःलिंगी (Intersex) के रूप में पहचानी जाती है।
- **जेंडर (Gender):** समाज द्वारा निर्मित भूमिकाएँ और अपेक्षाएँ हैं, जैसे कि पुरुषों से ताकतवर और निर्णायक होने की और महिलाओं से कोमल व संवेदनशील होने की अपेक्षा की जाती है।

जेंडर का निर्धारण मुख्य रूप से सामाजिक प्रक्रियाओं द्वारा होता है, जो व्यक्ति के जन्म से ही शुरू हो जाता है और जीवनभर चलता रहता है।

- दोनों अलग-अलग अवधारणाएँ

2. जेंडर का सामाजिक निर्माण

जेंडर की अवधारणा समय और स्थान के अनुसार बदलती रहती है। यह विभिन्न सामाजिक कारकों से प्रभावित होती है, जैसे:

- **परिवार:** लड़का-लड़की के प्रति अलग-अलग व्यवहार किया जाता है, जिससे जेंडर भूमिकाएँ बचपन से ही तय होने लगती हैं।
- **शिक्षा:** पाठ्यपुस्तकों, शिक्षकों और विद्यालयी गतिविधियों के माध्यम से जेंडर पूर्वाग्रह बनाए या तोड़े जा सकते हैं।
- **मीडिया:** विज्ञापन, फिल्में, टीवी शो और साहित्य भी जेंडर की धारणाओं को मजबूत या कमज़ोर करने में भूमिका निभाते हैं।
- **धर्म और परंपराएँ:** विभिन्न धार्मिक और सांस्कृतिक परंपराएँ भी जेंडर भेदभाव को बनाए रख सकती हैं।

3. जेंडर भूमिकाएँ और स्टीरियोटाइप्स

जेंडर भूमिकाएँ समाज द्वारा तय की जाती हैं, जिसमें पुरुषों और महिलाओं से अलग-अलग प्रकार के कार्यों की अपेक्षा की जाती है।

- **पारंपरिक जेंडर भूमिकाएँ:**
  - पुरुषों को परिवार का रक्षक, कमाने वाला और शक्तिशाली समझा जाता है।
  - महिलाओं को कोमल, संवेदनशील, परिवार और बच्चों की देखभाल करने वाली माना जाता है।
- **जेंडर स्टीरियोटाइप्स:**
  - "लड़कियाँ गुलाबी रंग पसंद करती हैं, लड़के नीला।"
  - "लड़कियाँ कमज़ोर होती हैं और लड़कों को रोना नहीं चाहिए।"
  - "पुरुषों को तकनीकी क्षेत्र में और महिलाओं को शिक्षण व गृहकार्य में रहना चाहिए।"

▶ जेंडर भूमिकाएँ समाज द्वारा तय की जाती हैं

ये स्टीरियोटाइप्स न केवल व्यक्तियों की स्वतंत्रता को सीमित करते हैं, बल्कि समाज में असमानता को भी बनाए रखते हैं।

4. जेंडर और पितृसत्ता (Patriarchy)

पितृसत्ता एक ऐसी सामाजिक व्यवस्था है, जिसमें पुरुषों को सत्ता, अधिकार और वर्चस्व प्राप्त होता है, जबकि महिलाओं और अन्य लिंग समूहों को गौण माना जाता है।

- **पितृसत्तात्मक संरचना के प्रभाव:**
  - महिलाओं की शिक्षा और रोजगार के अवसरों में कमी।
  - घरेलू और कार्यस्थल पर महिलाओं के प्रति भेदभाव।
  - निर्णय लेने की प्रक्रियाओं में पुरुषों की प्रधानता।
  - महिलाओं के प्रति हिंसा और दमन की घटनाएँ।

▶ सामाजिक व्यवस्था

हालांकि, आधुनिक समय में महिलाओं और अन्य जेंडर समूहों के अधिकारों को लेकर जागरूकता बढ़ रही है, जिससे पितृसत्ता की जड़ें कमज़ोर हो रही हैं।

5. समकालीन जेंडर विमर्श और परिवर्तन

आज के समय में जेंडर की पारंपरिक अवधारणाओं को चुनौती दी जा रही है। अब यह स्वीकार किया जाने लगा है कि जेंडर केवल 'पुरुष' और 'महिला' तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें ट्रांसजेंडर, नॉन-बाइनरी, जेंडरक्वियर जैसी पहचानों के लिए भी स्थान होना चाहिए।

▶ जेंडर केवल 'पुरुष' और 'महिला' तक सीमित नहीं

- **स्त्री-विमर्श (Feminism):** महिलाओं के अधिकारों और समानता के लिए संघर्ष।
- **क्वीयर थ्योरी (Queer Theory):** पारंपरिक जेंडर और यौनिकता की अवधारणाओं को चुनौती देना।
- **लैंगिक समानता (Gender Equality):** सभी लिंगों को समान अवसर और अधिकार दिलाने का प्रयास।

जेंडर की अवधारणा केवल जैविक आधार पर नहीं, बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक कारकों पर आधारित होती है। यह समय के साथ बदलती रहती है और इसके प्रभाव शिक्षा, कार्यक्षेत्र, परिवार, भाषा, साहित्य और समाज के विभिन्न

▶ जेंडर की अवधारणा केवल जैविक आधार पर नहीं

क्षेत्रों में देखे जा सकते हैं। आधुनिक समय में जेंडर समानता की दिशा में हो रहे प्रयास इस अवधारणा को और अधिक समावेशी बना रहे हैं, जिससे एक न्यायसंगत और समतामूलक समाज का निर्माण संभव हो सके।

2.2.2 जेंडर, भाषा और साहित्य

- जेंडर की अवधारणा भाषा के माध्यम से निर्मित और सुदृढ़ होती है

जेंडर, भाषा और साहित्य एक-दूसरे से गहराई से जुड़े हुए हैं। भाषा केवल संवाद का माध्यम नहीं, बल्कि समाज की सोच, मूल्यों और शक्ति संरचनाओं का प्रतिबिंब भी होती है। जेंडर की अवधारणा भाषा के माध्यम से निर्मित और सुदृढ़ होती है, वहीं साहित्य में जेंडर की भूमिका सामाजिक संरचनाओं को दर्शाने और बदलने में महत्वपूर्ण होती है। पारंपरिक रूप से साहित्य में पितृसत्तात्मक दृष्टिकोण प्रभावी रहा है, लेकिन स्त्री-विमर्श और जेंडर अध्ययन ने इन धारणाओं को चुनौती दी है और साहित्य में समावेशिता की आवश्यकता को रेखांकित किया है।

2.2.2.1 भाषा और जेंडर

भाषा केवल शब्दों का समूह नहीं होती, बल्कि यह समाज की संरचना और मान्यताओं को दर्शाती है। जेंडर के संदर्भ में भाषा में निहित असमानताएँ और पूर्वाग्रह स्पष्ट रूप से देखे जा सकते हैं।

- स्त्रीलिंग शब्दों का प्रयोग कम प्रभावशाली और गौण भूमिकाओं के लिए किया जाता है

(क) भाषा में लिंग आधारित पूर्वाग्रह

- कई भाषाओं में स्त्रीलिंग शब्दों का प्रयोग कम प्रभावशाली और गौण भूमिकाओं के लिए किया जाता है, जैसे "अध्यापक" (सम्मानजनक) और "अध्यापिका" (कमतर माने जाने वाला)।
- रोजमर्रा की भाषा में भी कई जेंडर स्टीरियोटाइप्स देखने को मिलते हैं, जैसे "लड़कियों को कोमल होना चाहिए", "लड़कों को रोना नहीं चाहिए"।
- महिलाओं से जुड़े शब्द अक्सर नकारात्मक अर्थ ग्रहण कर लेते हैं, जैसे "नारी सुलभ" को "कमज़ोरी" का प्रतीक मान लिया जाता है।

(ख) समावेशी भाषा की आवश्यकता

आधुनिक समाज में समावेशी भाषा (Inclusive Language) की जरूरत महसूस की जा रही है, जिसमें किसी भी जेंडर के प्रति भेदभाव न हो। उदाहरण के लिए:

- "मैनपावर" की जगह "वर्कफोस" शब्द का प्रयोग।
- "महिला डॉक्टर" की बजाय "डॉक्टर" कहना।
- "भाइयों" की बजाय "साथियों" या "सभी" कहना।

इस प्रकार की भाषा समाज में लैंगिक समानता की भावना को बढ़ावा देती है।

2.2.2.2 साहित्य में जेंडर की भूमिका

साहित्य समाज का दर्पण होता है, और इसमें जेंडर भूमिकाएँ स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती हैं। साहित्यिक कृतियाँ जेंडर आधारित सोच को मजबूत भी कर सकती हैं और उसे चुनौती भी दे सकती हैं।

(क) पारंपरिक साहित्य और पितृसत्ता

- प्राचीन और पारंपरिक साहित्य में पुरुषों को नायक और महिलाओं को सहायक भूमिकाओं में प्रस्तुत किया गया।
- महाकाव्य और धार्मिक ग्रंथों में महिलाओं को त्याग, सेवा, सतीत्व और समर्पण की मूर्ति के रूप में चित्रित किया गया।
- महिलाओं की भूमिका अक्सर घर तक सीमित रखी गई, जबकि पुरुषों को योद्धा, विचारक और नायक के रूप में दिखाया गया।

▶ स्त्री-विमर्श ने पारंपरिक जेंडर भूमिकाओं को चुनौती दी

(ख) आधुनिक साहित्य और स्त्री-विमर्श

आधुनिक साहित्य में स्त्री-विमर्श (Feminist Discourse) ने पारंपरिक जेंडर भूमिकाओं को चुनौती दी और महिलाओं के स्वतंत्र अस्तित्व की अवधारणा को प्रस्तुत किया।

- **स्त्री लेखिकाओं का उदय:** महादेवी वर्मा, अमृता प्रीतम, तसलीमा नसरीन जैसी लेखिकाओं ने नारी संवेदना और अधिकारों की चर्चा की।
- **जेंडर के विविध आयाम:** समकालीन साहित्य में ट्रांसजेंडर, नॉन-बाइनरी और क्वीयर समुदाय की कहानियाँ भी प्रमुखता से सामने आने लगी हैं।
- **पितृसत्ता के विरुद्ध स्वर:** कई साहित्यकारों ने पितृसत्तात्मक समाज की आलोचना करते हुए नारी स्वतंत्रता, समानता और आत्मनिर्णय की मांग उठाई है।

▶ पितृसत्तात्मक समाज की आलोचना

2.2.2.3 साहित्य में जेंडर समानता की दिशा में परिवर्तन

आज साहित्य में जेंडर समानता की ओर ध्यान दिया जा रहा है। लेखकों और पाठकों की बदलती मानसिकता के कारण समावेशी और संवेदनशील साहित्य को प्राथमिकता दी जा रही है।

- **महिला एवं हाशिए के जेंडर की आवाज:** दलित नारीवाद, क्वीयर साहित्य और अन्य हाशिए के समुदायों के अनुभवों पर केंद्रित लेखन को बढ़ावा दिया जा रहा है।
- **नई लेखन शैलियाँ:** आत्मकथात्मक लेखन, डायरी, ब्लॉग और सोशल मीडिया के माध्यम से महिलाएँ एवं अन्य हाशिए के जेंडर अपनी पहचान और संघर्षों को प्रस्तुत कर रहे हैं।
- **जेंडर न्यूट्रल पात्रों की स्वीकृति:** अब साहित्य में जेंडर न्यूट्रल पात्रों की भी पहचान होने लगी है, जो समाज में समावेशिता की ओर संकेत करता है।

▶ आज साहित्य में जेंडर समानता की ओर ध्यान दिया जा रहा है

जेंडर, भाषा और साहित्य आपस में गहराई से जुड़े हुए हैं। भाषा समाज की मानसिकता को प्रभावित करती है, और साहित्य समाज की वास्तविकता को चित्रित करने के साथ-साथ उसे बदलने का भी प्रयास करता है। जेंडर समानता की दिशा में साहित्य और भाषा की भूमिका महत्वपूर्ण है, क्योंकि ये माध्यम लोगों की सोच, धारणाओं और मूल्यों को प्रभावित कर सकते हैं। समावेशी भाषा और जेंडर-संवेदनशील साहित्य के माध्यम से एक अधिक न्यायसंगत और समानता-आधारित समाज की दिशा

▶ साहित्य और भाषा की भूमिका महत्वपूर्ण है

में आगे बढ़ा जा सकता है।

2.2.3 स्त्रीलिंगी विमर्श और भाषा

स्त्रीलिंगी विमर्श (Feminist Discourse) भाषा, समाज और संस्कृति में स्त्रियों की स्थिति का विश्लेषण करने वाला एक महत्वपूर्ण विचारधारा है। यह विमर्श भाषा में निहित लैंगिक असमानताओं को उजागर करता है और भाषा को अधिक समावेशी एवं निष्पक्ष बनाने की वकालत करता है। पितृसत्तात्मक समाज में भाषा का स्वरूप भी पुरुष-प्रधान रहा है, जहाँ स्त्रियों को गौण भूमिकाओं में दर्शाया जाता रहा है। लेकिन स्त्री-विमर्श ने भाषा के इस पूर्वाग्रह को चुनौती देते हुए समानता और न्याय की माँग उठाई है।

▶ निहित लैंगिक असमानताओं को उजागर करता है

2.2.3.1 भाषा में पितृसत्तात्मक संरचना और स्त्री-विमर्श

भाषा केवल विचारों को व्यक्त करने का साधन नहीं होती, बल्कि यह समाज की संरचनाओं, पूर्वाग्रहों और शक्ति संतुलन को भी प्रतिबिंबित करती है। पितृसत्ता ने भाषा को भी अपने अनुरूप गढ़ा है, जिससे समाज में महिलाओं की भूमिका सीमित और गौण बनी रही।

(क) भाषा में लिंग आधारित असमानता

1. **पुरुषवाची भाषा का वर्चस्व:** अधिकांश भाषाओं में पुरुषवाची शब्दों को प्रधानता दी गई है, जैसे - "मनुष्य" (जो केवल पुरुषों को संदर्भित करता है), "विधि-निर्माता" (जो पुरुष सत्ता को दर्शाता है)।
2. **स्त्रीवाची शब्दों का नकारात्मक अर्थ ग्रहण करना:** कई स्त्रीवाची शब्द धीरे-धीरे अपमानजनक अर्थों में परिवर्तित हो गए हैं, जैसे - "रंडी" (जो पहले केवल विधवा के लिए प्रयुक्त होता था, अब अपमानजनक है)।
3. **स्त्रियों की पहचान पुरुषों से जुड़ी होना:** महिलाएँ अक्सर अपने नाम के साथ "कुमारी" या "श्रीमती" जोड़ती हैं, जिससे उनकी वैवाहिक स्थिति प्रकट होती है, जबकि पुरुषों के साथ ऐसा नहीं होता।

▶ पितृसत्ता ने भाषा को भी अपने अनुरूप गढ़ा है

(ख) भाषा में लैंगिक निष्पक्षता की आवश्यकता

स्त्री-विमर्श यह मांग करता है कि भाषा का स्वरूप लैंगिक समानता को दर्शाए और उसमें किसी भी लिंग के प्रति पूर्वाग्रह न हो। इसके लिए:

- "लेखक" की जगह "लेखिका" कहना आवश्यक नहीं, बल्कि "लेखक" को ही एक सामान्य शब्द के रूप में अपनाया जाना चाहिए।
- "भाइयों" की जगह "साथियों" या "सभी" शब्दों का प्रयोग किया जाना चाहिए।
- "वह आदमी बहुत समझदार है" की जगह "वह व्यक्ति बहुत समझदार है" कहना अधिक तर्कसंगत होगा।

▶ स्त्री-विमर्श यह मांग करता है कि भाषा का स्वरूप लैंगिक समानता को दर्शाए और उसमें किसी भी लिंग के प्रति पूर्वाग्रह न हो

2.2.3.2 साहित्य में स्त्री-विमर्श और भाषा

साहित्य में भी स्त्रियों की स्थिति को भाषा के माध्यम से प्रतिबिंबित किया गया है।

परंपरागत साहित्य में स्त्रियों को अक्सर त्याग, सेवा और समर्पण की मूर्ति के रूप में प्रस्तुत किया जाता था, लेकिन आधुनिक साहित्य ने इस प्रवृत्ति को चुनौती दी है।

(क) पारंपरिक साहित्य में स्त्री की छवि

- पौराणिक एवं लोक साहित्य में स्त्रियों को कोमल, सहनशील और पुरुषों पर निर्भर दिखाया गया।
- हिंदी साहित्य में तुलसीदास, सूरदास, कबीर आदि की कृतियों में स्त्री को आदर्श नारी के रूप में प्रस्तुत किया गया, लेकिन उसकी स्वतंत्रता सीमित रही।
- "सती", "पतिव्रता", "त्यागमूर्ति" जैसे विशेषणों के माध्यम से स्त्रियों की भूमिका को सीमित कर दिया गया।

- स्त्री-सशक्तिकरण के विचार

(ख) आधुनिक साहित्य और स्त्री-विमर्श

- 20वीं सदी में महिला लेखिकाओं ने भाषा के भीतर स्त्रियों की पहचान और उनकी स्वतंत्रता को पुनर्परिभाषित किया।
- महादेवी वर्मा, कृष्णा सोबती, अमृता प्रीतम, तसलीमा नसरीन आदि ने साहित्य में स्त्री-सशक्तिकरण के विचार को आगे बढ़ाया।
- समकालीन साहित्य में स्त्री की छवि केवल एक "त्यागमयी" महिला की नहीं, बल्कि एक स्वतंत्र विचारक, संघर्षशील और आत्मनिर्भर नारी के रूप में उभरकर आई है।

2.2.3.3 स्त्री-विमर्श और समावेशी भाषा

स्त्री-विमर्श ने भाषा को अधिक समावेशी बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। अब यह माना जाने लगा है कि भाषा में किसी भी लिंग का वर्चस्व नहीं होना चाहिए, बल्कि यह सभी के लिए समान होनी चाहिए।

(क) समावेशी भाषा के कुछ उदाहरण

1. "पुरुष और महिला कर्मचारियों" के बजाय "सभी कर्मचारी" कहना।
2. "मैनपावर" की जगह "वर्कफोर्स" शब्द का उपयोग करना।
3. "पुरुष प्रधान समाज" की बजाय "पितृसत्तात्मक समाज" कहना।

- स्त्रीलिंगी विमर्श और भाषा का आपस में गहरा संबंध है

इस प्रकार की भाषा का प्रयोग समाज में जेंडर समानता की भावना को बढ़ावा देता है और स्त्री-विमर्श को मजबूती प्रदान करता है।

स्त्रीलिंगी विमर्श और भाषा का आपस में गहरा संबंध है। भाषा समाज की मानसिकता को दर्शाती है और साहित्य समाज में बदलाव लाने का एक सशक्त माध्यम है। पितृसत्तात्मक समाज में भाषा और साहित्य दोनों ही स्त्रियों को सीमित भूमिकाओं में प्रस्तुत करते रहे हैं, लेकिन स्त्री-विमर्श ने इस प्रवृत्ति को चुनौती दी है। समकालीन साहित्य और भाषा में हो रहे परिवर्तन लैंगिक समानता की दिशा में एक सकारात्मक कदम हैं। समावेशी भाषा और जेंडर-संवेदनशील साहित्य के माध्यम से ही एक न्यायसंगत और समानता-आधारित समाज की दिशा में आगे बढ़ा जा सकता है।

Summarised Overview / संक्षिप्त अवलोकन

स्त्रीलिंगी विमर्श और भाषा का आपस में गहरा संबंध है, क्योंकि भाषा समाज की संरचना, पूर्वाग्रहों और शक्ति संतुलन को दर्शाती है। पितृसत्तात्मक समाज में भाषा पुरुष-प्रधान रही है, जहाँ स्त्रियों को गौण भूमिकाओं में प्रस्तुत किया गया। पारंपरिक साहित्य में स्त्री को त्याग, सेवा और समर्पण की मूर्ति के रूप में चित्रित किया गया, जबकि आधुनिक साहित्य और स्त्री-विमर्श ने इन धारणाओं को चुनौती दी है। भाषा में लिंग आधारित असमानता को दूर करने के लिए समावेशी शब्दावली, निष्पक्ष अभिव्यक्ति और जेंडर-न्यूट्रल भाषा के प्रयोग पर बल दिया जा रहा है। स्त्री-विमर्श ने साहित्य और भाषा को अधिक समावेशी, संवेदनशील और समानतामूलक बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है, जिससे एक न्यायसंगत और समतामूलक समाज की दिशा में परिवर्तन संभव हो सके।

Assignment / प्रदत्त कार्य

1. 'भाषा केवल संवाद का माध्यम नहीं, बल्कि यह सामाजिक संरचनाओं को भी प्रभावित करती है। इस कथन के संदर्भ में जेंडर और भाषा के अंतर्संबंध पर चर्चा करें।
2. साहित्य में महिलाओं की पारंपरिक छवि और स्त्री-विमर्श के प्रभाव से आए बदलावों की तुलना करें।
3. हिंदी साहित्य में स्त्री-विमर्श और जेंडर अध्ययन के योगदान की समीक्षा करें।
4. 'समावेशी भाषा ही वास्तविक समानता की दिशा में पहला कदम है। इस कथन की आलोचनात्मक व्याख्या करें।
5. स्त्री-विमर्श के ऐतिहासिक विकास और उसकी आधुनिक प्रासंगिकता पर विस्तार से चर्चा करें।

Reference / संदर्भ ग्रंथ

1. स्त्री मुक्ति का सपना - सं. कमला प्रसाद, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली
2. स्त्री संघर्ष का इतिहास - सं. राधा कुमार, वाणी प्रकाशन
3. उपनिवेश में स्त्री - प्रभा खेतान, राजकमल प्रकाशन
4. स्त्री परंपरा और आधुनिकता - सं. राज किशोर, वाणी प्रकाशन
5. स्त्री सशक्तिकरण की दिशा - रेखा कसतवार, राजकमल प्रकाशन
6. बाजार के बीच बाजार के खिलाफ - प्रभा खेतान, वाणी प्रकाशन
7. औरत, अस्तित्व और अस्मिता - अरविंद जैन, राजकमल प्रकाशन
8. स्त्री चिंतन की चुनौतियाँ - रेखा कस्तवार, राजकमल प्रकाशन
9. Feminist thought: a comprehensive introduction - Tony Rosemary
10. Contemporary Literary and cultural theory - Pramod K Nayar

Suggested Reading / निर्धारित पुस्तक

1. स्त्री मुक्ति : संघर्ष और इतिहास - रमणिका गुप्ता
2. उपनिवेश में स्त्री - प्रभा खेतान
3. लिहाफ - इस्मत चुगताई

Space for Learner Engagement for Objective Questions

Learners are encouraged to develop objective questions based on the content in the paragraph as a sign of their comprehension of the content. The Learners may reflect on the recap bullets and relate their understanding with the narrative in order to frame objective questions from the given text. The University expects that 1 - 2 questions are developed for each paragraph. The space given below can be used for listing the questions.

इकाई 3

स्त्री मुक्ति आंदोलन की परंपरा- जॉन स्टुअर्ट मिल - द सब्जेक्ट ऑफ वुमन (स्त्री की पराधीनता), जर्मन ग्रीयर - द फीमैल यूनक (विद्रोही स्त्री), सिमोन द बॉउआर - द सेकंड सेक्स(स्त्री उपेक्षिता)

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- स्त्री मुक्ति आंदोलन की ऐतिहासिक परंपरा को समझता है
- द सब्जेक्ट ऑफ वुमन, द फीमैल यूनक और द सेकंड सेक्स के प्रमुख विचारों को समझना और उनकी प्रासंगिकता को परखता है
- विभिन्न नारीवादी दृष्टिकोणों, जैसे उदारवादी नारीवाद, अस्तित्ववादी नारीवाद और समाजशास्त्रीय नारीवाद को समझता है
- स्त्री अधिकारों और नारीवादी आंदोलनों के बारे में जानकारी प्राप्त करता है

Background / पृष्ठभूमि

स्त्री मुक्ति आंदोलन का इतिहास समाज में महिलाओं की समानता और स्वतंत्रता के लिए किए गए संघर्षों की एक लंबी परंपरा को दर्शाता है। इस आंदोलन को बौद्धिक आधार देने वाले कई विचारकों ने महिलाओं की स्थिति को सुधारने के लिए महत्वपूर्ण योगदान दिया है। जॉन स्टुअर्ट मिल की पुस्तक द सब्जेक्ट ऑफ वुमन (स्त्री की पराधीनता) ने पुरुषों द्वारा महिलाओं पर थोपे गए सामाजिक और कानूनी बंधनों की आलोचना की और लैंगिक समानता की वकालत की। इसी क्रम में, जर्मन ग्रीयर की द फीमैल यूनक (विद्रोही स्त्री) ने पितृसत्तात्मक समाज में महिलाओं की यौनिकता और उनकी स्वतंत्रता के दमन पर प्रकाश डाला। सिमोन द बॉउआर की द सेकंड सेक्स (स्त्री उपेक्षिता) ने यह तर्क दिया कि समाज ने महिलाओं को 'दूसरे दर्जे' का नागरिक बना दिया है और उनकी पहचान को पुरुषों के संदर्भ में परिभाषित किया जाता है। इन विचारकों की कृतियों ने स्त्री मुक्ति आंदोलन को एक सशक्त बौद्धिक आधार दिया और समाज में लैंगिक समानता की दिशा में क्रांतिकारी परिवर्तन लाने की प्रेरणा दी।

Keywords / मुख्य बिन्दु

स्त्री विमर्श, नारीवादी आंदोलन, पितृसत्तात्मक व्यवस्था, लैंगिक समानता

Discussion / चर्चा

2.3.1 स्त्री मुक्ति आंदोलन की परंपरा

स्त्री मुक्ति आंदोलन महिलाओं की समानता और स्वतंत्रता के लिए किया गया एक ऐतिहासिक संघर्ष है, जिसका उद्देश्य उन्हें सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक अधिकार दिलाना रहा है। यह आंदोलन प्राचीन काल से आधुनिक युग तक चला आ रहा है, जिसमें कई विचारकों और सुधारकों ने योगदान दिया।

1. प्राचीन और मध्यकालीन समाज में स्त्रियाँ

प्राचीन काल में कुछ सभ्यताओं में महिलाओं को स्वतंत्रता मिली थी, लेकिन समय के साथ पितृसत्ता हावी हो गई। मध्यकाल में महिलाओं की शिक्षा और अधिकारों पर प्रतिबंध लगा दिया गया, जिससे उनकी स्थिति और अधिक कमज़ोर हो गई।

2. आधुनिक काल और स्त्री मुक्ति की शुरुआत

- स्त्री मुक्ति आंदोलन का इतिहास समाज में महिलाओं की समानता और स्वतंत्रता के लिए किए गए संघर्षों की एक लंबी परंपरा को दर्शाता है

17वीं-18वीं शताब्दी में पुनर्जागरण और औद्योगिक क्रांति के कारण महिलाओं के अधिकारों पर चर्चा शुरू हुई। मैरी वोल्स्टनक्राफ्ट, जॉन स्टुअर्ट मिल और अन्य विचारकों ने महिलाओं की समानता की वकालत की।

3. प्रमुख विचारक और उनकी कृतियाँ

- **जॉन स्टुअर्ट मिल** - 'स्त्री की पराधीनता' (1869): महिलाओं को पुरुषों के समान अधिकार देने की मांग।
- **सिमोन द बॉउआर** - 'द सेकंड सेक्स' (1949): महिलाओं की सामाजिक स्थिति पर गहरा विश्लेषण।
- **जर्मन ग्रीयर** - 'द फीमेल यूनक' (1970): पितृसत्ता और यौनिक स्वतंत्रता पर चर्चा।

4. स्त्री मुक्ति आंदोलन के चरण

- **प्रथम चरण (19वीं-20वीं सदी):** महिलाओं के मताधिकार के लिए संघर्ष।
- **द्वितीय चरण (1960-1980):** शिक्षा, समान वेतन और कार्यस्थल अधिकारों पर ज़ोर।
- **तृतीय चरण (1990-वर्तमान):** लैंगिक पहचान और यौन स्वतंत्रता पर केन्द्रित।

5. आंदोलन का प्रभाव

- महिलाओं को शिक्षा, रोजगार और संपत्ति के अधिकार मिले।
- अधिकांश देशों में महिलाओं को मतदान का अधिकार प्राप्त हुआ।
- विवाह, तलाक और घरेलू हिंसा से जुड़े कानूनों में सुधार हुआ।

स्त्री मुक्ति आंदोलन ने महिलाओं की स्थिति को बदलने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई

है, लेकिन अभी भी लैंगिक असमानता की कई चुनौतियाँ बनी हुई हैं। यह आंदोलन केवल अतीत का हिस्सा नहीं, बल्कि आज भी प्रासंगिक है और महिलाओं की पूर्ण स्वतंत्रता और समानता के लिए जारी है। जिन विचारकों ने इस आंदोलन को आगे बढ़ाया इस पर विस्तारपूर्वक आगे बताया जाएगा।

2.3.2 स्त्री मुक्ति आंदोलन और जॉन स्टुअर्ट मिल का योगदान

- स्त्री मुक्ति आंदोलन इतिहास में महिलाओं की समानता और स्वतंत्रता के लिए किए गए संघर्षों की एक लंबी परंपरा को दर्शाता है

स्त्री मुक्ति आंदोलन इतिहास में महिलाओं की समानता और स्वतंत्रता के लिए किए गए संघर्षों की एक लंबी परंपरा को दर्शाता है। यह आंदोलन महिलाओं को सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और कानूनी अधिकार दिलाने के लिए चलाया गया, ताकि वे पुरुषों के समान अवसरों और अधिकारों का उपभोग कर सकें। इस आंदोलन को बौद्धिक आधार देने वाले कई विचारकों ने समाज में महिलाओं की स्थिति पर गहन विचार किए और उनके अधिकारों की वकालत की।

- दार्शनिक और समाज सुधारक जॉन स्टुअर्ट मिल ने उनके पक्ष में आवाज़ उठाई

19वीं शताब्दी में जब महिलाओं को शिक्षा, संपत्ति, रोजगार और राजनीतिक अधिकारों से वंचित रखा जाता था, तब दार्शनिक और समाज सुधारक जॉन स्टुअर्ट मिल ने उनके पक्ष में आवाज़ उठाई। उनकी पुस्तक द सब्जुगेशन ऑफ वुमन (स्त्री की पराधीनता) महिलाओं के अधिकारों के समर्थन में लिखे गए शुरुआती और प्रभावशाली ग्रंथों में से एक मानी जाती है। इस पुस्तक में मिल ने महिलाओं की सामाजिक, आर्थिक और कानूनी स्थिति की कठोर आलोचना की और उनके समान अधिकारों की वकालत की।

- समाज ने महिलाओं को हमेशा कमज़ोर और पुरुषों पर निर्भर रहने वाला बना दिया है, जिससे वे स्वतंत्र रूप से अपनी इच्छानुसार जीवन नहीं जी सकतीं

2.3.2.1 जॉन स्टुअर्ट मिल और 'स्त्री की पराधीनता'

जॉन स्टुअर्ट मिल 19वीं सदी के प्रसिद्ध दार्शनिक, अर्थशास्त्री और समाज सुधारक थे। उन्होंने स्वतंत्रता, समानता और लोकतंत्र के विचारों को बढ़ावा दिया और समाज में व्याप्त अन्याय और भेदभाव के खिलाफ संघर्ष किया। मिल की पुस्तक द सब्जुगेशन ऑफ वुमन सन् 1869 में प्रकाशित हुई, जिसमें उन्होंने महिलाओं की दयनीय स्थिति, उनकी स्वतंत्रता पर लगे प्रतिबंधों और उनके अधिकारों की अवहेलना पर विस्तार से चर्चा की।

मिल ने तर्क दिया कि महिलाओं की अधीनता किसी प्राकृतिक या जैविक व्यवस्था का परिणाम नहीं है, बल्कि यह समाज द्वारा निर्मित एक कृत्रिम संरचना है, जो पुरुषों द्वारा अपने अधिकार बनाए रखने के लिए बनाई गई है। उन्होंने कहा कि समाज ने महिलाओं को हमेशा कमज़ोर और पुरुषों पर निर्भर रहने वाला बना दिया है, जिससे वे स्वतंत्र रूप से अपनी इच्छानुसार जीवन नहीं जी सकतीं।

इस पुस्तक में मिल ने यह स्पष्ट किया कि महिलाओं की स्थिति में सुधार केवल नैतिक और सामाजिक दृष्टिकोण से ही नहीं, बल्कि पूरे समाज के विकास के लिए भी आवश्यक है। उन्होंने यह भी कहा कि अगर महिलाओं को पुरुषों के समान अवसर दिए जाएँ, तो वे भी समाज में महत्वपूर्ण योगदान दे सकती हैं और आर्थिक व बौद्धिक रूप

से आत्मनिर्भर बन सकती हैं।

स्त्री अधिकारों की वकालत

मिल ने महिलाओं के अधिकारों की वकालत कई प्रमुख बिंदुओं पर की:

1. **शिक्षा का अधिकार** - मिल ने कहा कि महिलाओं को भी पुरुषों के समान शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार होना चाहिए, ताकि वे आत्मनिर्भर बन सकें और अपने जीवन के बारे में स्वतंत्र निर्णय ले सकें। उस समय महिलाओं को शिक्षा से वंचित रखा जाता था, क्योंकि यह माना जाता था कि वे केवल गृहस्थ जीवन और परिवार की देखभाल के लिए बनी हैं।
2. **संपत्ति और रोजगार के अधिकार** - मिल ने यह भी कहा कि महिलाओं को संपत्ति रखने और नौकरी करने का पूरा अधिकार मिलना चाहिए। उस समय समाज में महिलाओं को संपत्ति का अधिकार नहीं था और वे पूरी तरह अपने पिता या पति पर निर्भर रहती थीं। मिल ने इस सामाजिक अन्याय का विरोध किया और महिलाओं को आर्थिक रूप से स्वतंत्र बनाने की आवश्यकता पर ज़ोर दिया।

▶ महिलाओं को संपत्ति का अधिकार नहीं था

3. **विवाह में समानता** - मिल ने विवाह संस्था में महिलाओं की स्थिति की तुलना कानूनी दासता से की। उस समय विवाह के बाद महिलाओं को स्वतंत्र व्यक्ति नहीं माना जाता था और उनके सभी अधिकार उनके पति के नियंत्रण में चले जाते थे। मिल ने सुझाव दिया कि विवाह को पुरुष के प्रभुत्व पर आधारित न होकर आपसी समानता और सहयोग पर आधारित होना चाहिए। उन्होंने महिलाओं को तलाक और विवाह में निर्णय लेने का अधिकार देने की वकालत की।

▶ मिल ने विवाह संस्था में महिलाओं की स्थिति की तुलना कानूनी दासता से की

4. **राजनीतिक अधिकार और मताधिकार** - मिल ने महिलाओं को मतदान का अधिकार देने की भी वकालत की। उन्होंने ब्रिटिश संसद में महिलाओं के मताधिकार के पक्ष में एक विधेयक प्रस्तुत किया, हालांकि यह पारित नहीं हो सका। फिर भी, उनके प्रयासों ने महिलाओं के राजनीतिक अधिकारों के लिए एक मजबूत बौद्धिक आधार तैयार किया, जिससे आगे चलकर ब्रिटेन और अन्य देशों में महिलाओं को मताधिकार प्राप्त हुआ।

स्त्री मुक्ति आंदोलन पर प्रभाव

जॉन स्टुअर्ट मिल के विचार स्त्री मुक्ति आंदोलन के लिए एक महत्वपूर्ण प्रेरणा स्रोत बने। उनकी पुस्तक द सब्जुगेशन ऑफ वुमन ने महिलाओं की स्वतंत्रता के पक्ष में एक बौद्धिक तर्क प्रस्तुत किया, जिसने नारीवादी विचारकों और कार्यकर्ताओं को सशक्त किया।

▶ महिलाओं के अधिकारों के लिए संघर्ष किया

19वीं और 20वीं शताब्दी में नारीवादी आंदोलनों ने मिल के विचारों से प्रेरणा लेते हुए महिलाओं के अधिकारों के लिए संघर्ष किया। उनके विचारों ने ब्रिटेन, अमेरिका और अन्य देशों में महिला शिक्षा, संपत्ति के अधिकार, विवाह कानूनों में सुधार और मताधिकार आंदोलनों को बल दिया।

आधुनिक नारीवादी सिद्धांतों में भी मिल के विचारों की गूंज सुनाई देती है। उनके तर्कों ने यह स्थापित किया कि महिलाओं को समान अधिकार मिलना न केवल नैतिक रूप से सही है, बल्कि यह पूरे समाज के लिए लाभकारी भी है।

जॉन स्टुअर्ट मिल ने महिलाओं की पराधीनता को समाज की सबसे बड़ी अन्यायपूर्ण व्यवस्था के रूप में देखा और इसके खिलाफ तर्कसंगत रूप से आवाज उठाई। उनकी पुस्तक द सब्जुगेशन ऑफ वुमन महिलाओं की समानता के समर्थन में लिखी गई सबसे प्रभावशाली पुस्तकों में से एक मानी जाती है। मिल ने यह साबित किया कि महिलाओं को शिक्षा, रोजगार, संपत्ति और राजनीति में समान अधिकार मिलने से न केवल उनका सशक्तिकरण होगा, बल्कि पूरा समाज भी इससे लाभान्वित होगा। उनके विचारों ने आगे चलकर स्त्री मुक्ति आंदोलन को बौद्धिक और वैचारिक दिशा प्रदान की, जिसने महिलाओं को स्वतंत्रता और समानता की दिशा में आगे बढ़ने की प्रेरणा दी। आज भी, स्त्री अधिकारों के संदर्भ में जॉन स्टुअर्ट मिल के विचार प्रासंगिक हैं और वे महिलाओं के अधिकारों की लड़ाई में मार्गदर्शक की भूमिका निभाते हैं। उनकी सोच ने न केवल ऐतिहासिक रूप से स्त्री मुक्ति आंदोलन को मजबूती दी, बल्कि आधुनिक समाज में भी लैंगिक समानता की बहस को नई दिशा दी।

▶ महिलाओं को शिक्षा, रोजगार, संपत्ति और राजनीति में समान अधिकार मिलने से न केवल उनका सशक्तिकरण होगा, बल्कि पूरा समाज भी इससे लाभान्वित होगा

2.3.3 जर्मेन ग्रीयर और 'द फीमेल यूनक' (विद्रोही स्त्री)

जर्मेन ग्रीयर (Germaine Greer) 20वीं शताब्दी की एक प्रमुख नारीवादी लेखिका, शिक्षाविद् और विचारक थीं। उन्होंने स्त्रियों की स्वतंत्रता, लैंगिक असमानता और पितृसत्ता के दमनकारी प्रभावों पर खुलकर लिखा। उनकी सबसे प्रसिद्ध कृति 'द फीमेल यूनक' (The Female Eunuch) सन् 1970 में प्रकाशित हुई, जिसने नारीवादी आंदोलन को नई दिशा दी। इस पुस्तक ने महिलाओं की पारंपरिक भूमिकाओं, उनकी यौनिकता, और पितृसत्ता के प्रभावों पर गहराई से चर्चा की और नारीवादी सोच में क्रांतिकारी परिवर्तन लाया।

▶ उन्होंने स्त्रियों की स्वतंत्रता, लैंगिक असमानता और पितृसत्ता के दमनकारी प्रभावों पर खुलकर लिखा

2.3.3.1 'द फीमेल यूनक' का मुख्य उद्देश्य

इस पुस्तक का मूल उद्देश्य महिलाओं को यह समझाना था कि पितृसत्ता ने उनकी यौनिकता, इच्छाओं और स्वतंत्रता को दबा दिया है। ग्रीयर का तर्क था कि महिलाओं को पुरुषों द्वारा बनाए गए सामाजिक ढांचों के अनुरूप जीवन जीने के लिए बाध्य किया जाता है, जिससे उनकी वास्तविक पहचान दब जाती है। उन्होंने यह स्थापित किया कि समाज महिलाओं को एक 'यौन वस्त' के रूप में देखता है, लेकिन उनकी प्राकृतिक इच्छाओं को नियंत्रित करता है।

▶ महिलाओं को एक 'यौन वस्तु' के रूप में देखता है

ग्रीयर ने यह भी कहा कि महिलाओं को केवल 'पत्नी' और 'माँ' जैसी पारंपरिक भूमिकाओं तक सीमित कर दिया गया है, जिससे वे मानसिक और शारीरिक रूप से स्वतंत्र नहीं रह पातीं। उन्होंने महिलाओं से आग्रह किया कि वे इस दमनकारी व्यवस्था को तोड़ें और अपने वास्तविक व्यक्तित्व को पहचानें।

पुस्तक के प्रमुख विषय

1. पितृसत्ता और महिलाओं का दमन

▶ पितृसत्ता ने महिलाओं की स्वायत्तता को कुचल दिया है

ग्रीयर ने बताया कि पितृसत्ता ने महिलाओं की स्वायत्तता को कुचल दिया है। समाज उन्हें एक आदर्श पत्नी और माँ बनने के लिए तैयार करता है, जिससे वे अपनी स्वतंत्र पहचान खो देती हैं। बचपन से ही लड़कियों को यह सिखाया जाता है कि वे विनम्र, संवेदनशील और पुरुषों पर निर्भर रहें, जबकि लड़कों को स्वतंत्रता और प्रभुत्व के लिए प्रशिक्षित किया जाता है।

2. महिलाओं की यौनिकता और दमन

▶ पुरुषों की सेवा के लिए बाध्य किया जाता

ग्रीयर ने महिलाओं की यौन इच्छाओं पर खुलकर चर्चा की, जो उस समय एक बड़ा विवादास्पद विषय था। उन्होंने तर्क दिया कि समाज महिलाओं की यौन इच्छाओं को अस्वीकार करता है और उन्हें केवल पुरुषों की संतुष्टि का माध्यम बना देता है। उन्होंने यह भी कहा कि शादी एक ऐसा संस्थान बन चुका है, जिसमें महिलाओं की यौन आवश्यकताओं को महत्व नहीं दिया जाता, बल्कि उन्हें पुरुषों की सेवा के लिए बाध्य किया जाता है।

3. विवाह और मातृत्व पर आलोचना

▶ निर्धारित भूमिका में सीमित कर देता है

ग्रीयर ने विवाह और मातृत्व की पारंपरिक संकल्पनाओं की कड़ी आलोचना की। उन्होंने विवाह को एक ऐसा तंत्र बताया, जो महिलाओं को पुरुषों के अधीन कर देता है और उनकी स्वतंत्रता छीन लेता है। उन्होंने यह भी कहा कि मातृत्व को महिलाओं की 'पूर्णता' का प्रतीक माना जाता है, लेकिन वास्तव में यह उन्हें एक निर्धारित भूमिका में सीमित कर देता है और उनकी व्यक्तिगत आकाँक्षाओं को दबा देता है।

4. सौंदर्य और स्त्रीत्व की अवधारणा

▶ सौंदर्य उद्योग महिलाओं को मानसिक रूप से असुरक्षित बनाता

द फीमेल यूनक में ग्रीयर ने यह भी बताया कि सौंदर्य और स्त्रीत्व की जो अवधारणाएँ समाज ने बनाई हैं, वे महिलाओं को नियंत्रित करने के साधन हैं। महिलाओं को यह विश्वास दिलाया जाता है कि वे तभी मूल्यवान हैं जब वे सुंदर, पतली और पुरुषों को आकर्षित करने वाली हों। उन्होंने यह भी कहा कि सौंदर्य उद्योग महिलाओं को मानसिक रूप से असुरक्षित बनाता है और उन्हें अपने शरीर को बदलने के लिए मजबूर करता है।

5. महिलाओं की स्वतंत्रता और विद्रोह का आह्वान

▶ महिलाएँ अपने दमन से स्वयं मुक्त हो सकती हैं

पुस्तक का सबसे महत्वपूर्ण संदेश यह था कि महिलाएँ अपने दमन से स्वयं मुक्त हो सकती हैं। ग्रीयर ने महिलाओं से आग्रह किया कि वे पितृसत्तात्मक नियमों को अस्वीकार करें, विवाह और मातृत्व को अनिवार्य न मानें और अपनी यौनिकता तथा जीवनशैली को स्वयं परिभाषित करें। उन्होंने महिलाओं से यह भी कहा कि वे आत्मनिर्भर बनें और अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करें।

2.3.3.2 'द फीमेल यूनक' का प्रभाव

जब द फीमेल यूनक प्रकाशित हुई, तो यह तत्काल प्रभावशाली बन गई। इसने महिलाओं के अधिकारों और उनकी स्वतंत्रता पर एक नई बहस को जन्म दिया। इस पुस्तक ने दूसरी लहर के नारीवाद (Second-Wave Feminism) को गति दी और महिलाओं को अपने जीवन पर नियंत्रण लेने के लिए प्रेरित किया।

मुख्य प्रभाव:

1. महिलाओं की यौनिकता और स्वतंत्रता पर चर्चा को सामान्य बनाया।
2. विवाह और मातृत्व को लेकर नई सोच विकसित हुई।
3. नारीवाद को व्यक्तिगत मुक्ति के साथ जोड़ा गया, न कि केवल कानूनी अधिकारों तक सीमित रखा गया।
4. महिलाओं को परंपरागत भूमिकाओं को चुनौती देने के लिए प्रेरित किया।

▶ परंपरागत भूमिकाओं को चुनौती देने के लिए प्रेरित किया

हालांकि इस पुस्तक की आलोचना भी हुई। कुछ लोगों का मानना था कि ग्रीयर की सोच अतिवादी है और यह परिवार संस्था को नकारात्मक रूप से प्रस्तुत करती है। कुछ आलोचकों ने यह भी कहा कि यह पुस्तक केवल मध्यवर्गीय महिलाओं के लिए अधिक प्रासंगिक थी और श्रमिक वर्ग की महिलाओं की वास्तविक समस्याओं पर उतना ध्यान नहीं देती थी।

द फीमेल यूनक नारीवाद की सबसे प्रभावशाली पुस्तकों में से एक मानी जाती है। जर्मेन ग्रीयर ने इस पुस्तक के माध्यम से महिलाओं को अपनी वास्तविक पहचान को स्वीकारने और सामाजिक बंधनों को तोड़ने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने विवाह, मातृत्व, यौनिकता और स्त्रीत्व से जुड़े पारंपरिक विचारों को चुनौती दी और महिलाओं को अपनी स्वतंत्रता की दिशा में कदम बढ़ाने का आह्वान किया। आज भी, इस पुस्तक के विचार प्रासंगिक हैं और नारीवाद की नई लहरों को प्रेरित कर रहे हैं। यह पुस्तक केवल महिलाओं के अधिकारों की चर्चा नहीं करती, बल्कि उनके मानसिक, शारीरिक और भावनात्मक उत्थान के लिए भी एक मार्गदर्शिका प्रदान करती है।

▶ जर्मेन ग्रीयर नेविवाह, मातृत्व, यौनिकता और स्त्रीत्व से जुड़े पारंपरिक विचारों को चुनौती दी

2.3.4 सिमोन द बोउवार और 'द सेकंड सेक्स'

सिमोन द बोउवार (Simone de Beauvoir) 20वीं शताब्दी की एक प्रमुख फ्रांसीसी लेखिका, दार्शनिक और नारीवादी विचारक थीं। उनकी प्रसिद्ध कृति 'द सेकंड सेक्स' (Le Deuxième Sexe) 1949 में प्रकाशित हुई थी, जो न केवल नारीवाद की एक बुनियादी रचना बन गई, बल्कि इसने समग्र समाजशास्त्र, दर्शनशास्त्र, और समाज के पुरुष-प्रधान ढांचे पर गहरे सवाल उठाए। इस पुस्तक में सिमोन द बोउवार ने स्त्रियों की स्थिति पर गहरी छानबीन की और दिखाया कि कैसे स्त्री को समाज में हमेशा एक द्वितीयक और निर्भर रूप में देखा जाता है। उनका प्रसिद्ध कथन "स्त्री पैदा नहीं होती, उसे बनाया जाता है" इस पुस्तक का केंद्रीय विचार है, जिसका अर्थ है कि स्त्री का अस्तित्व केवल जैविक रूप से नहीं, बल्कि समाज और संस्कृति के निर्माण द्वारा होता है।

▶ "स्त्री पैदा नहीं होती, उसे बनाया जाता है"

2.3.4.1 स्त्री का अन्यीकरण (Othering of Women)

▶ पुरुष को सामाजिक और ऐतिहासिक दृष्टि कोण से हमेशा मुख्य (प्रथम) माना गया है, जबकि स्त्री को उसके मुकाबले 'द्वितीयक' और 'अन्य' के रूप में चित्रित किया गया है

सिमोन द बोउवार का मुख्य तर्क यह था कि स्त्री को 'अन्य' के रूप में देखा जाता है। उनके अनुसार, पुरुष को सामाजिक और ऐतिहासिक दृष्टिकोण से हमेशा मुख्य (प्रथम) माना गया है, जबकि स्त्री को उसके मुकाबले 'द्वितीयक' और 'अन्य' के रूप में चित्रित किया गया है। यह मानसिकता पितृसत्तात्मक समाज द्वारा विकसित की गई है, जिसमें पुरुषों को समाज के निर्माण और सभ्यता के मुख्य कर्ता के रूप में देखा जाता है, जबकि स्त्रियों को उनका सहायक और सिर्फ शारीरिक भूमिका निभाने वाली इकाई माना जाता है। यह दृष्टिकोण न केवल स्त्रियों को हेय दृष्टि से देखता है, बल्कि उनके लिए स्वतंत्रता, समानता और सम्मान की अवधारणा को भी सीमित करता है।

बोउवार के अनुसार, स्त्री का यह 'अन्य' रूप एक सांस्कृतिक और सामाजिक निर्माण है, जो स्त्रियों के अधिकारों को रोकता है। इसके परिणामस्वरूप स्त्रियों को न केवल घर के अंदर, बल्कि बाहरी दुनिया में भी सीमित किया जाता है। उन्हें अक्सर गृहस्थी, मातृत्व और व्यक्तिगत इच्छाओं की कुर्बानी देने के लिए प्रेरित किया जाता है, जिससे वे खुद को समाज के मुख्य उद्देश्य से बाहर महसूस करती हैं।

स्त्री के जीवन के विभिन्न चरणों का विश्लेषण

सिमोन द बोउवार ने स्त्री के जीवन के विभिन्न पहलुओं का गहराई से विश्लेषण किया है, जिनमें बचपन, युवावस्था, विवाह, मातृत्व और वृद्धावस्था शामिल हैं। इन सभी अवस्थाओं में समाज ने स्त्रियों की भूमिका और उनके अधिकारों को सीमित करने की कोशिश की है।

▶ सामाजिक शिक्षा उन्हें अपना स्थान सीमित करने और पुरुषों पर निर्भर रहने के लिए तैयार करती है

1. **बचपन** - बोउवार ने दिखाया कि लड़कियों को बचपन से ही यह सिखाया जाता है कि उन्हें सौम्य, विनम्र और लड़कों से अलग रूप में प्रस्तुत होना चाहिए। यह सामाजिक शिक्षा उन्हें अपना स्थान सीमित करने और पुरुषों पर निर्भर रहने के लिए तैयार करती है।
2. **युवावस्था** - किशोरावस्था में लड़कियों को यह बताया जाता है कि उनका जीवन विवाह और परिवार तक सीमित होगा। इसके अलावा, उन्हें अपनी शारीरिक सुंदरता पर ज्यादा ध्यान देने के लिए प्रेरित किया जाता है, क्योंकि उन्हें केवल बाहरी रूप से परखा जाता है। उनकी महत्वाकांक्षाएँ और व्यक्तिगत आकाँक्षाएँ बहुत बार अनदेखी की जाती हैं।

▶ जीवन में 'दूसरी गुलामी' के रूप में देखा

3. **विवाह और मातृत्व** - बोउवार ने विवाह और मातृत्व को स्त्रियों के जीवन में 'दूसरी गुलामी' के रूप में देखा। विवाह के बाद, स्त्री को अक्सर पुरुष की सहायक, घर की देखभाल करने वाली और बच्चों की देखभाल करने वाली एक भूमिका में ढाल दिया जाता है। इस व्यवस्था में स्त्री की इच्छाओं और सपनों की कोई अहमियत नहीं होती, और वह अपनी पूरी जिंदगी पति और परिवार के प्रति समर्पित कर देती है।
4. **वृद्धावस्था** - जैसे-जैसे स्त्री की उम्र बढ़ती है, समाज उसे एक अनुपयोगी और अप्रासंगिक इकाई के रूप में देखता है। वृद्धावस्था में महिलाएँ अधिकतर एकाकी

हो जाती हैं और उनकी भूमिका को एक बार फिर से सीमित किया जाता है।

नारी मुक्ति की आवश्यकता और सशक्तिकरण

- आत्मनिर्भरता की आवश्यकता है

सिमोन द बोउवार ने स्पष्ट रूप से यह तर्क दिया कि स्त्री की मुक्ति केवल उसके व्यक्तिगत संघर्ष से संभव नहीं है, बल्कि इसके लिए समाज और संस्कृति के पूरे ढांचे को बदलने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि स्त्री को शिक्षा, आर्थिक स्वतंत्रता और आत्मनिर्भरता की आवश्यकता है, ताकि वह अपने जीवन के निर्णय खुद ले सके और पुरुषों के समान स्वतंत्रता प्राप्त कर सके। उनका कहना था कि यदि स्त्रियाँ अपने जीवन की दिशा को खुद तय करें, तो वे पुरुषों के समान आत्मनिर्भर और सशक्त बन सकती हैं।

उनका यह विचार नारीवादी आंदोलन के लिए क्रांतिकारी था, क्योंकि उन्होंने यह सिद्ध किया कि स्त्रियों की स्थिति कोई प्राकृतिक या जैविक परिस्थिति नहीं है, बल्कि यह एक सामाजिक और ऐतिहासिक निर्माण है, जिसे बदला जा सकता है।

पुस्तक का प्रभाव और योगदान

- 'द सेकंड सेक्स' प्रसिद्ध नारीवादी पुस्तक है

'द सेकंड सेक्स' न केवल एक प्रसिद्ध नारीवादी पुस्तक है, बल्कि यह समाजशास्त्र, दर्शनशास्त्र और मानवाधिकारों के क्षेत्रों में भी एक मील का पत्थर साबित हुई। इस पुस्तक ने न केवल नारीवादी आंदोलन को नया जीवन दिया, बल्कि यह दुनिया भर में उन विचारों को चुनौती देने का अवसर प्रदान किया जो महिलाओं को पुरुषों से कमतर समझते थे।

बोउवार की इस कृति ने यह साबित कर दिया कि स्त्रियों की स्थिति समाज द्वारा निर्मित है, और अगर समाज इस निर्माण को बदलने का प्रयास करे, तो महिलाओं को स्वतंत्रता, समानता और आत्म-सम्मान मिल सकता है। यही कारण है कि 'द सेकंड सेक्स' आज भी नारीवादी आंदोलनों और समाजशास्त्रीय अध्ययन में महत्वपूर्ण मानी जाती है।

- स्त्रीवादी साहित्य और विचारधारा के इतिहास में एक अहम बिंदु बन गया

'द सेकंड सेक्स' न केवल सिमोन द बोउवार का सबसे बड़ा योगदान था, बल्कि यह स्त्रीवादी साहित्य और विचारधारा के इतिहास में एक अहम बिंदु बन गया। इस पुस्तक ने नारीवाद के सिद्धांतों को एक बौद्धिक आधार दिया और स्त्रियों की सामाजिक स्थिति पर गहरे सवाल उठाए। बोउवार ने हमें यह समझाया कि स्त्रियाँ अपने आप में कोई कमतर अस्तित्व नहीं हैं, बल्कि वे समाज की रचनात्मक और निर्णायक शक्तियाँ बन सकती हैं यदि उन्हें उचित अवसर और स्वतंत्रता दी जाए। आज भी इस पुस्तक का प्रभाव जारी है, और यह नारीवाद, समाजशास्त्र, और दार्शनिक विमर्शों के लिए प्रेरणा का स्रोत बनी हुई है।

Summarised Overview / संक्षिप्त अवलोकन

स्त्री मुक्ति आंदोलन ने समय-समय पर समाज में स्त्रियों की स्थिति को चुनौती दी है, और इस संदर्भ में कई प्रमुख विचारकों ने महत्वपूर्ण योगदान दिया है। जॉन स्टुअर्ट मिल ने अपनी कृति 'द सब्जेक्ट ऑफ वुमन' (1869) में स्त्रियों की समानता का समर्थन किया और यह तर्क प्रस्तुत किया कि स्त्रियाँ पुरुषों के अधीन नहीं बल्कि ऐतिहासिक और सामाजिक कारणों से उपेक्षित रही हैं। उन्होंने यह कहा कि स्त्रियाँ अगर समान अवसर और अधिकार प्राप्त करें, तो वे पुरुषों के समान सक्षम हो सकती हैं। इसके बाद जर्मन ग्रीयर ने अपनी किताब 'द फीमैल यूनक' (1970) में यह दिखाया कि कैसे पितृसत्तात्मक समाज ने स्त्रियों को यौन और मानसिक रूप से निष्क्रिय बना दिया है। उन्होंने स्त्रियों से आग्रह किया कि वे अपनी यौन और मानसिक मुक्ति की ओर कदम बढ़ाएँ और एक विद्रोही, स्वतंत्र और आत्मनिर्भर पहचान अपनाएँ। इसी परंपरा में सिमोन द बोउवार की कृति 'द सेकंड सेक्स' (1949) एक क्रांतिकारी पहल थी, जिसमें उन्होंने यह साबित किया कि स्त्रियाँ जैविक नहीं, बल्कि समाज द्वारा बनाई गई पराधीनता में जी रही हैं। उन्होंने यह कहा कि स्त्रियों को हमेशा 'अन्य' के रूप में देखा जाता है और उन्हें स्वतंत्रता, समानता और आत्मनिर्भरता प्राप्त करने का अधिकार है। इन तीनों विचारकों ने स्त्रियों की मुक्ति के लिए नए दृष्टिकोण प्रस्तुत किए और आज भी उनकी रचनाएँ स्त्री मुक्ति आंदोलन में एक प्रेरणा स्रोत मानी जाती हैं।

Assignment / प्रदत्त कार्य

1. जॉन स्टुअर्ट मिल के अनुसार, स्त्रियों की पराधीनता का कारण क्या है? क्या वह जैविक है या सामाजिक और ऐतिहासिक कारणों से उत्पन्न हुई है?
2. जर्मन ग्रीयर के दृष्टिकोण से, एक स्वतंत्र और विद्रोही स्त्री की क्या विशेषताएँ होनी चाहिए?
3. 'The Second Sex' में सिमोन द बोउवार ने यह क्यों कहा कि "स्त्री पैदा नहीं होती, उसे बनाया जाता है"? इस विचार का समाज पर क्या प्रभाव पड़ा?
4. जॉन स्टुअर्ट मिल, जर्मन ग्रीयर और सिमोन द बोउवार के विचारों में क्या समानताएँ और अंतर हैं? इन तीनों विचारकों ने स्त्री मुक्ति के संदर्भ में किस प्रकार के दृष्टिकोण प्रस्तुत किए हैं?

Reference / संदर्भ ग्रंथ

1. स्त्री मुक्ति का सपना - सं. कमला प्रसाद, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली
2. स्त्री संघर्ष का इतिहास - सं. राधा कुमार, वाणी प्रकाशन
3. उपनिवेश में स्त्री - प्रभा खेतान, राजकमल प्रकाशन
4. स्त्री परंपरा और आधुनिकता - सं. राज किशोर, वाणी प्रकाशन
5. स्त्री सशक्तिकरण की दिशा - रेखा कसतवार, राजकमल प्रकाशन

6. बाजार के बीच बाजार के खिलाफ- प्रभा खेतान, वाणी प्रकाशन
7. औरत, अस्तित्व और अस्मिता -अरविंद जैन, राजकमल प्रकाशन
8. स्त्री चिंतन की चुनौतियाँ- रेखा कस्तवार, राजकमल प्रकाशन
9. Feminist thought: a comprehensive introduction - Tony Rosemary
10. Contemporary Literary and cultural theory -Pramod K Nayar

Suggested Reading / निर्धारित पुस्तक

1. स्त्री मुक्ति : संघर्ष और इतिहास - रमणिका गुप्ता
2. उपनिवेश में स्त्री - प्रभा खेतान
3. लिहाफ - इस्मत चुगताई

Space for Learner Engagement for Objective Questions

Learners are encouraged to develop objective questions based on the content in the paragraph as a sign of their comprehension of the content. The Learners may reflect on the recap bullets and relate their understanding with the narrative in order to frame objective questions from the given text. The University expects that 1 - 2 questions are developed for each paragraph. The space given below can be used for listing the questions.

SGOU

इकाई 4

पितृसत्तात्मक समाज और नारी लेखन, वर्जीनिया वुल्फ़- 'ए रूम ऑफ वन्स ऑन', स्त्रीवाद में मर्द

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- पितृसत्ता की अवधारणा को समझ सकता है
- नारी लेखन और उसकी प्रासंगिकता को समझता है
- वर्जीनिया वुल्फ के विचारों से परिचित होता है
- स्त्रीवाद में पुरुषों की भूमिका को पहचानता है

Background / पृष्ठभूमि

पितृसत्तात्मक समाज एक ऐसी संरचना है जहाँ पुरुषों को प्रमुखता दी जाती है और महिलाओं को अधीनस्थ भूमिका में रखा जाता है। इस समाज में महिलाओं की स्वतंत्रता, शिक्षा, आर्थिक आत्मनिर्भरता और रचनात्मकता पर कई प्रकार की पाबंदियाँ लगाई जाती हैं। इसी संदर्भ में नारी लेखन उभरकर सामने आया, जहाँ महिलाओं ने अपनी स्थिति, संघर्ष और अधिकारों को शब्दों के माध्यम से अभिव्यक्त किया। वर्जीनिया वुल्फ की प्रसिद्ध कृति 'ए रूम ऑफ वन्स ओन' इसी विषय पर केंद्रित है, जिसमें उन्होंने महिलाओं के लिए आर्थिक स्वतंत्रता और एक व्यक्तिगत स्थान को रचनात्मक अभिव्यक्ति के लिए आवश्यक बताया। स्त्रीवाद ने इस विचार को आगे बढ़ाते हुए महिलाओं के अधिकारों और समानता के लिए संघर्ष किया, जिसमें पुरुषों की भूमिका भी महत्वपूर्ण रही- कभी वे इस आंदोलन का समर्थन करते रहे, तो कभी पितृसत्तात्मक ढांचे को बनाए रखने के लिए विरोधी भी बने। इन सभी पहलुओं ने साहित्य, समाज और विचारधारा में गहरे बदलाव लाए, जिससे महिलाओं को अपनी पहचान स्थापित करने का अवसर मिला।

पितृसत्तात्मक समाज एक ऐसी संरचना है जहाँ पुरुषों को प्रमुखता दी जाती है और महिलाओं को अधीनस्थ भूमिका में रखा जाता है।

Keywords / मुख्य बिन्दु

स्त्री विमर्श, नारीवादी आंदोलन, पितृसत्तात्मक व्यवस्था, वर्जीनिया वुल्फ, ए रूम ऑफ वन्स ओन, लैंगिक असमानता, सृजनात्मक स्वतंत्रता, पुरुष वर्चस्व

Discussion / चर्चा

2.4.1 पितृसत्तात्मक समाज और नारी लेखन

▶ समाज की सोच को भी चुनौती दी

पितृसत्तात्मक समाज एक ऐसी सामाजिक संरचना है, जहाँ पुरुषों को अधिकारों, स्वतंत्रता और सत्ता में प्राथमिकता दी जाती है, जबकि महिलाओं को परंपरागत रूप से घर और परिवार तक सीमित रखा जाता है। इस व्यवस्था में महिलाओं को शिक्षा, रोजगार, संपत्ति और निर्णय लेने के अधिकारों से वंचित किया गया है। इसके विरुद्ध महिलाओं ने साहित्य और लेखन को अपना माध्यम बनाकर अपनी भावनाओं, संघर्षों और विचारों को व्यक्त किया। नारी लेखन ने न केवल महिलाओं की आवाज़ को बुलंद किया, बल्कि समाज की सोच को भी चुनौती दी।

2.4.1.1 पितृसत्तात्मक समाज की अवधारणा

▶ स्वतंत्रता पर नियंत्रण स्थापित करती है

पितृसत्तात्मक समाज वह संरचना है, जहाँ सत्ता और निर्णय लेने का अधिकार मुख्य रूप से पुरुषों के हाथ में होता है। यह व्यवस्था महिलाओं को पारिवारिक और सामाजिक भूमिकाओं तक सीमित रखती है और उनकी स्वतंत्रता पर नियंत्रण स्थापित करती है। परंपरागत रूप से, महिलाओं को शिक्षा, करियर, संपत्ति के अधिकार और सार्वजनिक जीवन में भागीदारी से दूर रखा गया, जिससे उनके आत्मनिर्भर बनने के अवसर सीमित हो गए।

2.4.1.2 नारी लेखनः परिभाषा, विकास और प्रभाव

▶ नारी लेखन साहित्य का एक हिस्सा नहीं, बल्कि एक सशक्त विचारधारा है

नारी लेखन एक साहित्यिक आंदोलन है, जिसमें महिलाओं द्वारा लिखित साहित्य उनके अनुभवों, संघर्षों, भावनाओं और सामाजिक परिस्थितियों को प्रतिबिंबित करता है। यह केवल साहित्य का एक हिस्सा नहीं, बल्कि एक सशक्त विचारधारा भी है, जिसने महिलाओं को अपनी आवाज़ उठाने और समाज में अपनी स्थिति को सशक्त बनाने का अवसर दिया। नारी लेखन पितृसत्तात्मक समाज की रूढ़ियों को तोड़ने, लैंगिक भेदभाव को उजागर करने और महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने में सहायक रहा है।

नारी लेखन की परिभाषा

नारी लेखन वह साहित्यिक धारा है, जिसमें महिलाएँ अपने व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन से जुड़े मुद्दों को साहित्य के माध्यम से प्रस्तुत करती हैं। यह लेखन समाज में महिलाओं की भूमिका, उनकी समस्याओं, इच्छाओं, संघर्षों और उनकी मुक्ति की संभावनाओं पर केंद्रित होता है। इसमें आत्मकथाएँ, उपन्यास, कहानियाँ, कविताएँ और निबंध शामिल होते हैं, जो महिलाओं के दृष्टिकोण को सामने लाते हैं।

नारी लेखन का विकास

प्राचीन काल से ही महिलाएँ साहित्य सृजन से जुड़ी रही हैं, लेकिन उनका योगदान लंबे समय तक उपेक्षित रहा। ऐतिहासिक रूप से, महिलाओं को शिक्षा और लेखन से

वंचित रखा गया, जिससे उनके अनुभव साहित्य में कम ही दर्ज हो पाए।

1. **प्राचीन काल में नारी लेखन** - प्राचीन भारतीय साहित्य में गार्गी और मैत्रेयी जैसी विदुषियों का उल्लेख मिलता है, जिन्होंने वेदों और उपनिषदों में महत्वपूर्ण योगदान दिया। लेकिन यह लेखन मुख्य रूप से मौखिक परंपरा का हिस्सा था और समाज में पुरुषों द्वारा संरक्षित किया गया।
2. **मध्यकाल में नारी लेखन** - मध्यकाल में महिलाओं के लिए सामाजिक बंदिशें और कठोर हो गईं, जिससे उनका लेखन सीमित हो गया। फिर भी, मीराबाई, अक्का महादेवी और संत सहजोबाई जैसी कवयित्रियों ने अपनी काव्य रचनाओं के माध्यम से नारी स्वतंत्रता और आध्यात्मिकता की अभिव्यक्ति की।

▶ पितृसत्ता के अन्याय और सामाजिक भेदभाव पर खुलकर लिखा

3. **आधुनिक काल में नारी लेखन** - 19वीं और 20वीं शताब्दी में नारी शिक्षा के प्रसार के साथ नारी लेखन को नया जीवन मिला। इस काल में पंडिता रमाबाई, महादेवी वर्मा, इस्मत चुगताई, अमृता प्रीतम जैसी लेखिकाओं ने अपने साहित्य के माध्यम से नारी अधिकारों, पितृसत्ता के अन्याय और सामाजिक भेदभाव पर खुलकर लिखा।
4. **समकालीन नारी लेखन** - वर्तमान समय में नारी लेखन नारीवाद, स्वतंत्रता, लैंगिक समानता, कार्यस्थल पर भेदभाव, घरेलू हिंसा और महिलाओं के अधिकारों जैसे विषयों पर केंद्रित हो गया है।

नारी लेखन के प्रमुख विषय

नारी लेखन में विभिन्न सामाजिक और व्यक्तिगत विषयों पर ध्यान दिया जाता है। इनमें से कुछ प्रमुख विषय हैं:

1. **स्त्री-विमर्श** - महिलाओं के अधिकार, स्वतंत्रता और सामाजिक स्थिति पर विचार।
2. **पितृसत्ता का विरोध** - पुरुष प्रधान समाज में महिलाओं की स्थिति और उनके संघर्ष को उजागर करना।

▶ नारी लेखन में विभिन्न सामाजिक और व्यक्तिगत विषयों पर ध्यान दिया जाता है

3. **आर्थिक स्वतंत्रता** - महिलाओं के लिए शिक्षा और रोजगार की अनिवार्यता पर ज़ोर।
4. **शारीरिक और मानसिक शोषण** - घरेलू हिंसा, दहेज प्रथा और यौन शोषण जैसे मुद्दों पर प्रकाश डालना।
5. **प्रेम और स्वतंत्रता** - महिलाओं की इच्छाओं और उनकी स्वतंत्रता को अभिव्यक्त करना।
6. **आत्मकथात्मक लेखन** - महिलाओं ने अपने अनुभवों को आत्मकथा के रूप में लिखकर समाज को आईना दिखाया है।

▶ महिलाओं के लिए आर्थिक स्वतंत्रता और एक व्यक्तिगत स्थान लेखन और सृजनात्मकता के लिए आवश्यक है

2.4.1.3 वर्जीनिया वुल्फ और नारी लेखन

वर्जीनिया वुल्फ की प्रसिद्ध कृति "ए रूम ऑफ वन्स ओन" नारी लेखन का एक ऐतिहासिक दस्तावेज मानी जाती है। इसमें उन्होंने बताया कि महिलाओं के लिए आर्थिक स्वतंत्रता और एक व्यक्तिगत स्थान लेखन और सृजनात्मकता के लिए आवश्यक है।

वुल्फ ने तर्क दिया कि पितृसत्तात्मक समाज ने महिलाओं को रचनात्मक अभिव्यक्ति से वंचित रखा है और उनके साहित्यिक योगदान को नजरअंदाज किया गया है।

2.4.1.4 हिन्दी साहित्य में नारी लेखन

हिन्दी साहित्य में नारी लेखन का महत्वपूर्ण स्थान है। कुछ प्रमुख लेखिकाएँ और उनकी कृतियाँ इस प्रकार हैं:

1. महादेवी वर्मा - "श्रृंखला की कड़ियाँ"
2. इस्मत चुगताई- "लिहाफ"
3. अमृता प्रीतम - "रसीदी टिकट"
4. कृष्णा सोबती - "मित्रो मरजानी"
5. मन्नू भंडारी - "आपका बंटी"

नारी लेखन का प्रभाव

नारी लेखन ने समाज में महिलाओं की छवि को बदलने और उन्हें समानता दिलाने में अहम भूमिका निभाई है। इसके प्रभाव इस प्रकार हैं:

1. **सामाजिक चेतना का विकास** - नारी लेखन ने समाज में महिलाओं की समस्याओं को उजागर कर लोगों को सोचने पर मजबूर किया।
2. **महिला शिक्षा को बढ़ावा** - इससे महिलाओं की शिक्षा और उनके आत्मनिर्भर बनने की सोच को बल मिला।
3. **कानूनी सुधारों की प्रेरणा** - दहेज प्रथा, बाल विवाह और घरेलू हिंसा के खिलाफ कानून बनने में नारीवादी साहित्य ने योगदान दिया।
4. **नए विमर्शों का जन्म** - नारीवाद, लैंगिक समानता और महिला अधिकारों पर चर्चा को बल मिला

▶ महिलाओं की शिक्षा और उनके आत्मनिर्भर बनने की सोच

नारी लेखन केवल साहित्य का एक हिस्सा नहीं, बल्कि एक क्रांतिकारी आंदोलन भी है, जिसने महिलाओं को अपनी पहचान और अधिकारों के लिए लड़ने की प्रेरणा दी। यह समाज में लैंगिक समानता लाने का एक सशक्त माध्यम है। भविष्य में, नारी लेखन और विकसित होगा और महिलाओं के अधिकारों की रक्षा और सशक्तिकरण के लिए एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

2.4.2 वर्जीनिया वुल्फ और "ए रूम ऑफ वन्स ओन"

वर्जीनिया वुल्फ (1882-1941) 20वीं शताब्दी की प्रसिद्ध ब्रिटिश लेखिका और नारीवादी चिंतक थीं। उन्होंने अपने साहित्य के माध्यम से समाज में महिलाओं की स्थिति, उनकी सोच, रचनात्मकता और अधिकारों को विस्तार से व्यक्त किया। उनकी प्रसिद्ध कृति "A Room of One's Own" (1929) नारीवाद और साहित्यिक विमर्श का एक महत्वपूर्ण ग्रंथ है। यह पुस्तक महिलाओं के लेखन, उनकी आर्थिक स्वतंत्रता और समाज में उनकी भूमिका को रेखांकित करती है।

▶ "A Room of One's Own" (1929) नारीवाद और साहित्यिक विमर्श का एक महत्वपूर्ण ग्रंथ

2.4.2.1 "ए रूम ऑफ वन्स ओन" का सारांश

"A Room of One's Own" वर्जीनिया वुल्फ द्वारा लिखा गया एक लंबा निबंध है, जिसमें उन्होंने तर्क दिया कि महिलाओं को स्वतंत्र रूप से लिखने और रचनात्मकता को विकसित करने के लिए आर्थिक स्वतंत्रता और एक निजी स्थान (कमरा) की आवश्यकता होती है। इसमें उन्होंने महिलाओं की शिक्षा, साहित्य में उनकी भागीदारी और पुरुषों द्वारा उन पर लगाए गए प्रतिबंधों की चर्चा की है। यह पुस्तक किसी विशेष कहानी पर आधारित नहीं है, बल्कि महिलाओं की ऐतिहासिक और साहित्यिक परिस्थितियों का विश्लेषण करने का प्रयास करती है।

- "A Room of One's Own" वर्जीनिया वुल्फ द्वारा लिखा गया एक लंबा निबंध

मुख्य विषय और तर्क

- **आर्थिक स्वतंत्रता और निजी स्थान की आवश्यकता**
  - वुल्फ का तर्क था कि यदि किसी महिला को एक 'अपना कमरा' और आर्थिक स्वतंत्रता मिले, तो वह भी पुरुषों के समान उत्कृष्ट साहित्य रच सकती है।
  - उन्होंने कहा कि महिलाओं को पुरुषों की तुलना में लेखन का अवसर नहीं दिया गया, क्योंकि उनके पास धन और सुविधाओं की कमी थी।
- **इतिहास में महिलाओं की अनुपस्थिति**
  - वुल्फ ने यह सवाल उठाया कि इतिहास और साहित्य में महिलाओं की महत्वपूर्ण उपस्थिति क्यों नहीं रही।
  - उन्होंने एक काल्पनिक चरित्र 'जूडिथ शेक्सपियर' (शेक्सपियर की एक काल्पनिक बहन) का उदाहरण दिया, जो उतनी ही प्रतिभाशाली थी, लेकिन उसे लिखने का अवसर नहीं मिला क्योंकि समाज ने उसे शिक्षा और स्वतंत्रता नहीं दी।
- **पुरुषों द्वारा महिलाओं का दमन**
  - वुल्फ ने बताया कि पुरुषों ने हमेशा महिलाओं को नीचा दिखाने की कोशिश की और उन्हें सशक्त बनने का मौका नहीं दिया।
  - उन्होंने यह भी बताया कि महिलाओं को हमेशा परिवार और घरेलू कामों तक सीमित रखा गया, जिससे उनकी रचनात्मकता बाधित हुई।
- **साहित्य में महिलाओं की भूमिका**
  - उन्होंने महिलाओं के लेखन का विश्लेषण करते हुए कहा कि जब महिलाओं को स्वतंत्रता मिली, तो उन्होंने भी महान साहित्य लिखा।
  - उन्होंने जेन ऑस्टेन, शार्लट ब्रोंटे और एमिली ब्रोंटे जैसी लेखिकाओं के योगदान को रेखांकित किया।
- **भविष्य की आशा**
  - वुल्फ ने उम्मीद जताई कि आने वाले समय में महिलाएँ अपनी आर्थिक और सामाजिक स्वतंत्रता प्राप्त करेंगी और साहित्य तथा अन्य क्षेत्रों में नई ऊँचाइयाँ हासिल करेंगी।

- महिलाओं को हमेशा परिवार और घरेलू कामों तक सीमित रखा
- वुल्फ ने उम्मीद जताई कि आने वाले समय में महिलाएँ अपनी आर्थिक और सामाजिक स्वतंत्रता प्राप्त करेंगी

- उन्होंने कहा कि महिलाओं को अपनी सोच और रचनात्मकता को स्वतंत्र रूप से व्यक्त करने के लिए संघर्ष करना चाहिए।

2.4.2.2 "ए रूम ऑफ वन्स ओन" का साहित्य और नारीवाद पर प्रभाव

- यह पुस्तक नारीवादी साहित्य का एक महत्वपूर्ण ग्रंथ मानी जाती है।
- इसने महिलाओं की स्वतंत्रता, शिक्षा और आर्थिक आत्मनिर्भरता के महत्व को स्थापित किया।
- आधुनिक नारीवादी आंदोलन ने इस पुस्तक से प्रेरणा ली और महिलाओं के अधिकारों के लिए संघर्ष को आगे बढ़ाया।
- साहित्य में महिलाओं की भागीदारी को बढ़ावा देने में इस पुस्तक ने एक ऐतिहासिक भूमिका निभाई।

▶ आधुनिक नारीवादी आंदोलन ने इस पुस्तक से प्रेरणा ली

2.4.3 स्त्रीवाद में मर्द: भूमिका, प्रभाव और चुनौतियाँ

स्त्रीवाद (फेमिनिज़्म) एक सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक आंदोलन है, जिसका उद्देश्य लैंगिक समानता को बढ़ावा देना है। हालांकि यह मुख्य रूप से महिलाओं के अधिकारों और उनके संघर्षों से जुड़ा है, लेकिन स्त्रीवाद की बात केवल महिलाओं तक सीमित नहीं रहती। यह पुरुषों से भी अपेक्षाएँ रखता है और उन्हें भी अपनी सोच, व्यवहार और जीवनशैली में परिवर्तन लाने की चुनौती देता है। इसलिए, स्त्रीवाद का उद्देश्य पुरुषों और महिलाओं के बीच समानता की स्थापना है। स्त्रीवाद में पुरुषों की भूमिका का विश्लेषण महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह समझने में मदद करता है कि पुरुष इस आंदोलन के समर्थन में कैसे सक्रिय रूप से शामिल हो सकते हैं, और साथ ही यह भी कि स्त्रीवाद उनके जीवन को कैसे प्रभावित करता है।

▶ स्त्रीवाद का उद्देश्य पुरुषों और महिलाओं के बीच समानता की स्थापना है

2.4.3.1 स्त्रीवाद में पुरुषों की भूमिका

पुरुषों की भूमिका स्त्रीवाद में कई प्रकार से विकसित हुई है, जो कि समाज के विभिन्न पहलुओं को प्रभावित करती है। पुरुषों के समर्थन के बिना स्त्रीवादी आंदोलन अधूरा रहेगा, क्योंकि यह एक ऐसी सामाजिक संरचना को चुनौती देता है, जो लंबे समय से पितृसत्ता पर आधारित है। पितृसत्ता एक सामाजिक व्यवस्था है, जिसमें पुरुषों को सत्ता और निर्णय लेने का प्रमुख अधिकार प्राप्त होता है। इस व्यवस्था ने महिलाओं के अधिकारों को दबाया और पुरुषों को हमेशा ऊँचा स्थान दिया। इस संघर्ष में पुरुषों की भूमिका मुख्य रूप से तीन प्रमुख तरीके से देखी जा सकती है:

▶ पुरुषों के समर्थन के बिना स्त्रीवादी आंदोलन अधूरा रहेगा

- **समर्थक (Allies)**
  - पुरुषों को स्त्रीवादी आंदोलन में समर्थन देने के रूप में एक सकारात्मक भूमिका निभानी चाहिए।
  - इतिहास में कई पुरुष स्त्रीवादी आंदोलनों का हिस्सा रहे हैं और उन्होंने महिलाओं के अधिकारों की वकालत की है। जैसे जॉन स्टुअर्ट मिल, जिन्होंने अपनी कृति "The Subjection of Women" में महिलाओं के अधिकारों का

▶ "The Subjection of Women" में महिलाओं के अधिकारों का समर्थन किया

समर्थन किया।

- आधुनिक समय में भी कई पुरुष समाज के न्यायप्रिय सदस्यों के रूप में स्त्रीवाद के सिद्धांतों को अपनाकर महिलाओं के संघर्ष में शामिल हो रहे हैं।

▶ **विरोधी (Opponents)**

- स्त्रीवाद का विरोध करने वाले पुरुषों की संख्या भी कम नहीं है। इन पुरुषों का मानना है कि स्त्रीवाद पुरुषों के अधिकारों और भूमिकाओं को कमज़ोर कर देगा।
- कुछ पुरुषों का यह विचार होता है कि यदि महिलाओं को समान अधिकार मिलते हैं, तो यह उनके पारंपरिक अधिकारों और प्रभुत्व को चुनौती देगी।
- कई बार यह पुरुष अपने अधिकारों को संरक्षित रखने के लिए स्त्रीवादी विचारों का विरोध करते हैं। वे यह मानते हैं कि समाज में स्त्रीवाद के द्वारा उत्पन्न होने वाले परिवर्तन उनकी स्थिति को कम कर सकते हैं।

▶ स्त्रीवादी विचारों का विरोध करते हैं

▶ **तटस्थ (Neutral/Unaware)**

- बहुत से पुरुष स्त्रीवादी आंदोलन और महिलाओं के अधिकारों के मुद्दे से अंजान होते हैं। ये पुरुष न तो इस आंदोलन का समर्थन करते हैं और न ही इसका विरोध करते हैं।
- यह तटस्थता आमतौर पर समाज की पारंपरिक सोच के कारण होती है, जहाँ पुरुषों को यह लगता है कि स्त्रीवाद उनके जीवन से जुड़ा हुआ मुद्दा नहीं है।
- स्त्रीवादी दृष्टिकोण को समझने के लिए इन पुरुषों को शिक्षा और जागरूकता की आवश्यकता होती है, ताकि वे इस आंदोलन में भागीदार बन सकें और लैंगिक समानता की ओर कदम बढ़ा सकें।

▶ पुरुषों को शिक्षा और जागरूकता की आवश्यकता होती है

2.4.3.2 स्त्रीवाद का पुरुषों पर प्रभाव

स्त्रीवाद केवल महिलाओं के लिए ही नहीं, बल्कि पुरुषों के लिए भी एक सकारात्मक परिवर्तन लेकर आता है। जब समाज में लैंगिक समानता स्थापित होती है, तो यह पुरुषों को भी अपनी भूमिका, सोच और जीवन शैली को नए तरीके से देखने का अवसर प्रदान करता है।

▶ **लैंगिक भूमिकाओं का पुर्नपरिभाषीकरण**

- पारंपरिक रूप से समाज ने पुरुषों से यह अपेक्षा की है कि वे कठोर, भावनाहीन, और सिर्फ आर्थिक रूप से सक्षम हों।
- स्त्रीवाद ने पुरुषों को यह समझने का अवसर दिया कि उन्हें अपनी भावनाओं, कमजोरियों और असुरक्षाओं को भी व्यक्त करने का अधिकार है।
- इस प्रक्रिया में, पुरुषों को अपनी पारंपरिक भूमिकाओं से बाहर आकर अपनी असल पहचान बनाने का अवसर मिलता है, जिससे वे अधिक मानवता और संवेदनशीलता के साथ जी सकते हैं।

- **पितृसत्ता का बोझ**
  - पितृसत्ता केवल महिलाओं के लिए हानिकारक नहीं है, बल्कि यह पुरुषों को भी एक कठोर ढांचे में बांधकर उनकी व्यक्तिगत स्वतंत्रता को सीमित करता है।
  - पितृसत्तात्मक समाज में पुरुषों से यह अपेक्षाएँ की जाती हैं कि वे हर समय मजबूत और सक्षम रहें, जबकि वे भी भावनात्मक रूप से कमज़ोर हो सकते हैं।
  - स्त्रीवाद ने इस मुद्दे को उजागर किया और पुरुषों को अपने व्यक्तिगत जीवन में स्वतंत्रता और संवेदनशीलता के साथ निर्णय लेने की प्रेरणा दी।

▶ पुरुषों को अपने व्यक्तिगत जीवन में स्वतंत्रता और संवेदनशीलता के साथ निर्णय लेने की प्रेरणा दी

- **पारिवारिक और कार्यस्थल पर बदलाव**
  - स्त्रीवाद ने न केवल महिलाओं के लिए बल्कि पुरुषों के लिए भी कार्यस्थल और पारिवारिक जीवन में बदलाव का रास्ता खोला।
  - पुरुषों के लिए यह नई सोच आई कि वे केवल कर्तव्यनिष्ठ और कामकाजी पुरुष नहीं, बल्कि परिवार और घर के कामों में भी समान भागीदार हो सकते हैं।
  - इससे न केवल परिवारों में संतुलन आया, बल्कि पुरुषों को भी यह समझने का मौका मिला कि वे अपने परिवारों में समान रूप से जिम्मेदार हो सकते हैं।

▶ पुरुषों को भी यह समझने का मौका मिला कि वे अपने परिवारों में समान रूप से जिम्मेदार हो सकते हैं

- **महिलाओं और पुरुषों के बीच सशक्त संबंध**
  - स्त्रीवाद ने पुरुषों और महिलाओं के बीच एक नए रिश्ते की शुरुआत की है, जहाँ दोनों एक-दूसरे को समान अधिकार और सम्मान देते हैं।
  - पारंपरिक पुरुषों को औरतों के प्रति नियंत्रण रखने की मानसिकता को बदलने के बाद, पुरुष अब अपने साथी के रूप में महिला को भी समान दृष्टिकोण से देख सकते हैं, जो उनके रिश्तों को और भी मजबूत बनाता है।

2.4.3.3 स्त्रीवाद में पुरुषों की चुनौतियाँ

हालाँकि पुरुषों के लिए स्त्रीवाद में शामिल होना फायदेमंद हो सकता है, लेकिन इसके साथ कुछ चुनौतियाँ भी जुड़ी होती हैं।

- **पारंपरिक सोच का विरोध**
  - पुरुषों के लिए यह स्वीकार करना कठिन हो सकता है कि पितृसत्तात्मक व्यवस्था, जो उन्हें शक्ति और प्रभुत्व देती है, उनके लिए भी हानिकारक है।
  - यह सामाजिक मानसिकता, जो वर्षों से बनी हुई है, पुरुषों को स्त्रीवाद के मुद्दों पर ध्यान देने से रोकती है।

▶ पितृसत्तात्मक व्यवस्था पुरुषों को स्त्रीवाद के मुद्दों पर ध्यान देने से रोकती है

- **स्वीकार करने में संकोच**
  - कई पुरुषों को लगता है कि स्त्रीवाद उनका विरोध करता है और यह उनके

अधिकारों को कम कर देगा।

- इसलिए, उन्हें यह स्वीकार करने में संकोच हो सकता है कि वे स्त्रीवाद के समर्थक हैं, क्योंकि यह उन्हें अपने परंपरागत अधिकारों को त्यागने की तरह लगता है।

▶ स्त्रीवाद में पुरुषों की भूमिका बेहद महत्वपूर्ण है

स्त्रीवाद में पुरुषों की भूमिका बेहद महत्वपूर्ण है, क्योंकि यदि पुरुष इस आंदोलन में सक्रिय रूप से भाग नहीं लेते, तो लैंगिक समानता की दिशा में सही बदलाव नहीं आ सकता। जब पुरुष और महिलाएँ मिलकर इस आंदोलन को आगे बढ़ाते हैं, तब यह समाज में समग्र परिवर्तन लाने में सक्षम हो सकता है। स्त्रीवाद पुरुषों को अपनी सोच को विकसित करने, पारंपरिक बाधाओं को तोड़ने और एक समान और न्यायपूर्ण समाज की दिशा में कदम बढ़ाने का अवसर प्रदान करता है।

Summarised Overview / संक्षिप्त अवलोकन

स्त्रीवाद एक सामाजिक आंदोलन है जो लैंगिक समानता की वकालत करता है और यह केवल महिलाओं के अधिकारों तक सीमित नहीं है, बल्कि पुरुषों को भी प्रभावित करता है। स्त्रीवाद में पुरुषों की भूमिका महत्वपूर्ण है, क्योंकि इसके बिना समाज में वास्तविक समानता की स्थापना संभव नहीं। पुरुषों का स्त्रीवाद में समर्थन महिलाओं के अधिकारों के लिए जरूरी है, क्योंकि इससे पितृसत्तात्मक सोच को चुनौती मिलती है। पुरुषों को अपनी पारंपरिक भूमिकाओं से बाहर आकर समानता और संवेदनशीलता के साथ जीवन जीने का मौका मिलता है। हालांकि, कुछ पुरुषों ने इसे विरोध किया है, लेकिन कई पुरुष स्त्रीवाद का समर्थन करते हुए इसे सामाजिक बदलाव के रूप में देखते हैं। स्त्रीवाद ने पुरुषों को अपनी भावनाओं को व्यक्त करने, पारिवारिक जिम्मेदारियों को साझा करने और समानता के दिशा में सक्रिय भूमिका निभाने की प्रेरणा दी है। यह दोनों लिंगों को एक-दूसरे के प्रति सम्मान और साझेदारी की भावना से जोड़ता है, जिससे समाज में समग्र सुधार संभव होता है।

Assignment / प्रदत्त कार्य

1. पितृसत्तात्मक समाज में महिलाओं के अधिकारों की स्थिति का विश्लेषण करें।
2. पितृसत्तात्मक समाज के कारण महिलाओं के लेखन में आई चुनौतियों पर चर्चा करें।
3. वर्जीनिया वुल्फ की कृति "A Room of One's Own" के प्रमुख विचारों का विश्लेषण करें।
4. आज के समय में स्त्रीवाद के मुख्य मुद्दे क्या हैं? इन पर विस्तार से विचार करें।
5. आधुनिक समाज में स्त्रीवाद की स्वीकार्यता और उसे लेकर पुरुषों के दृष्टिकोण पर चर्चा करें।

Reference / संदर्भ ग्रंथ

1. स्त्री मुक्ति का सपना - सं. कमला प्रसाद, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली
2. स्त्री संघर्ष का इतिहास - सं. राधा कुमार, वाणी प्रकाशन
3. उपनिवेश में स्त्री - प्रभा खेतान, राजकमल प्रकाशन
4. स्त्री परंपरा और आधुनिकता - सं. राज किशोर, वाणी प्रकाशन
5. स्त्री सशक्तिकरण की दिशा - रेखा कसतवार, राजकमल प्रकाशन
6. बाजार के बीच बाजार के खिलाफ - प्रभा खेतान, वाणी प्रकाशन
7. औरत, अस्तित्व और अस्मिता - अरविंद जैन, राजकमल प्रकाशन
8. स्त्री चिंतन की चुनौतियाँ - रेखा कस्तवार, राजकमल प्रकाशन
9. Feminist thought: a comprehensive introduction - Tony Rosemary
10. Contemporary Literary and cultural theory - Pramod K Nayar

Suggested Reading / निर्धारित पुस्तक

1. स्त्री मुक्ति : संघर्ष और इतिहास - रमणिका गुप्ता
2. उपनिवेश में स्त्री - प्रभा खेतान
3. लिहाफ - इस्मत चुगताई

Space for Learner Engagement for Objective Questions

Learners are encouraged to develop objective questions based on the content in the paragraph as a sign of their comprehension of the content. The Learners may reflect on the recap bullets and relate their understanding with the narrative in order to frame objective questions from the given text. The University expects that 1 - 2 questions are developed for each paragraph. The space given below can be used for listing the questions.

BLOCK 03

समकालीन हिन्दी कथा लेखन और स्त्री विमर्श

Block Content

इकाई 1 - समकालीन कथा परिदृश्य में स्त्री रचनाकार - उषा प्रियंवदा, मन्नू भंडारी, कृष्णा सोबती, नासिरा शर्मा, प्रभा खेतान, चित्रा मुद्गल, मृदुला गर्ग, मेहरूनिसा परवेज़, अलका सरावगी, अल्पना मिश्र

इकाई 2 - मृदुला गर्ग - हरी बिन्दी Detailed Study

अल्पना मिश्र - उपस्थिति Detailed Study

इकाई 3 - सूर्यबाला - एक स्त्री के कारनामे Detailed Study

ममता कालिया - बोलनेवाली औरत Detailed Study

इकाई 4 - प्रभा खेतान - छिन्नमस्ता(उपन्यास) Detailed Study

इकाई 1

समकालीन कथा परिदृश्य में स्त्री रचनाकार

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- समकालीन स्त्री कथाकारों के बारे में जानकारी प्राप्त करता है
- प्रत्येक समकालीन स्त्री कथाकारों के स्त्रीवादी दृष्टिकोण से परिचित होता है
- नारी विमर्श संबन्धी विभिन्न दृष्टिकोणों से अवगत होता है

Background / पृष्ठभूमि

समकालीन शब्द अपने में व्यापकता से युक्त है। इसका सीधा संबन्ध समसामयिकता से है। वह रचना समकालीन कही जाएगी जो अपने समय के बोध को व्यक्त करे। परिवर्तनशील सामाजिक यथार्थ को रचनात्मक माध्यम से व्यक्त करनेवाला साहित्य समकालीन साहित्य है। समकालीन कथाकारों ने अपने परिवेश से प्रभावित होकर अपने विचारों को कहानियों और उपन्यासों में प्रतिस्थापना की। प्राचीन काल में नारी को किसी प्रकार के अधिकार प्राप्त नहीं थे। बीसवीं शताब्दी के नये चिन्तन ने उसमें जागरूकता तथा नई चेतना का संचार किया। इक्कीसवीं सदी के प्रथम दशक की महिला नारी शिक्षा, पाश्चात्य प्रभाव, स्वतंत्रता, समाज सुधार आदि कार्यक्रमों के कारण नारी सजग और सतर्क होती चली गयी। इसका चित्रण साहित्य में किया गया। समकालीन पुरुष कथाकारों के कथा साहित्य में हम आमूलचूल परिवर्तन देख सकते हैं। उन्होंने स्त्री जीवन से जुडे विभिन्न विषयों पर अपने अपने ढंग से लेखनी चलाई है। लेकिन स्त्री व्यथा, दर्द, पीडा के चित्रण में जितना प्रशंसनीय कार्य महिला कथाकारों ने किया, वह उसकी लडाई आप लडने के सामर्थ्य की घोषणा भी है। समकालीन महिला कथालेखन अपनी अलग पहचान व विशेषता के कारण सदैव विचारणीय रहा। सन् 1975 को अन्तर्राष्ट्रीय महिला वर्ष के रूप में घोषित किया गया। तभी से नारी स्वतंत्रता आंदोलन विश्व व्यापी बन गया। इसका असर लेखन पर, विशेषकर नारी लेखन पर पडा। हिन्दी में भी महिला लेखन को लेकर जागृति बढी। समकालीन हिन्दी महिला कथाकारों ने नारी जीवन की कई समस्याओं को उठाया है। इन्होंने नारी सशक्तिकरण के लिए कई तरह के प्रयास किये हैं। इन लेखिकाओं ने अपनी कथाओं द्वारा नारी में चेतना, जागृति व अस्मिताबोध जागृत कर उसे आर्थिक दृष्टि से आत्मनिर्भर बनाने का संदेश दिया है। नारी की पारिवारिक, सामाजिक और दैहिक शोषण के साथ साथ उसके मानसिक शोषण को अपेक्षाकृत अधिक तीखे स्वर में अभिव्यक्ति दी। समकालीन हिन्दी साहित्य का परिदृश्य अत्यंत व्यापक है। इसमें महिला कथाकारों की उपस्थिति इसे ज़्यादा सार्थक और वैविध्यपूर्ण बनाती है। इनमें प्रमुख हैं उषा प्रियंवदा, मन्नू भण्डारी, कृष्णा सोबती, नासिरा शर्मा, प्रभा खेतान, चित्रा मुद्गल, मृदुला गर्ग, मेहरुन्निसा परवेज़, अलका सरावगी, अल्पना मिश्र, सूर्यबाला, और ममता कालिया।

Keywords / मुख्य बिन्दु

नारीअस्मिता, अस्मिताबोध, अकेलापन, परम्परा, पारिवारिक जीवन, पारिवारिक उत्तरदायित्व, यथार्थबोध, अकेलापन

Discussion / चर्चा

3.1.1 प्रमुख महिला कथाकार

▶ स्त्री अस्मिताबोध, महानगरीय जीवन की विसंगतियाँ, आधुनिकता बोध, पाश्चात्य सभ्यता का प्रभाव, खुला यौन चित्रण, नारी की स्वतंत्र चेतना

समकालीन हिन्दी साहित्य में महिला कथाकारों की उपस्थिति इसे ज़्यादा सार्थक और वैविध्यपूर्ण बनाती है। 1950 के आसपास ही महिला लेखिकाओं ने नारी मुक्ति तथा उससे जुडी विभिन्न समस्याओं को लेकर लिखना शुरू किया था। शुरू में तो स्त्री लेखन में नारी अस्मिता विशेषतः प्रेम संबन्धी आग्रहों में सीमित थी। किंतु कालक्रम में महिला कथाकारों की रचनाओं में रचनात्मक वैशिष्ट्य तथा व्यापक सामाजिक सांस्कृतिक प्रश्नों को संबोधित करने की आकाँक्षा भी देखी जाने लगी। इसके अलावा उनके कथा साहित्य में स्त्री अस्मिताबोध, महानगरीय जीवन की विसंगतियाँ, आधुनिकता बोध, पाश्चात्य सभ्यता का प्रभाव, खुला यौन चित्रण, नारी की स्वतंत्र चेतना आदि प्रवृत्तियाँ भी उभर आने लगीं। हिन्दी महिला लेखन की परंपरा काफी पुरानी है। लेकिन पिछले दो तीन दशकों से ही यह परम्परा काफी सक्रिय और चर्चित होने लगी थी।

3.1.1.1 उषा प्रियंवदा

▶ शहरी जीवन में व्याप्त उदासी, अकेलापन, ऊब आदि का अंकन

महिला कथाकारों की शृंखला की एक महत्वपूर्ण कडी है उषा प्रियंवदा। वे प्रवासी हिन्दी साहित्यकार हैं। उन्होंने नारी जीवन की समस्त गतिविधियों को अपनी रचनाओं में शब्दबद्ध किया। उषा पियंवदा का जन्म 24 दिसम्बर 1930 को कानपूर में हुआ था। इलाहाबाद विश्व विद्यालय से अंगेज़ी साहित्य में एम.ए तथा पी.एच.डी की उपाधि पाप्त की। अमरीका में दो वर्ष, पोस्ट डॉक्टरल अध्ययन किया। विस्कांसिन विश्व विद्यालय में दक्षिण एशियायी विभाग में सहायक प्रोफेसर के रूप में रहे। शिक्षा काल से ही साहित्य रचना में लगी हुई उषाजी कहानी और उपन्यास दोनों क्षेत्रों में अपना योगदान देती रही है। उषाजी के कथा साहित्य में एक अत्यंत संवेदनशील स्त्री पात्र की ज़िन्दगी की महती भूमिका है। इनके कथा साहित्य में छठे और सातवें दशक के शहरी परिवारों का

संवेदनापूर्ण चित्रण मिलता है। उस समय शहरी जीवन में बढ़ती उदासी, अकेलापन, ऊब आदि का अंकन करने में उन्होंने अत्यंत गहरे यथार्थबोध का परिचय दिया है। उनके प्रमुख उपन्यास हैं 'पचपन खंभे लाल दीवारें', 'रुकोगी नहीं राधिका', 'शेषयात्रा और अन्तर्वंशी', 'भया कबीर उदास और नदी'। उषाजी के कहानी संग्रह हैं 'वनवास', 'कितना बडा झूठ', 'शून्य', 'ज़िन्दगी और गुलाब के फूल', 'एक कोई दूसरा', 'फिर वसन्त आया' आदि।

▶ 'पचपन खम्भे और लाल दीवारें' उषा प्रियंवदा का पहला उपन्यास

'पचपन खम्भे और लाल दीवारें' उषा प्रियंवदा का पहला उपन्यास है जिस में पारिवारिक सामाजिक परिस्थितियों के झंझावात से उखडनेवाली नारी को केंद्रबिन्दु बनाया गया है। उपन्यास की सुषमा अपनी पहली नौकरी इसलिए छोडती है कि उस कॉलेज का सेक्रेटरी उसे अपने वश में लाने के लिए कई प्रलोभन देता है। लेकिन सुषमा उन प्रलोभनों का तिरस्कार करके उस नौकरी को छोड देती है। यह दफ्तरीय शोषण का उदाहरण है। सुषमा उस नारी का प्रतिरूप है, जो परिवार के उत्तरदायित्वों के बीच स्व का हनन करती है। अपने आपको घेरे हुए सामाजिक पारिवारिक उत्तरदायित्वों की बेडियों को तोड देने में वह असमर्थ है।

▶ 'पचपन खम्भे और लाल दीवारें'- दफ्तरीय शोषण का उदाहरण

छात्रावास के पचपन खम्भे और लाल द्वारें उन परिस्थितियों के प्रतीक हैं जिसमें रहकर सुषमा को ऊष और धुरन का तीखा एहसास होता है लेकिन वह उससे कभी मुक्त नहीं होती। इनमें जीना ही उसकी नियती है। आधुनिक जावन की यह विडंबना है कि जो हम नहीं चाहते वही करने को विवश है।

▶ 'रुकोगी नहीं राधिका'- सुरक्षाकाँक्षी भारतीय नारी का चित्रण

'रुकोगी नहीं राधिका' उपन्यास में सुरक्षाकाँक्षी भारतीय नारी को दर्शाया गया है। इसमें अस्मिता की तलाश करनेवाली नारी की दुविधा को अंकित किया गया है। राधिका का विधुर पिता विद्या से शादी करता है। उससे विचलित राधिका अपने से बहुत बडे विदेशी पत्रकार डैनियल पीटरसन के साथ विदेश चली जाती है। लेकिन उससे भी उसे सुरक्षा नहीं मिलती। उसे लगता है, जैसा वह एक लम्बी अंधकारमय, दर्दसुरंग में यात्रा कर रही है, जहाँ न लक्ष्य दीखता है न उसका अंत। अपनी सीमाओं को लाँच जाने में असमर्थ एक समर्थ सुशिक्षित युवती की मर्मस्पर्शी कथा है उपन्यास में। 'शेषयात्रा' एक ऐसी परित्यक्ता नारी की कथा है, जो तलाक के बाद अपने विश्वास, लगन एवं परिश्रम से अपने व्यक्तित्व का सृजन करती है और अर्थपूर्ण जीवन बिताती है। 'शेषयात्रा' उपन्यास में नारी जीवन को प्रभावित करनेवाली एक विसंगति तलाक को उठाया गया है, जो समकालीन संदर्भ में एक विकराल समस्या के रूप में मौजूद है। छोटी छोटी बातों में तलाक आम बात हो गई है। इसमें सदियों से चलनेवाली नारी समस्याओं को अनावृत किया गया है। यह भारतीय एवं पाश्चात्य संस्कृति की टकराहट में जीवन बितानेवाले प्रवासी भारतीयों की कथा है। प्रणव कुमार से शादी करके अमेरिका पहुँचनेवाली भारत के गामीण वातावरण में पली अनुका के मानसिक संघर्ष की गाथा है 'शेषयात्रा'। 'अन्तर्वंशी' उपन्यास में अमेरिका वासी भारतीय परिवारों की ज़िन्दगी को, उनके आपसी संघर्षों को गहरी अन्तर्दृष्टि से उद्घाटित किया गया है। उषाजी का 'नदी' उपन्यास नारी

के संघर्षपूर्ण जीवन प्रवाह का प्रतीक है। इसमें नारी जीवन के कटु कठोर यथार्थ का मार्मिक चित्रण आकाशगंगा पात्र के द्वारा हुआ है। इसमें नारी वर्ग की कमज़ोरियों और उसकी समस्याओं को प्रस्तुत करके नारी जागरण की आवश्यकता पर बल दिया गया है। यह उपन्यास आधुनिक जीवन की ऊब, छटपटाहट, आतंक, भय और अकेलेपन की अवस्था को व्यक्त करता है। उषाजी कहती हैं कि नारी की विभिन्न समस्याओं का हल उसे खुद ही खोजना होगा। उषाजी ने अपने उपन्यासों द्वारा आधुनिक परिवर्तित संदर्भों में दाम्पत्य जीवन में पलती नारी की मनस्थिति का जीवन्त चित्रण किया है।

उषाजी के लिए कहानी आधुनिकता का बोध करानेवाली है। इनकी कहानियाँ अपने विदेशी संदर्भ से ज़्यादा नारी मन की अछूती अनपहचानी गहराइयों में प्रवेश कर उसके अन्तर्मन की सूक्ष्म संवेदनाओं को खोजती है। कहानियों में नारी के विविध रूप मिलते हैं जैसे आर्थिक तंगी से गुज़रती नारी, माता के रूप में नारी, कामकाजी नारी आदि। इनकी कहानियों में स्त्रियों का विवाह, प्रेम, अकेलापन, सेक्स, पारिवारिक विघटन आदि का चित्रण है। आधुनिक घुटन और अलगाव का अहसास लोगों को अनुभव होता है। उषाजी के नारी पात्रों ने अपनी वर्तमान स्थिति से विद्रोह कर नयी स्थिति में पदार्पण किया। परन्तु अभी भी वह अपने पुराने संस्कारों के प्रति मोह को छोड नहीं पाती। 'ज़िन्दगी और गुलाब के फूल' संकलन में बारह कहानियाँ हैं। इन सब में देशी विदेशी स्त्री पुरुषों से संबन्धित कहानियाँ हैं। स्त्री विमर्श से जुडी कहानियाँ 'मोहबन्ध', 'जालें', 'छुट्टि का दिन', 'पूर्ति', 'दृष्टिकोण' आदि हैं। मोहबन्ध, अचला और नीलू नामक दो स्त्रियों की कहानी है। छुट्टी के दिन अकेलेपन के बोध को उजागर करती है। अकेलापन स्त्री संदर्भ में आने से कैसे वह व्यथित होती है, रिक्तता उसे कैसे डसती है, यह दिखानेवाली एक और कहानी है 'पूर्ति'। इस कहानी की तारा की मुलाकात अकेलेपन की अवस्था में नलिन से होती है। 'ज़िन्दगी और गुलाब का फूल' की वृन्दा बेकारी की बजह से भाई सुबोध पर पूरी तरह आश्रित है। उसे माँ की इच्छा और भाई की सुविधा के अनुसार अपने को ढालना पडता है। 'प्रतिध्वनियाँ' कहानी दाम्पत्य की एकरसता से ऊबी नारी की मनोदशा तथा मुक्ति की छटपटाहट, बेमेल संबन्ध आदि का सुन्दर चित्र पस्तुत करती है। ज़िन्दगी और गुलाब के फूल संकलन की 'पैरंपुलेटर' कहानी में एक मध्यवर्गीय परिवार की माँ अपनी आर्थिक तंगी के कारण परेशान है। बच्चे को बीमारी से बचाने के लिए कालिन्दी सबकुछ त्याग देती है। मातृत्व की महनीयता और ममता पर उषा ने कालिन्दी के माध्यम से ज़ोर दिया है। 'कच्चे धागे' की नायिका कुन्तल को आर्थिक अभाव के कारण शादी में बाधा आती है। इसमें आर्थिक अभाव के कारण कुन्तल के सपनों की पूर्ति असंभव हो जाती है। 'छुट्टी का दिन' कहानी में नौकरीपेशा नारी के जीवन की सारहीनता, अकेलापन और उसकी समस्याओं का मार्मिक ढंग से चित्रण है। 'जालें' कहानी में वैवाहिक जीवन की जडता को व्यक्त किया गया है। स्वीकृति में पति की विचित्र मानसिकता का सामना करनेवाली नारी का चित्रण है। इस तरह उषा प्रियंवदा की रचनाएँ नारी के टूटने बनने की बहुमुखी गाथा है।

▶ नौकरीपेशा नारी के जीवन की सारहीनता, अकेलापन और उसकी समस्याओं का चित्रण है

3.1.1.2 मन्नू भण्डारी

नारी जीवन के मूक क्षणों को वाणी देनेवाली सुपसिद्ध लेखिका मन्नू भण्डारी का हिन्दी के आधुनिक कथाकारों में विशिष्ट स्थान है। ये नई कहानी आँदोलन की महत्वपूर्ण लेखिका के रूप में हमारे सामने आई है। इनकी कहानियाँ स्त्री मन के अनछुए पहलुओं को उजागर करने में काफी सफल रही हैं। मन्नू भण्डारी का जन्म 3 अपैल 1939 को मध्यपदेश के मंदसौर जिले के भानपुरा गाँव में हुआ। लेखन के लिए इन्होंने मन्नू नाम का चुनाव किया। ये प्रसिद्ध हिन्दी कथाकार राजेंद्र यादव की धर्मपत्नी हैं। इन्होंने एम.ए तक शिक्षा पाई। वर्षों तक दिल्ली के मिरांडा हाउस कोलेज में अध्यापिका रहीं। आपने प्रभावी वक्ता, नाटककार, अध्यापिका आदि क्षेत्रों में भी अपनी प्रतिभा का परिचय दिया है। धर्मयुग में धारावाहिक रूप से प्रकाशित उपन्यास 'आपका बंटी' से इन्हें लोकप्रियता मिली। वे विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन में प्रेमचन्द सृजनपीठ की अध्यक्षा भी रहीं। लेखन का संस्कार उन्हें विरासत में मिला। शादी के समय उनका, परंपरा के प्रति विद्रोह का भाव दिखाई पडता है। यद्यपि इनकी प्रथम कहानी है मौत, तो भी 'मैं हार रई' दूसरी कहानी अधिक लोकप्रिय हुई। ये नई कहानी आँदोलन के सर्वश्रेष्ठ कहानीकारों में से एक हैं। इनके प्रमुख कहानी संग्रह हैं 'एक प्लेट सैलाब', 'मैं हार गई', 'तीन निगाहों की एक तस्वीर', 'यही सच है', 'त्रिशंकु', 'आँखों देखा झूठ', 'श्रेष्ठ कहानियाँ', 'नायक खलनायक' और 'विदूषक'। मन्नू भंडारी के उपन्यास हैं 'आपका बंटी', 'एक इंच मुस्कान', 'महाभोज', 'स्वामी', 'कलवा', 'एक कहानी यह भी'। आत्मकथा, नाटक, पटकथा आदि क्षेत्रों में भी इनकी देन है।

▶ नई कहानी आँदोलन की सशक्त लेखिका

इनकी अकेली कहानी अत्यंत लोकप्रिय कहानी है, जिसमें सोमा बुआ नामक पात्र को केंद्र में रखा गया है। नारी का एकाकीपन, तज्जन्य आकांक्षा एवं ऊब का चित्र मन्नू की 'अकेली' की सोमा बुआ में मिलता है। मन्नू ने 'नशा' में शंकर की नशेबाजी के प्रभाव से तडपनेवाली उसकी पत्नी आनन्दी की दयनीय स्थिति का विवरण प्रस्तुत है। पति के व्यवहार से ऊबकर वह कहती है- हे भगवान मुझे मौत आ जाय। कोई मुझे यहाँ से ले जाये। 'क्षय' कहानी की कुन्ती तो जीवन की सामान्य सुख सुविधाओं को भी त्यागकर संघर्ष के कठिन मार्ग पर चलने का संकल्प लेती है।। 'एक कमज़ोर लडकी की समस्याएँ' कहानी एक ऐसी लडकी की कमज़ोर वृत्ति की परिचायक हैं जो किसी तरह का निर्णय नहीं ले सकती हैं। वह किसी भी तरह से अपने निर्णय को आचरण में नहीं उतार सकती। रूप के अंतर्मन में ललित के पति सहवास जन्य कोमल भावना होती

▶ इनकी कहनियाँ यथार्थ के धरातल पर नारी दृष्टि से घटनाओं का अंकन

है। वह चाहती भी कि वही उसका जीवन साथी बने। परंतु अपने परिवार के परिवेश के प्रवाह में वह बदल जाती है। वकील साहब से विवाह करने में वह विवश होती है। विवाह के बाद भी वह ललित के साथ भाग निकलने का अवसर अपनी कमज़ोरी के कारण खो देती है। 'मैं हार गई' संकलन की कहानी 'गीत का चुम्बन' कहानी में नारी के मानसिक अन्तर्द्वन्द्व को बडी बारीकी से चित्रित है। परंपरा और आधुनिकता के बीच उलझी हुई नारी मन की असलियत का चित्रण है। 'अभिनेता' कहानी अंजना नामक एक अभिनेत्री की व्यथा कहती है। 'स्मशान' कहानी वैवाहिक जीवन में स्त्री और पुरुष के बीच उत्पन्न होनेवाले आकर्षण की गहराई का व्यंग्यात्मक प्रस्तुतीकरण है। पति की मृत्यु के बाद पत्नी सती हो जाती है। पत्नी की मृत्यु के बाद पति दूसरी स्त्री के साथ संबन्ध स्थापित करता है। इसकी व्यावहारिक कटु सच्चाई को प्रतीकात्मक ढंग से यह कहानी अभिव्यक्ति देती है। दीवार, बच्चे और बरसात कहानी में संबन्धों और विवाहेतर संबन्धों के बारे में साधारण वर्ग की स्त्रियों में प्रचलित धारणाओं का बडा मार्मिक वर्णन है। 'तीन निगाहों की एक तस्वीर' अपने रुग्ण पति को मनोयोग से सेवा करनेवाली दर्शना की कहानी है। दर्शना एक अभागी नारी होती है। 'कील और कसक' में पति से उपेक्षित पत्नी की विवशता को मनोवैज्ञानिक ढंग से प्रस्तुत किया गया है। 'तीसरा आदमी', पति पत्नी के बीच उत्पन्न होनेवाले सन्देहों से घिर जाने पर देखी जानेवाली अन्तर्द्वन्द्व की स्थिति की कहानी है। 'यही सच है' चर्चित कहानी है, जिसमें दीपा के अन्तर्द्वन्द्व को बडी बारीकी से चित्रित किया गया है। नारी विमर्श की दृष्टि से इन की यही सच है, सज़ा, मैं हार गई आदि कहानियाँ उल्लेखनीय हैं। मन्नूजी को अपने समकालीनों से अलग करनेवाली बात यह है की इनकी कहानियाँ यथार्थ के धरातल पर नारी की दृष्टि से घटनाओं का अंकन करती हैं।

हिन्दी उपन्यास साहित्य में 'आपका बंटी' उपन्यास से मन्नूजी को अधिक प्रतिष्ठा मिली। आपका बंटी में विवाह तथा दांपत्य जीवन से संबन्धित मूल्य दृष्टि का निरूपण किया गया है। पति पत्नी के बीच आपसी टकराव के दुष्परिणाम, तलाक, पुनर्विवाह तथा एक संवेदनशील बालक के संत्रास की कहानी है। शकुन के बारे में स्वयं मन्नूजी ने कहा:-शकुन चक्की पीसकर बेटे का जीवन बनाने में अपने आपको स्वाहा कर देनेवाली माँ नहीं थी, बल्कि स्वतंत्र व्यक्तित्व आकाँक्षाओं और आजीविका के साधनों से युक्त माँ थी। महिला उपन्यासकारों में घर परिवार ही नहीं, अपितु इसके साथ ही समाज का विशाल कैनवास भी प्रतिफलित है। इसका उदाहरण है 'महाभोज' उपन्यास। महाभोज में इन्होंने शाश्वत व आदर्श राजनैतिक मूल्यों के विघटन को दर्शाया है। 'एक इंच मुस्कान' लेखिका और पति राजेंद्र यादव द्वारा लिखा गया उनका उपन्यास है। यह एक प्रयोगात्मक उपन्यास है। इसमें पुरुष और एक महिला के बीच के विवाह की कहानी है। यह एक त्रिकोण प्रेम पर आधारित उपन्यास है। 'एक इंच मुस्कान' की अमला धनी, अहंग्रस्त और आधुनिक विचारधाराओं से सहमत नारी है। इसलिए वह अपने पति से समझौता नहीं कर पाती तथा परित्यक्ता होने के बावजूद दूसरे व्यक्ति के विवाह प्रस्ताव को ठुकरा देती है। मन्नूजी ने नारी जीवन के तनाव, घुटन, नारी पुरुष के बदलते संदर्भ,

▶ महाभोज में इन्होंने शाश्वत व आदर्श राजनैतिक मूल्यों के विघटन को दर्शाया है

यौन संबन्ध तथा पारिवारिक संघर्ष आदि को यथार्थवादी पृष्ठभूमि तक जाकर महत्वपूर्ण एवं प्रभावी बनाया है। आपने भारतीय नारी की अंतर्व्यथा को जितनी बारीकी से व्यक्त किया है, वह प्रशंसनीय है। आपने नारी हृदय के सभी मानसिक व भावात्मक द्वन्द्व तथा संघर्ष को बखूबी व्यक्त किया है।

मन्नूजी ने अपनी रचनाओं में नारी के परंपरागत रूप को झटककर उसमें नवीनता लाने का प्रयास किया। यह नवीनता केवल कोरी कल्पनाओं पर आधारित नहीं थी। अपितु इसमें यथार्थकता को भी उचित स्थान दिया गया। मन्नूजी ने नारी मनोविज्ञान को बहुत बारीकी से चित्रित किया है। भारतीय नारी के तथाकथित आदर्शों के छटाटोप में छटपटाती नारी की आशाओं आकाँक्षाओं और लालसाओं को उन्होंने निर्भ्रांत वाणी दी है। इनके नारी पात्र अपने स्वतंत्र अस्तित्व का उद्घोष करते दिखाई देते हैं। उन्होंने नारी संवेदनाओं को पूरी ईमानदारी से चित्रित किया है। उनका कथा साहित्य जीवन से जुडा हुआ है। उनके कथा साहित्य का उद्देश्य है नारी हृदय की केमल अछूती भावनाओं की मार्मिक अभिव्यंजना तथा जीवन और जगत के व्यापक क्षेत्रों में घटित होनेवाली विविध घटनाओं का चित्रांकन। इन्होंने अपनी लेखनी स्त्री संवेदना तक सीमित नहीं रखकर समाज के हर वर्ग व उनकी समस्याओं पर भी चलाई है। मन्नू ऐसी महिला है जो किसी भी तरह की वैचारिक अतिवादिता से मुक्त है। उनकी रचनाओं में आधुनिक समाज में व्याप्त विसंगतियों का बेहत्तर प्रस्तुतीकरण दिखाई देता है। सहज भाषा में खुली अभिव्यक्ति, कलात्मक अंदाज, समाज सापेक्ष संदर्भों का अंकन व नारी के मन की अथाह पीडा की प्रस्तुति के कारण वे सर्वाधिक चर्चित रही।

▶ आधुनिक समाज में व्याप्त विसंगतियों का बेहत्तर प्रस्तुतीकरण

3.1.1.3 कृष्णा सोबती

समकालीन कथा लेखिका कृष्णा सोबती ने अपने कथा साहित्य में नारी के विविध अंतर्द्वन्द्वों, कुँठाओं, वर्जनाओं आदि की स्वाभाविक अभिव्यक्ति की है। वे सर्वाधिक चर्तित, विवादास्पद व्यक्तित्ववाली एवं प्रतिभा संपन्न लेखिका हैं। इनका जन्म 18 फरवरी 1925 को गुजरात में हुआ था। मुख्यतः हिन्दी साहित्य में इन्हें सेक्स और देह को केंद्र में रखकर लिखनेवाली लेखिका के रूप में जाना जाता है। आरंभिक दौर में कविता लिखती कृष्णा ने कविता को छोडकर कथा के क्षेत्र में अपना स्थान मज़बूत किया। कृष्णा सोबती हिन्दी कथा साहित्य में अपनी एक विशिष्ट पहचान रखती है। उनकी लेखनी संयमित और साफ सुधरी है। उनकी कई लंबी कहानियों उपन्यासों और संस्मरणों ने हिन्दी साहित्य में अपनी दीर्घजीवी उपस्थिति दर्ज करायी है। कृष्णा सोबती अपनी बेलाग कथात्मक अभिव्यक्ति और सौष्ठवपूर्ण रचनात्मकता के लिए जानी जाती है।

▶ सेक्स और देह को केंद्र में रखकर लिखनेवाली लेखिका

उनका परिवार औपनिवेशिक ब्रिटिश सरकार के लिए काम करता था। उन्होंने लाहौर के फतेहचंद कालेज में उच्च शिक्षा शुरू की लेकिन भारत का विभाजन होने पर वे भारत लौट आई। उर्दू, पंजाबी और हिन्दी संस्कृतियों की मेल ने उनकी रचनाओं में प्रयुक्त भाषा को प्रभावित किया। वे नई लेखन शैली के इस्तेमाल के लिए जानी जाती है। वे शुरू में लघु कथाएँ लिखती थी। 1944 में उनकी दो कहानियाँ प्रकाशित हुई- 'लामा', 'नफीसा'। इनकी कहानियों में नारी मन की सूक्ष्म दशा व उसकी आकाँक्षाओं व इच्छाओं को साहस व खुलेपन के साथ अभिव्यक्त किया गया है।

▶ नारी मन की सूक्ष्म दशा व उसकी आकाँक्षाओं व इच्छाओं का चित्रण

इनकी लंबी कहानियाँ हैं 'डार से बिछुडी', 'मित्रो मरजानी', 'यारों के यार', 'बादलों के घेरे', 'तिन पहाड', 'ऐ लडकी', 'सिक्का बदल गया', 'मेरी माँ कहाँ है', 'जैनी मेहरबान सिंह'। उपन्यास 'सूरजमुखी अँधेरे के', 'ज़िन्दगीनामा', 'दिलो दानिश', 'समय सरगम', 'गुजरात पाकिस्तान से गुजरात हिन्दुस्तान' आदि हैं। इनका कहानी संकलन है 'बादलों के घेरे'। इनके अलावा यात्रा विवरण, संस्मरण आदि लिखकर हिन्दी साहित्य को आपने संवर्धित किया। उनकी प्रमुख रचनाओं का चयन 'सोबती एक सोहबत' में हुआ है। ये रचनाएँ समाज में व्याप्त खोखले मूल्यों की पोल खोलती है। कृष्णाजी की प्रारंभिक रचनाओं में उपनिवेश, आधुनिकता का असर दिखाई देता है। लेकिन 'मित्रो मरजानी' तक आते आते उनकी स्त्रीवादी दृष्टि और रचना दर्शन स्वस्थ एवं सुदृढ हो गए। उसी के साथ वे महिला लेखन की शाहनी बनने लगीं।

▶ कथा साहित्य केअलावा यात्रा विवरण, संस्मरण आदि विधाओं की रचनाएँ हैं

मित्रो मरजानी काफी चर्चित उपन्यास है। इसमें हिन्दी में पहली बार ऐसी नारी पात्र की सृष्टि हुई, जिसमें अपनी शारीरिक भूख की माँग की साहसिकता है। इसमें परंपरा में जकडी नारी के मन की सूक्ष्म जटिलताओं का चित्रण है। मित्रो अपने पति की पुंसत्व हीनता के कारण दूसरा पुरुष खोजती है। समाज इसका विरोध करता है। तो वह अपनी सास से कहती है:- "ज़िन्दा जन का यह कैसा व्यापार? अपने लडके बीज डाले तो पुण्य, दूसरे डाले तो कुकर्म।" मित्रो विद्रोही नारी है लेकिन परंपरा को तोडने में असमर्थ है। मित्रो आदर्श व परंपरागत मूल्यों से आक्रांत होकर विद्रोह करते हुए नैतिकता को चुनौती देती है। इसमें नारी जीवन के आदर्शवादी मूल्यों के पतन व अवमूल्यन की अभिव्यक्ति है। इस उपन्यास द्वारा स्पष्ट किया गया है कि कामवासना की भूख से व्यक्ति कोई भी अमानवीय व अनैतिक कार्य करने के लिए आतुर रहता है। मित्रो का कथन देखिए:- "तुम्हीं बताओं जिठानी, तुम जैसा सत बल कहाँ से पाऊँ लाऊँ? देवर तुम्हारा मेरा रोग नहीं पहचानता... बहुत हुआ तो हफ्ते पखवारे... और मेरी देह में इतनी प्यास है, इतनी प्यास कि मछली सी तडपती हूँ।" यह बोल्ड औरत की कथा कहनेवाला उपन्यास है। 'सूरजमुखी अंधेरे के' उपन्यास, बचपन में हुए दर्व्यवहार को स्वीकार करनेवाली एक महिला के संघर्ष पर आधारित है। इसकी नायिका रत्तिका बाल्यकालीन बलात्कार जन्य कुँठा से सामान्य से असामान्य स्वभाव वाली बन जाती है। वह अपना खोया हुआ आत्म सम्मान पाने के लिए स्वयं एवं समाज दोनों स्तर पर जूझती है। समाज की गंभीर समस्या बलात्कार को उठाया गया है। बलात्कार के पश्चात् नारी की मनस्थिति का

▶ मनोवैज्ञानिक ढंग से नारी की मनस्थिति का वर्णन

वर्णन मनोवैज्ञानिक ढंग से हुआ है। नायिका परंपरागत मूल्यों से विद्रोह कर सामाजिक सीमाओं को लाँघकर स्वतंत्र जीवन जीने के लिए आधुनिकता की ओर बढ रही है।

'डार से बिछुडी' अपनी नियति के आगे बेबस और लाचार सी खडी रहनेवाली पाशो नामक एक किशोरी की कथा है। इसकी नायिका पाशो को, दीवानजी की मृत्यु को प्राप्त होते ही उसका भाई बरकत अपनी वासना का शिकार बनाता है। इसमें परंपरा में जकडी नारी मन की सूक्ष्म जटिलताओं का चित्रण है। अपने संपूर्ण जीवन में पाशो को उस अपराध की सज़ा भुगतनी पडी, जिसकी वह हकदार भी नहीं थी। 'ज़िन्दगीनामा' उपन्यास की नायिका शाहनी का चरित्र तो 'मित्रो मरजानी' की मित्रो के चरित्र से एकदम भिन्न है। ये बिलकुल धर्मभीरु, समाजभीरु और आभिजात्यपूर्ण व्यक्तित्व की स्वामिनी है। शाहनी का यह गुरु गंभीर त्यागमय व्यक्तित्व एकदम से हमारे सामने एक जीवंत गरिमापूर्ण नारी चरित्र को ला खडा करता है। वह अपनी भावनाओं से अधिक महत्व कुल की मर्यादा और पति के सुख सम्मान को देती है। 'समय सरगम' वृद्ध जीवन को अथवा उससे जुडी हुई समस्याओं को केंद्र में रखकर लिखा गया एक उपन्यास है। वृद्धावस्था की सबसे बडी समस्या है अकेलापन। लेकिन इसकी आरण्या अकेलापन पसन्द करती है। ऐ लडकी उपन्यास में एक मरणासन्न वृद्धा की अचूक जिजीविषा की कहानी है। कृष्णाजी अपने उपन्यासों में प्राचीन व रूढ मूल्यों से त्रस्त नारी की पीडा व संवेदना को भी उजागर किया है।

▶ वृद्ध जीवन और उनकी समस्याओं चित्रण

कृष्णाजी ने अपनी कहानियों में स्त्रियों के जीवन को ऐसा प्रस्तुत किया है जैसे वह पारिस्थितियों से समझौता करती है। बाद में भाग्य समझकर घुटने टेकती हैं। 'बादलों के घेरे' इनका कहानी संकलन है। इसकी कहानियों के सारी नारी पात्र एक दूसरे से बिलकुल अलग मनोवैज्ञानिक व व्यावहारिक ढाँचे के लोग हैं। 'बादलों के घेरे' कहानी की नायिका मन्नो एक क्षय रोगिणी है। दूर के रिश्तेदार रवि को उससे पहली ही मुलाकात में प्रेम हो जाता है। लेकिन वह अपनी निकट आती मृत्यु का इतने करीब से कितनी बार साक्षात्कार कर चुकी है कि जीवन या प्रेम जैसी बातें उसे निस्सार लगने लगी है। यह निस्सारता इतनी भयावह है कि उसे डराती रहती है। प्रेम तो उसे भी हो जाता है पर प्रेमी के अकल्याण की आशंका उसे भयभीत करती है। इनकी 'सिक्का बदल गया' कहानी वृद्धा शाहनी की व्यथा कथा है, जो आत्मसम्मानी है। कृष्णाजी की दो लंबी कहानियाँ हैं 'ऐ लडकी' और नामपट्टिका। इन कहानियों में कृष्णाजी का साहस और बोल्डनेस विद्यमान है। ऐ लडकी में मरणासन्न माँ अपनी लडकी को सलाह देती है कि वह भरपूर जीवन जिए। नाम पट्टिका में कृष्णाजी ने स्त्री पुरुष को परस्पर पूरक के रूप में प्रस्तुत किया है।

▶ एक दूसरे से अलग, मनोवैज्ञानिक और व्यावहारिक ढाँचे के नारी पात्र

इन्होंने अपनी कहानियों और उपन्यासों में नारी जीवन की यथार्थता व मानवीय संवेदनाओं को बहत्तर तरीके से उजागर किया है। स्त्री की जैविक माँगों को अनिवार्य माननेवाली लेखिका उसकी यौनिकता को भी प्रमुख स्थान देती है। इसलिए साहित्य जगत में वे बोल्ड औरत की लेखिका बन जाती है। कृष्णा समय से आगे रहनेवाली

▶ साहित्य जगत में बोल्ड औरत की लेखिका नाम से जाने जाते हैं

हिन्दी साहित्य की ऐसी अप्रतिम साहित्यकार थी, जिन्होंने नारी अस्मिता को उस दौर में रेखांकित किया था जब नारी विमर्श की दूर दूर तक आहट भी नहीं थी। उन्होंने सात दशक तक लिखा। एक से बढकर एक कई कालजयी रचनाएँ दीं। वे हिन्दी साहित्य की ऐसी रचनाकार रहीं, जिन्होंने सबसे ज़्यादा ऐसे नारी चरित्रों को गढा, जो न सिर्फ नारी की पारंपरिक छवि को तोडनेवाली थीं बल्कि स्वाधीनता, संघर्ष और सशक्तता के मामले में पुरुषों के समकक्ष खडी थीं। कृष्णा के लेखन में देह का प्रश्न जहाँ कहीं भी आया है, वह अत्यंत सधे संतुलित रूप में है। कृष्णा के नारी पात्र जिस ज़मीन पर रहकर संघर्ष करती हैं यह ज़मीन उनकी अपनी है। वास्तव में ये पात्र नारीवाद की अवधारणाओं को प्रस्तुत करने के लिए नहीं रचे गये हैं।

वे अनेक पुरस्कारों से सम्मानित हुई- साहित्य अकादमी पुरस्कार, साहित्य अकादमी का फेसोशिप और सर्वोच्य सम्मान ज्ञानपीठ।

3.1.1.4 नासिरा शर्मा

▶ मध्यवर्गीय मुस्लिम परिवार की समस्याएँ, शोषित एवं पीडित नारी

नासिरा शर्मा समकालीन हिन्दी लेखन जगत की अग्रणी लेखिका है। आपने कहानी, उपन्यास, कविता, लेख, संस्मरण, रिपोर्ताज, नाटक, आलोचना और पत्रकारिता के माध्यम से साहित्य जगत में अपनी कलम से जादू चलाया है। इनका जन्म 22 अगस्त 1948 को इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश में हुआ। इनके कथा साहित्य के विषय रहे हैं मध्यवर्गीय मुस्लिम परिवार की समस्याएँ, शोषित एवं पीडित नारी की दुर्दशा, आर्थिक-सामाजिक समस्याएँ, प्रेम के बदलते दृष्टिकोण आदि।। ये जीवन की कटु सच्चाइयों से जूझती हुई भयावह स्थिति से साक्षात्कार कराती हैं। इनके प्रमुख उपन्यास हैं 'सात नदियाँ एक समन्दर', 'शाल्मली', 'ठीकरे की मँगनी', 'ज़िन्दा मुहावरे', 'अक्षयवट', 'कुइयाँजान', 'पारिजात', 'ज़ीरो रोड', 'कागज़ की नाव' आदि। कहानी संकलन हैं 'इब्ने मरियम', 'शामी कागज़', 'पत्थर गली', 'संगसार', 'सबीना के चालीस चोर', 'दूसरा ताजमहल', 'खुदा की वापसी', 'इन्सानी नस्ल', 'बुतखाना' आदि।

मुस्लिम परिवार में जन्म लेने के कारण उसका रेशा रेशा से वे परिचित है। आपने कथा साहित्य में खूब बेबाकी से उनपर प्रकाश डाला है। स्त्री की पीडा संत्रास और कुँठा को खत्म कर उसके जीवन में स्वतंत्रता, उत्साह और उमंग को भरने की कोशिश की। ये स्त्रियों के अन्दर की कुँठा और अकेलापन को बडे ही मनोवैज्ञानिक तरीके से उजागर करती हैं। नासिरा शर्मा नारी की स्थिति को एक व्यापक फलक पर परिभाषित करती है। इनका पहला उपन्यास 'सात नदियाँ एक समुन्दर' ईरान के आधुनिक इतिहास में

▶ समाज को सन्देश देता है कि नारी किसी से कमज़ोर नहीं है

खूनी दौर की पृष्ठभूमि में स्त्री के उत्पीडन के विभिन्न रूपों का आंकलन प्रस्तुत करता है। इस में यह दिखाया गया है कि नारी का यह देशप्रेम और जान देने का साहस एक पुरुष सत्तात्मक समाज को सन्देश है कि नारी किसी क्षेत्र में पुरुष से कमज़ोर नहीं है। 'ज़िन्दा मुहावरे', घर परिवार ही नहीं, अपितु इसके साथ ही समाज का विशाल कैनवास भी प्रतिफलित करता है। 'ठीकरे की मंगनी में' मुस्लिम परिवार में एक शिक्षित लडकी के विद्रोह की कहानी है। आज़ादी के बाद की संघर्षशील लडकी जो अपनी मेहनत और योग्यता से साबित करती है कि पितृसत्ता में स्त्री की अपनी पहचान भी होती है। महरुख हर हालत में ढली हुई नारी थी, जिसे कोई तोड नहीं सकता।

▶ ईर्ष्या का भाव जागता है

'शाल्मली' उपन्यास में नायिका शाल्मली घर और दफ्तर के दोहरे उत्तरदायित्व को अत्यंत सुचारु रूप से निभाती है। परंतु पति नरेश में पुरुष का अहं तथा पत्नी की उच्च पदस्थता के प्रति ईर्ष्या का भाव जागता है। पति हर प्रकार से उसपर अपना आधिपत्य स्थापित करना चाहता है। उसकी सहेली संबन्ध विच्छेद की सलाह देती है तो शाल्मली कहती है- "तलाक उसकी समस्या का समाधान नहीं, औरतों के पास दो ही अभिव्यक्तियाँ हैं। या तो सर झुका देना या समस्या को अधूरा छोड सर कटवा लेना। मेरा विश्वास न घर छोडने पर है, न तोडने पर, न आत्महत्या पर है, न अपने को किसी एक के लिए स्वाहा करने में है। मैं तो घर के साथ औरत के अधिकार की कल्पना भी करती हूँ और विश्वास भी।"

▶ निम्नवर्गीय तथा कामकाजी महिलाओं की समस्याओं का वर्णन

'ठीकरे की मंगनी' में मुस्लीम समाज में स्त्री की दशा व मुस्लिम महिलाओं द्वारा अपने अस्तित्व की लडाई से संबन्धित कथा है। इनके उपन्यासों में इनके भोगे हुए यथार्थ को अभिव्यक्ति दी गई है। नासिरा के साहित्य में विशेषतः निम्नवर्गीय तथा कामकाजी महिलाओं की समस्याओं पर ध्यान केंद्रित है।

▶ स्त्री का जीवन ठीकरे की तरह बेमोल है

'ठीकरे की मंगनी' का कथानक एक नारी के सीधे सरल और मूल्याधारित जीवन पर है। महरुख की उसका मंगेतर कुछ दिनों बाद उसके सामने फिर से शादी का प्रस्ताव रखता है। तब वह कहती है:- शादी हर औरत और मर्द के लिए ज़रूरी है। मगर इतनी भी ज़रूरी नहीं कि वह बेजान दीवारोंऔर बेजान पलंगों से कर ले। मंगनी टूट जाती है तब वह विवाह न करने का निशचय करती है। समाज में फैले सारे ढोंग, दोगलेपन, भ्रष्ट आचरण के बावजूद महरुख अपनी सीमा में रहते हुए बेदाग जी रही है। वह दृढता से हर विपरीत स्थिति का मुकाबला करती है। स्त्री का जीवन ठीकरे की तरह बेमोल है। महरुख कहती हैः जब तक औरत को ठीकरी माना जाता रहेगा, तब तक स्त्री-समता सपना ही रहेगा।

▶ इंसानी पीडाओं की जीवन्त अभिव्यक्ति

नासिराजी ने अपनी कहानियों में भी इनसानी पीडाओं के अहसास को जीवंत अभिव्यक्ति प्रदान की है। 'खुदा की वापसी' में धर्मग्रंथों से अलग रहकर धर्म के नाम पर स्त्री के शोषण का चित्र है। इसका प्रतिरोध भी इस कहानी में है। इसमें फरसाना अपना हक हासिल करने के लिए धर्म ग्रंथ का, पूरी गहराई के साथ अध्ययन करती

है और उसी को अपने तर्क के रूप में प्रस्तुत करती है। क्योंकि उसका शोषण धर्मग्रंथ का हवाला देकर किया गया था। 'दुसरा ताजमहल' कहानी में आधुनिक जीवन में होनेवाली मानसिक घुटन, कर्म व्यस्तता से उपजी उपेक्षा एवं नारी की सहज आकाँक्षा, उसमें उभरती निराशा, तनाव मुख्य है। एक पुरुष कार्यव्यस्त है, दूसरा नशे में धुत होकर आकर्षण फेंकता है। नारी को दोनों ओर से प्रेम नहीं मिलता।

3.1.1.5 प्रभा खेतान

- नारी से संबन्धित यथार्थवादी दृष्टि और अस्तित्ववादी विचार

हिन्दी साहित्य की सक्रिय स्त्रीवादी लेखिका एवं विलक्षण बुद्धिजीवी थी प्रभा खेतान। आधुनिक हिन्दी लेखिकाओं में डॉ. प्रभा खेतान ऐसी लेखिका हैं, जिनकी रचनाओं में युगबोध साफ झलकता है। प्रभा खेतान का जन्म 1 नवंबर 1942 में हुआ। इनके प्रमुख उपन्यास हैं:- 'आओ पे पे घर चलें', 'तालाबंदी', 'अग्निसंभवा', 'एड्स', 'छिन्नमस्ता', 'अपने अपने चेहरे', 'पीली आँधी', 'स्त्री पक्ष' आदि। 'अन्या अनन्या' इनकी आत्मकथा है। 'भूकंप' इनकी कहानी का नाम है। प्रभाजी के साहित्य में नारी से संबन्धित यथार्थवादी दृष्टि और अस्तित्ववादी सोच के दर्शन होते हैं। कविता, उपन्यास, निबन्ध, आत्मकथा, अनुवाद जैसी विविध विधाओं पर अपनी सशक्त लेखनी चलानेवाली प्रभाजी की प्रसिद्धि मूलतः 'पीली आँधी', 'छिन्नमस्ता' जैसे उपन्यास और 'स्त्री उपेक्षिता' नामक अनूदित ग्रंथ को लेकर है। विश्व विख्यात कृति 'दि सेकेंट सेक्स' का हिन्दी अनुवाद है- स्त्री उपेक्षिता। इस ग्रंथ द्वारा प्रभाजी ने सीमोन के विचारों का परिचय भारतीय पाठकों से कराया। हालाँकि उनके उपन्यासों की मुख्य समस्या स्त्री समस्या है, फिर भी समकालीन जीवन के विसंगति बोध, संत्रास, अकेलापन, स्त्री पुरुष मानसिकता, मज़दूर यूनियन का संघर्ष, व्यावसायिक जगत की मुश्किलें आदि का वर्णन भी देखने को मिलता है।

दाम्पत्य जीवन में आये बदलाव को प्रभा ने 'आओ पे पे घर चले', 'छिन्नमस्ता', 'स्त्री पक्ष' आदि उपन्यासों में चित्रित किया है। 'आओ पे पे घर चलें' में प्रभा ने भोगविलास में डूबी अमरीकी औरत के जीवन के भयावह सचाई को उजागर किया है। 'छिन्नमस्ता' में मारवाडी समाज के नारी जीवन के अन्तर्विरोधों और अन्तः संघर्षों को प्रामाणिक एवं यथार्थ रूप में उभारा है। छिन्नमस्ता के प्रिया और नरेंद्र का रिश्ता आधुनिक दाम्पत्य जीवन का सच्चा उदाहरण है। बाहर से देखने पर दोनों खुश हैं, असल में दोनों में कोई मेल नहीं। पत्नी के होते हुए भी अन्य स्त्रियों के साथ अनैतिक संबन्ध रखनेवाला और पत्नी की कामयाबी में ईर्ष्या प्रकट करनेवाला व्यक्ति है नरेंद्र। अपने पौरुष पर गर्व

▶ बदलते मानव के अमानवीय रूप का वर्णन

महसूस करनेवाले नरेंद्र का कथन उल्लेखनीय है:- "यह मत भूलो प्रिया कि मैं पुरुष हूँ इस घर का कर्ता। यहाँ मेरी मर्जी चलेगी। हाँ सिर्फ मेरी।" प्रिया का कथन भी उल्लेखनीय है:- "अपने पैरों पर खडी स्त्री का कोई निरादर नहीं कर सकता।" प्रिया बडे घर की बेटी और बहू होने पर भी एक इक्के का भी हिसाब उसे रखना पडता है। अपनी इच्छानुसार एक रुपया तक खर्च करने का मौका उसके पास नहीं थी। फिर भी वह इन सब मुश्किलों से ऊपर उठकर एक सफल व्यवसायी बन जाती है। वृन्दा आधुनिक विचारोंवाली है। वह सदियों से शोषित पीडित नारी की पंक्ति से अपने को अलग करने में सफल हैं। प्रभा ने अपने उपन्यासों में बदलते मानव के अमानवीय रूप का वर्णन खूब किया। 'छिन्नमस्ता' में ऐक ऐसे भाई का वर्णन है, जो अपनी सगी बहन और कोटीवाली में कोई फर्क नहीं समझता।

▶ पीली आँधी में चार पीढियों की नारियों की व्यथा कथा

मरील सिर्फ अपने लिए जीना चाहती है, बेटियों के लिए नहीं। माँ की इसी कूरता का चित्रण 'अग्निसंभवा' उपन्यास में है। उपन्यास की नायिका की सास उसको बेटी हुई है जानकर शिशु को चावल का माँड पिलाकर मार डालती है। 'पीली आँधी' में चार पीढियों की नारियों की व्यथा कथा को निरूपित किया गया है।

▶ स्त्री का मसीहा अन्य कोई नहीं, स्त्री स्वयं है

'अपने अपने चेहरे' की रमा, 'स्त्री पक्ष' की वृन्दा, 'पीली आँधी' की शोभा ऐसी औरतें हैं जिनके विचार परंपरागत विचारों से बिलकुल भिन्न हैं। रमा एक शादी शुदा व्यक्ति से प्यार करती है और उसके साथ अपनी ज़िन्दगी बिताना चाहती है। यहीं पर रमा समाज के बने बनाये नियमों को तोडना चाहती है। वृन्दा आधुनिक युग की स्वतंत्र विचारों वाली औरत है। दो बच्चों की माँ होते हुए भी पति से तलाक माँगकर अपनी आर्थिक सुरक्षा के लिए एक बुटिक खोलनेवाली मजबूत औरत है वृन्दा। स्त्री पक्ष में वृन्दा के माध्यम से लेखिका ने यह बताने की कोशिश की कि वैवाहिक जीवन से ज़्यादा स्त्री की आर्थिक सुरक्षा महत्वपूर्ण है। प्रभा की राय में स्त्री का मसीहा अन्य कोई नहीं, स्त्री स्वयं है।

▶ उपन्यासों की नायिकाएँ अपनी पहचान के लिए संघर्ष करती हैं

प्रभा के नारी पात्र अपनी आज़ादी, तडप और छटपटाहट को अपने वजूद से जोडकर परम्परागत नारी के कवच को त्यागकर मुक्ति के द्वार पर दस्तक देती है। उपन्यासों की नायिकाएँ जब अपनी पहचान के लिए संघर्ष करती हैं, परिवार और विवाह संस्था से विद्रोह करती हैं, तो वे सिर्फ पुरुष वर्चस्ववाद से विद्रोह नहीं करती है। बल्कि परंपरा से चली आ रही उन तमाम गलत रूढियों, मारवाडी धनिकों की कोठियों के भीतर की नारकीय क्षुद्रताओं और उपनिवेशवादी कुँठाओं से भी विद्रोह करती हैं।

3.1.1.6 चित्रा मुद्गल

समकालीन भारतीय लेखिकाओं में चित्रा मुद्गल का विशिष्ट स्थान है। ये आज के युग की परिवर्तित नव चेतना की प्रतिनिधि रचनाकार हैं। मुद्गलजी का जन्म 10 सितम्बर 1944 को चेन्नई में हुआ था। आपने उपन्यास एवं कहानियों के अलावा लेख, बाल कहानियाँ और बाल उपन्यासों की रचना भी की है। इनके प्रमुख उपन्यास हैं 'एक ज़मीन अपनी', 'आवाँ', 'गिलिगडु', 'एक काली एक सफेद', 'पोस्ट बॉक्स नं 203 नाला सोपरा'। इनके कहानी संकलन हैं 'ज़हर ठहरा हुआ', 'लाक्षागृह', 'अपनी वापसी', 'इस इनाम में', 'जगदंबा बाबू गाँव आ रहे हैं', 'मामला आगे बढेगा अभी', 'जिनावर', 'केंचुल', 'भूख', 'लपटें', 'आदि अनादि'। इनके आलावा बाल कथा, बाल उपन्यास, लेखनाट्य रूपान्तर सभी क्षेत्रों नें इनका योगदान है।

▶ आज के युग की परिवर्तित नव चेतना की प्रतिनिधि रचनाकार

समकालीन हिन्दी रचना जगत में स्त्री अस्मिता की स्थापना केलिए संग्रामि निरत लेखिका। इनकी चिंतन और संवेदना के बीच में नारी की व्यथा और संघर्ष है। उनका साहित्य गहरे अनुभव पर निमित है।

अपने उपन्यास 'एक ज़मीन अपनी' में लेखिका ने सिंदूर को दासीत्व का चिह्न माना है। सिंदूर के कारण पुरुष उसे भोगवस्तु मानता है। लेखिका की राय में पुरुष से स्वतंत्र होना है तो, पहले उन्हें सिंदूर पोंछना होगा। लेखिका औरत को मात्र पत्नी बनकर जीने से भी इनकार करती है- "मैं पत्नी नहीं, सहचरी बनना चाहती हूँ। पत्नी शब्द से मुझे दासीत्व की बू आती है। इस शब्द ने हमारे समाज में अपनी गरिमा खो दी है।" प्रस्तुत उपन्यास में आधुनिक कामकाजी विद्रोही नारी का रूप उभरकर आया है। 'आवाँ' उपन्यास नारी जीवन की बहुआयामी स्थितियों को उभारता है। नारी जीवन का विशद विश्लेषण इसमें है। इसमें समाज के विभिन्न वर्गों की नारियों के जीवन के विभिन्न पहलुओं पर सामाजिक दृष्टि से विचार विमर्श किया गया है। इस उपन्यास की स्मिता की बडी बहन का, उसके पिता द्वारा बलात्कार किया जाता है। वह गर्भिणी भी बन जाती है। उसकी मानसिक स्थिति बिगड जाती है। स्मिता अपने पिता से इसका प्रतिशोध भी लेती है। इस उपन्यास में भी नारी पात्र की प्रमुखता है। श्रम करनेवाली महिलाओं पर आधारित उपन्यास है। इसमें मैटेर्निटी लीव से वंचित स्त्रियों की स्थिति को भी चित्रित किया गया है। आधुनिक युग के बदलते परिवेश के परिणाम स्वरूप नारी के विविध रूपों के बदलाओं का चित्रण इसमें है।

▶ 'आवाँ' नारी जीवन की बहुआयामी स्थितियों को उभारता है

चित्राजी की कहानियाँ ऊपरी तौर से किसी वाद या राजनीतिक प्रतिबद्धता का शोर नहीं करतीं। ये कहानियाँ समकालीन नारी जीवन की त्रासदी, नारी का स्वाभिमान, उनकी अदम्य संघर्षशीलता और विद्रोह का खुला दस्तावेज़ है। 'दरमियान' कहानी स्त्री शरीर एवं स्त्री मन से संबन्धित है। इसमें घर और बाहर की ज़िम्मेदारी निभाती स्त्री की समस्याएँ हैं। 'अपनी वापसी' कहानी में आधुनिक समस्याओं का खुलकर वर्णन है। इसमें पत्नी आधुनिकता से सामंजस्य स्थापित न कर पाने के कारण और बच्चों व पति द्वारा उपहास का पात्र बनाये जाने के कारण अपने आपको घर परिवार के प्रति तटस्थ कर लेती है। चित्राजी के जीवन के कटु यथार्थ एवं सुख दुःखों से जुडी संकलन

▶ समकालीन नारी जीवन की त्रासदी, स्वाभिमान, संघर्षशीलता और विद्रोह का खुला वर्णन

है 'जगदंबा बाबू गाँव आ रहे हैं'। समकालीन जीवन विशेषकर नारी जीवन की त्रासदी ही नहीं, आज की नारी का स्वाभिमान, उसकी अदम्य संघर्षशीलता और सार्थक विद्रोह उनमें अभिव्यक्ति है। 'लपटें' चित्राजी की नारीमुक्ति की कहानियों का संकलन है। इसकी कहानियों में मध्यवर्गीय नारी अपने अस्तित्व और स्वाभिमान की रक्षा करने के लिए पुरुष प्रधान समाज द्वारा किए अवमूल्यन से जूझती रहती हैं। 'शून्य' कहानी में सरला नामक पात्र तलाक के बाद आत्मनिर्भर बनती है। वह स्व के प्रति जागरूक होकर अपनी आत्मा और अस्तित्व की रक्षा करती है। 'प्रोमोशन' कहानी की ललिता सुभाश की कुँठाओं द्वारा रचे हुए सत्य को अपनी नियती नहीं बनाती और पति को ज्यों का त्यों छोडकर आफिस के लिए निकल पडती है।

▶ लकडबग्घा और मुआवज़ा कहानी नारी शोषण खुला चित्रण

'लाक्षागृह' कहानी नारी विमर्श का उत्तम उदाहरण है। यह एक पढी लिखी कामकाजी स्त्री के संघर्ष और उसके अंतर संसार को सामने लाती है, जहाँ उसकी निजता और उसका स्वाभिमान कदम कदम पर तिरस्कृत है। स्त्री के आत्म सम्मान तथा निजता के पक्ष को यह कहानी उद्घाटित करती है। 'लकडबग्घा' वास्तव में सामंती शोषण, विशेषकर विधवा शोषण के विरुद्ध एवं स्त्री शिक्षा की वकालत के साथ पर्दे में बंदी स्त्रियों के विरोध की कथा है। 'मुआवज़ा' कहानी में चित्रा ने समाज की उस प्रवृत्ति पर प्रकाश डाला है, जिसमें पुरुष नारी का जीवन भर शोषण करता है, किन्तु उसकी मौत के बाद भी उसपर अपनी मुल्कियत स्थापित करना चाहता है।

▶ निम्न वर्ग की संवेदना और नारी का विद्रोही रूप

चित्रा मुद्गल की इन कहानियों में भारतीय नारी के एक नवीन चरित्र का बिंब उभरता है, जो अपने अधिकारों के प्रति जागरूक नवीन चेतना का परिचायक है। वे कहानियों में जीवन के कटु यथार्थ एवं त्रासद स्थिति के बीच नारी की अस्मिता, स्वावलंबन, स्वाभिमान को तीक्ष्णता से मुखरित करती हुई विद्रोह की सार्थक भूमिका को व्यक्त करती हैं। चित्राजी के नारी विमर्श में नारीवाद की चिनगारियाँ नहीं, बल्कि स्त्री पुरुष संभावना के ज़रिए नारी मुक्ति एवं नारी उत्थान की चाह है। लेकिन नारी उत्पीडन के प्रति विरोध उनकी रचना में प्रखर है। निम्न वर्ग की संवेदना और नारी का विद्रोही रूप इनके लेखन का मुख्य विषय है।

3.1.1.7 मृदुला गर्ग

समकालीन कथा साहित्य में मृदुला गर्ग अपने आधुनिक दृष्टिकोण और सशक्त वाणी के लिए पहचानी जाती है। मृदुला गर्ग आधुनिक युग में बोल्ड लेखिका के रूप में जानी जाती है। इनका जन्म 25 अक्तूबर1938 को कोलकत्ता में हुआ था। इन्होंने कहानी,

▶ आधुनिक दृष्टिकोण और सशक्त वाणी

उपन्यास, नाटक अनुवाद आदि क्षेत्रों में अपनी प्रतिभा का परिचय दिया। इनके प्रमुख उपन्यास हैं उसके हिस्से की धूप, 'वंशज', 'चित्त कोबरा', 'अनित्य', 'मैं और मैं', 'कठगुलाब', 'मिलजुलमन', 'वसु का कुटुम' आदि। इनके कहानी संकलन हैं कितनी कैदें, टुकडा टुकडा आदमी, डैफोडिल जल रहे हैं, ग्लेशियर से, उर्फ मैम, शहर के नाम, 'यहाँ कमलिनी खिलती है', 'बाल गुरू', 'बेंच पर बूढे' आदि चर्चित कहानियाँ।

▶ रिश्तों का खोखलापन, नारी की छटपटाहट, आधुनिक युग में मूल्यों का विघटन, उच्चवर्गीय जीवन की विसंगतियाँ आदि का चित्रण

उपन्यास 'चितकोबरा' की रचना प्रेम विवाह और सेक्स इन मूलभूत तथ्यों को लेकर लिखी गयी है। इसकी नायिका मनु पति और प्रेमी के बीच में है। मनु अपना मन रिचर्ड को देकर तन से पति के साथ जी रही है। यह भारतीय नारी की नियती है। वैवाहिक जीवन तोडने के भय से उसे प्रेमहीन सेक्स भोगना पडता है। यह दाम्पत्य मान्यताओं को नकारनेवाला उपन्यास है। इसमें प्रेम व सेक्स से संबन्धित भारतीय आदर्शरूपी मूल्यों को नकारते हुए पाश्चात्य संस्कृति के नवीन मूल्यों के साक्ष्य को स्थापित किया गया है। 'उसके हिस्से की धूप' उपन्यास में मृदुलाजी ने नारी जीवन के संघर्ष व उनसे उत्पन्न मन की विभिन्न स्थितियों का चित्रण कर स्त्री व पुरुष के संबन्धों को गहराई के साथ परखा है। इसमें स्त्री व पुरुष के संबन्धों की नई व्याख्या कर उसको परिभाषित किया है। 'मैं और मैं' उपन्यास में राकेश अपनी पत्नी से इस प्रकार बातचीत करता है, जो पुरुष प्रधान समय की सोच को दर्शाता है। 'कठगुलाब' उपन्यास में बेटा-बेटी के भेद को दर्शाया गया है। विपिन नीरजा से कहता है- मुझे तुमसे ऐसा ही बेटा चाहिए। क्या तुम मेरे स्पर्श तुम्हारे गर्भ में रखकर मुझे एक बेटा दोगी? यह सुनकर नीरजा का अस्मिताबोध, स्वाभिमान खंडित होता है। इस उपन्यास की स्मिता अपने जीजाजी की लंपटता और लोलुपता की शिकार बनती है। नारी जीवन की सबसे विकट समस्या बाँझपन को अभिव्यक्त करने के लिए इस प्रतीक विधान की योजना की गयी है। अपनी अस्मिता को तलाशकर सफलता पानेवाली अनेक स्त्री पात्रों का चित्रण इसमें है। मृदुलाजी के उपन्यासों में रिश्तों का खोखलापन, नारी की छटपटाहट, आधुनिक युग में मूल्यों का विघटन, उच्चवर्गीय जीवन की विसंगतियाँ आदि को दर्शाया गया है।

▶ स्वतंत्र अस्तित्व चाहनेवाली नारी

मृदुलाजी की कहानियों की अधिकांश नारी पात्र अपने स्वतंत्र अस्तित्व बनाना चाहती हैं। पुरुष प्रधान समाज में स्त्री से, किसी के सामने सिर झुकाये बिना सीना तानकर जीने का एलान भी मृदुलाजी अपनी कहानियों द्वारा करती हैं। इनकी कहानियाँ वैयक्तिक से सामाजिक तथा सामाजिक से दारशनिक बनती नज़र आती हैं। उनकी कहानियों में नारी की मानसिकता की विभिन्न परतें अत्यंत सूक्ष्मता एवं शालीनता के साथ खुलती जाती हैं। लीक से हटकर सोचने के लिए मज़बूर करनेवाली उनकी कहानियाँ पाठकों से विशिष्ट संवेदना की माँग करती हैं।

मृदुलाजी की 'हरीबिंदी' कहानी में ऐसी पत्नी का चित्र है, जो स्वतंत्र चेता व्यक्तित्व संपन्न शिक्षित एवं आत्मनिर्भर है। इस कहानी की पत्नी अतिथि स्वतंत्रता चाहती है। मृदुलाजी की कहानियों में नारी के विविध रूपों का चित्रण है। उनकी कहानियों में भारतीय स्त्री की संपूर्ण गाथाएँ- सुख दुःख, हर्ष विषाद, मान अपमान और अपेक्षा उपेक्षा

आदि अनेक पक्ष है। साथ ही नारी की जटिल मानसिकता और अस्मिता का संघर्ष भी है। 'वितृष्णा' कहानी में नारी के विद्रोह की भावना को व्यक्त किया गया है। इस कहानी में शालिनी और दिनेश के दाम्पत्य जीवन में फैले तनाव ने उनकी ज़िन्दगी को बेस्वाद और उबाउ बना दिया। नायिका शालिनी किसी भी तरह के समझौते के लिए तैयार नहीं। 'तुक' कहानी की नायिका मीरा पति के प्रति पूर्ण रूप से समर्पित है। पर पति कोई समझौते के लिए तैयार नहीं। वह अपने को कोसती है और कहती है कि मैं इस युग में मिसफिट हूँ। मैं जानती हूँ मैं उसे ऐसे ही प्यार करती रहूँगी। 'मेरी कहानी' अत्यंत मार्मिक कहानी है इसमें मीता का चित्रण एक बोल्ड नारी के रूप में हुआ हुआ है। पति महेंद्र को पता चलता है कि मीता माँ बननेवाली है तो अबोर्शन के लिए प्रेरित करता है। पर मीता डटकर कहती है कि यह मेरा निजी मामला है। वह अबोर्शन करवाने नहीं देती है और बच्चे की परवरिश के लिए एक अच्छी नौकरी की तलाश में निकल पडती है। 'खरीदार' कहानी में लेखिका ने विवाह रूपी संस्था को नकारा और नारी शिक्षा पर बल दिया। 'यह मैं हूँ' कहानी में विशेष रूप से सामाजिक जीवन पर एक स्त्री.. की व्यथा का चित्रण है। 'मीरा नाची' कहानी में स्त्री विमर्श को दर्शाया गया है। इसमें लेखिका ने नारी को मानव के रूप में देखने के लिए प्रेरित किया है। विवाह को सामाजिक व्यवस्था मानकर स्त्री हमेशा समझौता करती रहती है। फिर भी उसे हताशा एवं कुँठा ही मिलती है। इसका वर्णन 'ग्लेशियर' कहानी में है। 'मेरे देश की मिट्टी अहा' कहानी की शुरुआत से अंत तक नायिका अपनी अस्मिता, अपने स्वाभिमान पर सदा सचेत रहती है। वहाँ वह समझौता नहीं करती। यह उसके सशक्त होने का सबसे बडा गुण है।

▶ 'मीरा नाची' कहानी में स्त्री विमर्श को दर्शाया गया है

मृदुलाजी के संपूर्ण कथा साहित्य में नारी अपने व्यक्तित्व की स्वतंत्र सत्ता को रूपायित करने में छटपटाती है। इन्होंने केवल महिला शोषण पर ही नहीं, अपितु पुरुष का शोषण व मध्यवर्गीय समाज की विभिन्न समस्याओं पर भी अपनी लेखनी चलायी है।

▶ नारी अपने व्यक्तित्व की स्वतंत्र सत्ता को रूपायित करने में छटपटाती है

3.1.1.8 मेहरुन्निसा परवेज़

श्रीमती मेहरुन्निसा परवेज़ साठोत्तर हिन्दी कथा साहित्य की प्रौढ एवं सशक्त लेखिका हैं। वे साठोत्तर महिला कथा जगत में मुस्लिम मध्यवर्गीय चेतना के अमर हस्ताक्षर हैं। इनका जन्म 10 दिसम्बर 1944 को बालाघाट(मध्य प्रदेश) में हुआ। इनके प्रमुख उपन्यास हैं- 'आँखों की दहलीज़', 'उसका घर', 'कोरजा', 'अकेला पलाश', 'समरांगण' और 'पासंग'। परवेज़जी के कहानीसंकलन हैं 'आदम और हव्वा', 'टहनियों का धूप',

▶ साठोत्तरी हिन्दी कथा साहित्य की प्रौढ लेखिका

'गलत पुरुष', 'फाल्गुनी', 'अम्मा', 'समर', 'मेरी बिस्तर की कहानियाँ', 'रिश्ते', 'एक और सैलाब', 'अयोध्या से वापसी', 'कोई नहीं', 'सोने का बेसर', 'ढहता कुतुब मीनार' आदि। प्रगतिशील लेखिका- मुस्लिम मध्यवर्ग का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत करके बदलते जीमन मूल्यों का प्रतिष्ठा की।

▶ शोषित एवं पीडित नारियों और उनकी समस्याओं का खुला चित्रण किया

मेहरुन्निसा ने कथा साहित्य में शोषित एवं पीडित नारियों और उनकी समस्याओं का खुला चित्रण किया है। पारिवारिक समस्याओं से जूझकर अपना अस्तित्व कायम रखनेवाली नारी चेतना उनकी रचनाओं की सबसे बडी विशेषता है। नारी संबन्दी समस्याओं और शोषण के लिए उत्तरदायी तत्कालीन सामाजिक व्यवस्था ही है, जिसका विस्तृत विवेचन परवेज़ ने कथा साहित्य में किया है।

▶ सामाजिक समस्या से लेकर नारी समस्याओं का स्वर सामने आता है

मेहरुन्निसा परवेज़ के उपन्यासों में सदैव ऐसी नारी पात्रों का चयन हुआ है जो परिवार और समाज में अपनी स्थिति बनाये रखने के विचार से जीविकोपार्जन के लिए स्वावलंबी बनी हैं। 'समरांगन पासंग' उपन्यास औरत की व्यथा, दुःख, हताशा तथा उसके संघर्ष को चित्रित करता है। इस उपन्यास में नायिका हमेशा दादी और अम्मा के बीच पासंग बनकर रहती है। वर्तमान समाज से टूटते रिश्तों के वातावरण में परवेज़जी रिश्ते और बंधनों के बीच रहनेवाली नारी की कथा को चित्रित करके समाज को रिश्तों के महत्व के बारे में चेताया। 'अकेला पलाश' में सामाजिक समस्या से लेकर नारी समस्याओं का स्वर सामने आता है। शिक्षित तथा आत्मनिर्भर नारी भी यदि अपनी स्वयं की पहचान पुरुष के द्वारा ही करती है तो हमें समझना होगा कि आज भी नारी स्वतंत्र नहीं है। लेखिका ने स्पष्ट किया है कि नारी का प्रयोग हमेशा वस्तु की तरह प्रत्येक मनुष्य करता है। विवाह के अवसर पर अधिकांश परिवार अपने को प्रगतिशील, आदर्शवादी एवं शिक्षित दर्शाने के चक्कर में दहेज लेने से इनकार कर देते हैं। परंतु विवाह के पश्चात् ये ही शिक्षित सभ्य लोग ताने मारने लगते हैं। 'कोरजा' उपन्यास में मेहरुन्निसा ने ऐसी ही वैचारिकता नानी के माध्यम से प्रकट की है:- "माना कि वे लोग कहते हैं कि लडकी को एक जोडे से विदा कर दो। आज उनकी गरज है, उनका लडका आधी उम्र का है। इसलिए लडकी नहीं मिल रही तो ऐसा कह रहे हैं। पर कल यही लोग लडकी को ताना देंगे कि तेरे मायके से तो कुछ नहीं मिला।"

परवेज़ जी की कहानियों में नारी संवेदना के विविध रूप देख सकते हैं। 'खाली आँखों की पीडा' में नौकरी करनेवाली महिला की समस्याओं का चित्रण है। आजकल कामकाजी स्त्री पैसे कमाने का साधन मात्र है। नौकरी करनेवाली अविवाहित स्त्री की समस्याएँ विभिन्न हैं, जिसका संवेदनात्मक चित्रण उमा के माध्यम से परवेज़जी ने किया है। 'एक और सैलाब' तथा 'अयोध्या से वापसी' में त्यागमयी नारी का चित्रण है। एक और सैलाब कहानी की नीलू अपने बच्चों के लिए त्याग करती है। अयोध्या से वापसी की नायिका नीरा हमेशा अपने पति द्वारा छली जाती है। 'अपने अपने पिंजरे' में पारिवारिक जीवन में तनाव और घुटन झेलती नारी का चित्रण है। माया के माता पिता आपसी तनाव में बंधे हैं। माया के पिता माया की माँ की ओर ध्यान नहीं देता।

▶ नारी संवेदना के विविध रूप

वह अपने घर की आया के साथ शारीरिक संबन्ध बनाये रखता है। सबकुछ जानकर भी माया की माँ चुप है। यह देखकर माया सोचती है:- "एक ही मोह में बंधे हुए, एक ही वेदना में तडपते हुए पर...पर थोडी देर के बाद यह दोनों अलग हो जाएँगे.... अपनी अपनी सीमा में अपने अपने दायरे में, जो कभी नहीं टूटेगा।" सीढियों का ठेका में पारिवारिक जीवन की विडंबनाओं को तन्मयता से अभिव्यक्त किया गया है। 'खामोशी की आवाज़' में पति पत्नी के संबन्धों की अस्तित्वहीनता को नये संदर्भ में व्याख्यायित किया है। आकाशनील कहानी नौकरी में जानेवाली नारियों को कार्यालय में ही नहीं, बल्कि घर मे भी अनेक समस्याओं का सामना करना पडता है। इस कहानी की तरु की स्थिति ऐसी है। कार्यालय में काम करनेवाली नारियों को बहुत से कष्टों को भोगना पडता है। यह माननीय है। पर कार्यालय में काम किये बिना अफसर के यौन शोषण में फंसनेवाली नारी का चित्रण बौनामौन कहानी में है। विवाह के पहले कितने अरमानों को लिये नारियाँ घूमती हैं। पर विवाह के बाद उसके जीवन का चित्र विपरीत निकलता है तो नारी की दशा कैसी होगी, उसी को दर्शानेवाली कहानी है 'फालगुनी'। ओस में डूबे तालाब में पति के अवैध संबन्ध से न सिर्फ पत्नी को कष्ट सहना पडता है, बल्कि बच्चों की भी स्थिति नाजुक बन जाती है। मुन्नी को जब सच्चाई जानने को मिली कि उसके बाप का संबन्ध किसी दूसरी औरत से है तो वह सकपकाती है।

▶ सभी तरह की नारियों का चित्रण

परवेज़ जी के कथा साहित्य में नारी शिक्षा का अभाव, वैवाहिक प्रथा एवं समस्याएँ, दहेज प्रथा, यौन इच्छाओं की आपूर्ति झेलनेवाली नारी, प्रेम की कुरबानी, बिना ब्याही माँ की विडंबनाएँ, वैवाहिक असंतुष्टी झेलनेवाली नारी, बचपन की समस्या ग्रस्त नारी, पर्दा प्रथा का विरोध करनेवाली नारी, पलायन से ग्रसित नारी, वेश्या नारी और उनकी समस्याएँ, वैधव्य से अभिशप्त नारी, विद्रोही नारी, विद्रोह कर पाने में असमर्थ नारी, सभी तरह की नारियों का चित्रण है।

3.1.1.9 अलका सरावगी

▶ नारी शेषण, मन की वेदना, घुटन, पीडित नारी की संवेदना

वर्तमान दौर में स्त्री चेतना से जुडी स्त्री मुक्ति और अस्मिता के संकट व पहचान के संघर्ष को व्यक्त करनेवाली आधुनिक साहित्यकार हैं अलका सरावगी। इनका जन्म 17 नवंबर 1960 को कोलकत्ता में हुआ था। इनके प्रमुख उपन्यास हैं 'कलिकथा वाया बायपास', 'शेष कादंबरी', 'कोई बात नहीं', 'एक ब्रेक के बाद', एक सच्ची झूठ गाथा आदि। कहानी संग्रह हैं 'कहानी की तलाश में', 'दूसरी कहानी'। इन्होंने अपने कथा साहित्य में तत्कालीन समाज का यथायोग्य चित्रण कर बडी सजगता के साथ मानव जीवन की पीडा, नारी जीवन का यथार्थ चित्रण, मन की वेदना एवं घुटन, जीवन की

त्रासदी, नारी शोषण, पीडित नारी की संवेदनाओं के माध्यम से स्त्री विमर्श को बडी सशक्तता के साथ तथा यथार्थता के आधार पर प्रस्तुत किया। वे चरित्रों और देशकाल को प्रामाणिकता के साथ प्रस्तुत करनेवाली कथाकार हैं। उनके उपन्यास स्त्री अस्मिता के नये प्रश्न हमारे सामने रखते हैं। आप वर्तमान दौर में स्त्री चेतना से जुडी स्त्री मुक्ति और अस्मिता के संकट व पहचान के संघर्ष को व्यक्त करनेवाली आधुनिक साहित्यकार हैं। इनके कथा साहित्य में स्त्री जीवन के विभिन्न पहलुओं और नितांत बदली हूई तस्वीरों को सामने रखा है।

▶ पाठक को कथा की अपनी दुनिया की ओर खींचती हैं

इनके उपन्यास पाठक को बाहर की दुनिया में सीधे नहीं ले जाते, बल्कि कथा की अपनी दुनिया की ओर खींचते हैं। ये उपन्यास स्त्री अस्मिता के प्रश्न सामने लाते हैं। 'एक ब्रेक के बाद' उपन्यास में प्रेम के जिस रूप की आकाँक्षा गुरुचरण करता है, वह किसी को किसी भी प्रकार के बंधन में नहीं बाँधता। वह प्रेम के विषय में कहता है:- "मैं देखना चाहता हूँ क्या कोई औरत मेरेलिए कृष्ण की मीरा बन सकती है कोई राधा की तरह प्रेम कर सकती है लोग शर्तों पर प्रेम करते हैं। लोग कुनकुना प्रेम करते हैं। ..प्रेम के आभास को प्रेम समझ लेते हैं।" वह प्रेम के लिए समझौता नहीं करता।

▶ नारी के विभिन्न रूपों, मनस्थितियों, संवेदनाओं के टकराव बिखराव आदि को सशक्त रूप से प्रकट किया गया

सामाजिक समस्या को उन्होंने कहानियों के माध्यम से हमारे सामने रखा। स्त्री पूरे आत्मविश्वास के साथ स्वतंत्र सम्मान के साथ अपना जीवन जी सके, ऐसे समाज को बनाने की ज़रूरत अपनी कहानियों के माध्यम से जताई है। अपनी कहानियों के माध्यम से मानवी जीवन का दृश्य जो उन्होंने हमारे सामने रखा है, इनमें स्त्री विमर्श को व्यक्त करके उसपर विचार के लिए हमें प्रेरित किया है। इन कहानियों में नारी के विभिन्न रूपों, मनस्थितियों, संवेदनाओं के टकराव बिखराव आदि को सशक्त रूप से प्रकट किया गया है।

▶ कथा साहित्य जीवन से जुडी बातें

अलकाजी का कथा साहित्य जीवन से जुडा साहित्य है। जीवन की वास्तविक घटनाओं एवं समस्याओं का चित्रण उनके कथा साहित्य में देखने को मिलता है। अपने कथा साहित्य के माध्यम से आपने स्त्री जीवन के विभिन्न पहलुओं को उजागर किया है। वर्तमान समाज में स्त्री की वास्तविक स्थिति को दर्शाया है। कथासाहित्य द्वारा स्त्री विमर्श को दिखाने का प्रयत्न किया। स्त्री की प्रचलित एवं प्रचारित छवि को तोडने का प्रयास भी हुआ है। अपने प्रथम उपन्यास 'कलिकथा वाया बाइपास' को केन्द्रीय साहित्य अकादमि पुरस्कार(2001) मिला। सुभद्रा कुमारी चौहान पुरस्कार से भी सम्मानित हुए।

3.1.1.10 अल्पना मिश्र

▶ हिन्दी कहानी की सबसे मज़बूत परंपरा का एक विद्रोही और दहकता हुआ नाम

इक्कीसवीं सदी की महिला कथाकारों में अल्पना मिश्र का नाम उल्लेखनीय है। ये हिन्दी के अनकन्वेंशनल राइटर के रूप में प्रसिद्ध हैं। अल्पना मिश्र हिन्दी कहानी की सबसे मज़बूत परंपरा का एक विद्रोही और दहकता हुआ नाम है। इनका जन्म 18 मई 1969 को बस्ती, उत्तरप्रदेश में हुआ था। इन्होंने उपन्यास, कहानी, आलोचना एवं संपादन के क्षेत्र में गंभीर कार्य किया। इनके उपन्यास हैं 'अन्हियारे तलछट में चमका', 'अस्थिफूल' आदि। इनके कहानी संकलन हैं 'भीतर का वक्त', 'छावनी में बेघर', 'कब्र भी कैद औ जंजीरें भी', 'स्याही में सुरखाब के पंख', उपस्थिती अल्पना मिश्रः चुनी हुई कहानियाँ, दस प्रतिनिधि कहानियाँ।

▶ 'अस्थिफूल' उपन्यास में स्त्री और पृथ्वी का एक बडा रूपक बनाने की कोशिश है

अल्पना जी का उपन्यास 'अन्हियारे तलछट में चमका' में समाज में स्त्रियों की स्थिति को रेखांकित करता है साथ ही उनके शोषण के नये सूत्रों को भी है। उपन्यास में एक ओर लेखिका ने स्त्री की परम्परागत छवि को तोडते हुए स्त्री के आत्मनिर्भरता पक्ष को उजागर किया है। वहीं स्त्री के आत्मनिर्भर होने के बावजूद उसे आर्थिक स्वतंत्रता न मिल पाने के पक्ष को भी प्रस्तुत करना नहीं भूली हैं। इस दृष्टि से यह उपन्यास महत्वपूर्ण है। यह सच है कि आज स्त्री को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भरता तो मिलने लगी है, लेकिन आर्थिक स्वतंत्रता अब भी नहीं मिल पाई है। यह उपन्यास मुख्यतः चार संघर्षरत औरतों की कहानी है। 'अस्थिफूल' उपन्यास में भूख और गरीबी की मार झेलती निहत्थी लडाइयाँ लडती समान के हाशिये के स्त्रियाँ हैं। इस उपन्यास में जल जंगल और ज़मीन और आदिवासियों के साथ ही स्त्री शोषण को प्रमुखता से उठाया गया है। इस उपन्यास में स्त्री के गर्भ की खरीद फरोख्त है, साथ ही पृथ्वी के गर्भ की भी। इसमें स्त्री और पृथ्वी का एक बडा रूपक बनाने की कोशिश है।

अल्पनाजी अपनी कहानियों के लिए बहुत दूर नहीं जातीं, निकटवर्ती दुनिया में रहती हैं। इनकी कहानी 'अहल्या' की नायिका रूपा पढी लिखी और आधुनिक सोच विचार की हैं। वह जिससे प्यार करती थी, उससे शादी नहीं होती। और बिछुड भी जाती है। अपने बच्चे के मर जाने के बाद वह बहुत दुखित होती है और आगे एक बच्चा चाहती है। इसी बीच वह अपने प्रेमी राकेश से मिलती है। वह राकेश से बच्चा चाहती है। लेकिन पत्नी बनना नहीं। वह अपनी सहेली से कहती हैः "मैं बीज बैंक भी जा सकती हूँ, पर मुझे लगता है इसके लिए राकेश ही क्या बुरा है। यह शापित अहल्या नहीं, आधुनिक काल की अहल्या है। वह पाषाण बनने को तैयार नहीं।" रूपा कहती हैः- "औरतों के मामले में सारे धर्म एक ही जगह आकर रूक जाते हैं। औरतें आजतक धर्म को लेकर दंगा फसाद पर नहीं उतरी।" इनकी कहानियों में अधूरे तकलीफदेह, बेचैन, खंडित और संघर्ष शील मानव जीवन के बहुसंख्यक चित्र हैं। आज पाठक और कथाकार के बीच की दूरी कुछ अधिक ही बढती जा रही है। परंतु अल्पनाजी की कहानियों में यह दूरी नहीं मिलेगी। इनकी कहानियों में घरेलू और बाहरी दुनिया के तनाव में उलझी स्त्री की तस्वीर स्पष्ट तौर पर दिखाई देती है। आपका लेखन मध्यवर्गीय निम्न वर्गीय, निम्न मध्यवर्गीय स्त्रियों की समस्याओं पर ज्यादा केंद्रित हैं। अल्पना की राय में साहित्य में

जीवन आना चाहिए न कि स्त्री विमर्श के नाम पर रूढ कर दिया गया कोई फार्मुला। इनके 'कब्र भी कैद औ जंजीरें भी' संकलन की कहानियों में भूस्खलन, पलायन, जुल्म, दहेज, हत्याएँ, स्त्री शोषण से जुडी घटनाएँ हैं। ये कहानियाँ उत्पीडन के खिलाफ मानवीय आंदोलन का पक्ष रखती हैं। 'छावनी में बेघर' कहानी संकलन काफी चर्चित हुआ था। इस संकलन की कहानियों में स्त्री की अनकही वेदना, अनकहा दुःख, बडी गहराई से उतरता है। कहानियों की बुनावट, भाषा की कसावट, कम कर अधिक समझा देने की कोशिश है। पुरुष मानसिकता की सूक्ष्म विवेचना से अल्पना उन पुरुषों के मुखौटे उतार लेती है, जो स्त्रियों की स्वतंत्रता और उडान को स्वीकार नहीं कर पाते हैं। उनकी स्त्री कहानियाँ स्त्रियों की जद्दोजहद, उनकी स्थितियाँ, उनके सुख दुःख और उनके हक की लडाई के लिए विशेष समर्पित हैं। स्त्री की बात करती हुई अल्पनाजी उसमें पूर्णतः डूब जाती है, चाहे वह छोटी उम्र की हो या बडी उम्र की। स्त्रियों की ज़िन्दगी की छोटी-छोटी बातें उनके भावनात्मक संसार की कितनी बडी बडी बातें हुआ करती हैं- ये सब उनकी कहानी में चित्रित है। इसका उदाहरण है उनकी 'मुक्ति' कहानी। वे सिर्फ स्त्री विमर्श का झंडा लेकर नहीं चलती। उनके कथा साहित्य में आसपास की ज़िन्दगी, सामाजिक सरोकारों के प्रति उनका चिंतन व्यक्त होता है। 'मिड डे मील', 'तमाशा', 'लिस्ट से गायब' आदि इस श्रेणी की कहानियाँ हैं। 'मिड डे मील' कहानी का मुख्य पात्र फैक्ट्री में काम करनेवाली मज़दूर स्त्री है। गुमसुदा में ग्राम्य जीवन से नगर आयी नारी की लाचारी को बखूबी से चित्रित हैं। इन नौकरीपेशा नारी की दुविधाओं का सही अंकन समकानीन लेखिका श्रीमति अल्पना मिश्र ने किया है।

▶ नौकरीपेशा नारी की दुविधाओं का सही अंकन

'मुक्तिप्रसंग' कहानी के डॉ साहब भी पत्नी की तनख्वाह को सीधे उनके खाते में डालने का काम करते हैं, जिससे पत्नी तनिक भी संतुष्ट नहीं है। सह कर्मियों के बुरे व्यवहार से भी तंग हो चुकी है। 'मेरे हमदम मेरे दोस्त' कहानी की सुबोधिनी अपने साथ काम करनेवाले पुरुष कर्मचारियों के बर्ताव से परेशान है, जबकि उन्हें खुद के जीवन में भी काफी तकलीफें हैं। सुबोधिनी तलाकशुदा नारी है और अपने पूर्व पति की दुश्मनी को भी झेलनी पडती है।

▶ तलाकशुदा नारी की समस्याएँ

घर व दफ्तर के बीच के सफर में कामकाजी नारी को कई लंपट आदमियों का सामना भी करना पड़ता है। बस की भीड में ऐसे कई आदमी होंगे जो जान बूझकर नारियों के शरीर में टकराने, उनको छूने जैसे कामुक वृत्तियों के निर्वाह से अपने आप खुश होते हैं। 'मुक्तिप्रसंग' कहानी की नायिका के सामने भी एक ऐसे बूढे व्यक्ति बैठते हैं जिन्होंने नायिका से बातें करने की कोशिश के साथ नायिका के देह से सटकर रहने लगे।

▶ घर व दफ्तर के बीच के सफर में कामकाजी नारी को कई लंपट आदमियों का सामना भी करना पड़ता है

कभी कभी नारी को नौकरी के लिए घर से दूर किसी दूसरी जगह पर जाकर रहनी पडती है। अक्सर यह जगह उनके लिए नया व अजनबी होते हैं। ऐसे में उसे रहने के लिए वहाँ एक अच्छे व सुरक्षित जगह ढूँढना मुश्किल है। 'गैर हाज़िरी में हाज़िरी' कहानी की नायिका के लिए भी यह मुश्किल था कि उस अनजान शहर में उसके पैसों के हिसाब से एक स्वस्थ घर ढूँढना। कभी लोग एक अजनबी, अकेली लडकी को घर

▶ घर व दफ्तर के बीच की भागदौड में नारी को खुद के समय भी नहीं हैं

देने तैयार नहीं है तो कभी पैसे बढने के कारण घर नहीं ले सकते, कभी दूसरे लोगों के साथ घर बाँटने की नापसंदगी के कारण तो कभी घरवालों के शर्तों पर ऊब होकर घर नहीं ले सकते। कभी कभी घर व दफ्तर के बीच की भागदौड में नारी को खुद के बारे में सोचने का समय भी नहीं है। इन सब मुश्किलों के होते हुए भी नारी अपनी नौकरी नहीं छोडती है। इन सारी स्थितियों का चित्रण चीन्हा- अनचीन्हा कहानी में है।

Summarised Overview / संक्षिप्त अवलोकन

समकालीन स्त्री लेखन और जीवन के अनुभूत सत्य के बीच का फासला बहुत कम है। वास्तव में स्त्री का प्रतिरोध या चेतना की जागृति एक ही घटना नहीं है। इसमें सदियों से चली आ रही संघर्ष की अनेक मुद्दे है। इनकी रचनाओं में सांस्कृतिक नवोत्थान, शैक्षिक संस्थाएँ एवं नारीवादी आंदोलनों का प्रमुख हिस्सा है। समकालीन लेखिकाओं ने आज के जीवन की परिवर्तनशीलता और नारी जीवन के परिवर्तित मूल्यों को अत्यंत मार्मिकता के साथ चित्रित किया है। इन लेखिकाओं ने नारी शोषण की व्यथा का जीवन्त चित्रण किया है।

Assignment / प्रदत्त कार्य

1. समकालीन महिला कथाकारों की रचनाएँ जीवन से अछूता नहीं हैं- स्पष्ट कीजिए।
2. समकालीन कथाकार चित्रा मुद्गल के कथासाहित्य की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।
3. स्त्री विमर्श की दृष्टि से मेहरुन्नीसा परवेज़ की कहानियों एवं उपन्यासों का मूल्यांकन कीजिए।
4. उषा प्रियंवदा के कथा साहित्य की स्त्री चेतना पर टिप्पणी लिखिए।

Reference / संदर्भ ग्रंथ

1. स्वातंत्र्योत्तर कथा लेखिकाएँ - ऊर्मिला गुप्ता
2. स्त्री एवं सामाजिक प्रसंग - पीटर शागी

Suggested Reading / निर्धारित पुस्तक

1. बेघर - ममता कालिया
2. इक्कीसवीं सदी का पहवला दशक और हिन्दी कहानी - सूरज पालीवाल
3. इक्कीसवीं सदी का दूसरा दशक - सूरज पालीवाल
4. विमर्श के विविध आयाम - अर्जुन चव्हाण

Space for Learner Engagement for Objective Questions

Learners are encouraged to develop objective questions based on the content in the paragraph as a sign of their comprehension of the content. The Learners may reflect on the recap bullets and relate their understanding with the narrative in order to frame objective questions from the given text. The University expects that 1 - 2 questions are developed for each paragraph. The space given below can be used for listing the questions.

SGOU

इकाई 2

मृदुला गर्ग - हरी बिन्दी
अल्पना मिश्र - उपस्थिति

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- कहानीकार मृदुला गर्ग से परिचित होता है
- कहानी 'हरी बिन्दी' समझता है
- अल्पना मिश्र से परिचित होता है
- कहानी 'उपस्थिति' जानता है

Background / पृष्ठभूमि

मृदुला गर्ग

समकालीन कथा साहित्य में मृदुला गर्ग अपने आधुनिक दृष्टिकोण और सशक्त वाणी के लिए पहचानी जाती है। मृदुला गर्ग आधुनिक युग में बोल्ड लेखिका के रूप में जानी जाती है। इनका जन्म 25 अक्तूबर1938 को कोलकत्ता में हुआ था। इन्होंने कहानी, उपन्यास, नाटक अनुवाद आदि क्षेत्रों में अपनी प्रतिभा का परिचय दिया। इनके प्रमुख उपन्यास हैं उसके हिस्से की धूप, वंशज, चित्तकोबरा, अनित्य, मैं और मैं, कठगुलाब, मिलजुलमन, वसु का कुटुम आदि। इनके कहानी संकलन हैं 'कितनी कैदें', 'टुकडा टुकडा आदमी', 'डैफोडिल जल रहे हैं', 'ग्लेशियर से', 'उर्फ मैम', 'शहर के नाम', 'चर्चित कहानियाँ' आदि। इनके नाटक हैं एक और अजनबी, जादू का कालीन। निबंध संकलन हैं रंग ढंग, यात्रा विवरण है कुछ अटके कुछ भटके। इनकी कहानियों की मुख्य विशेषता महिलाओं के जीवन, उनके संघर्षों और अधिकारों पर। मानवीय संबन्धों कीन जटिलताओं एवं भावनाओं का सजग चित्रण है। इनकी भाषा सरकल और सहज है।

अल्पना मिश्र

अल्पना मिश्र हिन्दी की प्रतिष्ठित कथाकार हैं। इन्होंने हिन्दी साहित्य के लिए महत्वपूर्ण योगदान किया है। इन्होंने महिला लेखन को एक नई दिशा दी। महिलाओं के अनुभवों को केंद्र में रखकर समाज में महिलाओं की वर्तमान स्थिति पर गंभीर प्रश्न उठाये हैं। इनकी रचनाओँ में उपन्यास, कहानी और आलोचनात्मक लेखन शामिल हैं। 'अन्हियारे तलछट में चमका' और 'अस्थिफूल' इनके उपन्यास हैं। 'भीतर का वक्त', 'छावनी में बेघर', 'कब्र भी कैद औ' जंजीरें भी', 'स्याही में सुर्खाब के पंख', 'अल्पना मिश्रः चुनी हुई कहानियाँ', 'दस प्रतिनिधि कहानियाँ' आदि इनके कहानी संकलन हैं। सहस्रों विखंडित आईने में आदमकद, स्त्री कथा के पाँच स्वर,

स्वातंत्र्योतर कविता का काव्य वैशिष्ट्य आदि इनके आलोचनात्मक ग्रंथ हैं। उनकी कहानियों में समाज के विभिन्न पहलुओं, विशेषकर महिलाओं के जीवन और अनुभवों को बडी गहराई से चित्रित किया गया है। इनकी कहानियाँ गहरे अर्थों से भरी होती हैं। लेखन शैली सरल और सहज है। वे समाज में व्याप्त असमानता, महिलाओं के उत्पीडन और व्यक्तिगत संघर्षों जैसे विषयों को बडी संवेदनशीलता के साथ उठाती हैं। उनकी कहानियों के पात्र जीवंत एवं यथार्थवादी होते हैं।

Keywords / मुख्य बिन्दु

मृदुला गर्ग, मध्यवर्गीय जीवन, 'हरी बिन्दी' कहानी एक आधुनिक महिला की कहानी है, जो रोज़मर्या की ज़िन्दगी, सामाजिक अपेक्षा

Discussion / चर्चा

3.2.1 हरी बिन्दी (मृदुला गर्ग)

'हरी बिन्दी' मृदुला गर्ग द्वारा रचित कहानी है। इसमें वर्तमान आधुनिक नारी के मनोभावों का चित्रण किया गया है। यह परम्पराबद्ध, रूढ दाम्पत्य संबन्धों की यांत्रिकता से उत्पन्न, बोझिल मानसिकता पर लिखा गया अत्यंत सार्थक दस्तक है। लम्बे दाम्पत्य जीवन की ऊबकाई से छटपटाती, स्वच्छंदतापूर्ण अपने एकाध पल को जीने की आकाँक्षा रखनेवाली भारतीय नारी की मानसिकता का चित्रण हरी बिन्दी में है। कहानी की मुख्य पात्र आज की आधुनिक नारी का प्रतिनिधित्व करती है। वह अपने दाम्पत्य जीवन की घुटन से बेहद परेशान है। वह अपने दाम्पत्य जीवन के बन्धन से अलग सुकून के कुछ पल जीना चाहती है। वह सब कुछ करना चाहती है, जो वह अपने पति के साथ रहने पर नहीं कर पाती। एक बार उसका पति शहर से बाहर चला जाता है तो वह अपने मनमाफिक जीवन जीने के लिए स्वतंत्र हो जाती है। वह अपना मनमाना व्यवहार करने लगती है। वह सुबह देर से उठती है। बाहर घूमने जाती है। वह फिल्में देखती है। अजनबी के साथ स्वच्छंदता के साथ घूमती है। वह सब करती है, जो वह करना चाहती है। लेकिन इसके साथ वह अपनी मर्यादा का ध्यान भी रखती है। मृदुला की इस कहानी में कहानी की नायिका आज की आधुनिक नारी का प्रतिनिधित्व करती है। आज की आधुनिक नारी जो शर्तों पर जीने केलिए विवश है, वह अपना मनमाफिक जीना चाहती है। वह अपने ऊपर समाज का कोई बंधन नहीं चाहती। वह नारी अपनी मर्यादा जानती है, लेकिन अपनी स्वतंत्रता के अधिकार को पाना चाहती है। यह कहानी पुरुष प्रधान समाज के विरुद्ध एक नारी के विद्रोही मन को दर्शाती है।

▶ मुख्य पात्र आज की आधुनिक नारी का प्रतिनिधित्व करती है

प्रस्तुत कहानी में भारत की एक विवाहिता स्त्री एक दिन के लिए मान ले कि वह

विवाहित नहीं है, तो उसकी आम दिनचर्या में क्या क्या बदलाव आयेंगे इसपर विचारकर रही है। यह कहानी उस नैतिकता की कहानी है, जिसे हर व्यक्ति बदलते परिवेश के साथ साथ वैयक्तिक रूप में अनुभव करता है। प्रस्तुत विषय के माध्यम से समाज में नारी आज़ाद है या नहीं यह सवाल भी उठा रही है। शादी शुदा होने के बाद अपनी मर्जी के अनुसार जीने का मौका पाकर नायिका कैद से बाहर आये कैदी की तरह अपनी आज़ादी का मज़ा लेती है। समाज की वास्तविकताओं के प्रति लोगों का ध्यान आकृष्ट करके स्वप्न की दुनिया से बाहर आकर सफल सबल समाज बनने की प्रेरणा देना लेखिका का मुख्य उद्देश्य है। समकालीन समाज में दाम्पत्य जीवन की एकरसता पारिवारिक संबन्धों में बदलाव और तनाव लाती है। समाज में आज तलाक लेनेवालों की संख्या बढने के कारण भी यही है। इन समस्याओं पर भी विचार किया गया है।

▶ दाम्पत्य जीवन की एकरसता पारिवारिक संबन्धों में बदलाव आदि का चित्रण

इस प्रकार 'हरी बिन्दी' स्त्री व स्व चेतना की कहानी है। प्रस्तुत कहानी की भाषा इसकी कथानक और चरित्रचित्रण के अनुकूल है। इसकी भाषा सरल और सहज है, जो दैनिक जीवन के उपयोग में आनेवाली है। यह कहानी उद्देश्य निष्ठ भी है। पुरुष प्रधान समाज के विरुद्ध नारी के बदलते विचारों को व्यक्त करना उद्देश्य है।

▶ पुरुष प्रधान समाज के विरुद्ध नारी के विद्रोह

नारी विमर्श की दृष्टि से देखें तो यह स्त्री मुक्ति की कहानी है। कहानी का मुख्य पात्र आधुनिक नारी का प्रतिनिधित्व करती है। आज की स्त्री का सारा असंतोष इस बात को लेकर है कि मनुष्य के रूप में जो अधिकार पुरुषों के लिए सहज ही प्राप्त है, उसे उनसे वंचित क्यों कर दिया? मृदुला गर्ग निश्चित रूप से नारी स्वतंत्रता के पक्षधर कथाकार हैं। 'हरी बिन्दी' में स्त्री चरित्र को सामान्य व्यक्ति की तरह ही आकाँक्षाओं एवं अनुभूतियों से युक्त चित्रित किया है। कहानी की नायिका समस्त स्त्री जाति का प्रतिनिधित्व करती है, जो स्त्री और पुरुष के लिए जो अलग अलग नियम और कायदे हैं उनका विरोध करती है। आज की नारी पुरुष सत्ता द्वारा स्थापित नैतिक अनुशासनों, लक्ष्मण रेखाओं को पारकर अपना एक अलग पहचान बनाना चाहती है। नाचिका के पति राजन, जब शहर से बाहर चला जाता है, तो वह दाम्पत्य के उस अनजान घुटन से अपने आप को मुक्त करती है। ज़िन्दगी की छोटी छोटी खुशियों जैसे अपनी मरजी से उठना, अपनी मर्जी से सजना-संवरना, अपनी इच्छा के अनुसार घूमना, पिक्चर देखना वगैरह वगैरह वह चाहती है। वह अजनबी पुरुष के साथ कॉफी पीती है। यहाँ तक कि टैक्सी शेयर करती है और विदा भी होती है। ठीक वैसे ही अपना एक दिन गुज़ारती है, जैसे अक्सर पुरुष गुज़ारते हैं। इस प्रकार मृदुला गर्ग अपनी कहानी हरी बिन्दी द्वारा स्त्री मुक्ति का नया इतिहास रचती है।

▶ स्त्री मुक्ति की कहानी

पुरुष सत्तात्मक समाज में पति की पसन्द ना-पसन्द इतना हावी रहती है कि पत्नी अपनी ज़िन्दगी में कुछ ही करना चाहकर नहीं कर पाती। लेकिन आजकल विचारशील नारी अपनी परतंत्रता से प्रतिरोध करती है। पत्नी का हरी बिन्दी लगाना दबाव के विरुद्ध विद्रोह का सूचक है। लाल बिन्दी के स्थान पर हरी बिन्दी लगाना विवाह बंधन से मुक्ति का आनंद ग्रहण करने के समान है। संक्षेप में कहें तो मृदुला गर्ग नारी स्वतंत्रता की

▶ नारी स्वतंत्रता की पक्षधर कथाकार

पक्षधर कथाकार हैं जिन्हें समाज द्वारा स्त्री पर थोपे जानेवाले नियमों से सख्त विरोध है। पुरुष प्रधान समाज के विरुद्ध एक नारी के विद्रोही मन को यह दर्शाती है। यूँ तो विवाहित स्त्री के अन्य पुरुषों के साथ उन्मुक्त संबन्ध, भारतीय दाम्पत्य मान्यताओं पर एक प्रश्नचिह्न ही है। परन्तु लेखिका यहाँ नायिका के मनमानी व्यवहार के माध्यम से यान्त्रिक दांपत्य संबन्धों के घुटन भरी मानसिकता से विद्रोह दर्शाती है। क्योंकि हरी बिन्दी लगायी हुई नायिका अपने हिस्से के कुछ क्षण जीकर फिर लौटकर घर आती है।

3.2.2 उपस्थिति (अल्पना मिश्र)

▶ नारीवादी आँदोलन को मज़बूत करनेवाली कहानी

'उपस्थिति' अल्पना मिश्र की कहानी है, जो स्त्री के अनुभवों को केंद्र में रखकर लिखी गयी है। यह नारीवादी आँदोलन को मज़बूत करनेवाली कहानी है। इसमें उन्होंने मानवीय भावनाओं विशेषकर डर और अकेलेपन को बडी गहराई से चित्रित किया है। यह कहानी एक महिला के मनोवैज्ञानिक संघर्ष को दर्शाती है, जो अपने अतीत के भूतों से जूझ रही है। कहानी का सारी पात्र लगातार किसी अनजान उपस्थिति को महसूस करती है। यह उपस्थिति उसे डराती है। उसके मन में असुरक्षा पैदा करती है। यह उपस्थिति वास्तविक हो भी सकती है और नहीं भी, लेकिन यह महिला के मन में एक गहरी छाप छोड जाती है।

▶ महिलाओं के मनोवैज्ञानिक संघर्षों का गहराई से चित्रण

कहानी पात्र के मनोविज्ञान में गहराई से उतरती है। यह पात्र के डर, चिंता और अकेलेपन को बडी बारीकी से दर्शाती है। कहानी का अंत अस्पष्ट रहता है जिससे पाठक को खुद अपनी व्याख्या करने का मौका मिलता है। यह पाठक को कहानी के बारे में सोचने, और उसका विश्लेषण करने के लिए प्रेरित करती है। कहानी में कई प्रतीक हैं जैसे कि उपस्थिति, अंधेरा, खिडकी। ये प्रतीक, पात्र के मनोवैज्ञानिक अवस्था को दर्शाते हैं। कहानी की भाषा सरल और सहज है साथ ही बहुत प्रभावशाली भी। इसकी भाषा पाठक को कहानी की दुनिया में खींच ले जाती है। डर और अकेलापन मानव जीवन का एक अभिन्न हिस्सा है। हम कभी कभी इन भावनाओं से गुज़रते हैं। कहानी यह भी बताती है कि हमें अपने अंदर के डर का सामना करना चाहिए और अपने अतीत को छोडना चाहिए। इसमें रचनाकार ने महिलाओं के मनोवैज्ञानिक संघर्षों को बडी गहराई से चित्रित किया है। यह कहानी मनोवैज्ञानिक थ्रिल्लर की शैली में लिखी गयी है। इस में एक गहरा अर्थ है। स्त्री के व्यक्तिगत संघर्ष को बडी संवेदनशीलता के साथ उठाया गया है। महिलाओं के अनुभवों पर केंद्रित कहानी है।

Summarised Overview / संक्षिप्त अवलोकन

'हरी बिन्दी' कहानी एक आधुनिक महिला की कहानी है, जो रोज़मर्रा की ज़िन्दगी और सामाजिक अपेक्षाओं से थक चुकी है। कहानी की नायिका एक दिन के लिए अपनी स्वतंत्रता का जश्न मनाती है, जब उसका पति शहर से बाहर जाता है।

'उपस्थिति' कहानी एक महिला की मनोदशा और उसकी परिस्थितियों को बडी बारीकी से उजागर करती है। इसमें मानवीय भावनाओं विशेषकर डर और अकेलेपन को बडी गहरायी से चित्रित किया गया है। यह एक महिला के मनोवैज्ञानिक संघर्षों को दर्शाती है।

Assignment / प्रदत्त कार्य

1. 'हरी बिन्दी' कहानी की नायिका का चरित्र चित्रण कीजिए।
2. मृदुला गर्ग के व्यक्तित्व और कृतित्व पर प्रकाश डालिए।
3. स्त्री विमर्श की दृष्टि से हरी बिन्दी कहानी की समीक्षा कीजिए।
4. हरी बिन्दी कहानी के शीर्षक के औचित्य पर प्रकाश डालिए।
5. 'उपस्थिति' कहानी एक महिला की मनोदशा और उसकी परिस्थितियों को उजागर करनेवाली कहानी है। स्पष्ट कीजिए।
6. 'उपस्थिति' कहानी की नायिका का चरित्र चित्रण कीजिए।

Reference / संदर्भ ग्रंथ

1. इक्कीसवीं सदी का पहला दशक और हिन्दी कहानी - सूरज पालीवाल
2. विमर्श के विविध आयाम - अर्जुन चव्हाण
3. साहित्य में नारी चेतना - दयानिधि मिश्र

Suggested Reading / निर्धारित पुस्तक

1. स्वातंत्र्योत्तर कथा लेखिकाएँ - ऊर्मिला गुप्ता
2. आज की हिन्दी कहानीः विचार और प्रतिक्रिया - मधुरेश
3. स्त्री विमर्श का नया चेहरा - अल्पना मिश्र
4. स्त्री की दुनिया - सं- के. अजिता

Space for Learner Engagement for Objective Questions

Learners are encouraged to develop objective questions based on the content in the paragraph as a sign of their comprehension of the content. The Learners may reflect on the recap bullets and relate their understanding with the narrative in order to frame objective questions from the given text. The University expects that 1 - 2 questions are developed for each paragraph. The space given below can be used for listing the questions.

SGOU

इकाई 3

सूर्यबाला - 'एक स्त्री के कारनामे'
ममता कालिया - 'बोलनेवाली औरत'

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- कहानीकार सूर्यबाला से परिचित होता है
- कहानी 'एक स्त्री के कारनामे' को समझता है
- कहानीकार ममता कालिया से परिचित होता है
- 'बोलनेवाली औरत' कहानी जानता है

Background / पृष्ठभूमि

सूर्यबाला

सूर्यबालाजी आधुनिक युग की प्रख्यात कथाकार हैं। समकालीन युग में उनका लेखन विशिष्ट महत्व रखता है। उन्होंने अपने साहित्य में समाज, जीवन, परम्परा, आधुनिकता एवं उससे जुडी समस्याओं को एकदम खुली मुक्त व नितांत निजी दृष्टि से देखने की कोशिश की। उनके साहित्य लेखन में किसी भी विचारधारा के प्रति न अंध श्रद्धा है न ही एकांगी विद्रोह। इन्होंने कहानी, उपन्यास, आत्मकथा, लेख, व्यंग्य, डायरी आदि लिखकर हिन्दी साहित्य को संवर्धित किया। सूर्यबाला का जन्म 25 अक्तूबर 1944 को वाराणसी में हुआ। इनके उपन्यास हैं 'मेरे संधिपत्र', 'सुबह के इंतज़ार तक', 'अग्निपंखी', 'यामिनीकथा', 'दीक्षान्त', 'कौन देस को वासी', 'गृहप्रवेश', 'जूझ' आदि। इनके कहानी संकलन हैं 'एक इन्द्रधनुष जुबेना के नाम', 'मानुष गंध', 'पाँच लंबी कहानियाँ', 'दिशाहीन', 'थाली भर चाँद', 'मुंडेर पर', 'सांझवती', 'मानुष गंध', 'कात्यायनी संवाद' आदि। इनके अलावा आपने साहित्य की कई विधाओं में जैसे बाल साहित्य, हास्य-व्यंग्य आदि में योगदान किया है।

ममता कालिया

समकालीन महिला लेखिकाओं में प्रमुख हस्ताक्षर हैं ममता कालिया। ममता कालिया का जन्म 2 नवंबर 1940 में वृन्दावन (यू.पी) में हुआ। ये प्रसिद्ध लेखक रवींद्रकालिया की पत्नी हैं। आधुनिक समय में नारी के जितने भी रूप हैं वे सब ममता की रचनाओं में है। उन्होंने हिन्दी कथा साहित्य के विराट रचना फलक पर सामाजिक और पारिवारिक परिस्थितियों से नारी की बदलती छवि को बडी संवेदना से खोलकर नारी अस्मिता का प्रभावशाली परिचय दिया। घर की दीवारों में कैद नारी की मुक्ति की चाह और उसके लिए उसे जो संघर्ष करना पडता है, इसका जीता-जागता चित्रण इनकी कहानियों में है। इन्होंने उपन्यास, कहानी, नाटक, कविता, संस्मरण, निबंध,

नाटक, अनुवाद सभी क्षेत्रों में अपनी कुशलता को दिखाया है। इनके उपन्यास हैं 'बेघर', 'नरक दर नरक', 'दौड', 'अंधेरे का ताला', 'सपनों की होम डेलीवरी', 'लडकियाँ', 'प्रेम कहानी', 'एक पत्नी के नोट्स' और 'दुक्खम सुक्खम'। इनके कहानी संकलन हैं 'छुटकारा', 'सीट नंबर छह', 'एक अदद औरत', 'प्रतिदिन', 'जाँच अभी जारी है', 'बोलनेवाली औरत', 'मुखौटा', 'निर्मोही', 'उसका यौवन', 'पच्चीस साल की लडकी'।

Keywords / मुख्य बिन्दु

सूर्यबाला, महिला लेखन, कहानीकार, उपन्यासकार, व्यंग्यकार स्त्री विमर्श, ममताकालिया कामकाजी महिला, बोलनेवाली औरत'

Discussion / चर्चा

3.3.1 एक स्त्री के कारनामे (सूर्यबाला)

▶ स्त्री विवर्श से जुडी एक यथार्थवादी कहानी

'एक स्त्री के कारनामे' सूर्यबाला की स्त्री विमर्श से जुडी कहानी है। जिसका कलेवर यथार्थवादी है। नारी मन और उसके संघर्ष को दर्शानेवाली कहानी है। पति-पत्नी संबन्धों पर भी इसमें विचार किया गया है। कहानी में एक औरत का ज़िक्र है, जो खूबसूरत, सुशिक्षित एवं बौद्धिक है। एक गोरे रंगवाले, सुदर्शन, स्वस्थ, लम्बे, मृदुभाषी एवं मितभाषी व्यक्ति के साथ उसकी शादी भी हुई है। उस दम्पति के एक बेटी और बेटे भी हैं। सौभाग्य की बात है कि इन्होंने अच्छे ढंग से पालन पोषण कर उन्हें बडा किया है। ये बच्चे आज्ञाकारी एवं कुशाग्र बुद्धिवाले भी थे। संपन्न एवं सुख सुविधाओंवाला परिवार था। पति-पत्नी, दो कामवाली औरतें, तीन बच्चे आदि से युक्त वह परिवार खुशी से भरा था। बच्चों की पढाई वगैरह सुभीते(आसानी) से चलते थे। पूरी ज़िन्दगी सलीके (अच्छा तरीके) से आगे बढ रही थी।

▶ पति अत्यंत नेक इनसान

पति तो अत्यंत उदार था। जितना पैसा चाहिए, देते थे और जहाँ जाना है, जाने देते थे। कोई रोकटोक नहीं। पत्नी जो भी कहती है, वे कर डालते थे। अत्यंत शान्त समयोज्य आदमी थे। अन्य पतियों के समान उसमें कोई शिकायत भी नहीं। लोग उसे देवता मानते थे। घर में उन्हें कोई परेशानी नहीं, समय काटने की समस्या भी नहीं। वे हर समस्या के मूर्तिमान समाधान दीखते।

पर औरत तो अपने को बेशऊर एवं बेढंगी मानती है। उसे हँसने या रोने में कोई अनुशासन नहीं। बेवजह गुस्सा आती है। वह देवता समान पति पर भी बात बेबात भभक उठती है। वह स्वयं जानती है कि गलती उसकी ही है। वह हमेशा पति के हर काम में हाथ डालती है। पत्नी की शिकायत है कि पति उससे कभी बात ही नहीं करते

▶ पत्नी को पति से शिकायत

और अपने कामों में व्यस्त रहते हैं। तब पति ने आग्रह किया कि बातें करने केलिए कोई विषय चाहिए। तब पत्नी ने कहा कि बताइए, आपका पूरा दिन कैसे बीता? पति ने बेहिचक सारी बातें स्पष्टता के साथ वर्णन किया। पर पत्नी एक दो वाक्यों से ज़्यादा कुछ ठीक से सुन समझ ही नहीं पाई थी।

▶ स्त्री मन की आकाँक्षा, झल्लाहट, बेकाबू मन आदि का सूक्ष्म चित्रण

पत्नी ने पूछा कि क्या चाय बनाऊँ। पर पति यह सुन नहीं पाए। आगे भी पत्नी ने पूछा। तब पति ने शांत भाव से कहा कि हाँ पी लूँगा। तब एक समझदार पत्नी के समान वह किचन में गयी। लेकिन पति का 'पी लूँगा' शब्द उसके मन में गूँजने लगा। पता ही नहीं, कि तुरन्त उसके अंदर क्रोध आ गया। पागलपन की तरह। दिल की समझदारी ध्वस्त होने लगी। उसे रोकने की घबराहट भरी चीख भी वह मचा रही है। वह आगे भी सोचती है 'पी लूँगा'- इसका मतलब क्या है कोई उपकार करोगे क्या मुझपर। पति को कायदे से कहना चाहिए था कि हाँ बताओ मेरा भी दिल कर रहा है चाय पीने का। फिर वह सोचने लगी कि ये सब मेरे मन के अंदर की माया है। वह तुरन्त ही चाय बनाकर लायी। वह शांत होकर पति का पहला घूँट लेते देखने लगी। फिर अक्षम होकर दिल की धडकनें रोककर पूछा कि चाय में काली मिर्च ज़्यादा है क्या? तब पति ने कहा कि इट ईज़ ओल राइट। पति का निष्क्रिय भाव देखकर पत्नी को लगा कि सारा ब्रह्मांड डोल गया है। वह शंकित होती है कि क्यों वे साफ साफ बताने से हिचकते हैं। वह प्रतीक्षा कर रही थी कि काली मिर्च के ज़्यादा होने से पति उससे नाराज़ हो जाएँगे। पर पति तो अत्यंत संयम एवं क्षमाशील थे। पत्नी का मन ग्लानि से भर गया और आगे भी चाय बनाने चली गयी। देवता समान उसके पति के साथ वह चाय पीने लगी।

3.3.2 बोलनेवाली औरत (ममता कालिया)

▶ मध्यवर्गीय परिवार की एक स्त्री की कहानी

'बोलनेवाली औरत' ममता कालिया द्वारा रचित मध्यवर्गीय परिवार की एक ऐसी स्त्री शिखा की (दीपशिखा) कहानी है जो सास पति कपिल एवं बच्चे और ससुर से लगातार बोलती रहती है या बहस करती रहती है। दूसरे शब्दों में खडी खडी जवाब देती रहती है। शिखा का इस प्रकार बोलना किसी को नहीं सुखाता। इसलिए वह बदतमीज़ कहलाती है। शिखा अक्सर यह निश्चय करती है कि वह किसी भी परिस्थिति में कुछ भी नहीं बोलेगी। किंतु कोई न कोई घटना उसे पुनः बोलने पर विवश करती है। शिखा प्रत्येक छोटी छोटी गौण बात पर बोलते हुए लगातार प्रतिक्रिया व्यक्त करती है। जिसका अंत उसे चुप रहने की सलाह से होता है। वास्तव में शिखा के बोलने में, उसका उस पुरुष सत्तात्मक सामाजिक संरचना से प्रतिवाद करना शामिल है, जिसमें पुरुष सहित स्त्रियाँ भी स्त्रियों के शोषक के रूप में उभरती हैं।

▶ अभिव्यक्ति पर रोक

दीपशिखा से उसके पति ने उस समय विवाह किया जब वह बी.एस.सी में पढ रही थी। पति ने उसकी मौलिक सोच तथा वक्तृता से प्रभावित होकर विवाह किया था। किन्तु शिखा को अपने उन्हीं गुणों के कारण बार बार अपमानित होना पडता है। कहानी के अंत में शिखा का अपना ही बेटा उसके मुँह पर एक घूँसा मारता है और तब वह कुछ भी बोलने में असमर्थ हो जाती है। यहाँ ममता कालिया ने शक्ति के हस्तांतरण के

रूप में उस परिवार में शक्ति का केंद्र बनने जा रहे उसके बेटे को, उसकी चेतना और अभिव्यक्ति को रोकने की कृत संकल्पता को दर्शाया है।

कहानी के अंत में होंठ सूज जाने के कारण शिखा बोल नहीं पाती। किन्तु भाव उसके अंदर बुलबुलाते रहते हैं। शब्द बाहर निकलने के लिए छटपटाते रहते हैं। शिखा को लगता है कोइ उसके मरने के बाद से शब्द उसके शरीर के हर रंध्र से बाहर निकलकर हस्तक्षेप की जीती जागती मिसाल बन जायेंगे। वास्तव में शिखा व्यवस्था का अंग बनकर तथाकथित सुखी जीवन जीने तथा स्वयं को इनसान से रॉबोट या मशीन में बदले जाने की स्थिति का विरोध करती है। शिखा चाहती है कि जिस मौलिक सोच विचार के कारण उसने कपिल से विवाह किया था, गृहस्थी की गाडी खींचने में वह एक दूसरे की निजता का पर्याप्त स्थान दें। जबकि आपाधापी से भरे जीवन में कपिल चाहता है कि शिखा घर की संपूर्ण ज़िम्मेदारी स्वयं संभाल ले। और कपिल को स्वतंत्र रहने दे। शिखा परिवार में खपने की स्थिति में अंतर्विरोधों और असहज स्थितियों से दृढतापूर्वक जूझती है, जो उसकी जीवन्तता तथा सतत् विरोध को दर्शाती है। इसलिए न बोलने की स्थिति में भी मुँह बंद रखना, चुप रहने की शर्त नहीं।

▶ स्वयं को इनसान से रॉबोट या मशीन में बदले जाने की स्थिति का विरोध

'बोलनेवाली औरत' शीर्षक की सार्थकता समाज में स्त्रियों के प्रति दोहरी भूमिका निभाते हुए कठोर अनुशासन में होकर तथा स्त्रियों की अस्मिता तथा निष्ठा के प्रश्न पर चुप्पी साधने की प्रतिक्रिया स्वरूप स्त्री बोलने का प्रयास करती है और अपने स्वत्व की पहचान करती हुई पुरुष सत्तात्मक समाज से अपने स्वप्नों आकाँक्षाओं और अधिकारों की माँग के लिए आक्रोश व्यक्त करती हुई स्त्री की आदर्श छवि को खंडित करती है। तब शायद एक ऐसा समय अवश्य आएगा, जब स्त्रियों को बिना बोले या मांगे एक संपूर्ण व्यक्तित्व की पहचान प्राप्त हो सकेगी जो इस कहानी के शीर्षक की सार्थकता भी है।

▶ अपने स्वप्नों आकाँक्षाओं और अधिकारों की माँग

स्त्री विमर्श की दृष्टि से देखें तो, यह एक सशक्त कहानी है। यह दीपशिखा नामक ऐसी स्त्री की कथा है, जो प्रेम और विवाह दोनों से छली जाती है। फिर भी रूढ परंपरा के समक्ष घुटने नहीं टेकती। बल्कि भावी पीढ़ी परिवार संस्था को समतामूलक संस्कार और शिक्षा देकर बेहतर भविष्य का निर्माण करना चाहती है। ममता कालिया इस कहानी में अपनी नायिका को भरपूर सहानुभूति देती हुए दिखती है, एक लम्बी कालावधी में वे कहानी की समस्त घटनाओं को निसंग भाव से पाठक के समक्ष रखती है, ताकि वह स्वयं परिवार भर के आरोपों के कठघरे में खडी दीपशिखा के प्रति अपनी संवेदना और विवेक से निर्णय ले सके। यह कहानी मध्यवर्गीय स्थिति को दर्शाती है। विवाह के बाद शिखा पारिवारिक स्थिति में अपने को पीसा सा मानती है। वह अपने को कोसती रहती है। कहानी पारिवारिक कलह और घुटन को दिखाती है। कैसे मध्यवर्गीय परिवार में प्रेम विवाह अभिशाप बन जाता है और नारी उम्र भर अपने से ही लडती रहती है और अंत में शांत हो जाती है। कहानी दिल को छूनेवाली है। संवाद योजना बिलकुल जीवन्त दिखाई पडती है। लेखिका ने भाषा का अच्छा प्रयोग किया है।

▶ नारी उम्र भर अपने से ही लडती रहती है और अंत में शांत हो जाती है

Summarised Overview / संक्षिप्त अवलोकन

'एक स्त्री के कारनामे' स्त्री विमर्श की दृष्टि से सशक्त कहानी है। स्त्री मन की आकाँक्षा, बेकाबू मन आदि का सूक्ष्म चित्रण इसमें है। यह एक यथार्थवादी कहानी है। पति-पत्नी संबन्धों पर भी इसमें विचार किया गया है।

'बोलनेवाली औरत' मध्यवर्गीय परिवार की स्थिति को दर्शाती है। कहानी पारिवारिक कलह और घुटन को दिखाती है। कैसे मध्य वर्गीय परिवार में प्रेम विवाह अभिशाप बन जाता है और नारी उम्र भर अपने से ही लडती रहती है और अंत में शांत हो जाती है। यह समकालीन जीवन की विसंगतियों का पर्दाफाश करनेवाली कहानी है।

Assignment / प्रदत्त कार्य

1. 'स्त्री के कारनामे' कहानी का विश्लेषण कर उसकी विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।
2. स्त्री विमर्श की दृष्टि से 'स्त्री के कारनामे' कहानी का मूल्यांकन कीजिए।
3. सूर्यबाला के व्यक्तित्व और कृतित्व पर प्रकाश डालिए।
4. स्त्री विमर्श की दृष्टि से बोलनेवाली औरत कहानी का मूल्यांकन कीजिए।
5. दीपशिखा की चरित्रगत विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।
6. ममता कालिया की कहानियों पर टिप्पणी लिखिए।

Reference / संदर्भ ग्रंथ

1. कहानी की संवेदनशीलता सिद्धांत - डॉ.भगवानदास
2. ममता कालिया व्यक्तित्व एवं कृतित्व - डॉ. फैमिदा बीजापुरे
3. कामकाजी महिलाओं के अधिकार - डॉ. प्रताप मलिक

Suggested Reading / निर्धारित पुस्तक

1. सूर्यबाला 21 श्रेष्ठ कहानियाँ, डायमंड पॉकेट बुक्स प्रा. लिम्टेड, नई दिल्ली।
2. हिन्दी कहानी एक नई दृष्टि - डॉ. इंद्रनाथ मदान
3. आधुनिक हिन्दी कहानी - डॉ. धनंजय वर्मा
4. बोलनेवाली औरत(संकलन) - ममता कालिया
5. ममता कालिया के कथा साहित्य में नारी चेतना - डॉ. शाम सानप
6. ममता कालिया के कथा साहित्य में सामाजिक चेतना - डॉ. पलक कमलेश भाई पटेल
7. हिन्दी कहानी का विवेचनात्मक अध्ययन- डॉ. ब्रह्मदत्त शर्मा

Space for Learner Engagement for Objective Questions

Learners are encouraged to develop objective questions based on the content in the paragraph as a sign of their comprehension of the content. The Learners may reflect on the recap bullets and relate their understanding with the narrative in order to frame objective questions from the given text. The University expects that 1 - 2 questions are developed for each paragraph. The space given below can be used for listing the questions.

SGOU

इकाई 4

प्रभा खेतान- छिन्नमस्ता(उपन्यास)

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- हिन्दी कथा लेखिका डॉ. प्रभा खेतान से परिचित होता है
- प्रभा खेतान के व्यक्तित्व और कृतित्व समझता है
- 'छिन्नमस्ता' उपन्यास जानता है
- मारवाडी समाज की कुरीतियों से परिचय प्राप्त करता है
- पुरुष सत्तात्मक समाज से संघर्ष करती नारी का रूप समझता है

Background / पृष्ठभूमि

जीवन के अन्य क्षेत्रों के समान साहित्य में भी स्त्रियों ने सशक्त दस्तक दी है। सभी प्रदेशों तथा सभी विधाओं में स्त्रियों का रचनात्मक वैभव दिखाई देता है। बीसवीं सदी के अंतिम दशक के उत्तरार्ध में हिन्दी की महिला उपन्यासकारों की सूची में जुडनेवाला एक अहम नाम है डॉ. प्रभा खेतान। कविता कहानी, उपन्यास, अनुवाद और चिंतन ग्रंथ आदि विधाओं में उन्होंने लेखनी चलाई। मारवाडी समाज उनकी संस्कृति तथा नारी व्यथा को मुख्य विषय बनाते हुए प्रभा ने अपने औपन्यासिक संसार का अनूठा सृजन किया है। अपने उपन्यासों में नारी जीवन को बडी मार्मिकता तथा संवेदनशीलता के साथ उद्घाटित किया है।

'छिन्नमस्ता' प्रभा खेतान का चर्चित उपन्यास है, जिसका प्रकाशन 1993 में हुआ था। इसकी नायिका प्रिया के विवाह पूर्व कहानी, प्रभा खेतान के जीवन की कहानी है। परंपरागत संस्कारों और आधुनिकता के बीच अपनी अस्मिता को तलाशती स्त्री की त्रासदी इसमें है। यह मारवाडी समाज की नारी जीवन से संबन्धित उपन्यास है।

Keywords / मुख्य बिन्दु

स्त्री विमर्श, छिन्नमस्ता, चर्चित उपन्यास, अस्तित्व की स्थापना, आधुनिक नारी की त्रासदी, सौतेले भाई, बौद्धिक क्षमता, सर्वोच्चवादी परिवार

Discussion / चर्चा

3.4.1 छिन्नमस्ता

‘छिन्नमस्ता’ डॉ. प्रभा खेतान का तीसरा उपन्यास है, जिसका प्रकाशन 1993 में हुआ है। छिन्नमस्ता प्रभा का सबसे चर्चित उपन्यास है। यह मारवाडी समाज की नारी जीवन से संबन्धित वह संघर्ष और मुक्ति की गाथा है, जो अब तक साहित्य में अप्रस्तुत थी। उपन्यास की नायिका लडकी होने के कारण बचपन से ही अवहेलना एवं घरेलू बलात्कार का शिकार बनी हुई है। विवाह के बाद उसे मारवाडी समाज में होनेवाले बहुविवाह की कुप्रथा के कारण दूसरी औरत का स्थान प्राप्त होता है। पति का कठोर शासन, संपत्ति समझकर अनवरत होनेवाले बलात्कारों का सिलसिला आदि स्थितियाँ उसे अनेक यातनाओं में डाल देती है। अनेक यातनाओं को छिन्नमस्ता देवी की तरह अपने ऊपर झेलकर प्रिया उन्हीं यातनाओं के सामने अपना संहारक विद्रोही एवं अत्मनिर्भर रूप दिखाकर दयनीय स्थिति से मुक्ति पाती है। पौराणिक गाथाओं के अनुसार छिन्नमस्ता दस महाविद्याओं में पाँचवीं देवी है। यह अपना ही कटा हुआ सिर अपने बायें हाथ में लिये हुए हैं। मुँह खुला और जीभ निकली हुई है। छिन्मस्ता वह शक्ति है, जो संसार बनाती भी है और उसका नाश भी करती है।

▶ मारवाडी समाज की नारी जीवन

प्रिया को छिन्नमस्ता का प्रतीक बनाकर प्रभाजी ने उपन्यास में नारी जीवन की यातना, संघर्ष, विद्रोह एवं मुक्ति को अधिक सशक्तता से प्रस्तुत किया है। ‘छिन्नमस्ता’ कलकत्ता में रहनेवाले उच्चवर्गीय मारवाडी परिवार की कथा है। जहाँ घर में काम करने के लिए ढेरों नौकर हैं, परिवार की आन, बान और शान देखते ही बनती है। लेकिन छिन्नमस्ता देवी किसी भी औरत के जीवन को ज़रा सा खुरेचो तो उसमें दर्द, पीडा और आँसुओं का दरिया मिलेगा। यद्यपि उसकी अलमारी में हज़ारों साडी, ब्लाउज़, ढेर सारे मेकअप के सामान और हीरों के कीमती भूषण मिलेंगे। किन्तु शारीरिक एवं मानसिक अत्याचारों से भीतर से टूट चुकी है। इस परिवार में लडकी के जन्म को अशुभ और बोझ माना जाता है। प्रिया इस परिवार की स्त्री कस्तुरी की अनचाही चौथी बेटी है। अतः माँ ने न उसे कभी गोद लिया न पास सुलाया। न बीमार होने पर कभी डॉक्टर को बुलाया। वह सदैव एक शाश्वत दूरी बनाए रखती है। चौथी लडकी का होना प्रिया की माँ कस्तुरी के लिए भाररूप है। अतः प्रिया दाई माँ की बेटी के रूप में पहचानी जाती है। कस्तूरी की बेटी के रूप में नहीं। प्रिया को पढा लिखाकर स्वयं की पहचान बनाने के लिए नहीं, किन्तु सिर्फ विवाह के लिए बडा किया जाता है। सिर्फ विवाह ही उनका भविष्य है। साथ ही उसे काली लडकी से पहचाना जाता है। पढने लिखने की उसकी इच्छा का कोई मूल्य नहीं, विवाह के बाज़ार में उसकी बौद्धिक क्षमता नहीं उसकी चमडी तॉका रंग महत्वपूर्ण भूमिका अदा करेगा। इसी वैचारिक परिवेश में प्रिया की परवरिश होती है।

▶ प्रिया दाई माँ की बेटी के रूप में

प्रिया को जन्म से विद्रोहिणी बनाने के मूल में पारिवारिक वैचारिकता के साथ साथ

अनेक यातनाओं की भी लंबी सूची है। उसका शैशव अनवरत बलात्कारों की कडी है। सौतेले भाई द्वारा बार बार किये गये बलात्कारों ने दस वर्षीय प्रिया के अन्दर भय एवं घृणा भर दी है। जैसे जैसे प्रिया बडी होती गयी, उसका मन विद्रोह के उफान से भरता जाता है। प्रिया को छिन्नमस्ता बनाने में मारवाडी परिवार में चल रही बहुविवाह की कुरीति एवं उसको मिलनेवाला दूसरी औरत का दर्जा भी महत्वपूर्ण है। बहुविवाह प्रथा के चलते प्रिया करोडपति घराने के नरेंद्र की दूसरी औरत बन जाती है। दूसरी औरत का दर्जा देनेवाला नरेंद्र एक हैल्थी एनिमल से ज़्यादा कुछ भी नहीं है। उसका मशीनी यौनावेश प्रिया की संवेदनाओं पर चोट पहुँचाता है। अतः प्रिया पति द्वारा बनाये गये सम्बन्ध को बलात्कार की तरह झेलती है। अनवरत बलात्कारों का सिलसिला और पति का कठोर शासन प्रिया को विद्रोहिणी बनाने में अपना प्रगाढ योगदान देता है। प्रभा ने उच्च वर्गीय, सामन्ती परिवारों में पुरुष की अधिकार भावना, स्त्री के प्रति तिरस्कृत एवं तुच्छ दृष्टिकोण आदि का वर्णन करते हुए उनकी बखिया उधेड कर रख दी है। जहाँ स्त्री के पास पैसे हैं, जेवरात हैं महँगी पार्टियाँ हैं, जिसमें पैसे खर्च किये जा सकते हैं। यदि व्यवसाय के लिए उन जेवरों को बेचना चाहें तो संयुक्त परिवार की संपत्ति होने के कारण कोई संभावना नहीं। व्यक्ति के निजी कोई अधिकार नहीं, उसकी अभिरुचियों का कोई सम्मान नहीं। वह कपडों पर खर्च कर सकती है, किताबों पर नहीं। चूँकि कमाती नहीं, इसलिए गरीब नौकर की मौके पर मदद का हक उसे नहीं। अपने सिद्धांतों केलिए मानवीयता की भावना से यदि कुछ करना चाहें तो स्त्री को पैसे कमाना होगा अथवा गुलाम की तरह पति की दया पर जीवित रहना होगा।

▶ स्त्री के प्रति तिरस्कृत एवं तुच्छ दृष्टिकण

धनाढ्य परिवार में पति के नाम से जाना जाना प्रिया को स्वीकार्य नहीं। किन्तु व्यक्ति के तौर पर बडा होना और हर एक का अपनी प्रतिभा का भरपूर दोहन करने का अवसर परम्परागत परिवारों में नहीं है। बौद्धिक क्षमता का उपयोग होना चाहिए अथवा काम स्त्री के लिए जीवन शक्ति हो सकता है। नरेंद्र तो यह भी स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं कि स्त्री होने के कारण प्रिया का अपना भी कोई वजूद हो सकता है, उसकी अपनी भी कुछ इच्छाएँ और स्वतंत्र विचार भी हो सकते है। वह भी अपनी प्रतिभा से कुछ कर सकती है। वह मारवाडी बिज़नेसमेन है जो अमरीका जाकर शोपिंग करता है, किन्तु पत्नी के ओफिस आने पर कहता हैः "ऋंगार पटार करो और रंडियाँ सी जाकर ओफिस में बैठो।"

▶ काम स्त्री के लिए जीवन शक्ति हो सकता है

नरेन्द्र प्रिया को व्यावसायिक क्षेत्र में प्रवेश देने के लिए बिलकुल तैयार नहीं है। किन्तु अनायास जब प्रिया को नरेंद्र के व्यवसाय में डमी पार्टनर बनने का मौका मिल जाता है, तब वह अनेक विरोधी परिस्थितियों में भी अपना व्यवसाय, नाम और पैसा बनाने के लिए पूरे सामर्थ्य से लग जाती है। नीना के यह कहने पर कि माँ हम लोगों को रुपयों की तो ज़रूरत नहीं, प्रिया का उत्तर है "मुझे तो है बेटा।" प्रिया अपनी प्रतिभा से अपनी अलग पहचान बनाती है। प्रिया की यह विशेषता स्त्री को सिर्फ घर गृहस्थी के लायक समझनेवाले नरेंद्र के लिए चुनौती बन जाती है। प्रिया का संघर्ष बढ जाता है।

▶ बिज़नेस बंद करवाने की धमकियाँ प्रिया को अधिक शक्तिशाली और विद्रोही बना देती है

नरेंद्र की बच्चों को छीन लेना, घर से निकालना, रिज़र्व बैंक में पत्र लिखकर बिज़नेस बंद करवाने की धमकियाँ प्रिया को अधिक शक्तिशाली और विद्रोही बना देती है। अपने पिता की मृत्यु के बाद घर में भी लडकियाँ लानेवाला नरेंद्र प्रिया की बिज़नेस ट्रिप को अकेले मौज करने की आदत कहता है और कहता है मैं सीरियस हूँ फिर कहता हूँ यदि आज तुम लंदन गई तो मेरे घर में तुम्हारी जगह नहीं है। यह भी साली कोई ज़िन्दगी है जब देखो तब बिज़नेस। कल कस्टमर आ रहे हैं। तो आज सैम्पल बंधवाने में ही फैक्टरी में रात के दस बज गये। फिर रात को साली फोन की घंटी बजती रहती है। घर न हुआ पागलखाना हो गया। घर नरेंद्र का है। उसमें प्रिया रहे या नहीं यह निर्णय नरेंद्र का अधिकार में है। फिर सुन लो, यहाँ मत आना। आओगी तो मैं धक्के देकर बाहर निकलवा दूँगा।

▶ प्रिया परंपरागत भूमिका से भिन्न अपने स्वतंत्र अस्तित्व के विषय में सोचता है

स्त्री की परंपरागत भूमिका से भिन्न रूप परिवार एवं समाज को स्वीकार्य नहीं है। पुरुषों के अधीनस्थ की भूमिकावाले कार्य स्त्री सदियों से कर रही है। किन्तु स्त्री जब पुरुष के बराबर रहकर कुछ करना चाहें तो प्रश्न खडे हो जाते हैं। प्रिया ने भी जब अपने लिए पैसे कमाने चाहे, अपने स्वतंत्र अस्तित्व के विषय में सोचा, ऐसे में उसके हिस्से में सज़ा का आना निश्चित ही था। नरेंद्र प्रिया को परिवार और बिज़नेस दोनों में से एक विकल्प को चुनने के लिए कहता है। प्रिया बिज़नेस को चुनती है। क्योंकि वह जान चुकी है कि परिवार, प्यार, समर्पण, वफादारी आदि शब्दों का उपयोग स्त्री को भ्रम में फंसाने के उपकरण है।

▶ प्रिया संघर्ष द्वारा मुक्ति का मार्ग खोजने की प्रेरणा देता है

पुरुष सर्वोच्चवादी परिवार में प्रिया छिन्नमस्ता बनकर मुश्किल राहों में भी अपना मार्ग बना लेती है। देश विदेश में अपना बिज़नेस फैलाकर सफलता प्राप्त करके राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित होती है। इंडिया टुडे में उसका फोटो छपता है। 'ए ग्रेट बिज़नेस इन्टरप्राइसर मिसेस प्रिया।' प्रिया अपने व्यक्तित्व को एक विशेष ऊँचाई पर पहुँचाकर पति, परिवार एवं समाज को मुँह तोड जवाब देती है, वहीं अपने साहस से नारी समाज को भी एक नयी पहचान देती हुई संघर्ष द्वारा मुक्ति का मार्ग खोजने की प्रेरणा देती है। मैंने दुःख झेला है। पीडा और त्रासदी में झुलसी हूँ। जिस दिन मैंने त्रासदी को ही अपने होने की शर्त समझ लिया उसी दिन उस स्वीकृति के बाद मैंने खुद को एक बडी गैर ज़रूरी लडाई से बचा लिया। कुछ के प्रति मेरा समर्पण था। सारे जुल्मों के सामने सलीब पर लटकते मैंने पाया कि अब पूरी तरह ज़िन्दगी की चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार हूँ।

▶ नारी मुक्ति की संघर्ष गाथा 'छिन्नमस्ता'

छिन्नमस्ता के संबन्ध में प्रभा लिखती है कि साधारण मानवीय रूप में मेरी नायिका प्रिया अपनी व्यथा को कहती है। और हमें कहते कहते अपने एक त्रासद अतीत से उबारती है। समाज के अनुसार उसे मर जाना चाहिए था, टूट जाना चाहिए था। उसका सर तो पहले ही कट चुका था, लेकिन फिर भी वह छिन्नमस्ता देवी अपने रक्त से, परिवेश से और अन्ततः अपने पति से लडती हुई अपनी ज़िन्दगी बनाती है। क्योंकि मेरे जीवन की सबसे बडी प्रेरणा रही है कि स्त्री अपनी मानवीय गरिमा के लिए संघर्ष

करे, उसे जगत में अपने होने के माध्यम से हासिल करके रहे। इस उपन्यास में प्रभा ने नारी मुक्ति की संघर्ष गाथा को उसकी मानवीय गरिमा के साथ प्रस्तुत किया है। छिन्नमस्ता बनकर अपने लिए रास्ता तलाशने का नारी प्रयत्न समाज को तिलमिलानेवाला कटु यथार्थ है।

छिन्नमस्ता उपन्यास में अभिव्यक्त नारी संघर्ष

छिन्नमस्ता प्रभा खेतान की सबसे प्रमुख उपन्यास है। इसमें प्रिया का चरित्र एक सशक्त संघर्षशील तथा सुधारवादी दृष्टिकोण से युक्त स्त्री के रूप में उभरी है। धनी मारवाडी परिवार में जन्मी प्रिया बचपन से ही उपेक्षा का शिकार है। माँ बनने के बाद भी प्रिया की ज़िन्दगी में कोई परिवर्तन नहीं आया। मन बहलाने के लिए किया गया व्यापार ही उसकी आसरा बन जाती है। वह नई राह पर चल पडती है। बची ज़िन्दगी अपनी इच्छानुरूप जीने के लिए। वह सामाजिक बन्धनों को तोड़ने की कोशिश करती है। उपेक्षित प्रिया को दाई माँ ने प्यार दुलार से पाला पोसा था। दाई माँ एक ऐसी गोद थी, जिसके सहारे प्रिया सारी दुःख दर्द को भुलाने का प्रयास करती थी। समस्त उपन्यास में प्रिया परिस्थितियों के कारण निरंतर टूटती है बिखरती है। लेकिन हार नहीं मानती। वह पुरुष से तथा पुरुष प्रधान समाज से संघर्ष करके अपनी अस्मिता की रक्षा करती है। समाज में अपनी पहचान बनाने में सफल होती है।

▶ प्रिया परिस्थितियों के कारण निरंतर टूटती है बिखरती है

पीडा और त्रासदी से पीडित होकर भी वह ज़िन्दा है और सारी विरोधी परिस्थितियों से लडने के लिए उसमें हिम्मत और आत्मविश्वास है। इस प्रकार प्रिया हालातों से समझौता न करते हुए भी एक सफल नारी के रूप में सामने आती है। भारतीय परंपरा में निरन्तर स्त्री को प्रेम समर्पण आदि महान बातों में फंसाकर घर में बिठाया गया है। नरेंद्र भी प्रिया के समक्ष ईमानदारी, समर्पण की बात रखकर उसे चारदीवारी के अंदर कैद करना चाहता है। उन दिनों नरेंद्र और प्रिया का जो संवाद है, वह अत्यधिक महत्वपूर्ण है। आज की जागृत स्त्री प्रिया इन सबके प्रति क्या विचार रखती है, यह भी स्पष्ट है।

▶ प्रिया में सारी विरोधी परिस्थितियों से लडने के लिए हिम्मत और आत्मविश्वास है

प्रिया आधुनिक स्त्री की प्रतिनिधि है जो गुलामी की जंजीरों को तोडने केलिए आतुर है और संघर्ष रत है। प्रिया अपने व्यवहार में जो तरक्की कर रही है, वह नरेंद्र को पसन्द नहीं। उनमें अहं की भावना है। पुरुष होने के नाते वह अपने को हर चीज़ की अधिकारी समझता है। ऐसे में पति पत्नी का जो पवित्र रिश्ता है, वह मालिक गुलाम की तरह बन जाता है। नरेंद्र प्रिया की अवहेलना करता है। वह कहता है कि प्रिया, महत्वाकांक्षी है। जब स्त्री धन कमाने लगी तथा अपने पैरों में खडे होने में समर्थ हुई तब पुरुष मानसिकता इसे सहन नहीं करता।

▶ जब स्त्री आर्थिक रूप से सक्षम बनती है तो पुरुष मानसिकता इसे सहन नहीं करता

महत्वाकांक्षी होना एक इंसान की हक है। पुरुष की महत्वाकांक्षी होने पर कोई सवाल नहीं करता। लेकिन जब एक स्त्री महत्वाकांक्षी बनकर अपने भाग्य खोजने के लिए आगे आती है तो उसे दबाने के लिए पुरुष सभी मोहरों को जुटाता है। यहाँ प्रिया के ज़रिये प्रभा खेतान ने यह बताने की कोशिश की है कि प्रतीक्षा ही मनुष्य को

▶ प्रतीक्षा ही मनुष्य को ज़िंदा रखने में सहायक बनती है

ज़िन्दा रखने में सहायक बनती है। यह उपन्यास एक अकेली सफल उद्योगकर्मी स्त्री के अतीत को प्रस्तुत करती है। चलते चलते एक लंबे सफर में वह एक पडाव पर आकर शिथिलता महसूस करती है। पीछे मुडकर देखती है तो पाती है एक लंबा अतीत उलझा सा उसके साथ साथ चलता रहा है उसके व्यक्तित्व की परछाई से उलझा। उसका जीवन उसे विरोधाभासी परिस्थितियों का उलझा सा बंडल प्रतीत होता है।

- विरोधी परिस्थितियों से लडनेवाली व जीवन को सुधारनेवाली स्त्री

प्रभा खेतान की नायिका अपने तकदीर बदलने की जिद में बहुत आगे निकल जाती है। प्रिया को संघर्षों ने जिद्दी बना दिया था। अपनी राह पर चलती हुई वह रिश्तों में सतहीपन और बनावट स्वीकार नहीं कर पाती। इस तरह पति की मौत हो जाने पर कस्तूरी बौखला हो उठती है। वे अचानक शेरनी सी गर्जती है। यहाँ पति की मृत्यु हो जाने पर पत्नी के विद्रोही रूप को दिखाया गया है। प्रिया को हमेशा अपनी माँ से दुत्कार सहनी पडी। दिखने में सावली रंग प्रिया को माँ कभी प्यार न कर सकी। अपने ही संतान के प्रति एक स्त्री कैसे उपेक्षा भाव स्वीकार कर सकती हैं इसका सच्चा चित्रण इसमें मिलता है। माँ हमेशा सरोज के लिए चिन्तित है, उसकी शादी को लेकर कई सपने सजाते हैं। लेकिन प्रिया के लिए उसके मन में कोई आशंका नहीं। व्यथा नहीं। प्रिया के मन में विद्रोह का पहाड टूट पडता है। वह विद्रोहिणी बनती जा रही थी और इन विपरीत स्थितियों से संघर्ष करके आगे बढने के लिए कोशिश भी करती है। कई साल बाद हवाई जहाज़ में असीम मिलते हैं। जो अपने कॉलेज के समय में प्रिया से प्यार करता था। प्रिया को असीम की आँखों में वही पुरानी प्यास दिखती है। शायद वह उस सपने को प्यार को जिलाए रखा हुआ है, ऐसा प्रिया को लगता है। प्रिया के मन में उसके प्रति कोई कातरता उत्पन्न नहीं होती, क्योंकि अब वह ज़िन्दगी की चालों से परिचित है। ज़िन्दगी की असली नकली चेहरों से वह अब वाकिफ है। बडे भाई के बार बार बलात्कार करने से प्रिया के मन में घृणा का तूफान उठती है। वह धीरे धीरे पुरुष जाति से नफरत करने लगती है। इस प्रकार प्रभा खेतान ने विरोधी परिस्थितियों से लडनेवाली व जीवन को सुधारनेवाली स्त्री के रूप में प्रिया के चरित्र का सफल चित्रण किया है।

Summarised Overview / संक्षिप्त अवलोकन

वर्तमान समय में नारी जागरूकता नारी सशक्तिकरण व नारी के अस्तित्व की स्थापना हेतु कई प्रयास चल रहे हैं। नारी उपन्यास के क्षेत्र में हिन्दी उपन्यासों की भूमिका बडी है। उपन्यास जीवन की समग्रता से गुज़रता है। छिन्नमस्ता उपन्यास में नारी को अपने जीवन में जिन जिन समस्याओं का सामना करना पडा है, उसी के बारे में विस्तृत चित्र प्रस्तुत किया गया है। उपन्यास की केन्द्रीय पात्र प्रिया का सृजन करते हुए प्रभा ने खूबी के साथ यह साबित किया कि स्त्री चाहे तो संपूर्ण विषम परिस्थितियों और विडंबनाओं को लाँघकर अपने लिए ऐसा मार्ग तलाश सकती है, जो उसे सफलता के शीर्ष तक ले जाए।

Assignment / प्रदत्त कार्य

1. छिन्नमस्ता उपन्यास के माध्यम से उच्चवर्गीय मारवाडी समाज के नारी जीवन के बारे में अपने विचार व्यक्त कीजिए।
2. प्रभा खेतान के व्यक्तित्व और कृतित्व पर प्रकाश डालिए।
3. छिन्नमस्ता आधुनिक नारी जीवन के संघर्ष और मुक्ति का सही दस्तावेज़ है। इस विषय में एक आलेख तैयार कीजिए।
4. प्रिया का चरित्र चित्रण कीजिए।
5. नरेंद्र की चरित्रगत विशेषताओं का परिचय दीजिए।

Reference / संदर्भ ग्रंथ

1. आधुनिक साहित्य की प्रवृत्तियाँ - नामवर सिंह
2. हिन्दी साहित्य ज्ञान कोश - सं शंभुनाथ
3. उपन्यास स्थिति और गति - चन्द्रकान्त बाँदिवडेकर
4. विमर्श के विविध आयाम - अर्जुन चव्हाण

Suggested Reading / निर्धारित पुस्तक

1. छिन्नमस्ता - प्रभा खेतान
2. हिन्दी उपन्यास का इतिहास - गोपाल रॉय
3. स्त्री अस्मिता के प्रश्न - सुभाष सेतिया
4. स्त्री उपेक्षिता - प्रभा खेतान
5. समकालीन महिला हिन्दी उपन्यासकारों के उपन्यासों में नारी जीवन - डॉ.लताकुमारी.के

Space for Learner Engagement for Objective Questions

Learners are encouraged to develop objective questions based on the content in the paragraph as a sign of their comprehension of the content. The Learners may reflect on the recap bullets and relate their understanding with the narrative in order to frame objective questions from the given text. The University expects that 1 - 2 questions are developed for each paragraph. The space given below can be used for listing the questions.

SGOU

BLOCK 04

समकालीन हिन्दी कविता और स्त्री विमर्श

Block Content

इकाई 1 - अनामिका- बेजगह, स्त्रीयाँ Detailed Study

इकाई 2 - कात्यायनी- इस स्त्री से डरो, औरत और घर Detailed Study

इकाई 3 - निर्मला पुतुल- क्या तुम जानते हो, अपने घर की तलाश में Detailed Study

इकाई 4 - रमणिका गुप्ता- प्रतिरोध Detailed Study

इकाई 5 - सरिता शर्मा- बेटी Detailed Study

इकाई 1

अनामिका- बेजगह, स्त्रियाँ

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- कवयित्री अनामिका से परिचित होता है
- 'बेजगह' कविता का मूलभाव समझता है
- 'स्त्रियाँ' कविता का मूलभाव से परिचित होता है
- स्त्री विमर्श संबन्धी तत्वों से परिचय होता है

Background / पृष्ठभूमि

समकालीन हिन्दी कविता में स्त्री लेखन का स्वर काफी मज़बूती से उभरा है। स्त्रीविमर्श से जुडी ऐसी एक सशक्त कवयित्री हैं अनामिका। इनका जन्म 17 अगस्त 1961 को बिहार के मुजफ्फरपुर में हुआ था। इनका पूरा परिवार साहित्यिक अभिरुचि रखता था। अंगेज़ी और हिन्दी साहित्य में उच्च शिक्षा प्राप्त करने के बाद इन्हें दिल्ली विश्वविद्यालय में प्राध्यापिका के रूप में नियुक्ति भी मिली। बहुमुखी प्रतिभा की धनी अनामिका की साहित्य दृष्टि व्यापक एवं सारगर्भित है। कविता, कहानी, उपन्यास, निबन्ध, आलोचना, अनुवाद आदि सभी क्षेत्रों में इन्होंने अपनी प्रतिभा का परिचय दिया। भाषा- शिल्प और बिंब में ये अलग से अंकित हो जानेवाली कवयित्री हैं। इनका पहला काव्य संग्रह "गलत पते की चिट्ठी" सन् 1978 में प्रकाशित हुआ था। इनके अन्य काव्य संग्रह हैं "समय के शहर में", "बीजाक्षर", "अनुष्टुप", "कविता में औरत", "खुरदरी हथेलियाँ और दूब-धान"। अनामिकाजी ने गद्य में भी अपना योगदान दिया है। "पर कौन सुनेगा", "मन कृष्ण मन अर्जुन", "अवांतर कथा", "दस द्वारे का पिंजरा" और "तिनका तिनके पास" आदि इनके उपन्यास हैं। इनकी कहानियों के संकलन हैं "प्रतिनायक"। "स्त्रीत्व का मानचित्र", "मन माँजने की ज़रूरत", "पानी जो पत्थर पीता है", "स्वाधीनता का स्त्री पक्ष" आदि लेखों द्वारा हिन्दी के स्त्री विमर्श में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया। इनकी कविताओं का अनुवाद भारतीय एवं विदेशी भाषाओं में हुआ है। अनामिका ने अपनी रचनाओं में नारियों के प्रति, समाज के हर एक क्षेत्र में होनेवाली विडंबनाओं को खुलकर दिखाया। इनकी रचनाओं में कहीं न वात्सल्य, न क्रोध, और न आक्रोश है। एक करुणामय संवेदनशील स्त्री की नज़रिये से अपने समय तथा समाज को वे देखती हैं। अनामिका पहली कवयित्री हैं जिनको साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला था। अनामिकाजी की कविताओं में भले ही गंभीर दर्शन या सिद्धांत नहीं हो, लेकिन एक औरत की सहज अभिव्यक्ति ज़रूर होती है। उनकी कविताएँ अनेक सवाल उठाती हैं, जो सुननेवालों को सोचने के लिए विवश करते हैं। इस इकाई में अनामिका की 'बेजगह' और 'स्त्रियाँ' कविताओं का विस्तृत अध्ययन है।

Keywords / मुख्य बिन्दु

बेजगह, बिरादरी, अस्तित्व, संघर्ष, पक्षधरता, व्यवस्था

Discussion / चर्चा

4.1.1 बेजगह

- समाज के कई नियम, परम्पराएँ, रीति रिवाज़ सभी स्त्रियों के विरुद्ध रचे गये हैं

'बेजगह' अनामिका के 2004 में प्रकाशित "खुरदुरी हथेलियाँ" संकलन की तीसरी कविता है। यह स्त्री विमर्श से संबन्धित कविता है। इस कविता में समाज की उस चेतना को परखा गया है, जिसके ज़रिये स्त्री को देखा, पढा और सुना जाता है। साथ ही स्त्री को भोगने की व्यथा की कहानी भी कही गई है। इस कविता में हम देखते हैं कि हमारे समाज के कई नियम, परम्पराएँ, रीति रिवाज़ सभी स्त्रियों के विरुद्ध रचे गये हैं। इसमें एक ऐसी व्यवस्था का चित्रण किया गया है जिसे हम परम्परा से देखते समझते आ रहे हैं। स्त्रियों के लिए कई अलग अलग धारा के मापदंड बनाये गये हैं। उन के लिए एक अलग सी जगह बनायी गयी है। इस जगह से वह छूट जाती है तो उसे बिरादरी से बाहर कर दिया जाता है। इस पाठ का उद्देश्य को गहराई से समझने का प्रयास करना है।

अनामिका

बेजगह

अपनी जगह से गिरकर
कहीं के नहीं रहते
केश, औरतें और नाखून-
अन्वय करते थे किसी श्लोक को ऐसे
हमारे संस्कृत टीचर।
और मारे डर के जम जाती थीं
हम लड़कियाँ अपनी जगह पर।

अर्थः- कवयित्री कहती हैं कि स्त्री के लिए एक जगह निर्धारित कर दी गयी है। इस जगह से छूटने पर औरत, बाल और नाखून सबकी स्थिति एक जैसी है। एक बार ढाँचे से बाहर कर दिया जाता है, हमेशा के लिए बिरादरी से बाहर कर दिया जाता है। कवयित्री के मन में अपने संस्कृत टीचर के उस श्लोक का अन्वय अब जीवंत हो उठा है। मन सवाल करता है क्या सचमुच केश और नाखून की तरह औरतें भी अपनी जगह से गिरकर कहीं की नहीं रहतीं। जब संस्कृत टीचर पढाते थे, तब हम लड़कियाँ यह सुनकर वहाँ जमकर बैठती गईं। टीचर पढाते थे लडकी केश, नाखून- ये सब अपना जगह छोडकर नया करने जाते हैं, तब उनका कोई अस्तित्व नहीं।

▶ स्त्री के लिए एक जगह निर्धारित कर दी गयी है

व्याख्याः- प्रस्तुत पंक्तियाँ कवयित्री अनामिका द्वारा लिखित 'बेजगह' शीर्षक कविता से ली गई हैं। इसमें कवयित्री स्त्री के लिए जगह ढूँढती है। हमारे समाज के कई नियम, परम्पराएँ, रीति रिवाज़ स्त्रियों के विरुद्ध रचे गये हैं। उसके लिए एक जगह निर्धारित कर दी गयी है। इस जगह से छूटने या गिरने मात्र से उसे बिरादरी से बाहर कर दिया जाता है- टूटे हुए केश और नाखून की तरह। कवयित्री के मन में अपने संस्कृत टीचर के उस श्लोक का अन्वय अब जीवंत हो उठा है। मन हर पल सवाल करता है क्या सचमुच केश और नाखून की तरह औरतें भी अपनी जगह से गिरकर कहीं की नहीं रहतीं? सामाजिक रूढियों एवं परंपराओं पर खडे होनेवाले समाज में लडका और लडकी में भेदभाव है। दोनों के लिए काम का विभाजन किया गया है। लड़की के लिए एक अलग जगह बना दी गयी है। इस जगह से जब वह छूट जाती है तो उसे बिरादरी से बाहर कर दिया जाता है। जब अनामिका छोटी थी, तब स्कूल के संस्कृत टीचर पढाया करते थे कि बाल, नाखून और औरतें तीनों एक समान हैं। जैसे बाल एक एक करके नीचे गिर जाता है तो उन्हें फिर से सिर पर लगाया नहीं जा सकता। इसी प्रकार नाखून उँगली से निकाला जाता है। वह फिर लगाया नहीं जा सकता। लडकियों की हालत भी उसी प्रकार है। उन्हें स्वतंत्रता नहीं दी गई है। पाठ्यक्रमों के अनुसार, अलग अलग रीति रिवाज़ों के अनुसार समाज के अन्दर रिश्तेदारों द्वारा खिंचाये गये दायरे के भीतर उसे जीना पड़ता है। माता-पिता, बुआ तथा अन्य सारे रिश्तेदारों ने "तुम लडकी हो, तुम्हें ऐसा ही करना चाहिए और ऐसा नहीं करना है" आदि उपदेश देकर रिवाज़ नियमों में बंधित कर दिया था। कवयित्री कहती हैं टीचर का श्लोक सुनकर हम लडकियाँ क्लास में जम जाती थीं। सुनकर हँस नहीं सकतीं थीं। खुलकर बोल भी नहीं सकती थीं। लडकियों को बोलने की स्वतंत्रता नहीं। नियंत्रणों को तोडकर बाहर जाएँ तो तुम्हारा कोई अस्तित्व नहीं- टीचर ऐसा पढाया करते थे। समाज द्वारा लडके और लडकी में बडा भेद बनाया गया है। लडकी को गौण मानकर बडा काम दिया जाता है और लडके को प्रमुख स्थान दिया जाता है। स्त्री के लिए अनेक रोक हैं उसे ढाँचे में ढाला गया है। हमारे सिलबस के अंदर पढाया जाता है कि यह काम लडकी के लिए है। स्त्री एक बार अपनी जगह छोडती है तो वह हमेशा के लिए बाहर कर दी जाती है। हर बात में तुम 'लडकी हो तुम लडकी हो' कहकर बिलकुल बौध बाँधकर रखा गया है। समाज कहता है कि ऐसा न करें तो समाज में कोई अस्तित्व नहीं रहेगा।

▶ जगह ढूँढ़नेवाली स्त्री का वर्णन

जगह? जगह क्या होती है?
यह वैसे जान लिया था हमने
अपनी पहली कक्षा में ही।
याद था हमें एक एक क्षण
आरंभिक पाठों का-
राम, पाठशाला जा!
राधा, खाना पका!
राम, आ बताशा खा!
राधा, झाड़ू लगा!
भैया अब सोएगा
जाकर बिस्तर बिछा!
अहा, नया घर है!
राम, देख यह तेरा कमरा है!
"और मेरा?"
"ओ पगली,
लड़कियाँ हवा, धूप, मिट्टी होती हैं
उनका कोई घर नहीं होता।"

अर्थः- अनामिका पूछती हैं कि हम लडकियों की जगह क्या है? इसके बारे में हमने जान लिया पहली कक्षा में ही। जब हम बहुत छोटी थीं, सिलबस में पढा था कि लडके की जगह क्या है और लडकी की जगह क्या है। हर एक की अपनी अपनी जगह होती है। जगह क्या होती है हमने पहली कक्षा में ही जान लिया कि लडके को पहला दर्जा दिया गया है और लडकी को दूसरा दर्जा। एक एक क्षण की याद अभी भी है। आरंभिक पाठ ऐसे थे। उसमें छोटे छोटे सरल वाक्य थे। राम पाठशाला जा, राधा खाना पका, राम आ बताशा खा, राधा झाड़ू लगा। बेटे से माँ बाप कहते हैं नया घर है, राम, देख यह तेरा कमरा है। जब लडकी आकाँक्षा से पूछती है कि माँ मेरा कमरा कौन सा है तब माता पिता कहते हैं कि ओ पगली लडकियाँ तो हवा, धूप और मिट्टी के समान हैं। इन तीनों को ठहरने के लिए कोई जगह नहीं। तेरी हालत भी ऐसी है।

▶ इस समाज में लड़कियों केलिए कोई जगह ही नहीं है

व्याख्याः- प्रस्तुत पंक्तियाँ अनामिकाजी द्वारा लिखित बेजगह शीर्षक कविता से ली गई हैं। इनमें कवयित्री ने समाज में लडका-लडकी में जो भेद भाव है इसको व्यक्त करने की कोशिश की है। जब कवयित्री ने पुराना सिलबस देखा तभी पाया कि माँ बाप के मन में बेटे बेटियों के प्रति कौन से पक्षधरतापूर्ण विचार हैं। उन सभी का जिक्र अनामिका ने इन पंक्तियों में किया है। पुस्तक में ऐसा लिखा था कि 'राम पाठशाला जा', 'राधा खाना

▶ माता-पिता का पक्षधरतापूर्ण व्यवहार

पका', 'भैया अब सोनेवाला है तू झाडू लगा के बिस्तर बिछा ले'। ' बेटा नया घर है यह जगह तेरा कमरा है। 'माता पिता कहते हैं- 'पगली, लडकियाँ तो हवा- मिट्टी- धूप जैसी होती हैं, इसलिए कोई घर नहीं'।

लडके को पाठशाला भेजा जा रहा है। कितना भेदभाव है? लड़का ज्ञानार्जन के लिए जा रहा है। लड़की को खाना पकाना पड़ता है। लडके को स्वीट खिलाया जाता है। माँ बाप लडकी को आदेश देते हैं 'झाडू लगाओ भैया सोनेवाला है'। नये घर में नये कमरे की ओर इशारा करके कहते हैं, बेटा यहा तेरा कमरा है। तब लडकी आकाँक्षा से पूछती है कि पापा मेरा कमरा कौन सा है? तब उत्तर आता है, पगली लडकी तू तो हवा, धूप या मिट्टी होती है। तेरा कोई घर नहीं। लडकियों का कोई जगह नहीं, वह बेजगह है। समाज ने लडकियों को अलग जगह पर खडा कर दिया है। भेदभाव भरकर रखा गया है। कवयित्री कहती हैं कि बचपन में पढे प्रारंभिक पाठों के अंदर भी कैसा भेदभाव रहता था। लडकी को गौण स्थान, श्रम के काम, सहने की सज़ा। बिलकुल एक अलग ढाँचे में उसे ढाला गया है। उसी भेदभाव के अनुसार पाठ्य पुस्तकें तैयार की गयी हैं। उसमें भी वही पाठ पढाया गया जिसमें लडकी का अपना स्थान ही नहीं होती। इस कविता में शिक्षा व्यवस्था के प्रारंभिक पाठों पर व्यंग्य किया गया है। स्त्री के जन्म लेते ही उसे तरह तरह के बंधनों में जकड लिया जाता है। जिस घर में उसका जन्म हुआ था, वहाँ भी उसकी कोई जगह नहीं होती। वे हवा, धूप और मिट्टी होती हैं। अनामिका ने परंपरागत शिक्षा के उन आरंभिक पाठों का स्मरण करायी है, जिसके तहत स्त्री को एक निम्न इकाई के मनोविज्ञान में ढाला जाता रहा है। लडके के हिस्से शिक्षा व स्नेह, और लडकियों के लिए काम का आदेश।

▶ लड़का-लडकी में भेदभाव का ज़िक्र

जिनका कोई घर नहीं होता-
उनकी होती है भला कौन सी जगह?
कौनसी जगह होती है ऐसी
जो छूट जाने पर औरत हो जाती है!
कटे हुए नाखूनों,
कंघी में फँसकर बाहर आए केशों सी
एकदम से बुहार दी जानेवाली?

घर छूटे, दर छूटे, छूट गए लोग- बाग
कुछ प्रश्न पीछे पडे थे, वे भी छूटे!
छूटती गई जगहें
लेकिन, कभी भी तो नेलकटर या कंघियों में
फँसे पडे होने का एहसास नहीं हुआ!

▶ लेखिका प्रश्न करती है कि स्त्री केलिए कौन सी जगह है

अर्थः- अनामिकाजी पूछती हैं कि जिनका कोई घर नहीं होता, उनकी कौन सी जगह होती है? वे प्रश्न करती हैं कि स्त्री के लिए कौन सी जगह है? कौन सी जगह है बताइए। ऐसी कोई जगह है स्त्री के लिए। कटे हुए नाखून, या कंघी में फँसे बाल इन्हें एकदम से झाडू मारकर फेंक देते हैं। जन्म लेना पाप है। उसी प्रकार ही है स्त्री की हालत। ऐसे उन्होंने क्या किया है? क्या दोष है नारी का? इस तरह बाल और नाखून के समान एकदम बुहार जाना न्याय है?

शादी के समय घर-दर-लोग बाग छूट जाते हैं। जगहें भी छूट जाते हैं। शादी से संबन्धित जो शंकाएँ आकाँक्षाएँ पीछे पडी थीं, वे भी छूट गयीं। नाखून तो नेलकटर के अंदर फँस जाता है। बाल भी कंघी के अंदर फँस जाता है। पर हम नारियों को इस झंझड में फँसने का एहसास नहीं हुआ।

▶ अस्तित्व के लिए संघर्ष करनेवाली नारी का चित्रण

व्याख्याः- प्रस्तुत पंक्तियाँ अनामिका द्वारा लिखित 'बेजगह' शीर्षक कविता से ली गई हैं। कवयित्री पूछती हैं कि जिसका अपना कोई घर नहीं, अपनी कोई जगह नहीं वह बेजगह हो जाता है। उसका कोई अस्तित्व नहीं। समाज में वह अस्तित्वविहीन है। हम कटे हुए नाखूनों को और कंघी में फंसे बाल को एकदम बुहार देते हैं। उनका अस्तित्व नष्ट हो जाता है। अनामिकाजी पूछती है कि इसी प्रकार बुहा दी जानेवाली चीज़ है नारी? समाज से बहिष्कृत करने के लिए उसने ऐसा कौन सा पाप किया? कवयित्री चिंतित हैं। वे आगे कहती हैं कि शादी के समय लडकियों का घर दर छूट जाता है। अपने माता पिता रिश्तेदारों को छोडकर सखि, भाई बहनों को छोडकर, गलियों के अन्दरवाले बाग छोडकर वह दूसरे घर में चली जाती है। कुछ प्रश्न पीछे पडे थे, वे भी छूटे। अर्थात् मैं कैसे घर छोडूँ, मैं कैसे जाऊँ, ये प्रश्न भी छूट गये, जगहें छूट गयीं। कभी कभी नाखून नेल कटर के अंदर फँस जाता है, बाल कंघी के अंदर फँस जाता है। ऐसे ही कभी कभी लडकी भी परंपरा के अंदर फंसी पडी है। पर हमें इन झंझडों में फँसे रहने का अहसास नहीं हुआ। हर जगह को छोडते छोडते हमारी नारी आ गयी है। कभी भी नेलकटर या कंघी में फँसे रहने का एहसास नहीं। हम भी इस समाज के अंदर फँसी हैं, पर इसका अहसास नहीं। एक नारी अपना घर छोडकर दूसरे घर आती है, पति बच्चों के साथ रहती है तो उसको वह घर अपना लगता है वह कहती है तुम ही मेरा परिवार हो। बंधन में पडने का अहसास नहीं। हमें इन झंझडों में फँसे रहने का अहसास नहीं हुआ, ऐसा कवयित्री कहती हैं। कवयित्री चिंतित हैं कि नारी जगह से छूटी हुई औरत कटे हुए नाखूनों और कंघी में फँसकर बाहर आये केशों सी एकदम बुहार दी जानेवाली स्थिति से गुज़र रही है। घर छूटे, दर छूटे, छूट गये लोग बाग, कुछ प्रश्न पीछे पडे थे, वे भी छूट गये। इन सब के साथ जगहें छूटती गयीं।

परंपरा से छूटकर बस यह लगता है-
किसी बडे क्लासिक से
पासकोर्स बी.ए के प्रश्नपत्र पर छिटकी

छोटी सी पंक्ति हूँ-
चाहती नहीं लेकिन
कोई करने बैठे
मेरी व्याख्या सप्रसंग।
सारे संदर्भों के पार
मुश्किल से उडकर पहुँची हूँ
ऐसी ही समझी -पढी जाऊँ
जैसे तुकाराम का कोई
अधूरा अभंग!

अर्थः- अनामिकाजी कहती हैं कि परम्परा से छूटकर बस यही लगता है कि किसी बडे क्लासिक से पासकोर्स बि.ए के प्रश्नपत्र पर छिटकी छोटी सी पंक्ति के समान हूँ। मैं नहीं चाहती कि कोई सप्रसंग संदर्भ लिखकर मेरी या नारी की व्याख्या करें। मैं मुश्किल से इन सारे जीवन संघर्षों को पार करके पहूँची हूँ। मुझे सभी अधूरे अभंग की तरह है, जो कहीं भी मंगल नहीं है। मैं ऐसी ही समझी पढी जाऊँ। इस प्रकार स्त्रियों की मनोदशा को अनामिका पंक्तियों के माध्यम से व्यक्त करती हैं। युगों से जो स्त्री विरोधी मानसिकता समाज में व्याप्त है उसे कवयित्री बदलना चाहती हैं। परंपरा या रूढियों या नियमों से छूटने पर लगता है कि मैं नारी किसी क्लासिक पास कोर्स बी. ए के प्रश्नप्र पर आयी हुई छोटी सी पंक्ति हूँ। नारी के बारे में मेरी व्याख्या या मेरी कविता की व्याख्या मैं नहीं चाहती हूँ। कवयित्री कहती है मैं नहीं चाहती कि किसी बडे से क्लासिक पासकोर्स बी ए के प्रशनपत्र पर छिटकी छोटी सी पंक्ति के रूप में मुझे पढूँ। हम नारियाँ सारी कठिनाइयों को सहकर बडी मुश्किल से यहाँ तक पहुँची हैं। हम जैसी नारियों को इस तरह समझिए पढिए कि जैसे महाराष्ट्र के बौद्धिक प्रख्यात संत तुकाराम को समझते हैं पढ़ते हैं। संत तुकाराम के इतने जबरदस्त अभंग हुआ करते थे कि पढ़नेवाले उसके अंदर डुबो लेते थे।

▶ युगों से जो स्त्री विरोधी मानसिकता समाज में व्याप्त है उसे कवयित्री बदलना चाहती हैं

व्याख्याः- प्रस्तुत पंक्तियाँ अनामिकाजी की 'बेजगह' कविता से ली गई हैं। कवयित्री कहती हैं कि नारी सारे संदर्भों से निकलकर यहाँ तक पहुँची हैं। अब लोग समझेंगे नारी सचमुच क्या है उसकी क्या भावनाएँ होती हैं। हमें कोई समझता है तो हमें कितना अच्छा लगता है। वास्तव में नारी को अब भी कोई सही रूप में नहीं समझता है। नारी शिकायत करती है कि नारी को कोई समस्या है, कोई प्राब्लम होता है यह कोई नहीं समझता। अधूरा ही सही, हमें समझ जाओ। हम जैसी नारियों को इस तरह पढिए जैसे महाराष्ट्र के बौद्धिक प्रख्यात संत तुकाराम को पढते हैं। तुकाराम के इतने जबरदस्त अभंग हुआ करते थे कि जो पढते हैं, उसको अंदर डुबो लेते थे।

▶ वास्तव में नारी को अब भी कोई सही रूप में नहीं समझता है

कवयित्री स्त्रियों की मनोदशाओं को व्यक्त कर युगों से चली आ रही स्त्री विरोधी

▶ नारी को समझने की आवश्यकता पर

मानसिकता को बदलना चाहती है। आगे कहती हैं कि नारियों को भी कोई समझे, कम से कम थोडा तो समझ जाओ। पर दुःख की बात है कि आज भी स्त्री को समझने को समाज तैयार नहीं।

4.1.2 स्त्रियाँ

▶ स्त्री की अस्मिता केलिए बहस करने वाली कविता

'स्त्रियाँ' प्रसिद्ध कवयित्री अनामिका की 'बहु' चर्चित कविता है। यद्यपि यह कविता छोटी है, पर गंभीर सोच के लिए विवश करती है। इसमें एक औरत की सहज अभिव्यक्ति है। तिरस्कार और उपहास का पात्र बनती स्त्री की हालत का चित्रण इसमें है। आज भी कुछ सीमित वर्ग को छोडकर अधिक बदलाव स्त्री जीवन में नहीं आया है। 'स्त्रियाँ' कविता यह साबित करती है इस में अनामिकाजी ने स्त्री के वजूद की तलाश की है। इस कविता में कवयित्री ने समाज की उस चेतना को परखा है, जिसके ज़रिए वह स्त्री को पढ़ता, देखता और सुनता है। इसमें उन्होंने भोगने की व्यथा कथा भी लिखी है। इस कविता के माध्यम से पुरुषवादी समाज में चिरकाल से पिसती रही स्त्री के यथार्थ स्थिति को खोलकर दिखाया गया है। स्त्री की अस्मिता को लेकर बहस करती है कविता। इस पाठ का उद्देश्य कविता की पंक्तियों के माध्यम से कविता को गहराई से समझने का प्रयास करना है।

पढा गया हमको
जैसे पढा जाता है कागज़
बच्चों की फटी कॉपियों का
चनाज़ोर गर्म के लिफाफे बनाने के पहले!
देखा गया हमको
जैसे कि कुफ्त हो उनींदे
देखी जाती है कलाई घडी
अलस्सुबह अलार्म बजने के बाद!
सुना गया हमको
यों ही उडते मन से
जैसे सुने जाते हैं फिल्मी गाने
सस्ते कैसटों पर
ठसाठस्स भरी हुई बस में!
भोगा गया हमको
बहुत दूर के रिश्तेदारों के
दुःख की तरह!

अर्थ- इन पंक्तियों में स्त्री के साथ होती अमानवीयता को रेखांकित की गयी है। यह

▶ कविता स्त्री होने की यातना या त्रासदी को स्वर देती है

कविता स्त्री होने की यातना या त्रासदी को स्वर देती है। स्त्रियाँ कहती हैं कि हम स्त्रियों को पढा गया जैसे पढा जाता है कागज़, जो बच्चों की फटी कॉपियों का चनाज़ोरगरम के लिफाफे बनाने के पहले की स्थिति में था। सुबह अलारम की आवाज़ सुनने पर हम जैसे अलारम की ओर देखते हैं, उसी प्रकार हमको देखा। हमको सुना गया, उडते मन से जैसे फिल्मी गाने सस्ते कैसटों पर सुनते हैं ठसाठस्स ठूँसी हुई बस में। बहुत दूर के रिश्तेदारों के दुःख की तरह हमको भोगा गया। यही स्त्री की शिकायत है।

व्याख्याः- ये पंक्तियाँ अनामिकाजी की 'स्त्रियाँ' कविता से ली गई हैं। प्रस्तुत अवतरण में कवयित्री पुरुष प्रधान समाज के साथ संवाद करते हुए उसके द्वारा सदियों से स्त्री के साथ किये जा रहे दोयं दर्जे के व्यवहार को विभिन्न उदाहरणों द्वारा रेखांकित करती हैं। अनामिका कहती हैं कि हम स्त्रियों की भावनाओं एवं इच्छाओं को कभी इस समाज ने गंभीरता से पढा नहीं, न ही मानवीय धरातल पर देखा, न ही कभी गंभीरता से सुना। हमें पढा गया उस तौर पर जैसे बच्चों की फटी कॉपी के पन्नों को देखता है। हमको पढा गया का मतलब है व्यक्ति के रूप में हमको या हमारी रचना को नहीं देखा, समझा। हमको यह समाज ऐसे देखते आया है, जैसे सुबह सुबह अलारम बजने पर अलारम घडी को देखा जाता है। हमें आलस्य के साथ देखा। इस समाज ने हमें कभी कायदे से सुनने की कोशिश नहीं की, सदा उपेक्षा के भाव से सुना है। यूँ ही उडते मन से सुना, जैसे सुने जाते हैं फिल्मी गाने ठसाठस भरी बस में। हमको ऐसे भोगा गया जैसे दूर के रिश्तेदारों के दःख की तरह। इन पंक्तियों में चार प्रकार की क्रियाओं का जिक्र है- पढा गया, देखा गया, सुना गया, भोगा गया। इन क्रियाओं द्वारा समाज की उस चेतना को परखा गया है जिसके ज़रिए वह स्त्री को पढ़ता, देखता, सुनता और भोग्ता है। इनमें से एक का भी करता स्त्री नहीं है, लेकिन उसके प्रति व्यवहार का लगभग समूचा कारोबार समाया हुआ है। प्रत्येक क्रिया स्त्री के साथ महज़ आदतन पारिवारिक सामाजिक बर्ताव का कोई न कोई रूप है, जिसमें वह मौजूद होकर भी मौजूद नहीं है। कर्ता के लिए वह महज़ बेध्यानी और उपेक्षा का पात्र है। इस बेध्यानी और उदासीनता को प्रत्येक क्रिया शब्द से बेहद सटीक और सार्थक सादृश्य विधान की बिम्बधर्मिता से मूर्त करती है। स्त्रियों की शिकायत है कि किसी ने हम स्त्रियों के दुःख को अपना दुःख नहीं माना। अनामिका के कहने का अर्थ स्त्रीयों को इस समाज ने कभी भी मानवीय धरातल पर देखने समझने की कोशिश नहीं की गयी है। हमारी इच्छाओं का भी एक संसार है। उस संसार को न पढा गया न देखा गया न सुना गया। न ही हमारे दुःखों को अपना माना गया। हमें इस समाज ने मानवीय अधिकारों से वंचित रखा और हमें हर स्तर पर उपेक्षाएँ ही मिलीं। सबसे बडी अमानविकता इसमें यह है कि बहुत दूर के रिश्तेदारों के दुःख की तरह स्त्री भोगा गया।

▶ स्त्री के साथ होती अमानवीयता का वर्णन

एक दिन हमने कहा
हम भी इनसान हैं-
हमें कायदे से पढो एक एक अक्षर

जैसे पढा होगा बी.ए के बाद
नौकरी का पहला विज्ञापन
देखो तो ऐसे
जैसे कि ठिठुरते हुए देखी जाती है
बहुत दूर जलती हुई आग!
सुनो हमें अनहद की तरह
और समझो जैसे समझी जाती है
नई नई सीखी हुई भाषा!

अर्थः- स्त्रियाँ अपनी अस्मिता व्यक्त करने लगीं। स्त्रियाँ आवाज़ उठाने लगीं तो हलचलें मचने लगीं। वे कहने लगी कि हम भी इनसान हैं। एक दिन स्त्रियाँ आवाज़ उठाने लगीं कि हम भी माँस मज्जे से युक्त इनसान हैं। हमें ठीक तरह से पढो, जिस प्रकार बी.ए के बाद नौकरी का पहला विज्ञापन पढते हैं। हमें ऐसे देखो जैसे बहुत दूर जलती हुई आग को ठिठुरते हुए देखते हैं। वे आगे कहती हैं कि हमें अनहरनाद के समान भक्ति एवं ध्यान से सुनो। नई नई सीखी हुई भाषा को जैसे समझते हैं उसी तरह उत्सुकता के साथ हमें समझो।

▶ स्त्रियाँ अपनी अस्मिता व्यक्त करने लगीं

व्याख्याः- यहाँ से कविता अपने असली उद्देश्य की ओर बढती है अर्थात् नया मोड लेती है। इन पंक्तियों में स्त्री की आकाँक्षा और आत्मगौरव भरी हुई है। स्त्रियाँ अपनी अस्मिता पहचानने लगी। अनामिका कहती हैं कि स्त्रियों को नये सिरे से समझने की ज़रूरत है। पुरुष सत्तात्मक समाज में स्त्री को मानवीय संवेदना से देखना होगा। स्त्रियाँ आवाज़ उठाती हैं कि हमें सरसरी तौर पर न पढना होगा। हमें एक एक अक्षर के रूप में पढना है, पूरा का पूरा पढ़ना है, जैसे नौकरी का विज्ञापन पढ़ते हैं। जैसे कोई ठिठुरते हुए दूर जलती हुई आग को देखता है, पूरी चाह के साथ हमें देखो। जलती आग को देखकर हमारे मन में उत्सुकता बढ़ती है। पुरुष सत्तात्मक सामाजिक व्यवस्था में स्त्री रात की तरह ओझल रहती आयी है। उसी प्रकार ओझल रहेगी तो समाज में वह ठीक तरह से समझी नहीं जाती है। हमें उडते मन से नहीं पूरे मन से पूरे लगन के साथ सुनना होगा जैसे योगियों के द्वारा अनहदनाद सुना जाता है। योगी अनहदनाद को भक्ति एवं ध्यान तथा एकाग्रता से सुनते हैं। हमें उपेक्षा के भाव से नहीं, आशा और उम्मीद के साथ, जीवन में अपार संभावनाओं की तरह देखना होगा। स्त्री को इस तरह समझा जाना चाहिए, जैसे नई भाषा सीखी जाती है। नई भाषा को हम तत्परता के साथ सीखते हैं। 'स्त्रियाँ' कविता की प्रस्तुत पंक्तियों में अनामिकाजी कहती हैं कि पुरुष के समान हम स्त्रियाँ भी इनसान हैं। हमें भी समस्याएँ हैं सुख है दुःख है। हमसे उस तरह व्यवहार न करो जिस तरह अपरिचितों से करते हैं। अत्यंत तत्परता के साथ हमारी बात सुनों। इस संवाद में पहले अंश की 'भोगा गया' क्रिया को 'समझो' के निवेदन में बदल दिया गया है। स्त्री पक्ष से अपने इंसान होने का दावा भी उसे अपने हक पर अभिमानी बनाती है और वह स्त्री के अस्तित्व में सबसे अधिक असुरक्षित और निष्कवच है उसका चरित्र,

▶ अपनी अस्मिता को पहचाननेवाली स्त्री का वर्णन

जिसे निराधार भी हनन का पात्र बनाया जा सकता है। क्योंकि आधार की स्थिति पुरुष के दुर्बल और कातर अहं के भीतर मौजूद है।

इतना सुनना था कि अधर में लटकती हुई
एक अदृश्य टहनी से
टिड्डियाँ उडीं और रंगीन अफवाहें
चीखती हुई चीं चीं
दुश्चरित्र महिलाएँ, दुश्चरित्र
महिलाएँ-
किन्हीं सरपरस्तों के दम पर फूलीं- फैलीं
अगरधत्त जंगली लताएँ!
खाती पीती, सुख से ऊबी
और बेकार बेचैन, आवारा महिलाओं का ही
शगल हैं ये कहानियाँ और कविताएँ...।
फिर ये उन्होंने थोडे ही लिखी हैं
(कनखियाँ, इशारे, फिर कनखी)
बाकी कहानी बस कनखी है। !
हे परमपिताओं,
परमपुरुषो-
बख्शो, बख्शो, अब हमें बख्शो!

अर्थः- स्त्रियों ने पुरुष सत्तात्मक समाज में इतनी सी बातें जब ज़ाहिर कर दी कि हमें भी इनसान होने का हक है। हमें भी कायदे से सुनो, ठीक उसी तरह, जिस तरह विज्ञापन पढते हैं, भाषा सीखते हैं। जब स्त्रियाँ आवाज़ उठाने लगीं, अधर में लटकती हुई एक अदृश्य टहनी से टिड्डियाँ उठीं। रंगीन अफवाहें निकलने लगीं। कहने लगीं कि दुश्चरित्र महिलाएँ। महिलाओं को दुश्चरित्र का इमेज दिया गया है। ये महिलाएँ तो अगरधत्त जंगली लताएँ हैं। ये कहानियाँ एवं कविताएँ खाती पीती, बेकार बेचैन आवारा महिलाओं की हैं। आगे स्त्री अधिक न लिख सकी। केवल कनखियाँ बाकी हैं। ऊबकर कवयित्री कहती हैं कि हे परमपिताओं, परमपुरुषों रक्षा करो।

▶ महिलाओं को दुश्चरित्र का इमेज दिया गया है

व्याख्याः- अगर नारी मुँह खोलकर कुछ बोलने लगती है तो उन्हें दुश्चरित्र का कलंक लगा दिया जाता है। नारियाँ जब अपनी हक को पहचानने लगीं, तब चारों ओर से आरोप फैलने लगीं कि ये दुश्चरित्र महिलाएँ हैं। पुरुष होने का अधिकार वे स्वयं आस्वाद कर रहे हैं। नारी की तुलना जंगल की अगरधत्त लताओं से की है। जंगल की अगरधत्त लताएँ एकदम बलिष्ठ होती हैं पर ये लताएँ सरपरस्तों के आश्रय से आगे

बढती हैं। आगे बढने के लिए इन्हें पेडों का सहारा चाहिए। इन लताओं का अपना अस्तित्व नहीं आगे बढने की अपनी अलग ताकत नहीं। ये अपने आप खडी नहीं हो सकतीं। ये लताएँ बडी होकर फूलती फलती हैं तो अधिक शक्तिशाली बनती हैं। स्त्रियों को भी जंगली लताओं के समान अबला कहा गया है। स्त्रियाँ भी पुरुषों के पालन पोषण से फैल फूल जाती हैं तो शक्तिशाली बनती है और आवाज़ उठाने लगती है। तब अदृश्य स्थानों से अफ्वाहें उठने लगीं। अर्थात् समाज ने स्त्रियों पर आरोप लगाया कि खाती पीती ऊबी, बेकार बेचैन आवारा महिलाओं का ही शगल हैं ये कहानियाँ और कविताएँ। नारी लेखन जब उभर कर आने लगी, तब पुरुष के वर्चस्ववाद को काफी ठेस पहुँचा। पुरुषों का आधिपत्य अनादि काल से स्त्रियों पर बना रहा। स्त्री ने ज़रा सा अपनी आवाज़ को सुनवा देने के लिए मुँह खोला ही नहीं कि उनपर दुश्चरित्र महिलाएँ होने का आरोप लगाया गया। स्त्री को मुख्यधारा में आने की इज़ाज़त नहीं दी जाती। सामान्तवाद में हर एक के अपने स्थान सीमाएँ निर्धारित हैं। उन्हें बदलने की इज़ाज़त किसी को नहीं। नारी लेखन जब उभरकर आने लगी तब इस प्रकार के कई आरोप स्त्री के विरुद्ध लगाने लगे। स्त्रियों के प्रति जो असहिष्णुता है, उसी अनुपात में स्त्री लेखन के प्रति भी असहिष्णुता प्रकट होने लगी। फिर उन्होंने थोडे ही लिखी हैं। कनखियों की इशारे से शक पैदा किया जाता है। फिर कहानियाँ कवितायँ आदि स्त्रियों ने थोडे ही लिखे हैं। नारी लेखन को शक की दृष्टि से देखने लगे। ज़रूर कोई मर्द होगा इसके पीछे। स्त्री लेखन पर जो दबाव है उससे तंग आकर अनामिका लिखती है हे परमपिताओं कृपा करके हमें अब तो बचाओं। बहुत हो चुका है।

▶ स्त्रियों के प्रति और स्त्री लेखन के प्रति असहिष्णुता है

4.1.3 अनामिका की कविताओं में स्त्री विमर्श

स्त्री विमर्श की प्रबल व्याख्याता, बेहतरीन कवयित्री, उपन्यासकार और आलोचक अनामिका की कविताओं में स्त्री विमर्श के विविध पक्ष देखने को मिलते हैं। इनमें वैयक्तिक पारिवारिक, सामाजिक, परंपरागत और आधुनिक परिप्रेक्ष्य में स्त्री को प्रस्तुत किया गया है। वैयक्तिक परिपेक्ष्य में अनामिका, स्त्री के द्वारा "मैं" की चिन्ता व अस्तित्व बोध के प्रश्नों को उठाती हैं। स्त्री के वैयक्तिक अनुभवों जैसे रजो धर्मा, गर्भधारण करने की अनुभूति, मातृत्व का सुख, स्त्री प्रश्न, स्त्रियों की समस्याएँ, स्त्री जीवन का एकाकीपन, उसकी विवशता आदि को अनामिका मार्मिक ढंग से अपनी कविताओं के द्वारा वाणी प्रदान करती हैं। परिवार और उसमें निहित संबन्धों को अनामिका संवेदनशीलता एवं चिन्तनशीलता के साथ विश्लेषित करती हैं। उनकी कविताओं में पारिवारिक परिप्रेक्ष्य में स्त्री के विविध रूपों के दर्शन होते हैं। उनमें विवाह के प्रति सशंकित स्त्री, समर्पित स्त्री, दोहरी भूमिका का निर्वाहन करती स्त्री, वात्सल्य की प्रतिमूर्ति स्त्री आदि स्त्री के कई रूप हमें देखने को मिलते हैं। सामाजिक परिप्रेक्ष्य में हमें सार्वभौमिक भगिनीवाद, शोषित स्त्री, अस्तित्व के प्रति सजग स्त्री, समाजीकृत स्त्री, उपेक्षित स्त्री, सेक्स वर्क्स के रूप में स्त्री आदि के द्वारा अनामिका स्त्री की विविध दशाओं का साक्षात्कार कराती है।

▶ स्त्री विमर्श के विभिन्न पक्ष का चित्रण

परम्परागत और आधुनिकता के परिप्रेक्ष्य में हमें स्त्री का परम्परागत रूप, रूढ़ियों की जकड़न, मानसिक गुलामी आदि देखने को मिलती है। बाज़ारवाद के प्रभाव से स्त्री को मात्र वस्तु समझा जाना, स्त्री का मात्र देह के रूप में उपयोग करना, उपभोक्तावादी संस्कृति आदि दृष्टिकोणों को गंभीर विचार का विषय बनाया है। आज स्त्रियाँ अपनी, पारम्परिक रूप से स्थापित छवि का खंडन कर रही है। वह न अपनी पूजा चाहती हैं न निंदा। वह तो पुरुष के समान इंसान बनना चाहती है। अनामिका का स्त्री-विमर्श पर बेबाक और गहन अध्ययन-चिन्तन नयी दिशा प्रदान करता है। अनामिका की कलम और सोच ने स्त्रियों को एक अलग मुकाम दिया। हर वर्ग, वर्ण, जाति -नस्ल की स्त्री की स्थिति की, वह निष्पक्ष जाँच-पड़ताल करती हैं। स्त्री होने के नाते उनमें स्त्रियों के प्रति संवेदनात्मक लगाव दिखाई देता है। औरत और उससे जुड़े मुद्दे उनके हमेशा करीब के रहे। इसलिए वे स्त्रियों से जुड़े मुद्दों को यथार्थता के साथ पाठकों के समक्ष रखती हैं।

▶ स्त्रियों से जुड़े मुद्दों को यथार्थता के साथ चित्रण करना

अपनी कविताओं में अनामिका स्त्री की जिंदगी को, उसके जीवन, उसके मातृत्व उसके पारिवारिक दायित्वों, उसकी संवेदनशीलता आदि को दिखाती हैं। उनकी कविताओं के माध्यम से ही हमें यह समझने में मदद मिलती है कि आधुनिक भारत की महिलाएँ किन-किन समस्याओं पर चिंतित और परेशान हैं। अनामिका की कविताओं में स्त्रियों को एक साथ कमज़ोर व मज़बूत दिखाया गया है। अनामिका अपनी रचनाओं में स्त्री के व्यक्तित्व का महत्व एक माँ के तौर पर आत्मत्यागी बलिदान के रूप में स्वीकारती है। अनामिका की कविताएँ बेहद बौद्धिक लगती हैं। उनकी कविताएँ दार्शनिक भी हैं। उनकी कविताओं में औरत अपनी छोटी उम्र से लेकर बूढ़े होने तक अपने स्व की तलाश करती रहती है। वे इन कविताओं में औरतों की दुनिया को समझाने व उनकी मानसिकता को बुनने और उनके अंतरिक्ष को रचने की कोशिश करती हैं।

▶ अपनी कविताओं में औरतों की दुनिया को समझाने व उनकी मानसिकता को बुनने की कोशिश

महिलाओं को अक्सर 'हाउस वाइफ' और बेडपार्टनर के रूप में ही आँका जाता है। ऐसा करके समाज और सभ्यता के निर्माण में उसकी भागीदारी को नकारा जाता है और उसे उपेक्षित किया जाता है। स्त्री की यही उपेक्षा उसके जीवन में क्षोभ और खालीपन लाती है। ऐसी महिला का चित्रण भी उन्होंने किया है। स्त्री की सफलता, उसकी योग्यता पर नहीं, बल्कि उसकी देह और सुन्दरता पर मानती है- इसी पुरुष मानसिकता को अनामिकाजी दर्शाती है। बाज़ारवाद के फलस्वरूप आज स्त्रियाँ अपनी मुस्कुराहट से अभिशप्त हैं। इस बाज़ारवाद की अभिव्यक्ति अनामिका अपनी कविता द्वारा करती हैं।

▶ बाज़ारवाद के फलस्वरूप आज स्त्रियाँ अपनी मुस्कुराहट से अभिशप्त हैं

इस प्रकार अनामिका की काव्यकृतियों में स्त्री के विविध रूपों के दर्शन होते हैं- परित्यक्ता स्त्री, प्रश्नातुर स्त्री, मौन को तोडती स्त्री, दिग्भ्रमित स्त्री, अस्मिताबोध के प्रति सजग स्त्री, सहभागिता के रूप में स्त्री, विद्रोहिणी रूप में स्त्री, सामंजस्य स्थापित करनेवाली स्त्री, दोहरी भूमिका का निर्वाहन करती स्त्री आदि। अनामिका की कविताओं में स्त्री विमर्श प्रमुखता से देखने को मिलता है। अनामिका भारतीय परिवेश में पारिवारिक और सामाजिक स्थितियों में फँसी नारी की दशा का मार्मिक उद्घाटन करती हैं। ये स्त्री विमर्श की एक सशक्त हस्ताक्षर ही हैं।

▶ स्त्री के विभिन्न रूपों का चित्रण

Summarised Overview / संक्षिप्त अवलोकन

प्रथम 'साहित्य अकादमी' पुरस्कार प्राप्त कवयित्री के रूप में मशहूर अनामिका की कविताओं में गंभीर दर्शन या सिद्धांत को ढूँढने की आवश्यकता नहीं। इनमें एक औरत की सहज अभिव्यक्ति है। कवयित्री के प्रश्न सुननेवालों को नई सोच के लिए प्रेरित करते हैं। ये एक करुणामय संवेदनशील स्त्री की नज़रिये से समाज को देखती हैं। स्त्री विमर्श के विविध रूप इनकी कविताओं में हम देख सकते हैं।

Assignment / प्रदत्त कार्य

1. स्त्री विमर्श की दृष्टि से अनामिका की कविताओं का मूल्यांकन कीजिए।
2. अनामिका की कविताओं की भाषा एवं शिल्प पर टिप्पणी लिखिए।
3. समकालीन नारीवादी कवयित्रियों में अनामिका के स्थान को निर्धारित कीजिए।
4. स्त्री विमर्श की दृष्टि से 'बेजगह' कविता की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।
5. स्त्री विमर्श की दृष्टि से 'स्त्रियाँ' कविता का मूल्यांकन कीजिए।

Reference / संदर्भ ग्रंथ

1. कविता के सम्मुख - गोविन्द प्रसाद
2. आधुनिक भारतीय कविता संचयन - सं. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी
3. कविता का अर्थ - परमानन्द श्रीवास्तव

Suggested Reading / निर्धारित पुस्तक

1. खुरदुरी हथेलियाँ - अनामिका
2. हिन्दी कविता की प्रकृति - डॉ. हरदयाल
3. समकालीन कविता का यथार्थ - डॉ. परमानन्द श्रीवास्तव
4. कविता की रचना यात्रा - डॉ. राजकुमार शर्मा
5. समकालीन हिन्दी कविता - डॉ. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी।

Space for Learner Engagement for Objective Questions

Learners are encouraged to develop objective questions based on the content in the paragraph as a sign of their comprehension of the content. The Learners may reflect on the recap bullets and relate their understanding with the narrative in order to frame objective questions from the given text. The University expects that 1 - 2 questions are developed for each paragraph. The space given below can be used for listing the questions.

SGOU

इकाई 2

कात्यायनी- 'इस स्त्री से डरो', 'औरत और घर'

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- कवयित्री कात्यायनी से परिचित होता है
- कविता 'औरत और घर' का भाव समझता है
- स्त्री विमर्श की दृष्टि से कविताओं का मूल्यांकन करता है
- अनामिका की कविताओं की भाषा से परिचित होता है

Background / पृष्ठभूमि

स्त्री अस्मिता की प्रवक्ताओं की प्रथम पीढि की कवयित्रियों में कात्यायनी का नाम प्रमुख है। पिछले तीन दशकों से अपनी कविताओं एवं लेखों से हिन्दी साहित्य को बेतरह झकझोरनेवाली कवयित्री कात्यायनी का जन्म 7 मई 1959 को उत्तरप्रदेश के गोरखपुर में हुआ था। हिन्दी साहित्य में उच्च शिक्षा के बाद वे विभिन्न पत्र पत्रिकाओं से संबद्ध रहीं। वामपंथी सामाजिक सांस्कृतिक मोर्चों से संलग्नता के साथ स्त्री, श्रमिक- वंचित से जुडे प्रश्नों पर वे सक्रिय रही हैं। वे विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में राजनीतिक सामाजिक- साँस्कृतिक विषयों पर स्वतंत्र लेखन कर रही हैं। 'नव भारत टाइम्स' और 'स्वतंत्र भारत' की संवाददाता के रूप में भी काम किया। उनके काव्य संग्रह हैं 'चेहरों पर आँच', 'सात भाइयों के बीच चंपा', 'इस पौरुषपूर्ण समय में', 'जादू नहीं कविता', 'राख अँधेरे की बारिश में', 'फुटपाथ पर कुर्सी' और 'एक कुहरा पारभासी'। उनके निबन्धों के संकलन हैं 'दुर्ग द्वार पर दस्तक', 'कुछ जीवन्त कुछ ज्वलन्त' और 'षड्यंत्ररत मृतात्माओं के बीच' आदि हैं। रूसी और अंग्रेज़ी भाषाओं में इनकी कवियाओं का अनुवाद हुआ है। इनकी रचनाएँ महिलाओं को सशक्त बनाने और उनके अधिकारों की लडाई में मदद करनेवाली हैं। इस इकाई में कात्यानीजी की 'इस स्त्री से डरो', 'औरत और घर' कविताओं का विस्तृत अध्ययन करें।

Keywords / मुख्य बिन्दु

औरत, अस्मिता, रणनीति, पिंजरा, अस्वतंत्रता, यंत्रणा

Discussion / चर्चा

4.2.1 इस स्त्री से डरो

▶ यह रणनीति की कविता है

प्रस्तुत कविता कात्यायनीजी की नारी केंद्रित सशक्त रचना है। कवयित्री को स्त्री की भीतरी शक्ति पर बहुत भरोसा है। तभी तो वे कहती हैं कि 'इस स्त्री से डरो'। इस कविता के समापन में स्त्री डर का बायस बन चुकी है। इसमें ऐसी स्त्री का चित्रण है, जो बेहद जटिल और रहस्यमयी है। यह पाठकों को सोचने के लिए मज़बूर करती है कि स्त्रीत्व क्या है और यह कैसे विभिन्न रूपों में प्रकट होता है। यह स्त्री अस्मिता के लिए लडनेवाली पितृसत्ता पर प्रहार करनेवाली कविता है। इस में कवयित्री पितृसत्ता और स्त्री पक्ष को एक दूसरे के विरुद्ध मोर्चे की तरह गढती है और स्वयं स्त्री पक्ष के साथ खडी होती है। यह रणनीति की कविता है। प्रस्तुत कविता, समाज द्वारा स्त्री पर लगाए गए बंधनों और रूढियों को भी उजागर करती है।

कात्यायनी

इस स्त्री से डरो

यह स्त्री
सबकुछ जानती है
पिंजरे के बारे में
जाल के बारे में
यंत्रणा गृहों के बारे में
उससे पूछो
पिंजरे के बारे में पूछो,
वह बताती है
नीले अनंत विस्तार में
उडने के
रोमांच के बारे में।
जाल के बारे में पूछने पर
गहरे समुद्र में
खो जाने के

सपने के बारे में
बातें करने लगती है
यंत्रणा- गृहों की बात छिडते ही
गाने लगती है
प्यार के बारे में
एक गीत
रहस्यमय हैं इस स्त्री की उलटबासियाँ
इन्हें समझो।
इस स्त्री से डरो।

अर्थः- कवयित्री कहती हैं कि इस स्त्री से डरो, क्योंकि यह स्त्री सबकुछ जानती है। पिंछडे के बारे में, जाल के बारे में, यंत्रणा गृहों के बारे में। पिंजडे के बारे में पूछने पर वह स्त्री नीलाकाश में उड़ते समय जो रोमांचकारी अनुभव होता है, उसके बारे में बताती है। जाल के बारे में पूछने पर गहरे समुद्र में खो जाने के सपने के बारे में बातें करने लगती है। स्त्री से यंत्रणा गृह के बारे में पूछने पर वह प्यार से संबन्धित गानें गाती हैं। इस स्त्री की उलटबासियाँ रहस्यमयी हैं। इसलिए इसे समझने की कोशिश करो, इस स्त्री से डरो।

व्याख्याः- प्रस्तुत पंक्तियाँ कात्यायनी की 'इस स्त्री से डरो' कविता की हैं। कवयित्री बताती है कि इस स्त्री से डरो क्योंकि यह स्त्री सबकुछ जानती है। पिंजडे के बारे में सबकुछ जानती है। पिंजडा बंधन या अस्वतंत्रता का प्रतीक है। जाल में फंसना वहाँ भी बंधन है यातना है। यंत्रणाग्रह भी अस्वतंत्रता का प्रतीक है। पिंजरे के बारे में पूछते समय वह स्त्री नीलाकाश में उडते समय जो रोमांचकारी अनुभव होता है, उसके बारे में बताती है। पिंजडे के भीतर बंद चिडिया चार दीवारों के अंदर फंसी हुई है। ऐसी चिडिया की हालत अत्यंत दयनीय है। चिडिया तो बंधन नहीं चाहती। अनन्त नील आकाश में स्वच्छंद विचरण करना चाहती है। स्त्री भी स्वतंत्रता चाहती है। पुरुष सत्तात्मक समाज के नियमों बंधनों को तोडकर बाहर आना चाहती है। जाल भी बंधन का प्रतीक है। जाल में फंसी मछली स्वतंत्रता के लिए तडपती है। नारी भी समाज के बंधनों में पडकर आज़ादी के लिए तडपती है।

▶ यंत्रणाग्रह अस्वतंत्रता का प्रतीक है

यंत्रणागृह के अंदर पडे हुए लोगों की अवस्था ही है आज की नारियों की। इसके अंदर प्यार या स्वतंत्रता नहीं। अकेलापन का अनुभव। यह स्त्री प्रश्न करते समय, उलटबासियाँ ही कहती हैं। इसकी उलटबासियाँ रहस्यमयी हैं। इस स्त्री को समझो। ऐसी स्त्री से डरो। यह कविता दिखाती है कि नारी का जीवन कितना पीडायुक्त है। स्त्री किसी से अपने दुःख के बारे में नहीं कहती। वह कहती है कि मेरा जीवन सुखपूर्ण है। वह जानती है कि वह पितृस्तात्मक समाज के बंधनों में जकडी हुई है। अस्वतंत्र है। लेकिन वह उलटकर बातें करती है। मतलब यह है कि आज की स्त्री बुद्धिमती बन गई है।

▶ अपने दुःख पीडा और अस्वतंत्रता को, छिपाकर बातें करनेवाली स्त्री से डरना है

ऐसी स्त्रियों से डरना है। वह अपने दुःख को, पीडा को अस्वतंत्रता को, छिपाकर बातें करती है। आधुनिक नारी उलटबाज़ी करती है- लेकिन वह उसकी समझ है।

पिंछडा, जाल और यंत्रणा गृह की असलियत समझनेवाली यह स्त्री मुक्ति के रोमांच को भी समझती है। मुक्ति की आकाँक्षा और उस लक्ष्य को जानने के उपाय, संशयों के कुहासे को साफकर मंज़िलों की राह रोशन करती है। स्त्री जीवन के क्वँट्रास्ट का ग्राफ इस कविता में है। आज नारी बिना किसी लाग लपेट से झलकती है। प्रतिकूल परिस्थितियों के बावजूद अदम्य जिजीविषा के सहारे स्त्री अपना अलग स्पेस पा लेती है।

कात्यायनी अपनी कविता उन लोगों को समर्पित करती है, जिन्होंने अंधेरे दौर में भी सपना देखने की आदत न छोडी है और न लडने की। कवयित्री कहती है कि यह स्त्री सचमुच जानती है कि पिंजरे के बारे में, जाल के बारे में और यंत्रणाओं के बारे में। आम धारणा यह है कि स्त्री का अनुभव क्षेत्र सीमित है। दुनियादारी कम है। अतः स्त्री को धोखा देना आसान है। यह सच भी है कि पहले वह वंचित रही थी। समाज में और परिवार में स्त्री हमेशा शिकार थी। कुल मर्यादा और शानमान की प्रतिष्ठा के तहत लडकी को अनुकूलित करने में पुरुष और स्त्री की भूमिका बराबर है। यहाँ दोनों मानसिकता के शिकार हैं। बचपन से ही लडकी अनुशासन के घेरे में है। अलग मान मर्यादाएँ, आचार-व्यवहार, जात धर्म आदि उसपर शासन करते आए हैं। बचपन से ही लडका लडकी का अनुशासन रोज़ीनामा घरों में अलग अलग रहा था। पुरुष सत्तात्मक व्यवस्था में नारी की ओर किस नज़रिये से देखा जाता है, इसे इस कविता में उजागर किया गया है।

▶ पुरुष सत्तात्मक व्यवस्था में नारी के प्रति दृष्टिकोण

4.2.2 औरत और घर

'औरत और घर' कविता भी कात्यायनी की भावनात्मक और शक्तिशाली कविता है। यह घरेलू महिलाओं की भूमिका और उनके संघर्षों को उजागर करती हैं। महिलाओं के अधिकारों और उनकी स्थिति के बारे में लिखा गया है। यह कविता औरत की पहचान, स्वतंत्रता, और समाज में उसकी स्थिति के बारे में बात करती है। 'औरत और घर' कविता में कात्यायनी स्त्री जीवन के कई प्रश्नों को उजागार करती हैं। प्रतिकूल परिस्थितियों के बावजूद स्त्री अपनी ज़मीन तलाशती है। घर, स्त्री के स्वत्व, मातृत्व और उसकी रोमानी छवि के पर्याय हैं। स्त्री स्वयं इन छवियों के मोह में कैद हैं। प्रस्तुत कविता में कात्यायनी की सामाजिक प्रतिबद्धता, स्त्री के खिलाफ के षड्यंत्रों को निरस्त्र कर स्त्री के नागरिक अधिकारों की पैरवी करती हैं। यह ऐसी कविता है जो भारतीय समाज में महिलाओं की स्थिति और उनके घर के रिश्ते को गहराई से उजागर करती है। यह भारतीय महिला के जीवन की जटिलताओं उसके संघर्षों और उसकी आकाँक्षाओं का मार्मिक चित्रण करती है। अपनी इस कविता में कात्यायनी ने महिलाओं को घर के दायरे में सिमटे हुए एक पात्र के रूप में नहीं, बल्कि एक व्यक्ति के रूप में चित्रित किया है, जिसकी अपनी इच्छाएँ, आकाँक्षाएँ और संघर्ष हैं।

▶ भारतीय महिला के जीवन की जटिलताओं उसके संघर्षों और उसकी आकाँक्षाओं का वर्णन

इस पाठ का उद्देश्य दोनों कविताओं की पंक्तियों के माध्यम से कविताओं को गहराई से परखने का प्रयास करना है।

कविगण कहते रहे घर के बारे में
बहुत मासूम और कोमल
प्यार भरी बातें
शताब्दियों सहस्राब्दियों से रचते रहे
ऋचाएँ, गीत और कविताएँ
घर लौट चलने, घर में होने
कचोटते दिल से घर से बाहर जाने
और घर की उदासी भरी यादों के बारे में।

वहाँ एक औरत रहती रही
घर को हिफाज़त के साथ घर बनाये हुए,
उसे भूतों का डेरा बनने से जतनपूर्वक बचाते हुए,
घर में सुरक्षापूर्वक
होने का अहसास वह एक
बेहद नशीली शराब की तरह पीती रही।
वहाँ गैस थी, मिक्सी और मसालदानी थी,
सिंक, वाशबेसिन,
सैनिफ्रैश-ओडोनिल और मेहंदी थी,
नहाने- कपडे धोने के साबुन,
सिंगारदान, झाडू, कुर्सियाँ-दीवान, कलैंडर
पेण्टिंग्स
स्वर्गीय पिताजी की माला सजी तस्वीर
और शादी के समय की
उसकी अपनी तस्वीर पति के साथ।
बिस्तर था, बच्चे थे,
बेडस्विच से जलनेवाला नीला बल्ब भी था
शब्दकोश भी कई थे और कविताओं की पुस्तकें भी।
एकदम भरा पूरा था घर,
हृदय की पूरी उदारता और विशालता के साथ उसने
अपना लिया था औरत को प्यार से,
अपना एक हिस्सा बना लिया था।
एक सख्त अनुशासनपिय अभिभावक भी था घर,
लगातार पीछा करता था
जब भी औरत निकलती थी बाहर सडक पर।

अर्थः- कात्यायनी अपनी कविता 'औरत और घर' में कहती हैं कि पुराने काल से ही कविगण घर के बारे में बहुत मासूम कोमल प्यार भरी बातें कहते आ रहे थे। शताब्दियों सहस्राब्दियों से ही ऋचाएँ, गीत और कविताएँ रचते आ रहे थे। घर लौट चलने, घर में होने, दुःखी मन से घर से बाहर जाने और घर की वेदना भरी यादों के बारे में कविगण निरन्तर कहते आ रहे थे। कवयित्री आगे कहती हैं कि घर में औरत थी, जो हिफाज़त के साथ घर बनाये हुए, बडे प्रयत्न से सुरक्षित रखे एवं घर में सुरक्षित होने के एहसास का अनुभव करती रही। वह घर तो सभी तरह की चीज़ों से एकदम भरा था। विशाल एवं उदार मन के साथ, प्यार के साथ उसने औरत को आपना लिया था। अपना एक हिस्सा बना लिया था। घर एक अनुशासनीय अभिभावक भी था। जब कभी औरत बाहर निकलती थी, लगातार पीछा करता था। वह औरत को अपने नियंत्रण में रखना चाहता था।

▶ पुराने काल से ही कविगण घर के बारे में बहुत मासूम कोमल प्यार भरी बातें कहते आ रहे थे

व्याख्याः- ये पंक्तियाँ कात्यायनी की कविता 'औरत और घर' से ली गयी हैं। पुरुष सत्तात्मक समाज ने औरत को घर के अन्दर बाँध दिया है। औरत घर का पर्याय ही बन चुकी है। घर सिर्फ एक भौतिक जगह नहीं, बल्कि एक महिला के लिए सुरक्षित स्थान, उसकी पहचान और भावनाओं का प्रतीक हो सकता है। औरत नहीं तो घर नहीं। घर के बारे में घर लौटने के बारे में, घर में होने के बारे में दुःख के साथ घर से विदा लेने के बारे में कविगण ऋचाएँ, गीत और कविताएँ रचते रहे। घर का अपना महत्वपूर्ण स्थान है। घर को सुरक्षित रखने का दायित्व स्त्री को था। एक औरत अपने घर को सुरक्षित रखने के लिए बहुत मेहनत करती है। उस घर का देखभाल वह अच्छी तरह कर रही थी। उसने घर को नरक बनने से बचाया। वह, घर को भूतों या किसी नकारात्मक शक्ति से बचाती है। भूत सिर्फ एक अलौकिक प्राणी नहीं, बल्कि किसी भी तरह का डर, चिंता या अतीत का बोझ हो सकता है, जिसे महिला अपने घर से दूर रखना चाहती है। घर की सुख समृद्धि के लिए उसने तन तोड मेहनत की। घर में शांति पैदा करने की एवं घरवालों को सुख देने की कोशिश की।

▶ पुरुष सत्तात्मक समाज ने औरत को घर के अन्दर बाँध दिया

घर की सुरक्षा देखकर उसने मन में पुलक का अनुभव किया। फिर भी उसे घर से बाहर निकलना होता है। घर में तो वे सभी सुविधाएँ थीं, जो एक घर के लिए अनिवार्य थीं। भरा पूरा घर था। घर ने औरत को पूरी उदारता के साथ विशाल मन के साथ प्यार के साथ अपना लिया था। उसने औरत को अपना एक हिस्सा बना लिया था। घर तो एक सख्त अनुशासन प्रिय अभिभावक जैसा था। औरत की सारी क्रियाओं में घर का हस्तक्षेप होता था। घर या पुरुष सत्ता औरत को बाहर निकलने नहीं देती। औरत जब बाहर निकलती थी, लगातार उसका पीछा करता था। मतलब है कि स्त्री जब घर के बंधनों को तोडकर अपने अस्तित्व की खोज के लिए आवाज़ उठाती है तो पुरुष सत्तात्मक समाज उसके मुँह को बंद कर देता है। उसके सारे प्रयासों को दमित कर देता है।

▶ स्त्री अपने अस्तित्व की खोज के लिए आवाज़ उठाती है

▶ औरत और घर के आपसी संबन्ध का जिक्र

परिवार के भीतर और बाहर अपनी उपस्थिति की लडाई में कई बाधाएँ उसे आतंकित करती रहीं। धारा के विरुद्ध तैरने की हिम्मत अपने ही अनुभव से उसने पायी। यहाँ कवयित्री सही पहचानती है। पुरुष अपने स्वार्थवश डर या आतंक का ढोंग रच उसे बाहर जाने से रोक देता है, ताकि स्त्री अपने ही अधीन में अनुशासित रहे। उसकी सुरक्षा हेतु उन्हें यह भी पता है कि उनके बाहर जाने से घर के कई राज़ या अत्याचार का खुला सा होगा, जो असल में उसके कपट आचरण का गवाह देगा। सडक दुनिया के संघर्षों चुनौतियों और अनिश्चितताओं का प्रतीक हो सकती है। महिलाओं की दोहरी भूमिका है। इनको अक्सर घर और परिवार की ज़िम्मेदारी निभाने के साथ साथ बाहरी दुनिया में भी संघर्ष करना होता है। यहाँ घरेलू ज़िम्मेदारियों में महिलाओं की भूमिका, उनके अधिकारों की लडाई, घर और समाज में महिलाओं की स्थिति आदि की ओर इशारा किया गया है। यहाँ महिला को घर की चार दीवारी में कैद दिखाया गया है। उसे घर के कामकाज में उलझा रखा जाता है और उसके सपने दबे रह जाते हैं।

जानता था वह, औरत का आना सडक पर
खतरनाक होता है औरत के लिए
और पूरे समाज के लिए भी।
जादूगर था घर- देखते ही देखते
अपने ठोस वजूद को उसूल में बदल लेता था,
ज़िन्दा और बेजान चीज़ों के समुच्चय के बजाय
संस्कार और मूल्य बन जाता था
और फिर पलक झपकते ही
पहले जैसा बन जाता था
जैसा कि
लोग देखते जानते हैं उसे
आम तौर पर।
मसखरा भी था शायद घर,
औरत के सपने में दूसरे रूप धरकर आता था
और उसे डराता था-
आता था कभी वह उचाट पठारी मैदान बनकर,
रेत का टीला बनकर
या चट्टानों की तरह लुढकता था
इधर उधर।
दफ्तर में भी बना रहता था वह
जच्चाघर और रसोईघर की तरह है।
साथ साथ औरत के।

अर्थः- कवयित्री कहती हैं कि औरत का सडक पर आना औरत के लिए और पूरे समाज के लिए खतरनाक है। घर तो जादूगार जैसा था कि देखते ही देखते अपने ठोस वजूद को उसूल में बदल लेता था। ज़िन्दा और बेजान चीज़ों के समुच्चय के बजाय संस्कार और मूल्य बन जाता था और फिर पलक झपकते ही पहले जैसा बन जाता था। जैसे आम तौर पर लोग उसे देखते जानते हैं। शायद घर मसखरा बनकर औरत के सपने में दूसरा रूप धरकर उसे डराता था। कभी वह उचाट पठारी मैदान बनकर, रेत का टीला बनकर या चट्टानों के समान इधर उधर लुढकता था। वह जच्चाघर और रसोईघर की तरह ही दफ्तर में भी औरत के पीछा करता था।

व्याख्याः- प्रस्तुत पंक्तियाँ अनामिका की कविता 'औरत और घर' की हैं। एक व्यक्ति पहले से जानता था कि महिला के लिए सडक पर निकलना स्वयं उनके लिए और पूरी समाज केलिए खतरनाक हो सकता है। शायद वह महिला के साथ होनेवाली किसी खतरनाक घटना का अनुमान लगा रहा है। खतरनाक शब्द न सिर्फ शारीरिक खतरे, बल्कि भावनात्मक, सामाजिक और मनोवैज्ञानिक खतरों को भी दर्शाता है। सडक सिर्फ एक भौतिक जगह नहीं, बल्कि जीवन के संघर्षों चुनौतियों और खतरों का प्रतीक हो सकती है। यहाँ समाज की दोहरी मानसिकता प्रकट है। एक तरफ समाज महिलाओं को घर में रहने के लिए कहता है, दूसरी तरफ जब वे बाहर निकलती है, तो वह समाज केलिए भी खतरा हो जाता है।

▶ महिला के लिए सडक पर निकलना स्वयं उनके लिए और पूरी समाज केलिए खतरनाक है

कवयित्री कहती हैं कि जब औरत अपने अस्तित्व को पहचानकर पुरुष सत्ता के विरुद्ध आवाज़ उठाने लगती है, तो वह औरत के लिए और पूरे समाज के लिए खतरनाक है। महिलाएँ अक्सर सुरक्षित वातावरण चाहते हैं। लेकिन साथ ही उन्हें अपनी स्वतंत्रता और पहचान की खोज करनी पडती है। समाज औरत से डरता है। इसलिए उसे दबाकर रखा गया है। औरत सिर्फ एक व्यक्ति नहीं, बल्कि समाज है। महिलाओं की स्थिति और उनके सामने आनेवाली चुनौतियों का प्रतीक हो सकती है। यहाँ समाज में महिलाओं की दयनीय स्थिति को उजागर करती है। और समाज में उनके प्रति व्याप्त पूर्वाग्रहों को दर्शाती है। घर जादूगर के समान था कि अचानक वह अपने ठोस अस्तित्व को नियम में बदल लेता था। ज़िन्दा एवं बेजान चीज़ों के समूह के बदले मूल्य और संस्कार बन जाता था। तुरन्त ही साधारण रूप धारण करता था। घर विदूषक के सामान भी था अर्थात् उपहास प्रिय था। वह दूसरा रूप धारण करके औरत को डराता था। वह उचाट पठारी मैदान बनकर आता था। ठोस अस्तित्व को नियम में बदल लेता था। जड मैदान बनकर रेत का टीला बनकर चट्टानों की तरह इधर उधर लुढकता था। जच्चाघर और रसोईघर के समान दफ्तर में भी हमेशा औरत के साथ था। समाज महिलाओं के लिए सुरक्षित नहीं है। उन्हें कई तरह के खतरों का सामना करना पड़ता है। यहाँ महिलाओं की शिक्षा और सशक्तिकरण पर बल दिया गया है। समाज महिलाओं से कुछ निश्चित भूमिकाएँ निभाने की अपेक्षा करता है। यहाँ महिला को इन अपेक्षाओं के बोझ तले दबा हुआ दिखाया गया है।

▶ समाज में महिलाओं के प्रति व्याप्त पूर्वाग्रहों का जिक्र

घर का एक टुकडा होने का अहसास लिये
जो औरत थी-
बस, उसने एक ही मासूम सा सवाल किया था
एक दिन अचानक कि
औरत क्या एक घर के बिना भी हो सकती है
या फिर क्या कोई और भी चौहद्दी हो सकती है।
सुखपूर्वक रहने-खाने-जीने के लिए
घर के अलावा
जिसमें रहते हुए औरत औरत बनी रहे और
घर घर भी बना रहे,
यानी वह न हो घर का हिस्सा
बल्कि उसकी एक बाशिन्दा हो?
बस इतनी सी बात हुई थी कि
उसका पासपोर्ट जब्त कर लिया गया
और दुनिया के हर घर की
नागरिकता के लिए उसे अयोग्य घोषित कर
दिया गया।
घर से अलग होकर
एक लम्बासफर तय किया औरत ने
पागलखाने तक का। लेकिन आश्चर्य!
आखिरकार उसे क्षमादान मिल ही गया।
उसने पाया कि यही भी एक घर था
तीमारदारी, चौकसी
और हिदायतों के साथ,
फर्क सिर्फ इतना था कि
यह उनका घर था
जिनके लिए दुनिया में नहीं था
कोई और घर!

अर्थः- कात्यायनी कहती हैं कि अपने को घर का एक टुकडा मानकर जिये औरत ने अचानक एक दिन एक मासूम सा सवाल किया था कि क्या औरत एक घर के बिना भी हो सकती है? क्या फिर कोई चौहद्दी हो सकती है, जिसमें रहकर औरत, औरत बनी

▶ यह भी ऐसा घर था, सेवाशिश्रूषा का, सावधानी का, आदेशों का

रहे और घर घर भी बना रहे। घर टुकडा होने का अहसास- यह वाक्य एक गहरे भाव को व्यक्त करता है, जो शायद किसी प्रियजन के जाने या किसी महत्वपूर्ण संबन्ध के टूटने से उत्पन्न हो सकता है। मतलब है कि क्या औरत घर का हिस्सा न हो, बल्कि उस घर की एक बाज़िन्दा हो? केवल इतना ही पूछा था औरत ने। तुरन्त ही पुरुष सत्ता ने उसका पास्पोर्ट जब्त कर लिया। दुनिया के किसी भी देश केलिए वह अयोग्य घोषित किया गया। घर से वह अलग हो गयी। उसके बाद उसने पागलखाने तक की लंबी यात्रा निश्चय कर ली। आश्चर्य की बात है कि उसे वहाँ क्षमादान मिल गया। तब उस औरत ने देखा कि यह भी ऐसा घर था, सेवाशिश्रूषा का, सावधानी का, आदेशों का। अन्तर केवल इतना था कि यह उनका घर था, जिनके लिए दुनिया में कोई दूसरा घर नहीं था।

व्याख्याः- ये पंक्तियाँ कात्ययनी की कविता 'औरत और घर' से ली गयी हैं। भूमंडलीकरण बाज़ारीकरण, निजीकरण साम्राज्यवाद और नव उपनिवेशवाद के दौर में स्त्री के जीवन में पडे विभिन्न प्रभावों को इस कविता में चित्रित किया है। नारी के इसी रूप को कात्यायनी ने इस में उजागर किया है। सहस्राब्दियों से स्त्री का दुःख सहने का इतिहास है। घर स्त्रीत्व, मातृत्व और औरत की रोमानी छवि के पर्याय हैं। कवयित्री ने यहाँ घरेलू जीवन और उसकी चुनौतियों पर विचार किया है। घर और परिवार के प्रति औरत अपनी ज़िम्मेदारी निभाती रहती है। घर की देखभाल करती है, परिवार की खुशी पर ध्यान रखती है। अपने स्वप्नों एवं आकाँक्षाओं पर वह ध्यान ही नहीं देती है। वह घर के दीवारों में कैद है। उसकी पहचान घर के नाम से है। पर जब वह स्वतंत्र होने की इच्छा प्रकट करती है तो उसे हर क्षेत्र में अयोग्य घोषित की जाती है। कोई और घर -यह वाक्य इंगित करता है कि व्यक्ति एक नई शुरुआत करने की कोशिश कर रहा है, या फिर वह एक नई जगह ढूँढ रहा है, जहाँ वह अपना घर बसा सकें। स्त्री स्वयं इन छवियों के मोह में इस कदर कैद है कि अपनी स्वतंत्र चेतना को चीन्हकर बाहर आना संभवतः उसकी शक्ति से बाहर है। कात्यायनी की सामाजिक प्रतिबद्धता स्त्री के खिलाफ इन षड्यंत्रों को निरस्त्र कर स्त्री के नागरिक अधिकारों की पैरवी करती है। इसमें कवयित्री खूबसूरती से घर और पागलखाने के बिंबों का संघटन करते हुए स्त्री जीवन के प्रश्न उपस्थित करती हैं। स्त्री के स्त्रीकरण प्रक्रिया की भीषणता का हाहाकार उनकी कविता में नहीं। बस एक विडंबना है, जो एक व्यक्ति के स्त्री होकर जीने की महिला स्वतंत्रता की चाह रखती है। लेकिन समाज और परिस्थितियाँ उसे बंधनों में जकडे रखती हैं।

▶ स्त्री का घरेलू जीवन और उसकी चुनौतियों का चित्रण

4.2.3 कात्यायनी की कविताओं की विशेषताएँ

कात्यायनी हिन्दी साहित्य के प्रमुख नाम है, जिन्होंने महिलाओं के अधिकारों और उनकी स्थिति के बारे में लिखा है। उनकी रचनाएँ महिलाओं की घरेलू ज़िम्मेदारियों और उनके अधिकारों के बारे में जागरूकता बढाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। कात्यायनी की कविताओं में जीवन के द्वन्द्व का चित्रण होता है। समाज के बीच संघर्ष करती स्त्री को दिखाया गया है। पितृसत्ता और स्त्री पक्ष को एक दूसरे के विरुद्ध मोर्चे

▶ कात्यायनी की कविताओं में क्रांति की भावना तीव्र है

की तरह दिखाया गया है। वे अपनी कविताओं में स्त्री पक्ष के साथ खडी होकर रणनीति को अपनाती हैं। उनकी प्रतिबद्धता वामपंथी राजनीति के प्रति है। उनकी कविताओं ने व्यवस्था के दुश्चक्र में घिरे व्यक्ति की विवशता, आक्रोश और विद्रोह को सशक्त ढंग से अभिव्यक्त किया है। स्त्री मुक्ति के सवालों को भी उन्होंने लोकतांत्रिक चेतना से संबद्ध किया। उनकी कविताएँ क्रांति और संवेदनाओं की स्त्री मशाल हैं। इनकी कविताएँ अपनी क्रांति धर्मी चेतना के कारण राजनीतिक कविता का एक अलग प्रतिमान उपस्थित करती हैं। बहुमुखी शोषण तथा सांप्रदायिकता के आपातों से तार तार होती मनुष्यता को बचाने का संकल्प उनकी कविताओं में है।

'इस स्त्री से डरे' कविता में कात्यायनी की उपस्थिति विशिष्ट इसलिए कि उनकी तरह सक्रिय राजनीति पर संभवतः किसी अन्य स्त्री रचनाकार ने इतनी कविताएँ न लिखी हों। कात्यायनी की प्रतिबद्धता और प्रतिपक्ष उनके जीवन और उनकी कविताओं में अभिव्यक्त होता है। उनका स्वर प्रतिरोध का स्वर है। उनकी कविताओं का स्त्री विमर्श जितना निजी है उतना सामाजिक। उनकी कविताओं में नारी की स्वतंत्रता की माँग की छटपटाहट नज़र आती हैं। नारी मन की दृढता इनकी कविताओं में अधिक है। स्त्री के विरोध को वे अधिक तलख शब्दों में प्रकट करती हैं। उनकी कविताओं में नारी मन की वह संतुलित पुकार भी है जहाँ समाज को बदलने का आह्वान है। वे एक ऐसे समाज की कल्पना करती हैं जहाँ स्त्री पुरुष परस्पर सहयोगी बन एक आदर्श स्थिति को जन्म दें। इन्होंने स्त्री समाज के प्रति अपनी भावानुभूतियों को सशक्त स्वर दिये हैं। स्त्रियों के प्रति भारतीय समाज में होनेवाले दमन और उत्पीडन के विरोधी स्वर इनकी कविताओं में हैं। ये स्त्री सम्मान को बचाये रखने का हर संभव प्रयत्न करती हैं। इन्होंने नारी शिक्षा की पक्षधरता के साथ उनकी आर्थिक सुदृढता, स्वावलंबन और स्वाभिमान का मार्ग सुनिश्चित किया है। इनकी कविताओं में समाज को बदलने का आह्वान है संवेदनशीलता और भावुकता भी है। पूँजी के तमाम हस्तक्षेप जिन मानव विरोधी सामाजिक संरचनाओं को प्रोत्साहित करते हैं, कात्यायनी अपने जीवन और साहित्य में लगातार उनसे संघर्ष करती आयी है। कात्यायनी की वैचारिक प्रतिबद्धता जानती है कि इस समाज में यदि कोई अंतिम सर्वहारा है तो वह नारी ही है। उनकी कविता का स्त्री पक्ष मज़बूरियों का इतिहास न होकर चुप्पी तोडने का संकल्प है।

▶ स्त्रियों के प्रति होनेवाले दमन, उत्पीडन के विरोधी स्वर इनकी कविताओं में है

Summarised Overview / संक्षिप्त अवलोकन

स्त्री कविता में कात्यायनी की उपस्थिति विशिष्ट इसलिए कि उनकी तरह सक्रिय राजनीति पर संभवतः किसी अन्य स्त्री रचयिता ने इतनी कविताएँ न लिखी हो। कात्यायनी ने समाज से संघर्ष रत स्त्री के रूप को व्यक्त किया है। इनकी प्रतिबद्धता वामपंथी राजनीति के प्रति है। स्त्री मुक्ति के सवालों को इन्होंने लोकतांत्रिक चेतना से संबद्ध किया।

Assignment / प्रदत्त कार्य

1. 'इस स्त्री से डरो' कविता स्त्री अस्मिता के लिए लडनेवाली, पितृसत्ता पर प्रहार करनेवाली स्त्री कविता है- स्पष्ट कीजिए।
2. स्त्री विमर्श की दृष्टि से 'औरत और घर' कविता का मूल्यांकन कीजिए।
3. कात्यायनी की कविताओं की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।
4. कात्यायनी की कविताओं के भाषा प्रयोग का मूल्यांकन कीजिए।

Reference / संदर्भ ग्रंथ

1. हिन्दी कविता की प्रकृति - डॉ. हरदयाल
2. कविता की रचनायात्रा - डॉ. रामकुमार वर्मा
3. समकालीन कविता का यथार्थ - डॉ. परमानंद श्रीवास्तव

Suggested Reading / निर्धारित पुस्तक

1. इस पौरुषपूर्ण समय में - कात्यायनी
2. कविता का अर्थ - परमानंद श्रीवास्तव
3. कविता के सम्मुख - गोविन्द प्रसाद
4. कविता की रचना यात्रा - डॉ. राजकुमार शर्मा

SGOU

Space for Learner Engagement for Objective Questions

Learners are encouraged to develop objective questions based on the content in the paragraph as a sign of their comprehension of the content. The Learners may reflect on the recap bullets and relate their understanding with the narrative in order to frame objective questions from the given text. The University expects that 1 - 2 questions are developed for each paragraph. The space given below can be used for listing the questions.

SGOU

इकाई 3

निर्मला पुतुल- 'क्या तुम जानते हो', 'अपने घर की तलाश में'

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- कवयित्री निर्मला पुतुल से परिचित होता है
- 'क्या तुम जानते हो' कविता समझता है
- 'अपने घर की तलाश में' कविता का भाव समझता है
- निर्मला पुतुल की कविताओं में व्याप्त स्त्री चेतना से परिचित होता है

Background / पृष्ठभूमि

निर्मला पुतुल आदिवासी महिला साहित्य जगत की बहुचर्चित संथाली लेखिका, कवयित्री और सोशल एक्टिविस्ट है। इनका जन्म 6 मार्च 1972 को झारखंड के दुमका जिले के दुधनी कुरुवा ग्राम में एक गरीब आदिवासी परिवार में हुआ। उनकी शिक्षा दीक्षा सामान्य रही। आसानी से आजीविका पा सकने के लिए नर्सिंग का कोर्स किया। बाद में इंदिरागाँधी ओपन यूनिवर्सिटी से राजनीति शास्त्र में स्नातक की डिगी प्राप्त की। दो दशकों से आदिवासी महिलाओं के विस्थापन, उत्पीडन, लैंगिक भेदभाव, मानवाधिकार, संपत्ति का अधिकार जैसे विषयों पर व्यक्तिगत, सामूहिक और संस्थागत स्तर पर सकिय रही हैं। इसके साथ ही गामीण, पिछडी, दलित, आदिवासी और आदिम जनजाति की महिलाओं के बीच शिक्षा एवं जागरूकता के प्रसार के लिए विशेष प्रयासरत रही हैं। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए प्रत्यक्ष राजनीति में उतर आने से भी उन्होंने परहेज नहीं किया और अपने गृह पंचायत से मुखिया पद के लिए चुनी गई। कविता लेखन की शुरुआत मातृभाषा संथाली में की थी। फिर हिन्दी में लिखने लगी। अपनी कविताओं के विद्रोही स्वर और अपने समाज की यथार्थपरक अभिव्यक्ति के लिए वे व्यापक रूप से चर्चित और प्रशंसित हुई। 'अपने घर की तलाश में', 'नगाडे की तरह बजते शब्द', 'बेघर सपने' उनके काव्य संकलन हैं। 'नगाडे की तरह बजते शब्द' काव्य संकलन बहु चर्चित रचना है। एक आदिवासी स्त्री द्वारा उसके स्व की तलाश, पुरुष व्यवस्था और पितृसत्तात्मकता के प्रति विद्रोह, आदिवासी समाज और आदिवासी स्त्री की वेदना, आदिवासी समाज व्यवस्था के गुण-दोष, तथाकथित सभ्य शहरी समाज पर व्यंग्य, मुक्ति की कामना जैसे बृहत् विमर्श बिंदुओं में उनकी कविताओं का पाठ हुआ। 'बेघर सपने' में एक बार फिर निर्मला ने शोषण और अन्याय के सवालों को प्रमुखता से उठाया है। 'फूटेगा एक नया विद्रोह' भी उनका एक काव्य संकलन है। इस इकाई के माध्यम से निर्मला पुतुल की दोनों कविताओं का विस्तृत अध्ययन करें।

Keywords / मुख्य बिन्दु

मार्मिकता, आदिवासी, संवेदना, दुनियादारी, अस्तित्व

Discussion / चर्चा

4.3.1 'क्या तुम जानते हो'

निर्मला पुतुल का काव्य संकलन "नगाडे की तरह बजते शब्द" की पहली कविता है। यह कविता निर्मला पुतुलजी की एक बेहतरीन कविता है। आदिवासी जीवन के बहुविध आयामों की बेबाक प्रस्तुति के रूप में नगाडा की तरह बजते शब्द संग्रह वास्तव में निर्मलाजी की सच्ची प्रतिनिधि रचना है। 'क्या तुम जानते हो' में उन्होंने एक स्त्री के मन के बारे में चर्चा की है। प्रस्तुत कविता में कवयित्री पूरी मार्मिकता के साथ इस तथ्य को रूपायित करती हैं कि स्त्री मात्र देह नहीं, हाड माँस के शरीर के अतिरिक्त एक भावना भी है, जो संवेदना से जुडना चाहती है। आदिवासी समाज और स्त्रियों के बारे में लिखी यह कविता उसके संघर्ष तथा संवेदनाओं को बहुत ही मार्मिक और सरलता से आम जनमानस तक पहुँचाती है। यह कविता समाज में व्याप्त बुराई, संघर्ष और कुरीतियों के खिलाफ शक्तिशाली विचार को व्यक्त करती है। कविता समाज में बदलाव की ओर एक सशक्त कदम रखती है। इसमें विलुप्त होते आदिम सभ्यता की धुन है। किसी सभ्यता के लुटने के पहले की एक पुकार, एक आखिरी चीख को बचाये जाने के अंतिम स्वर इसमें सुनाई पड़ते हैं। ऐसे समाज में महिलाओं को दो स्तर की लडाइयाँ लडनी पडती हैं। आज जब आदिवासी समाज को लूटने की पूरी कोशिशें ज़ारी हैं, ऐसी स्थिति में बचाव के पक्ष में आनेवाला हर नागरिक उग्रवादी बना दिया जा रहा है। निर्मलाजी ने इस कविता में एक स्त्री के एकांत और उसके मन की गहराईयों की चर्चा की है। कविता बताती है कि रिश्तों के गणित से परे भी स्त्री का एक अस्तित्व है, एक ज़िन्दगी है, वह ज़िन्दगी जो वह असल में जीना चाहती है। इसे समाज नहीं समझ सकेगा। निर्मलाजी स्त्री मन की गहराई को शब्दों में पिरोती है। इसमें आदिवासी समाज के प्रति लोगों के पूर्वाग्रहों और भेदभावों को दर्शाया गया है।

▶ आदिवासी जीवन के बहुविध आयामों की बेबाक प्रस्तुति

निर्मला पुतुल

क्या तुम जानते हो

क्या तुम जानते हो पुरुष से भिन्न
एक स्त्री का एकान्त?

घर, प्रेम और जाति से अलग
एक स्त्री को उसकी अपनी ज़मीन
के बारे में बता सकते हो तुम?

बता सकते हो
सदियों से अपना घर तलाशती
एक बेचैन स्त्री को
उसके घर का पता?

क्या तुम जानते हो
अपनी कल्पना में
किस तरह एक ही समय में
स्वयं को स्थापित और निर्वासित
करती है एक स्त्री?

सपनों में भागती
एक स्त्री का पीछा करते
कभी देखा है तुमने उसे
रिश्तों के कुरुक्षेत्र में
अपने आपसे लडते?

▶ तुमने ऐसी स्त्री का पीछा करके कभी देखा है, जो सपनों में भागती रहती है

अर्थः- 'क्या तुम जानते हो' नामक कविता में कवयित्री कहती हैं कि क्या तुम जानते हो पुरुष से भिन्न एक स्त्री का एकांत? घर, प्रेम और जाति से अलग एक स्त्री को उसकी अपनी ज़मीन के बारे में बता सकते हो? तुम बता सकते हो, सदियों से अपना घर तलाशती एक बेचैन स्त्री को उसके घर का पता? क्या तुम जानते हो एक ऐसे स्त्री को जो अपनी कल्पना में किस तरह एक ही समय में स्वयं को स्थापित और निर्वासित करती है। आगे कवयित्री पूछती हैं कि क्या तुमने ऐसी स्त्री का पीछा करके कभी देखा है, जो सपनों में भागती रहती है। रिश्तों के कुरुक्षेत्र में पड़कर अपने आपसे लडनेवाली

स्त्री को देखा है उसकी पीडा को महसूस किया है?

▶ समाज रूपी गाडी को चलाने के लिए स्त्री पुरुष रूपी दो पहियों की ज़रूरत होती है

कहने को तो समाज रूपी गाडी को चलाने के लिए स्त्री पुरुष रूपी दो पहियों की ज़रूरत होती है। मगर पुरुष प्रधान समाज में स्त्री अपने ही घर में अपनी वजूद तलाशती रह जाती है। समाज द्वारा गढे गये सारे मान मर्यादा, नियम, शर्तें सभी कुछ केवल स्त्रियों पर लागू होती है। स्त्री स्वयं रोज़ टूटती और बिखरती है। लेकिन रिश्तों की बुनियाद को मज़बूती प्रदान कर उसे कभी बिखरने नहीं देता।

▶ पुरुष प्रधान समाज में अपने अस्तित्व को तलाशनेवली नारी

व्याख्याः- ये पंक्तियाँ निर्मला पुतुलजी के "नगाडे की तरह बजते शब्द" काव्य संकलन में संकलित 'क्या तुम जानते हो' कविता की हैं। कवयित्री पूरी मार्मिकता के साथ इस तरह स्वयं को रूपायित करती हैं कि स्त्री मात्र देह नहीं है। आज स्त्री, संवेदना की तन्तुओं से जुडना चाहती है। पुरुष प्रधान समाज में वह अपने अस्तित्व के साथ अपने स्थान को तलाशती है। कवयित्री पुरुषों से पूछती है कि क्या तुम जानते हो ऐसी स्त्री को, जिसको अपने सपनों को पीछा करके रिश्तों के कुरुक्षेत्र में लडना पडता है। इसे अपने सपनों के खुशियों से भागना पडता है। पुरुष ने स्त्री के तन के भूगोल से परे उसके मन की बातों की ओर या उसकी इच्छाओं के इतिहास को कभी नहीं पढा। पुरुष ने कभी स्त्री की फैलती जडों को अपने भीतर नहीं महसूस किया है। पुरुष को अगर स्त्री का वास्तविक रूप समझना है तो उसे खुद को स्त्री बनकर देखना पडता है। तब उसे पता चलेगा कि इन रिश्तों का बंधन उसके लिए कुरुक्षेत्र के समान है। तब उसको पता चलेगा कि स्त्री की चुप्पी वास्तव में शब्दों की खोज कर रही है। तब पता चलेगा कि वह एक अलग अस्तित्व के लिए बेचैन है। उसे भी अपने सपने होंगे, इच्छाएँ होंगी। कवयित्री पूछती है कि क्या पुरुष से भिन्न किसी स्त्री के एकांत के बारे में पूरा पुरुष वर्ग नहीं समझ सकता? स्त्री को उसका घर, परिवार और जाति से अलग उसकी अपनी भी कोई अस्तित्व है, जिसमें वह सदियों से अपनी असली पहचान ढूँढ रही है।

▶ स्त्री जहाँ एक ही पल में विस्थापित और निर्वासित होती है

स्त्री जहाँ एक ही पल में विस्थापित और निर्वासित होती है, वही पल है उसका विवाह। विवाह से पूर्णता तो हो जाती है। साथ ही स्त्री की पूर्व स्थिति उसके हाथ से छिन जाती है। नये रिस्तों में वह फंस जाती है। नये रिश्तों के घर में कोई ठोस पहचान और अपनापन नहीं होता। इसी विस्थापन और निर्वासन की प्रक्रिया में स्त्री का अपना वजूद गुम हो जाता है। किन्तु उसकी तलाश समाप्त नहीं होती। वह सपनों में भागती रहती है। क्योंकि वह रिश्तों के कुरुक्षेत्र में किसी और से नहीं, केवल स्वयं से लडती है।

तन के भूगोल से परे
एक स्त्री के
मन की गाँठें खोलकर
कभी पढा है तुमने
उसके भीतर का खौलता इतिहास?

पढा है कभी
उसकी चुप्पी की दहलीज़ पर बैठ
शब्दों की प्रतीक्षा में उसके चेहरे को?

उसके अंदर उसके अंदर वंशबीज बातें
क्या तुमने कभी महसूसा है
उसकी फैलती जडों को अपने भीतर

क्या तुम जानते हो
एक स्त्री के समस्त रिश्ते का व्याकरण?
बता सकते हो तुम
एक स्त्री को स्त्री दृष्टि से देखते
उसके स्त्रीत्व की परिभाषा?
अगर नहीं!
तो फिर जानते क्या हो तुम
रसोई और बिस्तर के गणित स परे
एक स्त्री के बारे में....?

▶ बिस्तर और रसोई से परे एक स्त्री के बारे में तुम क्या जानते हो?

अर्थः- कवयित्री पुरुष से पूछती हैं कि स्त्री के शरीर के भूगोल से परे मन की गाँठें खोलकर उसके भीतर के खौलते इतिहास को तुमने पढा है? उसके मौन की दहलीज पर बैठ शब्दों की प्रतीक्षा में रहे उसके चाहरे को पहचाना है कभी? उसके अंदर छिपी हुई बातों को तुमने क्या महसूस किया है? स्त्री के रिश्तों के बारे में तुम जानते हो? एक स्त्री को स्त्री दृष्टि से देखकर उसकी परिभाषा दे सकते हो? अगर ये सारी बातें जानते नहीं हैं तो तुम क्या जानते हो? बिस्तर और रसोई से परे एक स्त्री के बारे में तुम क्या जानते हो?

▶ स्त्री मन के भीतर के प्रश्नों को समाधान ढूँढने का प्रयास

व्याख्याः- कवयित्री संपूर्ण पुरुष समाज को प्रश्नात्मक नज़रिये से देखती हैं। क्योंकि उसके मन में यह द्वन्द्व गूँज उठता है कि आज पुरुष वर्ग को स्त्री के शारीरिक बनावट से परे उसके मन के इतिहास अर्थात् आन्तरिक आकाँक्षाओं के गुच्छे को खोलने का समय आ गया है। आज स्त्री के उस मौन को सुनना होगा। उसके चेहरे को पढ़ना होगा। उसके चेहरे से आनेवाले शब्दों को समझना होगा। उसके द्वारा भावी पीढी के निर्माण में सहयोग के भागीदार अवश्य बनने हैं। क्या कभी उसके मन के भीतर की परेशानियों को अपने भीतर महसूस किया है - यह प्रश्न प्रत्येक पुरुष वर्ग से कवयित्री पूछ रही है। क्या पुरुष वर्ग ने स्त्री के समस्त रिश्ते के व्याकरण को स्त्री दृष्टि से देखने की कोशिश की है? कवयित्री कहती हैं कि स्त्री को सिर्फ रसोई और बिस्तर के अलावा भी उसका एक संपूर्ण अस्तित्व है, दुनिया है वजूद है। उसे देने में क्यों हिचकते हो? अर्थात् स्त्री

की संवेदनाओं को स्त्री दृष्टि से ही महसूस किया जा सकता है। अन्य किसी मानसिकता से नहीं। पुतुलजी ने यह कविता दुनिया को बदलने की इच्छा से लिखी है। बदलाव की बेचैनी इसमें प्रकट है। उन्होंने जो कुछ देखा, समझा, सुना, लिख दिया। पुतुलजी ने अपने कविकर्म को, कविता में, अपने स्त्री मन में, अपने अंतर्छवियों में, अभिव्यक्ति प्रदान की। उसका शब्दबद्ध रूप इस कविता में मुखरित है। उनकी आकाँक्षा एवं एहसास के मानचित्र क्या तुम जानते हो कविता में संवेदनात्मक साक्षात्कार के रूप में मिलता है। यह कविता स्त्री के मन के भीतर के प्रश्नों के समाधान ढूँढने का सार्थक प्रयास है।

4.3.2 'अपने घर की तलाश में'

- आदिवासियों के विस्थापन और उनकी नई जगह ढूँढने की यात्रा

प्रस्तुत कविता निर्मला पुतुलजी की स्त्री चेतना को व्यक्त करनेवाली श्रेष्ठ कविता है। इसमें वे अपनी पहचान, अपनी जडों और अपने समुदाय के साथ जुडाव की तलाश करती है। यह कविता आदिवासी लोगों द्वारा महसूस किये जानेवाला अलगाव और अस्तित्व के संकट को बडी मार्मिकता से व्यक्त करती है। स्त्री के स्वत्व एवं अस्तित्व को हमारा भारतीय पुरुष सत्तात्मक समाज नकारते आ रहा है। यह तंत्र सदियों से चला आ रहा है कि वास्तव में एक स्त्री के भीतर पूरा का पूरा घर समाया हुआ है। अपनी कविता 'अपने घर की तलाश में' द्वारा कवयित्री ने एक स्त्री की भावना को, उसकी तलाश को अपने अस्तित्व को कायम रखने की आकाँक्षा को व्यक्त किया है। इसमें आदिवासियों के विस्थापन और उनकी नई जगह ढूँढने की यात्रा को दर्शाया गया है।

अंदर समेटे पूरा का पूरा घर
मैं बिखरी हूँ पूरे घर में
पर यह घर मेरा नहीं है।
बरामदे पर खेलते बच्चे मेरे हैं।
घर के बाहर लगी नेम प्लेट मेरे पति की है
मैं धरती नहींपूरी धरती होती है मेरे अंदर
पर यह नहीं होती मेरे लिए

कहीं कोई घर नहीं होता मेरा
बल्कि मैं होती हूँ स्वयं एक घर
जहाँ रहते हैं लोग निर्लिप्त
गर्भ से लेकर बिस्तर तक के बीच
कई कई रूपों में

धरती के इस छोर से उस छोर तक
मुट्ठी भर सवाल लिए मैं
छोडती हाँफती भागती
तलाश रही हूँ सदियों से निरंतर

अपनी ज़मीन, अपना घर
अपने होने का अर्थ।

अर्थः- अपने घर की तलाश में, स्त्री की हक और अधिकार को लेकर सवाल उठानेवाली कविता है। निर्मला पुतुलजी लिखती हैं कि घर का मालिक तो पुरुष होता है। लेकिन स्त्री घर के कण कण में बिखरी हुई पडी है। घर के आँगन में खेल रहे बच्चे स्त्री के बच्चे होते हैं। लेकिन घर के बाहर जो नेम प्लेट लगाई गई है, वह पति की है। संपूर्ण धरती स्त्री के अंदर जमाई हुई है। स्त्री में ही हम संपूर्ण धरती का दर्शन करते हैं। आज तक कभी भी स्त्री के नाम पर घर नहीं देखा गया है। स्त्री को घर कहा जाता है परिवार कहा जाता है, वह स्वयं एक घर है। पर उस घर में जो पुरुष लोग हैं वे निर्लिप्त रहते हैं। गर्भ से लेकर बिस्तर तक के बीच कई कई रूपों में उसके साथ पुरुष जुडा रहता है। फिर भी वह निर्लिप्त है। धरती की इस छोर से उस छोर तक का मतलब विश्व भर में कहीं भी वह भागती है हांफती है। कुछ सवाल लेकर वह तलाश कर रही है। सदियों से स्त्री एक सवाल कर रही है अपनी ज़मीन, अपना घर और अपने होने का सवाल। कवयित्री ने इस कविता द्वारा स्त्री को किस तरह सदियों से हीन माना गया है, गौण स्थान दिया गया है, उसे व्यक्त किया है। इसमें कवयित्री अत्यंत मामूली सवाल व्यक्त करती है। यह स्त्री के स्वतंत्र अस्तित्व को लेकर उठाया गया सवाल है। स्त्री के प्रति संवेदनशील निर्मलाजी इस कविता में आदिवासी स्त्री की त्रासदी एवं अस्तित्व की तलाश करती हैं। जो स्थान उसका है, उसे ढूँढने का प्रयास करती हैं। सदियों से अपना घर अपनी ज़मीन तलाशती स्त्री किस प्रकार अपने अस्तित्व को ढूँढ रही है, वह इस कविता में है। यह स्त्री की स्वतंत्र अस्तित्व के लिए आवाज़ उठानेवाली सुन्दर कविता है।

▶ स्त्री के प्रति संवेदनशील निर्मलाजी इस कविता में आदिवासी स्त्री की त्रासदी एवं अस्तित्व की तलाश करती हैं

व्याख्याः- ये पंक्तियाँ निर्मला पुतुलजी का काव्य संकलन 'नगाडे की तरह बजते शब्द' कविता के 'अपने घर की तलाश में' नामक कविता से ली गयी हैं। प्रस्तुत कविता स्त्री चेतना को प्रकट करनेवाली कविता है। इसमें निर्मला पुतुल ने एक आदिवासी महिला की मनोदशा को बडी सूक्ष्मता से चित्रित किया है, जो अपनी जडों से दूर एक अजनबी दुनिया में खोई हुई सी महसूस करती है। वह अपने गाँव, अपने लोगों और अपनी संस्कृति को याद करती है। वह एक ऐसी दुनिया की तलाश में है, जहाँ वह अपनी पहचान को ढूँढ सके और जहाँ उसे स्वीकार किया जाए। स्त्री अस्मिता को पुरुष सत्ता ने सदियों से नकारा है। उसे अस्वीकार किया है। इसे व्यक्त करनेवाली कविता है 'अपने घर की तलाश में'। भारतीय समाज स्त्री के स्वतंत्र अस्तित्व को सदियों से नकारता आ रहा है। भारत ही नहीं, विश्व भर के पुरुष सत्तात्मक समाज में स्त्री के अस्तित्व को नकारा गया है। उसे हीन माना गया है। आज हम देखते हैं कि घर पर एक नेम प्लेट लगी हुई है। उसी नेमप्लेट पर घर की स्त्री का नाम नहीं होता है। केवल पुरुष का नाम होता है। स्कूल में दाखिला करवाते हैं तो उस स्कूल में बच्चों के नाम के साथ माँ का नाम नहीं जोड दिया जाता। सदियों से पिता का नाम जोड दिया गया है। मतलब है

▶ भारतीय समाज स्त्री के स्वतंत्र अस्तित्व को सदियों से नकारता आ रहा है

कि स्त्री तो परिवार का अभिन्न हिस्सा है। लेकिन उसका नाम घर में भी नहीं होता है। घर का मालिक भी पुरुष ही होता है। इस प्रकार स्त्री के स्वतंत्र अस्तित्व को नकारकर हीन माना गया है। यह कई रूपों में देखने को मिलता है। जो स्त्री सारे घर को अपने अंदर समेटकर जीती है, उस स्त्री का इस धरती पर कोई घर नहीं होता। सारी धरती उसमें समाई हुई है। दुर्भाग्यवश वह यदि घर से निकल जाती है, तो उस घर के एक कोने में वह बिखरी होती है। घर की हर चीज़ से उसका नाता है। पर वास्तव में घर का मालिक पिता या बेटा है। पितृसत्तात्मक समाज है। उसमें पुरुषवादी मानसिकता है। लेकिन विडंबना है कि स्त्री के लिए धरती का एक टुकडा भी नहीं दिया जाता।

स्त्री को कुटुम्ब कहा जाता है। भौतिक रूप से उसे कोई घर नहीं। वह स्वयं एक घर है। उस घर में पुरुष निर्लिप्त रहता है। कवयित्री कहती हैं कि धरती की इस छोर से उस छोर तक मुट्ठी भर सवाल लिये विश्व भर में कहीं भी मैं भागती हूँ। मैं भी एक मनुष्य हूँ। मेरा घर कौन सा है ? अगर मेरा कोई घर नहीं है तो स्त्री होने का अर्थ क्या है? मेरा अस्तित्व क्या है? एक ही समय स्वयं को स्थापित और निर्वासित करती स्त्री की विडंबना कोई नहीं जानता। यह कविता पहचान की तलाश और स्वयं को खोजने की सार्वभौमिक भावना को उजागर करती है। यही नहीं, सामाजिक मुद्दों जैसे अलगाव, भेदभाव, और साँस्कृतिक विलोपन पर प्रकाश डालती है।

▶ आदिवासी महिला की मनोदशा का चित्रण

4.3.3 कविता के क्षेत्र में निर्मला पुतुल की देन

निर्मला पुतुल ने हिन्दी साहित्य में आदिवासी साहित्य को एक नई दिशा दी है। उनकी कविताओं ने आदिवासी समाज के मुद्दों को राष्ट्रीय स्तर पर उठाया है और लोगों को उसके प्रति सचेत किया है। निर्मला पुतुल की कविताएँ आदिवासी समाज के विभिन्न पहलुओं को, समस्याओं को उजागर करती हैं। आदिवासियों के जंगलों से बेदखल होने और शहरों की ओर पलायन करने की समस्या, आदिवासी महिलाओं के साथ होनेवाले लैंगिक भेदभाव तथा उत्पीडन, उनके मानवाधिकारों का हनन आदि विषय उनकी कविताओं में प्रमुख रहे हैं।

▶ आदिवासी समाज के विभिन्न पहलुओं को, समस्याओं को उजागर करती हैं।

निर्मला ने अपनी कविताओं में आदिवासी समुदाय तथा आदिवासी स्त्री की संवेदना को बडी शिद्दत से व्यक्त किया है। उनकी कविताएँ ज़मीन से जुडी हुई हैं। उनकी कविताओं में एक आदिवासी स्त्री की तडप साफ दिखाई देती है। साथ में उपेक्षित आदिवासी जीवन की व्यथाएँ भी। कडी मेहनत के बावजूद भी आदिवासियों की शोचनीय स्थिति, अंधविश्वास, कुरीतियों के कारण बिगडती पीढी, थोडे लाभ के लिए बडे समझौते, पुरुष वर्चस्व, आदिवासी स्त्रियों की दशा, स्वार्थ के लिए पर्यावरण की हानि, समाज के दिक्कूओं और व्यावसायियों द्वारा कठपुतली बनाने की स्थितियाँ हैं, विस्थापन का दर्द आदि समस्याओं का वर्णन निर्मलाजी की कविताओं के केंद्र में हैं। उनकी कविताएँ पाठक के हृदय में छिपी हुई संवेदना को गहराई से प्रभावित करती हैं। उनकी काव्य संवेदना आदिवासी समुदाय के प्रति अधिक दिखाई देती है। निर्मला पुतुल का काव्य संसार एक अलग दुनिया खोलता है। वास्तविक और वैचारिक अंतर

▶ आदिवासी समाज की विभिन्न पहलुओं को उजागर करती हैं

को यहाँ शिद्दत से महसूस किया जा सकता है। अधिकांशतः स्त्री कविता की पहचान पितृसत्तात्मक व्यवस्था से मुक्ति की आकाँक्षा में रची एवं पढी जाती है। किंतु यहाँ आदिवासी समाज का हाशियाकरण, उसे एक अतिरिक्त आयाम देता है। निर्मला की कविताओं में आदिवासी समाज के राजमर्रा के जीवन, प्रकृति के साथ उनके संबन्ध, रीति रिवाज़ और परंपराओं का वर्णन मिलता है। वे आदिवासियों के सामने आनेवाले संघर्षों जैसे कि ज़मीन का विस्थापन, सामाजिक उत्पीडन और लैंगिक असमानता को बेबाक तरीके से उजागर करती है। उनकी कविताओं में प्रकृति का महत्वपूर्ण स्थान है। वे प्रकृति को माँ के समान मानती हैं और प्रकृति के साथ मानव के गहरे संबन्ध को दर्शाती है। निर्मला पुतुल आदिवासी महिलाओं के सशक्तिकरण की वकालत करती है और उनकी आवाज़ को बुलंद करती हैं।

Summarised Overview / संक्षिप्त अवलोकन

निर्मला पुतुल ने आदिवासी स्त्री की मानसिकता को अत्यंत मार्मिकता के साथ व्यक्त किया है। कडी मेहनत के बावजूद आदिवासी समाज की शोचनीय स्थिति, अंधविश्वास, कुरीतियों के कारण बिगडती पीढी, आदिवासी स्त्रियों की दशा, उनकी पीडा, विस्थापन का दर्द आदि का वर्णन करती हैं। उनकी कविताएँ एक अलग दुनिया खोलती हैं। ये कविताएँ मिट्टी की महक से ओतप्रोत हैं।

Assignment / प्रदत्त कार्य

1. आदिवासी विमर्श की दृष्टि से निर्मला पुतुल की कवविताओं का विश्लेषण कीजिए।
2. क्या तुम जानते हो कविता का सारांश लिखिए।
3. अपने घर की तलाश में कविता में व्याप्त स्त्री अस्मिता पर विचार कीजिए।
4. निर्मला पुतुल की कविताओं की भाषा पर विचार कीजिए।

Reference / संदर्भ ग्रंथ

1. हिन्दी कविता की प्रकृति - डॉ. हरदयाल
2. समकालीन कविता का यर्थ - डॉ. परमानन्द श्रीवास्तव

Suggested Reading / निर्धारित पुस्तक

1. कविता का अर्थ - परमानन्द श्रीवास्तव
2. आधुनिक भारतीय कविता संचयन - सं- विश्वनाथ प्रसाद तिवारी
3. कविता की रचना यात्रा - डॉ. रामकुमार शर्म

Space for Learner Engagement for Objective Questions

Learners are encouraged to develop objective questions based on the content in the paragraph as a sign of their comprehension of the content. The Learners may reflect on the recap bullets and relate their understanding with the narrative in order to frame objective questions from the given text. The University expects that 1 - 2 questions are developed for each paragraph. The space given below can be used for listing the questions.

इकाई 4

रमणिका गुप्ता- प्रतिरोध

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- कवयित्री रमणिका गुप्ता से परिचित होता है
- रमणिका गुप्ता की कविता प्रतिरोध समझता है
- रमणिका गुप्ता की कविताओं में व्याप्त स्त्री चेतना जानता है

Background / पृष्ठभूमि

रमणिका गुप्ता प्रख्यात भारतीय साहित्यकार एवं सामाजिक कार्यकर्ता थीं। समाज, राजनीति सहित कई क्षेत्रों से वे जुडी हुई थीं। उन्हें हिन्दी साहित्य में निडर सामाजिक लेखिका के रूप में जाना जाएगा। वे आदिवासी दलितों और महिलाओं के संघर्ष का चेहरा थीं और ट्रेड यूनियन लीडर भी रहीं। उनका जन्म 22 अप्रैल 1930 को पंजाब के सुनाम नामक स्थान पर हुआ। रमणिकाजी ने विमर्श के रूप में हिन्दी साहित्य में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। उन्होंने स्त्री विमर्श, आदिवासियों और दलितों पर बहुत कुछ लिखा। राजनीतिक गतिविधियों से जुडी रहीं। साहित्य और समाज सेवा से उनका गहरा लगाव था। और वह सामाजिक सरोकारों की पत्रिका युद्धरत 'आम आदमी' की संपादक भी थीं। रमणिका जी की आत्मकथा 'हादसे और आपहुदरी' बेहद लोकप्रिय पुस्तक मानी जाती है। इसे साहित्य जगत की बोल्ड रचना मानी जाती है। इसके अलावा उनकी काव्य रचनाएँ हैं, 'भीड सतर में चलने लगी है', 'अब मूर्ख नहीं बनेंगे हम', 'तुम कौन', 'तिल-तिल नूतन', 'मैं आज़ाद हुई हूँ', 'भला मैं कैसे मरती', 'कैसे करोगे बँटवारा इतिहास का', 'निज घरे परदेसी', 'प्रकृति युद्धरत है', 'पूर्वांचल- एक कविता यात्रा', 'आम आदमी के लिए', 'खूँटे', 'अब और तब', 'गीत- अगीत', 'आदम से आदमी तक', 'विज्ञापन बनते कवि'। गद्य रचनाएँ हैं 'दलित हस्तक्षेप', 'साँप्रदायिकता के बदलते चेहरे', 'कलम और कुदाल के बहाने', 'दलित चेतना- साहित्यिक और सामाजिक सरोकार', 'दक्षिण वाम के कठघरे और असम नरसंहार-एक रपट'। 'सीता मौसी' उनका उपन्यास है। 'बहू जुथाई' कहानी संकलन है।

Keywords / मुख्य बिन्दु

आदिवासी, संघर्ष, एहसास, ठोकरें, प्रतिरोध

Discussion / चर्चा

4.4.1 प्रतिरोध

रमणिका गुप्ता की कविता प्रतिरोध एक शक्तिशाली रचना है। यह समाज में व्याप्त अन्याय, असमानता और दमन के खिलाफ खडे होने का आह्वान करती है। यह कविता व्यक्तिगत और सामाजिक दोनों स्तरों पर प्रतिरोध की भावना को व्यक्त करती है। व्यक्तिगत सामाजिक और और राजनीतिक स्वतंत्रता की तीव्र चाहत इस कविता में है। इस में समाज में व्याप्त बुराईयों को दूर करने और एक बेहत्तर समाज सृष्टि की इच्छा व्यक्त की गई है। किसी स्थापित व्यवस्था या विचारधारा के खिलाफ विद्रोह की भावना इसमें झलकती है। भावनाओं को अति तीव्र बनाने के लिए इसमें प्रतीकात्मक भाषा का प्रयोग किया गया है। पाठकों को प्रभावित करने के लिए शक्तिशाली शब्दावली का प्रयोग भी हुआ है, जो इस कविता की खासियत है। पाठकों को भावनात्मक धरातल पर जोडने के लिए भावुक अभिव्यक्ति हुई है। कविता याद दिलाती है कि हमें अपने अधिकारों के लिए लडना चाहिए। यह एक प्रेरणादायिनी कविता है। स्त्री विमर्श की दृष्टि से भी इस कविता का महत्व है। यह महिलाओं को उनके अधिकारों के लिए लडने के लिए प्रेरित करती है। सामाजिक परिवर्तन के लिए भी प्रेरणा का काम करती है।

▶ व्यक्तिगत सामाजिक और और राजनीतिक स्वतंत्रता की तीव्र चाहत इस कविता में है

रममिका गुप्ता

हमने तो कलियाँ माँगी ही नहीं
काँटे ही माँगे
पर वो भी नहीं मिले
यह न मिलने का एहसास
जब सालता है
तो काँटों से भी अधिक गहरा चुभ जाता है
तब
प्रतिरोध में उठ जाता है मन
भाले की नोकों से अधिक मारक बनकर

हमने कभी वटवृक्ष की फुनगी पर बैठकर

इतराने की कोशिश नहीं की
हमने तो उसके जडों के गिर्द जमे रहकर
शान्ति से
समय की शताब्दी काट लेने की चाह
पाली थी सदा
पर
निरन्तर बौछारों ने यह भी न माना
बार बार हमारे जमे रहने की चाह को
ठुकराती नहीं
धकेल धकेलकर-
बहाती रहीं धार में/ साल-दर-साल
ठोकरें खाने के लिए
टिकने नहींदिया हमें
किसी भी पेड की जड के पास
यह न टिक पाने का एहसास
जब सालता है तो
बौछार से अधिक ज़ोरदार
धक्का मारता है
तब
प्रतिरोध में उठ जाते
सब मिट्टी के कण
जडों को उखाड देते हैं हम-
नंगे हो जाते हैं वन
और
चल देते हैं नये ठौर खोजने -हम
गिर जाते हैं

अर्थः- रमणिका गुप्ता की कविता 'प्रतिरोध' व्यक्ति को एक योद्धा के रूप में प्रस्तुत करती है, जो अपने अधिकारों के लिए लडता है। कविता हमें बताती है कि हमें अपने अधिकारों के लिए लड़ना चाहिए और अन्याय के खिलाफ आवाज़ उठानी चाहिए। हमें अपने भीतर से उठनेवाले विद्रोह की आवाज को सुनना चाहिए और उसका पालन करना चाहिए। रमणिका गुप्ता अपनी कविता में शोषण के विरुद्ध संघर्ष करने की प्रेरणा देती है। कवयित्री कहती हैं कि हमने तो अपने लिए कलियाँ नहीं माँगी थीं। केवल काँटे ही माँगे थे। लेकिन हमें वह भी नहीं दिया गया। इससे भी हम वंचित हो गयीं। वह न मिलने का दःख हमें जब पीडा देता है, वह पीडा काँटे के चुभने से भी अधिक गहरी है। यह सोचने पर हमारे मन में प्रतिरोध का भाव उठता है। यह पीडा भाले की नोकों से भी अधिक गहरी है। हमने कभी भी वटवृक्ष की डालियों के अग्र भाग पर बैठकर इतराने की कोशिश नहीं की हैं। ..

▶ रमणिका गुप्ता अपनी कविता में शोषण के विरुद्ध संघर्ष करने की प्रेरणा देती है

हमने सदा वटवृक्ष के जडों के गिर्द जमे रहकर शांति से समय की शताब्दी काट लेने की चाह पाली थी। लेकिन निरन्तर बौछारों ने यह भी न माना कि बार बार हमारे जमे रहने की चाह को ठुकराती ही नहीं, धार में धकेल धकेलकर बहाते रहे। साल दर साल ठोकरें खाने के लिए हमें टिकने नहीं दिया। किसी भी पेड की जड के पास न टिक पाने का एहसास जब दुःख देता है तो बौछार से अधिक ज़ोरदार धक्का मिलता है। तब सारे मिट्टि के कण प्रतिरोध में उठ जाते हैं। हम जडों को उखाड देते हैं। वन नंगे हो जाते हैं। फिर नये ठौर खोजने हम चल देते हैं और गिर जाते हैं।

व्याख्याः- रमणिका गुप्ता ने अपनी कविता 'प्रतिरोध' की इन पंक्तियों में जीवन के संघर्षों और निराशाओं को बडे ही मार्मिक ढंग से व्यक्त किया है। कवयित्री कहती हैं कि हमने कभी खुशियाँ नहीं माँगी, बल्कि हमेशा दुःख ही भोगता रहा। यहाँ तक कि उसने दुःख को भी स्वीकार करने की कोशिश की, लेकिन उसे वह भी नहीं मिला। जब हमें वह चीज़ नहीं मिलती, जो हम चाहते हैं, तो उसका दर्द हमें और भी अधिक पीडा देता है। यह दर्द काँटों से भी अधिक गहरा होता है। इस दर्द के कारण व्यक्ति के मन में विद्रोह की भावना जागृत होती है। वह इस दर्द के खिलाफ लडना चाहता है। कवयित्री आगे कहती है कि यह विद्रोह एक भाले की नोक से भी अधिक मारक होता है। यानी व्यक्ति अपनी निराशा को शक्ति में बदल देता है।

▶ जीवन के संघर्षों और निराशाओं को बडे ही मार्मिक ढंग से चित्रण

हमें जीवन की असलियत के बारे में बताती है। जीवन में हमें हमेशा वह नहीं मिलता, जो हम चाहते हैं। यह कविता दर्शाती है कि जीवन में दुःख और संघर्ष का होना स्वाभाविक है। हालाँकि कविता में निराशा का भाव है, लेकिन अंत में व्यक्ति विद्रोह की भावना से उभरता है। यह हमें आशावाद का संदेश देता है। ये पंक्तियाँ बताती हैं कि हमारे भीतर एक असीम शक्ति होती है, जो हमें किसी भी मुश्किल परिस्थिति का सामना करने में सक्षम बनाती है। सीख है कि जीवन में निराशाओं का सामना करना स्वाभाविक है। हमें अपनी कमज़ोरियों को स्वीकार करना चाहिए और उनसे लड़ना चाहिए। हमें अपनी समस्याओं का समाधान खुद ढूँढना चाहिए। हमें कभी हार नहीं मानना, हमेशा आगे बढ़ते रहना चाहिए।

▶ जीवन में निराशाओं का सामना करना स्वाभाविक है

आगे की पंक्तियों में भी जीवन के संघर्षों और परिवर्तनशीलता को बहुत गहराई से दर्शाता है। इसमें एक पेड की जडों के रूपक के माध्यम से जीवन के कई पहलुओं को उजागर किया गया है। कवयित्रि अपनी ज़िन्दगी को एक पेड की जडों से जोडकर दिखा रही है, जो एक जगह जमे रहकर शांति से समय काटना चाहता है। यह जीवन में स्थिरता और सुरक्षा की चाहत को दर्शाता है। लेकिन प्रकृति के नियमों के अनुसार पेड़ की जडें हमेशा एक जगह जमे नहीं रह सकती। बारिश का पानी उन्हें लगातार धोता रहता है। उन्हें अपनी जगह से हटाने की कोशिश करता है। यह जीवन में आनेवाले दबावों और परिवर्तनों को दर्शाता है। जब हम जीवन में किसी एक स्थिति या रिश्ते से जुडे जाते हैं तो हम उसमें स्थिरता चाहते हैं। वटवृक्ष की फुनगी का आशय इस प्रकार है। वटवृक्ष विशाल एवं प्राचीन पेड होता है। उसकी फुनगी या शाखा पर बैठना एक

▶ एक पेड की जडों के रूपक के माध्यम से जीवन के कई पहलु

सुरक्षित और शांत स्थान पर होने का प्रतीक हो सकता है।

कवि और समाज दोनों इस स्थिरता को चाहते हैं। लेकिन जीवन की धारा उन्हें लगातार बहाती रहती है। स्थिरता की चाह का मतलब है कवि और समाज दोनों एक स्थायी स्थिति चाहते हैं। एक ऐसी जगह, जहाँ वे सुरक्षित रह सकें। वटवृक्ष की जडों के पास रहना इसी स्थिरता की चाह का प्रतीक है। जीवन में परिवर्तन निरन्तर होता रहता है। बौछारें अर्थात् जीवन की समस्याएँ और चुनौतियाँ लगातार आती रहती हैं और हमें एक जगह टिकने नहीं देतीं। जब हम परिवर्तन का विरोध करते हैं तो अंदर से टूटते हैं। इन पंक्तियों में जीवन के एक महत्वपूर्ण सत्य को उजागर करती है। हम सब परिवर्तन और खोज की प्रक्रिया से गुजरते हैं। हम नये अनुभवों की तलाश में आगे बढ़ते हैं। लेकिन इस दौरान हम गिर भी सकते हैं। गिरने से हमें डरना नहीं चाहिए। बल्कि हमें इससे सीखना चाहिए। और आगे बढ़ना चाहिए। ये पंक्तियाँ जीवन के संघर्षों और परिवर्तनों को बडे ही मार्मिक ढंग से व्यक्त करती हैं।

▶ जीवन के संघर्षों और परिवर्तनों को बडे ही मार्मिक ढंग से चित्रण

जीवन में अक्सर हमें बदलावों का सामना करना पडता है। जब हम बदलावों को स्वीकार करने से इनकार करते हैं तो हम विद्रोह करते हैं। लेकिन यह विद्रोह हमें नुक्सान पहुँचा सकता है। जैसे पेड की जडें जब बारिश का विरोध करती है तो वे उखड जाती हैं। जब हम पुराने रिश्तों या स्थितियों से जुडाव तोड देते हैं तो हमें नई शुरुआत करनी होती है। यह भले ही मुश्किल हो, लेकिन यह जीवन का एक स्वाभाविक हिस्सा है। जीवन में परिवर्तन निश्चित है। यह कविता हमें जीवन संघर्षों से सक्रिय और आक्रामक रूप से लडने और आगे बढ़ने की प्रेरणा देती है।

▶ जीवन के संघर्ष एवं निराशा का सजीव चित्रण

तब
बडे बडे वटवृक्ष भी
क्या बिगाड लेंगी बौछारें हमारा?
हम ठेंगा दिखाते चले जाते हैं-
हम तो आदी हैं न
बहन के
हर रोज़ ठौर बदलने के!
हमने तो नहीं कहा कभी
कि तर्कहीन बात मान लो हमारी
जब तुम तर्क संगत बात सुनने को भी
तैयार नहीं होते तो
यह न सुने जाने का- न पहचाने जाने का एहसास
हमें मनुष्य माने जाने से भी इनकार
जब सालता है-तो तर्क से अधिक धारदार बनकर
काटता है

तब
प्रतिरोध में उठ जाता है
समूह बनकर जन
तब तुम
तर्क-हीन शर्त मानने पर भी
तैयार हो जाते हो
हमें क्या?
हम तो
जीवन भर तर्क-इतर जीने के आदी हैं
तर्क तर जीने की बात कब की थी कभी हमने?
अब तो तुम अपनी सोचो अपनी?

अर्थः- ये पंक्तियाँ जीवन के संघर्ष और परिवर्तनशीलता को बहुत गहराई से दर्शाती हैं। यहाँ एक पेड की जडों के रूपक के माध्यम से जीवन के कई पहलुओं को उजागर किया है। कवयित्री कहती हैं कि बडे बडे वटवृक्ष भी क्या हमारे बौछारों को बिगाड लेंगी। हम अंगूठा दिखाते चली जाती हैं। हम निरंतर ठौर बदलने के आदी हैं। हमने कभी नहीं कहा, हमारी तर्कहीन बात मान लेने को। तुम लोग तो हमारी तर्कसंगत बातों को भी सुनने को तैयार नहीं हैं। हमारी बातें न सुने जाने का, न पहचान जाने का एहसास हुआ है। हमें मनुष्य मानने को भी आप तैयार नहीं। यह इनकार हमारे मन को सालते हैं। ये तर्क से, अधिक धारदार बनकर हमें काटते हैं। तब हमारे मन में प्रतिरोध की ज्वाला भभक उठती है। जनता एकजुट होती हैं। तब तुम तर्कहीन शर्तें मानने केलिए भी तैयार होते हो। इससे हमें कोई नुकसान नहीं। हम तो तर्क इतर जीने के आदी हैं क्या हमने कभी की थी तर्क तर जीने की बात? अब तुम अपने बारे में सोचो।

▶ एक पेड की जडों के रूपक के माध्यम से जीवन के कई पहलुओं को उजागर किया है

व्याख्याः- ये पंक्तियाँ रमणिका गुप्ता की 'प्रतिरोध' कविता की हैं। वे जीवन के संघर्षों और परिवर्तनों को एक नए परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत करती हैं। कवयित्री यहाँ एक ऐसे समाज की बात कर रही है जो परिवर्तन को स्वीकार करने से इनकार करता है एवं अपनी परम्पराओं और रूढियों में जकडा हुआ है। परिवर्तन के विरोध का मतलब है कि कविता में वटवृक्ष एक ऐसी पीढी या समाज का प्रतीक है जो परिवर्तन का विरोध करती है। यह समाजके बौछारों यानी जीवन की प्रतिक्रियाओं चुनौतियों का सामना करने के बजाय अपनी पुरानी परम्पराओं और रूढियों को महत्व देता है। वे लोग स्वयं मानते हैं कि तर्क इतर जीवन जीने के लिए वे अभ्यस्त हैं। प्रतिरोध और परिवर्तन से तत्पर्य है जब जीवन की चुनौतियाँ बहुत अधिक बढ़ जाती हैं तो यह समाज भी प्रतिरोध करने लगता है। लेकिन यह प्रतिरोध तर्कसंगत नहीं होता। बल्कि भावनाओं और परंपराओं पर आधारित होता है। इन पंक्तियों में व्यक्तिवाद तथा स्वतंत्रता का भाव भी है। कवयित्री कहती हैं कि हर व्यक्ति को अपने अलग सोच रखने का अधिकार है। उसपर दूसरों की सोच को थोपना नहीं चाहिए।

▶ हर व्यक्ति को अपनी सोच रखने का अधिकार है

कविता बताती हैं कि परिवर्तन जीवन का एक अनिवार्य हिस्सा है। इसका विरोध करना व्यर्थ है। हमें समय के साथ बदलने के लिए तैयार रहना चाहिए। नई चीज़ों को सीखने के लिए तैयार रहना चाहिए। साथ ही हमें अपनी व्यक्तिगत स्वतंत्रता को भी महत्व देना चाहिए और दूसरों की सोच को थोपने से बचना चाहिए। कविता में परिवर्तन का महत्व, तर्क और परंपरा के बीच का टकराव, व्यक्तिवाद और समाजवाद के बीच का संबन्ध आदि को दर्शाया गया है। यह 'प्रतिशोध', सामान्य जन के शोषण, उनकी उपेक्षा, उनके प्रति होनेवाले नकारात्मक दृष्टिकोण के विरुद्ध है। यह समाज के निम्न, आदिवासी वर्ग का वर्तमान सामाजिक व्यवस्था के प्रति प्रतिशोध है।

▶ हमें अपनी व्यक्तिगत स्वतंत्रता को भी महत्व देना चाहिए

यह कविता समाज और व्यक्ति के बीच के संबन्धों को एक गहरे स्तर पर समझने में हमारी मदद करती है। हमें यह सोचने पर मज़बूर करती है कि हम जीवन में किस तरह से परिवर्तन को स्वीकार करते हैं और साथ ही साथ अपनी परम्पराओं और मूल्यों को कैसे बनाये रखते हैं।

▶ समय के साथ चलने की बात पर ज़ोर

4.4.2 रमणिका गुप्ता के काव्य की विशेषताएँ

रमणिका गुप्ता हिन्दी की उन कुछ कवयित्रीयों मे से एक हैं जिन्होनें आदिवासी समाज की समृद्ध। सांस्कृतिक परंपरा और संघर्ष को लगातार समझने का प्रयत्न किया है। वे शायद हिन्दी की अकेली रचनाकार हैं जिन्होने झारखंड के आदिवासियों के साथ कदम से कदम मिलाकर लड़ाइयाँ लड़ी, जेल गई, माफिया से मुकाबला किया और अपने इन्हीं अनुभवों को कविता में ढाला। उनके द्वारा लिखित 'पूर्वांचल-एक कविता यात्रा', 'विज्ञापन बनता कवि', 'आदिम से आदमी तक', 'आदिवासी कविताएँ', 'तिल तिल नूतन', 'अब मूरख नहीं बनेंगे हम' आदि कविता संग्रहों में रमणिकाजी आदिवासियों के संघर्ष को ज़ुबान देते हुए उनकी पहचान, उनके मूल्य, उनके जीवन व संकल्पों से परिचित कराती हैं। रमणिका गुप्ता द्वारा लिखित काव्य संग्रह 'पूर्वांचल-एक कविता यात्रा' की कविता 'नागा' में भारत के पूर्वोत्तर छोर विशेषकर असम, नागालैण्ड, म्यांमार आदि भागों में पाई जाने वाली 'नागा' प्रजाति के संदर्भ में अपने विचार व्यक्त करती हैं। रमणिकाजी ने अपने जीवन में जो कुछ भी देखा और भोगा उसका ही कविता के माध्यम से चित्रांकन किया। उनके 'विज्ञापन बनता कवि' नामक एक अन्य काव्य संग्रह की कविता 'वे बोलते नहीं थे' में उन्होंने आदिवासी समाज की दशा-दुर्दशा का मार्मिक वर्णन किया हैं। कवयित्री लिखती है कि ये आदिवासी समुदाय बोलना या बहस करना नहीं जानता, वे केवल कर्म पर विश्वास रखते हैं। वे जंगल में पाई जानेवाली विविध जिवनावश्यक वस्तुओं के सहारे अपने और अपने परिवार का पालन पोषण करते हैं।

▶ आदिवासी समाज की दशा दुर्दशा का मार्मिक वर्णन

रमणिकाजी के काव्य संग्रह 'अब मूरख नहीं बनेंगे हम' की कविता 'दिलावनंन-दिलावन' में भी कवयित्री ने आदिवासी समुदाय की व्यथा को उजागर किया है। उनका कहना है कि ये आदिवासी समुदाय गुफाओं से निकलकर आज भी जंगलों में जीवन जी रहे हैं। उन्हें किसी भी प्रकार की लिपि या शाब्दिक ज्ञान नही दिया जाता। उन्हें तो बस मशीनों की तरह काम कराने केलिए ताकतवर मनुष्य बनाकर अपने साथ ले जाते

▶ आदिवासी समुदाय गुफाओं से निकलकर आज भी जंगलों में जीवन जी रहे हैं

हैं। जबकि इन आदिवासी समुदाय की संवेदनाओं को कोई नही समझता या समझना ही नहीं चाहता।

- आदिवासियों के संघर्षों एवं चुनौतियों का सशक्त चित्रण

अपने काव्य संग्रह 'आदिवासी कविताएँ' में उन्होने आदिवासी जनजाति की दिनचर्या, मानवीय भावना, प्रकृति प्रेम, भोलापन आदि बातों को सुन्दरता से दर्शाया है। इसी संग्रह की एक अन्य कविता 'घुमक्कड आदमी की नस्ल कहाँ गई' में प्रकृति प्रेमी रमणिकाजी ने प्रकृति नष्ट होते जंगल और भटकते आदिवासियों की व्यथा पर प्रश्नचिन्ह खींचा है। एक अन्य कविता 'लोहे का आदमी' में कवयित्री ने विकास के नाम पर आदिवासियों के भोलेपन के कारण स्वयं अपना घर(जंगल) नष्ट करने तथा उन्हीं की आनेवाली पीढ़ी को दर-दर भटकने के लिए छोड़ देने की समस्या का सजीव और मार्मिक वर्णन किया है। अपनी कविताओं में आदिवासियों के जीवन, उनके संघर्ष की गाथा स्वयं उनके साथ उनके बीच रहकर भोगे हुए पलों का जीवित चित्रांकन रमणिका गुप्ताजी ने बखूबी किया है। उनकी छवि स्त्री विमर्श और दलित चेतना की सजग प्रतिनिधि रचनाकार के रूप में रही। वे हमेशा संघर्षशील रही हैं। उन्होने अपने जीवन में जो भी संघर्ष किया, स्वयं जो भोगा, उसे ही लेखनी के माध्यम से प्रस्तुत किया। उनके साहित्य में सहजता, सरलता, स्पष्टता, सत्यता और बूरी रूढ़ियों के खिलाफ विद्रोह आदि मिलता हैं।

Summarised Overview / संक्षिप्त अवलोकन

आदिवासी कवयित्री रमणिका गुप्ता ऐसी कवयित्री हैं जिन्होंने झारखंड के आदिवासियों के साथ कदम से कदम मिलाकर लडाइयाँ लडीं जेल गयी, माफिया से मुकाबला किया और अपने इन अनुभवों को कविता में ढाला। उनकी कविताओं में सहजता, सरलता, स्पष्टता, सच्चाई और अनिष्ट रूढियों के खिलाफ विद्रोह की भावना स्पष्ट है।

Assignment / प्रदत्त कार्य

1. रमणिका गुप्ता की कविताओं में आदिवासी स्वर पर विचार कीजिए।
2. 'प्रतिरोध' कविता का सारांश लिखकर उसकी विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।
3. आदिवासी कवयित्री रमणिका गुप्ता की कविताओं की भाषागत विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

Reference / संदर्भ ग्रंथ

1. कविता की रचना यात्रा - डॉ. रामकुमार शर्मा
2. समकालीन हिन्दी कविता - विश्वनाथ प्रसाद तिवारी

Suggested Reading / निर्धारित पुस्तक

1. कविता के सम्मुख - गोविन्द प्रसाद
2. हिन्दी कविता की प्रकृति - डॉ. हरदयाल
3. समकालीन कविता का यर्थ - डॉ. परमानन्द श्रीवास्तव

Space for Learner Engagement for Objective Questions

Learners are encouraged to develop objective questions based on the content in the paragraph as a sign of their comprehension of the content. The Learners may reflect on the recap bullets and relate their understanding with the narrative in order to frame objective questions from the given text. The University expects that 1 - 2 questions are developed for each paragraph. The space given below can be used for listing the questions.

इकाई 5

डॉ. सरिता शर्मा- बेटी

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- कवयित्री सरिता शर्मा से परिचय होता है
- सरिता शर्मा कृत 'बेटी' कविता समझता है
- कवयित्री सरिता शर्मा के काव्य की विशेषताएँ जानता है

Background / पृष्ठभूमि

डॉ. सरिता शर्मा केवल एक हिन्दी कवयित्री नहीं, वे एक युग की हस्ताक्षर हैं। उनकी कविताएँ खासकर महिलाओं के मुद्दों पर केंद्रित, बेहद मार्मिक और प्रभावशाली होती हैं। उनका जन्म 29 जुलाई 1964 को छत्तीसगढ में हुआ था। डॉ.सरिता शर्मा हिन्दी कवि सम्मेलन के सर्वाधिक लोकप्रिय चेहरों में से एक है। उनकी कविताएँ सात्विक श्रृंगार की परिभाषा तो जानती हैं। साथ ही सामाजिक दायित्व के बोध से भी भरी रहती हैं। उत्तरप्रदेश सरकार में राज्यमंत्री का दर्जा प्राप्त कर चुकीं डॉ. सरिता शर्मा को सुनना मीरा की वंश परंपरा से साक्षात्कार करने जैसा है। आपकी कितनी ही रचनाएँ हिन्दी कवि सम्मेलनों में प्रविष्ट होनेवाली नई लेखिकाओं के लिए प्रेरणा का कार्य करती हैं। उनकी प्रकाशित रचनाएँ हैं 'पीर के सातों समन्दर' (गीत संकलन), 'नदी गुनगुनाती रही' (गीत सं), 'तेरी मीरा ज़रूर हो जाऊँ' (मुक्तक सं), 'चान्द मुहब्बत और मैं' (गज़ल सं), 'हुए आकाश तुम' (गीत सं), 'चाँद सोता रहा' (ओडियो सीडी), 'गीत बंजारन के' (ओडियो सीडी) आदि। दूरदर्शन, आकाशवाणी, एन.डी.टी.वी. इंडिया, सब टी.वी., ई.टी.वी, समाचार 24, बडा जादू आदि में वे प्रसारण के कार्यों में जुडी रहीं। वे अनेक पुरस्कारों से पुरस्कृत हुईं। उन्हों ने अनेक विदेश यात्राएँ भी कीं।

Keywords / मुख्य बिन्दु

बदलाव, आशीर्वाद, बोझ, भ्रूणहत्या, कन्या

Discussion / चर्चा

4.5.1 बेटी

- बेटियों के प्रति समाज की नज़रिये में बदलाव

'बेटी' कविता सरिता शर्मा की छोटी सी कविता है। पर इसका घाव गंभीर है। प्रस्तुत कविता कन्या भ्रूणहत्या के संदर्भ में लिखी गयी है। इसकी रचना सन् 2005 में हुई थी। इस कविता द्वारा उन्होंने बेटियों के प्रति समाज की नज़रिये में बदलाव को दर्शाया है। बेटी उनकी एक ऐसी कविता है, जो बेटियों के प्रति समाज के नज़रिये को चुनौती देती है। यह कविता बेटियों को एक बोझ के बजाय आशीर्वाद, आशा एवं सम्मान के प्रतीक के रूप में देखने का सन्देश देती है।

सरिता शर्मा

मैया! जनम से पहले मत मार,
बाबुल! जनम से पहले मत मार।
चाहे मुझको प्यार न देना,
चाहे तनिक दुलार न देना
कर पाओ तो इतना करना
जन्म से पहले मार न देना
मैं बेटी हूँ मुझको भी है
जीने का अधिकार।

मेरा दोष बताओ मुझको
क्यों बेबात सताओ मुझको
मैंभी अंश तुम्हारा ही हूँ
तजकर फेंक न जाओ मुझको
जीने का जो हक दे दो तुम,
देख लूँ ये संसार

थोडी नज़र बदलकर देखो

संग समय के चलकर देखो
बेटी से भी नाम चलेगा,
ठहरो ज़रा संभलकर देखो
चौथेपन की लाठी बनकर
दूँगी दृढ आधार!

मैं जब आँगन में डोलूँगी,
मिसरी सी बोली बोलूँगी
सेवा, करुणा, त्याग, तपस्या,
के नूतन द्वारे खोलूँगी
दोनों कुल के मान की खातिर
तन मन दूँगी वार।

अर्थः- प्रस्तुत पंक्तियाँ सरिता शर्मा की 'बेटी' कविता की हैं। अजन्मी बच्ची की आवाज़ बनकर माँ बाप से प्रश्न करती हैं कि क्यों वे उसे जन्म लेने से पहले ही मार डालना चाहते हैं? भ्रूण कहती है कि उसे जीने का अधिकार है और वह भी उनके ही अंश है। कविता में कन्या भ्रूण हत्या की समस्या पर गंभीर प्रहार किया गया है। कवयित्री कहती हैं कि बेटी भी परिवार का ही अंग होती है। वह भी अपने माता पिता का नाम रोशन कर सकती है। कवयित्री समाज में व्याप्त इस कुरीति को बदलने का आह्वान करती हैं। वे बेटियों को भी बेटों के बराबर अधिकार देने की बात करती हैं। स्त्री भ्रूण अपने माँ बाप से कह रही है कि जन्म से पहले मत मारो। चाहे मुझे प्यार दुलार न देना कोई बात नहीं। हो सके तो इतना करना कि जन्म से पहले मुझे न मारना। मैं भी तुम्हारी बेटी हूँ, मुझे भी जीने का अधिकार है। इस प्रकार बेबात सताने के लिए मैंने ऐसा क्या अपराध किया है? तुम्हारे इस अंश को फेंक न दीजिए। मुझे जीने का अधिकार दीजिए। मैं भी इस संसार को देखना-समझना चाहती हूँ। ज़रा अपना दृष्टिकोण बदलकर देखो, समय के साथ चलकर देखो। बेटी से भी नाम चलेगा। ज़रा संभलकर देखो, तुमको सहारा मिलेगा। मैं जब आँगन में डोलूँगी, मीठी बोली बोलूँगी। मैं सेवा, करुणा, त्याग और तपस्या का प्रतीक बन जाऊँगी। मैं दोनों परिवारों की मान प्रतिष्ठा एवं भलाई के लिए अथक परिश्रम करूँगी।

▶ कविता में कन्या भ्रूण हत्या की समस्या पर गंभीर प्रहार किया गया है

व्याख्याः- प्रस्तुत पंक्तियाँ डॉ. सरिता शर्मा की 'बेटी' नामक कविता की हैं। स्त्री भ्रूण अपने माता पिता से कह रही है कि मैया जनम से पहले मत मार। बापू जन्म से पहले मत मार। माता पिता से फिर कह रही है कि चाहे मुझे प्यार या दुलार न देना, सिर्फ जीने का अवसर दीजिए। पर इतना कीजिए कि जन्म से पहले मुझे मार न देना। इस दुनिया में और प्राणियों की तरह जीने का अधिकार मुझे भी है। वह आगे सवाल कर रही है कि तुम लोग मुझे मारने की कोशिश कर रहे हो। आखिर मेरा दोष क्या? वह मुझे बता

दो। मैं भी तुम्हारा अंश हूँ। तजकर फेंकना न चाहिए। मैं प्रार्थना कर रही हूँ कि दुनिया देखने का, दुनिया में जीने का, दुनिया का सुख- दुःख बाँटने का अधिकार मुझे भी है। बेटे के कारण ही माँ बाप का नाम विख्यात हो जाएगा, ऐसी तुम्हारी धारणा गलत है। बेटियों के कारण भी आप लोगों को नाम मिल जाएगा। समय के साथ चलकर जीना सीखो। आँगन में डोलते समय मैं मीठी बोली बोलूँगी। दूसरों के प्रति मेरे मन में करुणा, सेवा, त्याग, तपस्या आदि के भाव रहेंगे। जब मेरी शादी हो जाएगी तो दोनों कुलों का मान, मेरे कारण बढ़ आयेगा। इसके लिए मैं अथक परिश्रम करूँगी। इसलिए मुझे मत मारो, मुझे जीने का मौका दे दो। बेटियों के जन्म को लेकर समाज में व्याप्त भेदभाव, और कुरीतियों को उजागर किया गया है। बेटियों को भी जीने का पूरा अधिकार होने की बात कही गयी है। इस कविता में बेटियों की शिक्षा तथा सशक्तिकरण पर भी ज़ोर दिया गया है।

▶ समाज में व्याप्त कुरीतियों को बदलने का आह्वान है

4.5.2 सरिता शर्मा की कविताओं की विशेषताएँ

डॉ. सरिता शर्मा हिन्दी कवि सम्मेलनों की एक लोकप्रिय कवयित्री हैं। उनकी कविताओं में अनेक विशेषताएँ पायी जाती हैं। उनकी कविताएँ प्रायः सात्विक श्रृंगार से ओतप्रोत होती हैं। वे प्रेम और भावनाओं को एक बहुत ही सुंदर और सौम्य तरीके से व्यक्त करती हैं। उनकी कविताओं में सामाजिक मुद्दों पर भी प्रकाश डाला गया है। वे समाज में व्याप्त कुरीतियों और असमानताओं के खिलाफ आवाज़ उठाती हैं। उनकी कविताएँ मीरा की भक्ति और भावनाओं से प्रेरित हैं। उनकी कविताओं में विषय वस्तु की विविधता देखने को मिलती है। वे प्रेम, प्रकृति, समाज, महिला सशक्तिकरण आदि विषयों पर लिखती हैं। उनकी कविताएँ सरल भाषा में लिखी गयी हैं। आम जनता भी उन्हें आसानी से समझ सकती हैं।

▶ प्रेम, प्रकृति, समाज, महिला सशक्तिकरण आदि विभिन्न विषय

Summarised Overview / संक्षिप्त अवलोकन

डॉ. सरिता शर्मा विभिन्न विषयें पर लिखनेवाली कवयित्री हैं। उनकी कविताओं में प्रेम एवं भावनाएँ हैं, साथ ही साथ सामाजिक मुद्दों का भी अनावरण हुआ है। उनकी कविताओं में प्रकृति, स्त्री सशक्तिकरण, प्रेम सबको प्रमुखता दी गयी है।

Assignment / प्रदत्त कार्य

1. 'बेटी' कविता का सारांश लिखकर उसकी विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।
2. डॉ. सरिता शर्मा की कविताओं की विशेषताओं पर टिप्पणी लिखिए।

Reference / संदर्भ ग्रंथ

1. आधुनिक भारतीय कविता संचयन - सं- विश्वनाथ प्रसाद तिवारी
2. कविता का अर्थ - परमानन्द श्रीवास्तव

Suggested Reading / निर्धारित पुस्तक

1. कविता के सम्मुख - गोविन्द प्रसाद
2. समकालीन हिन्दी कविता - डॉ. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी।

Space for Learner Engagement for Objective Questions

Learners are encouraged to develop objective questions based on the content in the paragraph as a sign of their comprehension of the content. The Learners may reflect on the recap bullets and relate their understanding with the narrative in order to frame objective questions from the given text. The University expects that 1 - 2 questions are developed for each paragraph. The space given below can be used for listing the questions.

MODEL QUESTION PAPER SETS

SGOU

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

QP CODE: ……

Reg. No : .....
Name : …….....

Model Question Paper- Set-I

POST GRADUATE (CBCS) DISTANCE MODE EXAMINATIONS

M.A HINDI LANGUAGE AND LITERATURE

THIRD SEMESTER - M23HD03DE - नारी लेखन

CBCS-PG Regulations 2021
2023 Admission Onwards

Maximum Time: 3 Hours Maximum Mark: 70

SECTION A

I. किन्हीं पाँच प्रश्नों का उत्तर दो या दो से अधिक वाक्यों में लिखिए।

1. स्त्री विमर्श का अर्थ समझाइए।
2. वर्जिनिया वुल्फ का परिचय दीजिए।
3. साइबर फेमिनिज्म के बारे में टिप्पणी लिखिए।
4. जेंडर अस्मिता क्या है?
5. आधुनिक समाज में सत्ता की परिभाषा कैसे बदलती है?
6. 'सिमोन द बोउवार' और 'द सेकंड सेक्स' का परिचय दीजिए।
7. महिला लेखिका की रूप में मन्नु भण्डारी।
8. उषा प्रियंवदा के कथा सहिय की स्त्री चेतना पर टिप्पणी लिखिए। (5X2 = 10 Marks)

SECTION - B

II किन्हीं छः प्रश्नों का उत्तर एक पृष्ठ के अंतर लिखिए।

9. स्त्री विमर्श के उद्देश्यों को संक्षेप में स्पष्ट करें।
10. उत्तर औपनिवेशवाद की मुख्य अवधारणाएँ क्या-क्या हैं?
11. ब्लैक फेमिनिज़म के महत्वपूर्ण विचारक कौन-कौन हैं?
12. लेस्बियन फेमिनिज़म से तात्पर्य क्या है?
13. जेंडर, भाषा और साहित्य में क्या संबन्ध है?
14. स्त्री मुक्ति आंदोलन की परंपरा से आप जानते हैं।
15. हरी बिन्दी कहानी के शीर्षक के औचित्य पर प्रकाश डालिए।
16. ममता कालिया की कहानियों पर टिप्पणी लिखिए।

17. चिन्नमस्ता आधुनिक नारी जीवन के संघर्ष और मुक्ति का सही दस्तावेज है। सिद्ध कीजिए।

18. स्त्री विमर्श की दृष्टि से 'स्त्रियाँ' कविता का मूल्यांकन कीजिए।

19. प्रभा खेतान के व्यक्तित्व और कृतित्व पर प्रकाश डालिए।

20. पितृसत्तात्मक समाज के कारण महिलाओं के लेखन में आई चुनौतियों पर चर्चा करें? (6X5 = 30 Marks)

SECTION - C

III. किन्हीं दो प्रश्नों का उत्तर लिखिए। प्रत्येक उत्तर तीन पृष्ठों के अंतर्गत हों।

21. पाश्चात्य और भारतीय संदर्भ में स्त्रीमुक्ति आन्दोलन के उद्‌भव में क्या अंतर है?

22. स्त्री विमर्श के ऐतिहासिक विकास और उसकी आधुनिक प्रासंगिकता पर विस्तार से चर्चा करें।

23. उषा प्रियंवदा के कथा साहित्य की स्त्री चेतना पर चर्चा कीजिए।

24. आज के समय में स्त्रीवाद के मुद्दे क्या हैं? विस्तार से विचार करें। (2X15 = 30 Marks)

SGOU

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

QP CODE: ……

Reg. No : .....
Name : …….....

Model Question Paper- Set-II

POST GRADUATE (CBCS) DISTANCE MODE EXAMINATIONS
M.A HINDI LANGUAGE AND LITERATURE
THIRD SEMESTER - M23HD03DE - नारी लेखन

CBCS-PG Regulations 2021
2023 Admission Onwards

Maximum Time: 3 Hours Maximum Mark: 70

SECTION A

I. किन्हीं पाँच प्रश्नों का उत्तर दो या दो से अधिक वाक्यों में लिखिए।

1. स्त्री विमर्श की परिभाषा लिखिए।
2. स्त्री विमर्श का उद्देश्य क्या है?
3. स्त्री मुक्ति आंदोलन - उद्भव और विकास पर टिप्पणी लिखिए।
4. साइबर फेमिनिज़्म का मतलब क्या है?
5. यौन अस्मिता पर टिप्पणी लिखिए।
6. 'द फीमेल यूनक' का मुख्य उद्देश्य क्या है?
7. नारी लेखन के प्रमुख विषय क्या-क्या है?
8. स्त्रीवाद का पुरुषों पर प्रभाव लिखिए। (5X2 = 10 Marks)

SECTION - B

II किन्हीं छः प्रश्नों का उत्तर एक पृष्ठ के अंतर लिखिए।

9. स्त्री विमर्श का प्रभाव से आप क्या जानते हैं?
10. पाश्चात्य संदर्भ में स्त्री मुक्ति आन्दोलन पर टिप्पणी लिखिए।
11. ब्लैक फेमिनिज़म क्या है?
12. साहित्य में जेंडर की भूमिका क्या है,
13. जर्मन ग्रीयर के दृष्टिकोण से एक स्वतंत्र और विद्रोही स्त्री की क्या विशेषताएँ होती हैं?
14. 'सम ऑफ वन्स ओन' का सारांश लिखिए।

15. उपस्थिति कहानी की नायिका का चरित्र चित्रण कीजिए।

16. स्त्री विमर्श की दृष्टि से 'स्त्री के कारनामे' कहानी का मूल्यांकन कीजिए।

17. नरेंद्र की चरित्रगत विशेषताओं का परिचय दीजिए।

18. अनामिका की कविताओं की भाषा एवं शिल्प पर टिप्पणी लिखिए। (6X5 = 30 Marks)

SECTION - C

III. किन्हीं दो प्रश्नों का उत्तर लिखिए। प्रत्येक उत्तर तीन पृष्ठों के अंतर्गत हों।

19. समाज को न्यायपूर्ण और समावेशी बनाने में स्त्री विमर्श की भूमिका पर चर्चा कीजिए।

20. नारीवाद की विभिन्न धाराओं की तुलना करते हुए उनके प्रमुख सिद्धांत और प्रभाव स्पष्ट कीजिए।

21. समकालीन महिला कथाकारों की रचनाएँ जीवन से अछूता नहीं है- स्पष्ट कीजिए।

22. आधुनिक समाज में स्त्रीवाद की स्वीकार्यता और उसे लेकर पुरुषों के दृष्टिकोण पर चर्चा कीजिए।
(2X15 = 30 Marks)

SGOU

NO TO DRUGS

തിരിച്ചിറങ്ങാൻ പ്രയാസമാണ്

ആരോഗ്യ കുടുംബക്ഷേമ വകുപ്പ്, കേരള സർക്കാർ

സർവ്വകലാശാലാഗീതം

വിദ്യയാൽ സ്വതന്ത്രരാകണം
വിശ്വപൗരരായി മാറണം
ഗ്രഹപ്രസാദമായ് വിളങ്ങണം
ഗുരുപ്രകാശമേ നയിക്കണേ

കൂരിരുട്ടിൽ നിന്നു ഞങ്ങളെ
സൂര്യവീഥിയിൽ തെളിക്കണം
സ്നേഹദീപ്തിയായ് വിളങ്ങണം
നീതിവൈജയന്തി പാറണം

ശാസ്ത്രവ്യാപ്തിയെന്നുമേകണം
ജാതിഭേദമാകെ മാറണം
ബോധരശ്മിയിൽ തിളങ്ങുവാൻ
ജ്ഞാനകേന്ദ്രമേ ജ്വലിക്കണേ

കുരീപ്പുഴ ശ്രീകുമാർ

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

Regional Centres

Kozhikode
Govt. Arts and Science College
Meenchantha, Kozhikode,
Kerala, Pin: 673002
Ph: 04952920228
email: rckdirector@sgou.ac.in

Thalassery
Govt. Brennen College
Dharmadam, Thalassery,
Kannur, Pin: 670106
Ph: 04902990494
email: rctdirector@sgou.ac.in

Tripunithura
Govt. College
Tripunithura, Ernakulam,
Kerala, Pin: 682301
Ph: 04842927436
email: rcedirector@sgou.ac.in

Pattambi
Sree Neelakanta Govt. Sanskrit College
Pattambi, Palakkad,
Kerala, Pin: 679303
Ph: 04662912009
email: rcpdirector@sgou.ac.in

नारी लेखन

Course Code: M23HD03DE

SREENARAYANAGURU
OPEN UNIVERSITY

ISBN 978-81-985080-7-2

Sreenarayanaguru Open University
Kollam, Kerala Pin- 691601, email: info@sgou.ac.in, www.sgou.ac.in Ph: +91 474 2966841